तब और अब

गुरुदत्त

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

मूल्य : छः रुपये
प्रथम सस्करण : १९६३
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

पूर्वावस्था

पहला परिच्छेद

एक अस्सी वर्ष की वृद्धा, एक हवेली मे, एक सामान से शून्य कमरे में चटाई पर बैठी थी। उसको मिलने के लिए एक मध्यमावस्था का पुरुष आया हुआ था और उसके सम्मुख चटाई पर बैठा हुआ था। पुरुष कह रहा था, "मा ! इस प्रकार तो काम चलेगा नही।"

"तो कैसे चलेगा ?"

"तुम कहो तो मै न्यायालय मे एक प्रार्थना कर दू।"

"क्या प्रार्थना करोगे ?"

"यही कि तुमको निर्वाह के हेतु दो सौ रुपया प्रतिमास मिलने चाहिए।"

"परन्तु मैं दो सौ रुपये को क्या करूगी ? रोटी शिव दे जाता है। वस्त्र तुम्हारे पिता इतने बनवाकर दे गए है कि कई वर्ष तक पहनूगी, तब भी समाप्त नही होगे। दान-दक्षिणा के लिए महेश आठ आना नित्य दे जाता है। और मैं कितनी देर तक जिऊगी ?"

"पर मा ! है तो सब कुछ तुम्हारा ही। होना तो यह चाहिए कि तुम सबकी स्वामिनी बनो। सबको अपनी इच्छानुसार बाटो। सब तुम्हारी खुशामद किया करें और सेवा करे।"

"देखो राम ! वृद्धा ने सतर्क हो, कहा। मेरा कुछ नही है। यह सम्पत्ति प्रभु-परमात्मा की है। मै तो उतने की ही हकदार हूं जितना मुझको खाने-पहिरने के लिए चाहिए। वह मुझको प्राप्त है।"

"शिव अभी तो देता है, परन्तु क्या जाने, किसी दिन भी आंखें बदल ले ?"

"तो फिर क्या होगा ?"

"मा, भूखो मर जाओगी, जो दो-चार वर्ष तुमने जीना है, वह भी नहीं जी सकोगी।"

वृद्धा का नाम कर्मदेवी था। वह दिल्ली के एक बड़े व्यापारी लाला सुलक्षणमल की विधवा थी। पति का देहान्त हुए अभी एक मास ही व्यतीत हुआ था। एक

वसीयत (इच्छापत्र) लाला जी के हस्ताक्षरो से लाला जी के सबसे बडे लड़के शिवकुमार ने न्यायालय में दाखिल करा दी थी और उसके अनुसार लाला जी की पूर्ण सम्पत्ति का उत्तराधिकारी अपने को घोषित करने की प्रार्थना की थी। न्यायालय ने सब सम्बन्धियो को, जिनकी सख्या पचास से ऊपर थी, एक नोटिस दे दिया था कि वे अमुक तिथि को उपस्थित होकर यह बताए कि क्यो न शिवकुमार द्वारा उपस्थित किए गए इच्छापत्र को ठीक घोषित किया जाए और उसके अनुसार लाला सुलक्षणमल की सम्पत्ति के विभाजन की स्वीकृति दे दी जाए।

लाला सुलक्षणमल का देहान्त इकासी वर्ष की आयु में हुआ था और वे अपने पीछे अपनी विधवा वृद्धा पत्नी, चार लडके, चार लडकिया एव लड़के-लड़कियो की सन्ताने, जो इस समय पचास के ऊपर थी, छोड़ गए थे।

वृद्धा से बाते करने वाला लाला जी का सबसे छोटा लडका रामकुमार था। लाला जी के कारोबार मे दो लडके सहायक रहे थे। एक का नाम शिवकुमार एवं दूसरे का नाम महेशकुमार था। दो छोटे लडके पढ-लिख गए थे और एक गोपाल-कुमार तो जिला कचहरी मे ही नौकर था। वह सबजज बहादुर का पेशकार था। यद्यपि वेतन तो पैतालीस रुपये मासिक ही मिलता था परन्तु चार-पांच रुपये नित्य मेज के नीचे से, आय हो जाती थी और निर्वाह हो रहा था। चौथा लड़का जो विधवा की सबसे छोटी एतदर्थ सबसे अधिक प्रिय सन्तान थी, वकील बन, अपना काम-धंधा चलाता था, वह सम्मुख बैठा रामकुमार था।

राम पर मा का सबसे अधिक स्नेह था और राम भी मां से बहुत लगाव रखता था। वह न्यायालय से उस इच्छापत्र की एक प्रतिलिपि लाया था जो शिवकुमार ने न्यायालय मे उपस्थित की थी। इच्छापत्र मे लिखा था :

"यह पूर्ण सम्पत्ति मेरी अपनी उपार्जन की हुई है। मै अपने पिता के घर से भाग आया था। दिल्ली मे पहुंच, सात रुपये मासिक की नौकरी से कार्य आरम्भ कर, सत्तर वर्ष के अनथक प्रयत्न से, मैंने यह पूर्ण सम्पत्ति उपार्जन की। इस सम्पत्ति के उपार्जन में केवल शिवकुमार ही सहायक रहा। महेशकुमार भी घर से भाग कलकत्ता में कारोबार करने चला गया था। वह चार वर्ष हुए, अपनी पत्नी एवं तीन बच्चों के साथ सर्वथा अकिचन की अवस्था मे लौटा था। उसको मैंने दो सौ रुपये प्रति मास पर, दुकान पर नौकर रख लिया था।

"अतएव मैं केवल शिवकुमार को ही अपनी इस सम्पत्ति का उत्तराधिकारी

समझता हू और उसे इस सारी सम्पत्ति के अर्जन करने में सहायक समझ, यह बात उसकी शुद्ध वृत्तियों पर छोडता हू कि वह अपनी मां एवं विधवा बहिन सदारानी के निर्वाह का प्रबन्ध करता रहे।"

रामकुमार को तथा गोपालकुमार का इस इच्छापत्र के असली होने पर किंचित्-मात्र भी विश्वास न था। गोपाल और राम दोनों ने राय की थी। गोपाल का तो स्पष्ट कथन था, "मै इस इच्छापत्र के असली होने को चुनौती दूगा।" इसपर भी उसने अपने वकील भाई को अपना सब रहस्य बताया नहीं। वकील भी इसको चुनौती तो देना चाहता था, मगर वह चाहता था कि परिवार के सब सदस्य मिलकर झगडा करे तो कदाचित् यह इच्छापत्र रद्द हो सके। अन्यथा इसपर वह अपने पिता के हस्ताक्षर देख आया था और उसको वह अपने पास पिता के एक लिखित पत्र के हस्ताक्षरों से मिलान कर चुका था। उसका ज्ञान यह कहता था कि इच्छापत्र स्वीकृत होगा। भले ही इसके लिए शिवकुमार को उच्च न्यायालय तक जाना पड़े। इससे वह परिवार के सब सम्भव उतराधिकारियो को इच्छापत्र के स्वीकार किए जाने में बाधक बनवाना चाहता था। इससे वह अधिक से अधिक अपने बड़े भाई से जितना ऐंठ सके, ऐंठ लेने की आशा करता था। वह न्यायालय में, सबकी वकालत बिना एक भी पैसा लिए, करने को तैयार था।

इसलिए वह महेश से मिला था। उसने तो स्पष्ट कह दिया, "मैंने इस सम्पत्ति के अर्जन में कुछ अधिक सहयोग नहीं दिया, इस कारण मैं उसमें एक पैसे का भी स्वामी नहीं हूं।"

"परन्तु तुम बाप के बेटे तो हो।"

"केवल माता-पिता की सन्तान होना इस बात का सूचक नहीं कि मैं पिता के गाढ़े पसीने की कमाई का भागीदार बन सकू। मैं दस वर्ष की आयु में घर से भाग गया था और लाख प्रयत्न करने पर भी निर्वाह से अधिक उपलब्ध नहीं कर सका। बस, जीवन में मां ही एक ऐसी वस्तु मिली है जिसको मैं अपनी सम्पत्ति कह सकता हूं।"

राम ने समझा कि यह बुद्धिहीन व्यक्ति है और यही कारण है कि वह जीवन में उन्नति नही कर सका। उसे छोड, वह पेशकार भाई गोपालकुमार से मिला। उसको मुकद्दमा लड़ने के हेतु तैयार, परन्तु बिना किसीकी सहायता के, देख प्रसन्न तो हुआ, परन्तु उसने न तो राम को अपना वकील बनाने का यत्न किया, न ही

उसने उसको बताया कि किस प्रकार वह उपस्थित इच्छापत्र को गलत सिद्ध कर सकेगा।

वह अब मा से मिलने आया था। मा को अपनी अवस्था से सन्तुष्ट देख,उसने उसके मन मे भय उत्पन्न करने का यत्न किया। उसने क ; दिया, "मां! भूखी मर जाओगी।"

"बेटा," मां का निश्चित उत्तर था, "मेरी आयु अस्सी वर्ष की है। तुम्हारे पिता चले गए और मै भी जाने को तैयार बैठी हू। बीमार पडकर मरने से भूखे रहकर मरना सुगम होगा। इस कारण मुझको इसका शोक नही होगा। बेटा, मैं मुकद्दमा नही करूगी।"

"पर मां! मेरे लिए ही कर दो।"

"मैने शिवकुमार से कहा था। उसने यह कहा कि पहले तुम सब लोग पिता जी के लिखे पर फूल चढाओ, उपरान्त मै सबको कुछ न कुछ पिता जी की सम्पत्ति मे से प्रसाद के रूप मे दे दूगा।"

वकील इस प्रकार की अनिश्चित बातो से सतोष अनुभव नहीं करता था। इस कारण वह अपनी बहन सदारानी के पास जा पहुचा। सदारानी राम से दो वर्ष बड़ी थी। वह बालविधवा थी और जब से विधवा हुई थी, अपने पिता के ही घर में रहती थी। लाला सुलक्षणमल के गृह मे दो कक्ष थे। एक मे शिवकुमार रहता था। उसका अपना लड़का निरजन तो पृथक् गृह मे रहता था। शिवकुमार की दो लड़कियां थीं। एव दोनो का विवाह हो चुका था और वे अपने-अपने पतियों के घर मे रहती थी। शिवकुमार गृह के इस कक्ष मे अकेला अपनी पत्नी के साथ निवास करता था। गृह के दूसरे कक्ष मे सुलक्षणमल स्वयं रहता था और उसके साथ उसकी विधवा लडकी सदारानी रहती थी। अब सुलक्षणमल के देहान्त पर गृह के इस कक्ष में मां एवं बेटी दो औरते ही रह गई थी। दोनो ने एक विधवा ब्राह्मणी को नौकरानी रख लिया था। वह उनका चौका-बासन कर देती थी, उनके कपड़े धो देती थी और कभी-कभी बाजार जाए तो साथ चली जाया करती थी।

राम ने सदारानी से जाकर कहा, "बहिन! शिवकुमार की नीयत ठीक मालूम नहीं होती।"

"क्यों? क्या किया है उसने?"

"उसने यह इच्छापत्र जाली बना न्यायालय मे उपस्थित कर दिया है। पिता जी तो तुमपर बहुत दयालु थे और इसमे तुम्हारा कुछ भी उल्लेख नही है।"

"किया तो है। उन्होने शिव दादा को आदेश दे दिया है कि मेरा ध्यान रखे। और मुझको क्या चाहिए!"

"मगर बहिन, यह इच्छापत्र झूठा है।"

"तो मुझको क्या! तुम भाई-भाई जानो और समझो। मै तो, तुममे से कोई भी मालिक बने, अपने निर्वाह-हेतु पा लूगी।"

निराश राम अपने घर लौट गया। जब से उसने वकालत का कार्य आरम्भ किया था, वह एक पृथक् गृह मे निवास करता था। वह अपने घर गया तो उसकी पत्नी रोहिणी एव पेशकार दादा की पत्नी रुक्मिणी बैठी वार्तालाप कर रही थी।

"भाभी!" राम ने पेशकार की पत्नी को सम्बोधन कर कहा, "भैया ने तो सब गुड गोबर कर दिया है!"

"क्या गुड गोबर कर दिया है?" रुक्मिणी ने पूछ लिया।

"मै बड़े दादा को इस झूठ और फरेब की शिक्षा देना चाहता था। मगर कोई सहयोग नही देता।"

"उनके सहयोग से कुछ बनने वाला है?"

"हा। वे सबजज साहब के न्यायालय मे पेशकार है। यदि वे तनिक संकेत-मात्र कर दे तो दादा को नानी याद आ जाए। मै वकील हू। वे जज साहब की कुर्सी से कुर्सी लगाकर बैठने वाले। मै मुकदमा लडता और वे जज साहब की ओर तनिक मुस्कराकर देख देते तो बस काम बन जाता।"

"परन्तु भैया, तुम करना क्या चाहते हो?"

"मै शिव दादा वाला इच्छापत्र झूठा सिद्ध कर देना चाहता हूं।"

"कैसे?"

"हस्ताक्षर पहचानने वाले की साक्षी दिलवाकर।"

"तब क्या होगा?"

"हम चारों भाई बराबर-बराबर के भागीदार बन जाते।"

"यह आप कर नहीं सकते। यही तो तुम्हारे भैया कह रहे है। वे इसी बात को अपने ढग से करने वाले हैं।"

"उनका क्या ढग है ?"

"वे बता नही रहे। परन्तु मुझको उनपर विश्वास है, वे अवश्य सफल हो जाएगे।"

"मगर उनके उपाय से मुझको भी कुछ मिलेगा क्या ?"

"यह तो वे ही बता सकते है।"

वकील राम को कुछ धैर्य हुआ। परन्तु उसका चित्त पूर्णरूप से शान्त नहीं हुआ। वह समझता था कि यदि गोपाल की योजना से उसको भी लाभ होना होता तो वह अवश्य ही उसको विश्वास मे ले लेता।

इससे वह चुपचाप मुकदमे की तिथि की प्रतीक्षा करने लगा।

२

लाला सुलक्षणमल की एक लडकी थी गौरी। उसके घर वाले का नाम था गोवर्धनलाल। वह डिप्टी कमिश्नर के दफ्तर मे एक साधारण क्लर्क था। युवावस्था में वह बहुत 'राशी' समझा जाता था। किसीका कार्य बिना घूस लिए नही करता था और घूस से कुछ भी कार्य सरलता से कर देता था। परन्तु ज्यो-ज्यों उसकी अवस्था बडी होती गई और उसके घर मे कोई सन्तान उत्पन्न न हुई तो उसके मन में भय समाने लगा। वह दान-दक्षिणा तथा पूजा-पाठ करने लगा।

इसपर भी कुछ न बना तो उसने घूस लेना छोड़ दिया। फिर इससे भी एक पग आगे की ओर बढ़ा। वह अपने बस का कार्य बिना कुछ लिए-दिए करने लगा। अब एक अन्तिम पग उठाने का विचार कर रहा था। वह था—सब कुछ त्याग, संन्यास धारण कर, हरिद्वार मे जाकर भगवद्भजन मे लीन हो जाना। यदि इसमें कुछ बाधा थी तो वह गौरी थी। गौरी अपने पति के साथ जाना चाहती थी, परन्तु पत्नी के साथ सन्यास नही ग्रहण किया जा सकता था।

लाला सुलक्षणमल को मरने से पूर्व गोवर्धन की इस अवस्था का ज्ञान था। अतः देहावसान से एक दिन पूर्व उन्होने गोवर्धन को बुलाया था एव कक्ष को बन्द कर उससे कुछ बाते की थीं। उसने वह कही बात लाला जी के लड़कों को नहीं बताई थी। चारों भाई गोवर्धन को मूर्ख मानते थे और लाला जी के क्रिया-कर्म हो जाने पर उन्होने उससे बात तक नही की थी।

अन्य सम्बन्धियो की भाति उसको भी नोटिस आया था कि शिवकुमार ने एक इच्छापत्र दाखिल किया है। यदि उसको उसमें कुछ आपत्ति हो तो अमुक तिथि को न्यायालय मे आकर उपस्थित करे। उसने घर आकर अपनी पत्नी को बताया, "गौरी ! एक अदालती नोटिस आया है।"

"क्या आया है ?"

"यही कि शिवकुमार ने लाला जी का इच्छापत्र दाखिल करा दिया है।"

"तो ठीक है।" गौरी ने आसक्ति का भाव प्रकट करते हुए कह दिया।

"परन्तु लाला जी ने कहा था कि उनको शिवकुमार पर विश्वास नही है। इसी कारण उन्होने इच्छापत्र रजिस्टर्ड करा दिया है।"

"तो क्या यह इच्छापत्र रजिस्टर्ड नही है ?" गौरी ने पूछा।

"नोटिस मे इस विषय पर कुछ लिखा नही।"

"तो आप उस इच्छापत्र की, जो दाखिल किया गया है, प्रतिलिपि नहीं ले सकते ?"

"ले सकता हू। पर मैं सोचता हू कि मै क्यों इस झंझट में पड़ू ? मुझको तो कुछ लेना-देना नही।"

"देखिए जी ! हमने ठाकुर जी के सम्मुख सौगन्ध ली हुई है कि हम यथा-सम्भव लोक-कल्याण के हेतु प्रयत्नशील रहेगे। भगवान ने कहा है :

तदर्थं कर्म कौन्तेय युक्तसङ्गः समाचर।

परमात्मा के निमित्त हम कर्म करेंगे, तो हमारे लिए क्यो का तो कुछ प्रयोजन ही नही रह जाता।"

गोवर्धनलाल विचार करने लगा। उसने कहा, "पहले मै यह विचार करता हूं कि शिवकुमार ने ठीक इच्छापत्र ही न्यायालय में दिया होगा। उसको तो विदित होगा कि कोई ऐसा इच्छापत्र है। इसपर भी यदि यह इच्छापत्र असली नही, तो इस इच्छापत्र मे लाला जी ने अपने पुत्रो के साथ न्याय किया है अथवा किसी दूसरे मे—यह कैसे जान सकता हू। अपने लिए तो मेरे मन में यह विचार आया था कि मेरा इससे कोई सम्बन्ध नहीं।"

"हमारा सम्बन्ध तो परमात्मा से है। लाला जी ने यदि आपको, सब परिवार-वालों से पृथक् बुलाकर, यह न कहा होता, तो शिव दादा पर सन्देह करने में कोई कारण नहीं था। मगर जव आप कहते हैं कि उन्होंने कहा था कि उनको

शिव पर विश्वास नहीं तो फिर अपने मन का सशय दूर कर लेना चाहिए ।"

अगले दिन गोवर्धनलाल ने न्यायालय मे उस इच्छापत्र की नकल के लिए प्रार्थना कर दी ।

यद्यपि उस इच्छापत्र मे पूर्ण सम्पत्ति पर शिवकुमार का अधिकार माना गया था और वह रजिस्टर्ड नही था तो भी गोवर्धनलाल को उसमे कोई अनौचित्य प्रतीत नहीं हुआ । वह जानता था कि शिवकुमार ही इस सम्पत्ति के निर्माण में पिता का सहायक रहा है । इससे उसके हृदय में अपने उस ज्ञान को प्रयोग करने के लिए उत्साह नही था, जो लाला जी के देहावसान से एक दिन पूर्व, पृथक् के वार्तालाप मे प्राप्त हुआ था । वह सायंकाल घर आया तो उसने अपनी पत्नी गौरी को पूर्ण परिस्थिति से अवगत करा दिया । साथ ही उसने अपने मौन रहने का कारण भी बता दिया ।

गौरी अपने पति के इस निर्णय से सतुष्ट नहीं थी । उसने कहा, "शिव ने यह झूठा लेख उपस्थित किया है । कोई झूठ व्यर्थ नही बोलता । इससे यह सिद्ध होता है कि उसने किसी दूसरे का अधिकार छीना है ।"

"तो तुम समझती हो कि एक बूढा आदमी कुछ लिख गया और वह किसी-के अधिकार का प्रमाण हो गया ?"

"एक तो यह बात कि हम जानते नही कि किसका अधिकार शिव ने हरण किया है, वह शिव से अधिक उपयुक्त अधिकारी हो सकता है ? दूसरे यह कि हम कौन है किसीके निर्णय को बदलने वाले । पिता जी अधिकारी थे एव उनका लिखा मान्य होना चाहिए ।"

"गौरी ! इस बात में तो मुझको संशय हो गया है कि पिता जी कैसे अधिकारी थे । सम्पत्ति-निर्माण मे तो शिव उनका सहायक रहा है । अतः शिव भी उस सम्पत्ति को वितरण करने का उतना ही अधिकारी है जितना लाला जी थे । साथ ही सम्पत्ति तो ईश्वर की देन है । यह किसीके एकाधिकार मे मान लेना तो ठीक नहीं ।"

गौरी हंस पडी । वह जानती थी कि युक्ति करने मे उसके पति सदा दुर्बल रहे हैं । एक समय था कि वे घूस लेने को उचित समझते थे और सदैव अपने इस व्यवहार को सिद्ध करने मे युक्ति दिया करते थे । उनका कथन होता था—'इस मुकदमा करने वाले ने भी तो बेईमानी से धन कमाया है । अत. बेईमानी की

कमाई को बेईमानी से लेने मे क्या हानि हो सकती है ? लाभ तो होता ही है।' गौरी ने बहुत यत्न से समझाया था कि पाप एव पुण्य अपनी-अपनी करनी के फल होते है। किसी दूसरे का पाप अपने पाप के औचित्य को सिद्ध नहीं कर सकता। उपरान्त गोवर्धनलाल ने घूस लेना त्याग दिया। साथ ही लोगों के उचित कार्य करने भी त्याग दिए। इसमे वह युक्ति यह करता था कि वह इस कार्य के हेतु नियुक्त नही। इस समय भी गौरी ने उसकी युक्ति के मिथ्यात्व को समझाया था। गौरी का कथन था—"मानव-जन्म ही नेक एव भले कार्य करने के हेतु हुआ है। जब हमको विश्वास हो जाए कि अमुक कार्य ठीक है तो उसको करना ही चाहिए। शासन से पूर्व परमात्मा ने हमको नेक कार्य करने के हेतु नियुक्त किया है।" वह इसमे प्रमाण भी दे देती थी। वह कहती थी :

सह यज्ञ· सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापति· ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्ट कामधुक् ॥[१]

यदि परमात्मा द्वारा नियुक्त कार्य को करते हुए यह मनुष्यकृत नौकरी चली जाए तो क्या हानि है ?"

इस प्रकार गौरी जानती थी कि उसका पति युक्ति ठीक नही कर सकता। अत: उसने पूर्ववत् उसको समझाना आरम्भ कर दिया। उसने कहा, "स्वामिन्, भगवान ने यह धन-सम्पदा पिता जी को दी थी। इससे यही प्रतीत होता है कि उसने उनको इसके वितरण का अधिकार भी दिया था। देखने की बात तो केवल यह है कि क्या पिता जी ने परमात्मा का आदेश कि उसके द्वारा दी गई सम्पत्ति को प्रथम यज्ञरूप में एवं उपरान्त अपने प्रयोग मे लिया है अथवा नही। भगवान का आदेश तो यह है·

यज्ञशिष्टाशिन सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषै ।
भुञ्जते ते त्वघ पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥"[२]

"परन्तु देवी! कैसे पता चले कि लाला जी का दूसरा इच्छापत्र पहले से

---

१. परमात्मा ने सृष्टि की रचना करते समय प्रजा एव यज्ञ का साथ-साथ निर्माण किया था। परमात्मा का प्रजा के लिए आदेश था कि वे इस यज्ञ द्वारा ही वृद्धि को प्राप्त होवें एवं यज्ञ उनकी कामनाओं का पूर्ण करनेवाला हो।

२. जो व्यक्ति अपनी कमाई को यज्ञ-कार्य में व्यय कर देता है और यज्ञ-कार्य से बचे हुए को ही अपने प्रयोग में लाता है वह सब पापों से मुक्त होता है।

अधिक यज्ञरूप हो ?"

"मैं तो यह कह रही हू कि लाला जी की कमाई है। वह उनकी रुचि के अनुसार ही व्यय होनी चाहिए। इसपर भी यदि उनकी रुचि मे हमको कोई अनौचित्य प्रतीत हुआ तो हम उस अनौचित्य से लाभ उठाने वाले को समझा सकते है कि उसको वह लाभ भगवद् अर्पण कर देना चाहिए। हम लाला जी के निश्चय मे हस्तक्षेप कर, भला कैसे उनके पाप-पुण्य मे भागीदार बन सकते हैं ?"

गोवर्धनलाल को बात समझ आ गई। उसमे यह गुण तो था कि जब कोई बात वह समझ जाता था तो फिर वह मानता भी था। अत. अगले दिन वह रजिस्ट्रार के कार्यालय मे गया और पेशकार से कहकर लाला सुलक्षणमल के इच्छापत्र की खोज करवा उसकी प्रमाणित लिपि ले आया। इस इच्छापत्र को पढकर तो वह चकित रह गया। उसको समझ आ गया कि लाला सुलक्षणमल, जो एक अक्षर भी अग्रेजी का नही पढे थे तथा जिन्होंने एक दिन भी किसी स्कूल-पाठशाला मे जाकर शिक्षा ग्रहण नही की थी, बडे-बडे पढे-लिखो से अधिक न्याय-बुद्धि रखते थे। उन्होने अपने इस इच्छापत्र मे लिखा था :

"मै दिल्ली मे सर्वथा अकिंचन के रूप मे, दस वर्ष की आयु मे आया था। मैने, सात रुपये मासिक वेतनभोगी से, उन्नति की ओर अग्रसर हो, यह पूर्ण सम्पत्ति अर्जित की है। जब मै पैंतीस वर्ष का था तो शिव भी मेरे साथ कार्य मे सहयोग देने लगा था। यद्यपि मै अपनी एव शिवकुमार की योग्यता मे तुलना नही कर सकता, इसपर भी मोटे तौर पर हम दोनों का इस सम्पत्ति के अर्जन में भाग, उस समय से तो लगाया ही जा सकता है जो हम दोनो ने इसमे व्यय किया है। मैंने इसमें सत्तर वर्ष तक परिश्रम किया है और उसने पैंतालीस वर्ष तक। अतः इस काल के अनुपात मे ही मेरा और उसका सम्पत्ति मे भाग है। प्रति सौ रुपये मे मेरा भाग साठ रुपये है और शिवकुमार का चालीस रुपये।

"अत: मै चाहता हू कि मेरा दामाद लाला गोवर्धनलाल मेरी सम्पत्ति का संरक्षक बने एव इसका चालीस प्रतिशत शिवकुमार को देकर शेष का निम्न रूप में वितरण करे—

"मेरे साठ प्रतिशत मे से मेरी पत्नी कर्मदेवी को पांच प्रतिशत दिया जाए। मेरी लड़की सदारानी को दो प्रतिशत, और मेरी शेष तीनों लड़कियों को दो-दो प्रतिशत।

" मेरा लडका महेश भी चार वर्ष से मेरे साथ कार्य करता रहा है । मै चाहता हू कि उसको मेरी सम्पत्ति का तीन प्रतिशत मिले एव चार प्रतिशत गोवर्धन-लाल को इस कार्य के हेतु मिले जो मेरे इच्छापत्र के अनुसार मेरी सम्पत्ति का वितरण कराए, शेष चालीस प्रतिशत से दिल्ली के किसी ऐसे मुहल्ले मे, जो अति निर्धनों का हो, एक सत्यनारायण का मन्दिर निर्माण करवा, उसकी रक्षा का प्रवन्ध करे । सम्पत्ति की सूची इच्छापत्र के साथ परिशिष्ट मे दी गई है । "

जब गोवर्धनलाल ने यह इच्छापत्र गौरी को सुनाया तो उसने पूछा, "अब क्या करेंगे ?"

"मेरे मन का सशय निवारण हो गया हैं। मै समझता था कि पिता जी ने अपना सचित धन न जाने किन-किन अनधिकारियो में विभक्त किया होगा।"

"मुझको उनकी धर्म-बुद्धि पर विश्वास था। परन्तु अब आप क्या करेंगे ?"

"मैं कल ही सबजज साहब के न्यायालय मे एक याचना करने वाला हू कि शिवकुमार द्वारा उपस्थित किया गया इच्छापत्र असली नही है। असली इच्छापत्र वह है जो नियमपूर्वक रजिस्टर्ड कराया गया है और उसके अनुसार मुझको सम्पत्ति का आदाता (रिसीवर) नियुक्त किया जाए।"

यह किया गया और इसने शिवकुमार के पूर्ण षड्यन्त्र पर बम्ब गिरा दिया।

सबजज के न्यायालय से एक दूसरा नोटिस जारी हुआ और उसमें परिवार के सदस्यो से इस नये इच्छापत्र पर भी अनुमति मागी गई। यह नोटिस जब शिवकुमार के पास पहुचा तो वह इस नये इच्छापत्र की प्रतिलिपि लेने न्यायालय में जा पहुचा। इस इच्छापत्र को पढ, उसके पांव तले से मिट्टी निकल गई।

वह सीधा गोवर्धनलाल के गृह पर जा पहुंचा एवं अपनी बहिन गौरी के समक्ष अपने जीजा से पूछने लगा, "जीजा जी ! आपने यह क्या कर दिया है ?"

"क्या कर दिया है ?"

"मुझको झूठा सिद्ध करने का यत्न किया है।"

"मैंने ऐसी कोई बात नही की। मैंने प्रार्थना की है कि वह इच्छापत्र जो तुम्हारे पक्ष में जाता है, वह वास्तविक नही। वास्तविक वह है जो मैंने दाखिल किया है।"

"यही तो कह रहा हूं कि आपके विचार से वह नकली है। मैंने बनवाया है ?"

"इसका अर्थ यह नहीं निकलता। यह भी सम्भव है कि तुम्हारे वाला इच्छा-पत्र पूर्व का लिखा हो और रजिस्टर्ड पीछे वाला हो।"

"जी नही। यह रजिस्टर्ड पूर्व का है एव यह तो उन्होने देहावसान से एक सप्ताह पूर्व अपने रुग्णागार में बैठ लिखाया था। इसके साक्षी है। इसका लिखने वाला भी है।"

इस रहस्योद्घाटन से तो गोवर्धनलाल भौचक्का हो, मुख देखता रह गया। कुछ देर विचारकर उसने कहा, "तो ठीक है। शिवकुमार, तुम वे सब प्रमाण न्यायालय मे उपस्थित करना। मुझको तुम्हारे यह सिद्ध करने पर कोई नाराजगी नही होगी।"

"मै यह कहने आया हू कि आप मेरे वकील के कहे अनुसार अपने बयान दे दे। आपका और गौरी का वह भाग, जो रजिस्टर्ड इच्छापत्र के अनुसार बनेगा, मै दे दूगा। नही तो यह मुकदमा चलेगा और कदाचित् कई वर्ष तक चलेगा।"

"देखो शिवकुमार! मैं इसमे से कुछ भी ग्रहण नही करना चाहता। मै बयान तो वही दूगा जो सत्य है। शेष रही बात मुकदमे की, मुझको कुछ भी अफसोस नही होगा यदि तुम जीत जाओगे। एक बात और बता दू। यदि यह मन्दिर बनवाने की इच्छा लाला जी की न होती तो मै तुम्हारी बात स्वीकार कर लेता।"

"कितना रुपया मन्दिर के हेतु चाहते हो?"

"जितना इच्छापत्र के अनुसार बनता है। मै सम्पत्ति का मूल्य नहीं जानता। तुमको मुझसे अधिक ज्ञात होना चाहिए।"

"उसको छोडो। मैं एक लाख रुपया सत्यनारायण के मन्दिर के लिए दे दूगा। मै मुकदमे से बचना चाहता हू।"

"इस तरह नही। तुम सम्पूर्ण सम्पत्ति की सूची एवं मूल्य लगाकर ले आओ। उसका चालीस प्रतिशत मन्दिर के लिए दे जाओ तो मै लाला जी की सम्पत्ति का आदाता नही बनूंगा। अभी न्यायालय में उपस्थित होने को दस दिन शेष है। तुम इतने दिन मन में सोच लो। पांच-छः दिन में अपनी इच्छा को व्यक्त कर जाना।"

"देखो बहिन गौरी! भाई-बहिन में मुकदमेबाजी ठीक नही होगी। साथ ही मैं आपका दिवाला निकला दूगा। मुझको तो कुछ पता भी नही चलेगा। यदि मेरा कहा मानो तो तुम्हारा एव जीजा जी महाराज का भाग घर बैठे मिल सकता है।" इतना कह शिवकुमार चला गया। उसके चले जाने के उपरान्त गौरी ने

मुस्कराते हुए पूछा, "अब क्या करना चाहिए ?"

"देखो देवी ! बिना मुकदमे के एक लाख मन्दिर के लिए और दो प्रतिशत तुमको तथा चार प्रतिशत मुझको अर्थात् हम दोनों को सम्पूर्ण सम्पत्ति का छः प्रतिशत मिल जाएगा। मेरा अनुमान है कि दो-अढाई लाख के लगभग हो जाएगा। यदि तुम कहो तो मैं शिवकुमार की बात मान जाता हू और रुपया लेकर कल ही नौकरी छोड, हरिद्वार चलकर अपने पापो के प्रायश्चित्त के हेतु जप-ध्यान करना आरम्भ कर दू।"

गौरी समझ रही थी कि उसका पति पुनः अपने कर्तव्य से च्युत होने जा रहा है। उसने पुन उससे युक्ति करनी आरम्भ कर दी। गौरी का कथन था, "मैं सोचती हू कि सत्य क्या है, पहले इसका निश्चय होना चाहिए। यदि शिवकुमार के कहे अनुसार उस द्वारा उपस्थित इच्छापत्र ठीक है तो हमको मान जाना चाहिए।"

"देखो गौरी ! शिवकुमार झूठा है। वह कह गया है कि लाला जी ने यह इच्छापत्र देहावसान से एक सप्ताह पूर्व लिखा है, परन्तु मैं जानता हू कि मरने से एक दिन पूर्व उन्होंने कहा था कि उनका इच्छापत्र रजिस्टर्ड हो चुका है। मुझको उन्होंने यह बात इस कारण बताई प्रतीत होती है कि मै उस इच्छापत्र में आदाता नियुक्त किया गया था। मुझको विश्वास है कि वह दो-अढाई लाख की सम्पत्ति मुझको और तुमको मुफ्त मे नही दे रहा। अवश्य वह बेईमान है एव पूर्ण सम्पत्ति हज़म करने के लिए हमको यह घूस दी जा रही है। परन्तु मैं तो यह कहता हूं कि हम शिवकुमार से मुकदमा लड़ सकेंगे क्या ?"

"हम एक बात कर सकते है। वह यह कि हमें घूस लेनी नहीं। यह हमने अपने देवता के समक्ष प्रण किया हुआ है। हमें अपनी बात न्यायालय में सत्य-सत्य कह देनी है। हमारे पास रुपया है नहीं, इस कारण हम व्यय करेंगे नही। स्वय उपस्थित होकर अपनी बात कह देंगे। इसपर भी निर्णय यदि असत्य के पक्ष में होता है तो पाप हमारे सिर पर नही होगा।"

गोवर्धन हंस पडा। हसते हुए उसने कहा, "मै न्यायालय में प्रतिदिन सत्य को असत्य होते देखता हू। किसका पाप किसको लगता है !"

"आज आप धन के लोभ में उल्टी युक्तियां करने लगे हैं। मै समझती हू कि कल पूजा के उपरान्त बात करेंगे।"

३

दो दिन तक शिवकुमार गोवर्धन के आने की प्रतीक्षा करता रहा। उसने सब नकद रुपया, और जितना बैक से निकाला जा सकता था निकालकर, अपने नाम कर लिया था। अपने पिता के काल में भी वह अपने पिता के साथ बैंक के खातो का सयुक्त चालक (ओपरेटर) था। इस कारण रुपया निकालने मे कठिनाई उत्पन्न नही हुई। इस प्रकार थोडा-सा रुपया जो सुलक्षणमल के निजी खाते मे था वह नही निकाला जा सका, न ही वह स्थावर सम्पत्ति को परिवर्तित कर सका। शेष सब धन उसने इन दो दिनो में अपने नाम कर लिया। अभी वह इस प्रबन्ध में लीन ही था कि पुलिस उसकी सम्पत्ति मुहरबन्द करने आ गई। गोवर्धनलाल ने न्यायालय मे यह प्रार्थना कर दी थी कि लाला सुलक्षणमल की सम्पत्ति का झगड़ा पड़ गया है। दो इच्छापत्र न्यायालय में दिए गए है। एक उसने दिया है जो सपत्ति का आदाता है एव दूसरा वह है जो बैंक के खातों का चालक है। इससे वह सम्पत्ति का दुर्विनियोग (मिस-ऐप्रोप्रिएशन) कर सकता है। अत. निर्णय तक कि कौन-सा इच्छापत्र उचित है, पूर्ण सम्पत्ति एव कारोबार को तुरन्त मुहरबन्द कर दिया जाए।

गोवर्धनलाल बिना वकील के स्वय ही वहा उपस्थित हुआ था और उसने इसमे न्यायालय के पूर्व-निर्णय बताए तो आज्ञा जारी हो गई और वह पुलिस को लेकर मुहरबन्द कराने पहुच गया। उसने न्यायालय की आज्ञा समाचार-पत्रो में छपवा दी, सब बैंकों को भिजवा दी एवं दुकान के बाहर लगवा दी।

एक दिन की देरी इस कारण लगी कि पुलिस बिना कुछ लिए-दिए जाना नही चाहती थी और गोवर्धनलाल ने स्पष्ट कह दिया था कि उसके पास देने को कुछ नही है। पुलिस उससे डरती भी थी, वह डिप्टी कमिश्नर के कार्यालय का क्लर्क था, और लोभ मे भी फसी हुई थी। उसको समझाते और तैयार करते हुए एक दिन लग ही गया। इस काल मे गोवर्धनलाल ने समाचार-पत्रों में छपवा दिया और बैंक को नोटिस दिलवा दिया। इसमें सम्पत्ति को कुछ हानि तो हुई, परन्तु बिना एक भी पैसा व्यय किए काम बन गया। गोवर्धनलाल को घूस लेना छोड़े हुए दस वर्ष व्यतीत हो चुके थे। इसी कारण उसकी आर्थिक स्थिति मुकदमे पर एक पैसा भी व्यय करने की न था। समय भी वह अपने अधिकारियों की मिन्नत-खुशामद कर इसके लिए निकाल सका था।

जब पुलिस दुकान पर पहुंची तो शिवकुमार ने पल्ला झाड़कर दुकान छोड़ दी। वास्तव मे वह इसी प्रकार की आशा कर रहा था।

उसी दिन रात के समय उसने अपने शेष भाइयो तथा बहिनो को बुला लिया था। इस गोष्ठी मे उसने अपनी मा एवं सदारानी को भी बुला लिया। उसने सबके सामने गोवर्धनलाल की करतूत, कि उसने दुकान को ताला लगवा दिया है, बता दी और कहा, "मैं चाहता हू कि उसको परिवार के सदस्य समझावे कि मुकदमा वापस ले ले, नही तो परिवार नष्ट हो जाएगा।"

सबको डबल नोटिस आया हुआ था एव राम तथा गोपाल के अतिरिक्त कोई भी इस झगड़े मे रुचि न रखने के कारण, दोनों इच्छापत्रों मे अन्तर को नही समझता था। इस कारण दुकान के मुहरबन्द हो जाने की बात को राम और गोपाल के अतिरिक्त किसीने पसन्द नही किया।

मां कर्मदेवी ने कहा, "शिव ! गोवर्धन एव गौरी को भी बुला लेते तो मैं उनको समझा देती। गौरी तो सदैव मेरा कहा मान लेती है।"

"मैंने उनको आने का सन्देश भेजा था और उनका उत्तर आया है कि अब तो न्यायालय में मिलेगे।"

"ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी पुरानी लेन-देन की प्रवृत्ति पुनः जागृत हो उठी है।"

राम और गोपाल अभी तक चुप एवं शान्त बैठे थे। वे शिव की बातें सुन, मुस्करा रहे थे। अब विष्णुदेवी, सबसे बड़ी बहिन, ने कहा, "कम से कम हम सबको उनसे बोलना-चालना बन्द कर देना चाहिए।"

राम बोल उठा, "बहिन, जानती हो गोवर्धन ने क्या दावा किया है ?"

"मैंने वह नोटिस, जो पीछे आया है, तुम्हारे जीजा जी से पढ़ाया था। उसमें तो यह लिखा है कि वह इच्छापत्र जो शिवकुमार ने दाखिल किया है, सत्य नही। वास्तविक इच्छापत्र वह है जो उसने दिया है।"

"और उन दोनों में क्या लिखा है अथवा उसमें से किस-किसको क्या प्राप्त होने वाला है, यह भी जाना है अथवा नहीं।"

"बात यह है कि हम लडकियों को न तो कुछ लेने की लालसा है और न ही हमको कुछ आशा है। इससे प्रतिलिपि लेने में समय और धन व्यर्थ गंवाने की इच्छा नही। मैं तो यह विचार कर रही थी कि शिव भैया को अपना स्थानापन्न

पत्र (प्रौक्सी) दे दू, जिससे मुझको वहां जाने से अवकाश मिल जाए।"

"वह तुम मुझको दे देना। मै ले जाऊगा। मै तो प्रतिदिन न्यायालय में जाता ही हू।" राम ने कह दिया।

"तुम लिख लाना, मै हस्ताक्षर कर दूंगी।"

"और तुम क्या चाहती हो लक्ष्मी बहिन ?" राम ने दूसरी बहिन से पूछ लिया।

लक्ष्मी ने उत्तर दिया,"तुम्हारे जीजा जी को मैने नोटिस दिखाया था। उन्होंने कहा था कि एक दिन गोवर्धन जी से मिलकर पता करेगे कि मामला क्या है! वे बे-मतलब बात तो करने वाले नही है।"

"तो बहिन! मै मतलब समझा देता हूं। क्यो शिव भैया, कहो तो इन सबको समझा दू।"

शिव ने राम की नीयत में गड़बड़ देखी तो कह दिया, "इच्छापत्र में कुछ भी लिखा हो। मैं एक बात पूछता हूं कि जब तक पिता जी जीवित थे, अपने सब परिवार को संतुष्ट रखते थे। वे सदैव मेरी इच्छानुसार ही सब लेते-देते थे। अगर मैं उनके पीछे कारोबार को सम्हालूगा तो उनकी भांति ही मैं भी उस प्रकार लेता-देता रहूगा। यह गोवर्धन स्वय आदाता बनना चाहता है। भला यह पापकर्म कि पिता का श्राद्ध लड़की एव दामाद करे, कहां तक उचित है?"

राम और गोपाल हंस पड़े। हसकर वे चुप रहे। शिवकुमार ने राम को सम्बोधन कर कहा, "तुम क्या आशा करते हो गोवर्धन से ?"

गोपाल ने कहा, "भैया, पिता की बात पिता के साथ गई। अब तो हम तुमसे पूछते है कि तुम क्या देने वाले हो हमको ?"

"पिता जी ने एक बात मुझको लिखकर दे रखी है। उसमे उन्होंने लिखाया था कि प्रत्येक लड़के के लड़के तथा पोते के विवाह पर पांच-पांच हजार रुपया दुकान से दे दिया जाया करे तथा लड़की के विवाह पर दस हज़ार रुपया। इसी प्रकार प्रत्येक लड़की के लड़के के विवाह पर तीन-तीन हजार रुपया एव उनकी लड़की के विवाह पर छः-छः हज़ार रुपया।"

"यह बात उन्होंने अपने इच्छापत्र मे क्यों नही लिख दी ?" राम ने पूछ लिया। "साथ ही यह तो बहुत कम है। मैं भी वैसे ही पिता का पुत्र हूं जैसे तुम हो। पिता जी मुझको कुछ भी नही दे गए। मेरे लड़कों एवं पोतों की चिन्ता तो उनको हो गई, पर मेरी क्यो नहीं हुई ?"

"यह तो पिता जी से जाकर पूछ लेना कि वे क्यों क्या कर गए और क्यों क्या नही कर गए।"

"देखो दादा ! मैने दोनों इच्छापत्र पढे है। उनमे कौन ठीक है और कौन गलत है, यह तो न्यायालय निर्णय करेगा। मगर तुम यदि हमको चौथा भाग देना चाहो तो बात करो, मै अभी गौरी को बुलाकर, निर्णय घर पर करा सकता हूं।"

गोपाल ने कह दिया, "दादा ! हमको किसलिए बुलाया है ?"

"मै यह चाहता हू कि हम सब गौरी बहिन को समझावे और आप सब कुछ ले-देकर उसको घर मे ही निर्णय करने पर राजी कर ले।"

"यह निर्णय हो सकता है। मैं अभी-अभी गोवर्धन जीजा से मिलकर आया हूं। उनसे उपस्थित इच्छापत्र आप स्वीकार कर ले तो बात बन सकती है।"

इसपर राम ने कह दिया, "मै तो दोनो इच्छापत्रो को असत्य मानता हू। दादा वाले इच्छापत्र मे सब कुछ दादा को मिल गया और गोवर्धन जीजा जी वाले इच्छापत्र में सब कुछ ठाकुर जी के हेतु है।"

"ठाकुर जी ?" माता कर्मदेवी के कान खडे हो गए, "कौन ठाकुर जी ?"

गोपाल ने बताया, "मा ! गोवर्धन जी वाले इच्छापत्र मे लिखा है कि रुपये मे छ: आने के लगभग शिव दादा को मिले। छ: आने एक सत्यनारायण के मन्दिर-निर्माण करवाने मे व्यय हो और शेष चार आना उनके लड़कों एव लड़कियो में विभक्त कर दिया जाए। और शिव दादा वाले इच्छापत्र मे तो सब कुछ शिव दादा के लिए है। न मन्दिर, न मस्जिद, न दूसरे बहिन-भाई है।"

"शिव !" मां ने कह दिया, "बेटा, मान जाओ न ! किसी भले कार्य के लिए ही तो कह रहे है।"

इसपर राम ने कह दिया, "पर मा, हम तो उसकी सहायता करेंगे जो हमको पूरा-पूरा भाग देगा। मैं तो कहता हू कि दोनो असत्य है। पिता जी ने किसी प्रकार का कोई इच्छापत्र नही लिख रखा।"

"देखो राम ! तुम्हारे पिता ने क्या कर रखा है और क्या नहीं कर रखा, इसको छोड़ो। मै तो यह कहती हू कि सबको कुछ न कुछ तो मिलेगा ही। क्यों महेश ! तुमको क्या मिलेगा ?"

"दादा तो मुझको दुकान पर नौकर रखने का आश्वासन दे रहे है और जीजा गोवर्धन जी मुझको लगभग डेढ लाख दिलवा रहे हैं।"

"महेश ! तुम क्या चाहते हो ?"

"मुझको तो पिता जी से कुछ भी आशा नहीं थी। वे मुझसे सदा रुष्ट रहते थे। यह नौकरी देकर भी मेरे बच्चों पर दया ही कर रहे थे, शिव दादा ने यही कुछ देने का आश्वासन दिया था। गोवर्धन दादा ने डेढ लाख का आश्वासन दिया है और राम ने मुझको सात लाख दिलवाने का वचन दिया है। जो कोई भी जीत जाए मुझको तो लेना ही लेना है। मै मुकदमा करने की सामर्थ्य नही रखता।"

इसपर मा ने कह दिया, "न्यायालय का निर्णय हमारे हाथ मे तो है नही। हा शिव, घर में फैसला कर लो। तुम मुझको गौरी के घर ले चलो; मै निर्णय करवा दूगी।"

राम ने पूछ लिया, "पर दादा और जीजा जी मान जाएगे क्या ?"

"बताओ शिव ?"

"जो तुम सब लोग कहोगे मै वह मान जाऊगा।"

अब मा ने लडकियों को सम्बोधन कर पूछ लिया, "क्यो विष्णी, लक्ष्मी और सदा, तुम क्या कहती हो ?"

"मा ! यदि तुम निर्णय कराती हो तो जो तुम कहोगी हमको वही स्वीकार है। हमने तो बताया है न ! न कुछ पाने की आशा थी, न ही लालसा।"

"तुम बताओ गोपाल !" मा ने पूछ लिया।

"देखो मां ! सत्य क्या है, मै नही जानता। परन्तु मैं जानता हू कि न्यायालय में क्या होने वाला है। गोवर्धन जीजा जीत जाएगे। उसमे एक दुर्बलता है। वह उतना बडा वकील नहीं कर सकता जितना बड़ा शिव कर लेगा। मगर वह कल न्यायालय में आया था। उसने अपना मुकदमा स्वयं पेश किया है और जहां तक मुझको समझ आया है, वह जीत जाएगा। इसलिए मेरी तो यही राय है कि शिव दादा को उसकी बात मान जानी चाहिए।"

"मैं नही मानूगा।" राम ने कह दिया।

"ठीक है। तुम झगड़ा कर लेना। तुम्हारी बात तो पहले ही दिन रद्द हो जाएगी।"

"राम, मान जाओ। देखो मैं भी तो अन्तकाल पर ही हू। मैं अपने भाग की सम्पत्ति तुम्हारे नाम लिख दूगी।"

राम तो जरा धमकाकर ही अधिक से अधिक प्राप्त करना चाहता था। इससे वह माना तो नहीं। इसपर भी घर में निर्णय के लिए वह भी कहने लगा। उसने कह दिया,

"मां ! तुम यत्न करो कि अधिक से अधिक इस गरीब पुत्र को दिलवा सको ।"

"राम ! तुम मुझसे कल प्रातःकाल मिलना ।" शिव ने कह दिया ।

गोपाल हसते हुए बोला, "राम ! तुम दादा के वकील बन जाओ । इनसे फीस निश्चय कर अग्रिम ले लो । मुकदमा तो शिव हारेगा । इससे जो कुछ गोवर्धन से तुमको मिलना है वह तो मिलेगा ही, साथ ही शिव का मुकदमा लड़ने की फीस भी मिल जाएगी ।"

"क्यों दादा, हो तैयार ?"

"मेरे पास मुकदमा लडने के लिए कुछ भी नहीं है । इसलिए तुम जैसे थर्डरेट के वकील को मै नही करूगा ।"

"तो फिर कल किसलिए मिलू ?"

"गोवर्धन से बातचीत करने के लिए मै कुछ मसाला दूगा ।"

"पर मा, मुझको साथ ले चलेगी तब न ।"

"तुम चले चलना । मै भी तो चलूगा ।"

४

गोवर्धनलाल को गोपाल बता आया था कि शिवकुमार ने पारिवारिक गोष्ठी का आयोजन किया है । जब शिव ने गोवर्धनलाल तथा अपनी बहिन गौरी को उस गोष्ठी में आमन्त्रित नहीं किया तो वह समझ गया कि परिवार वालों को भड़काने के हेतु ही उसने यह यत्न किया है । अतः वह उस प्रयत्न की दिशा एवं परिणाम जानने के लिए माता कर्मदेवी के घर पहुच गया । उस समय वह गोष्ठी में गई हुई थी । वह उसके लौटने की प्रतीक्षा में वहीं ठहर गया ।

कर्मदेवी एव सदारानी इकट्ठी लौटी । कर्मदेवी वृद्धावस्था के कारण रात के समय चलने-फिरने में कठिनाई अनुभव करती थी और सदारानी उसको हाथ पकड़कर लाई थी । वहां गोवर्धनलाल को बैठा देख दोनों को प्रसन्नता हुई । मां ने कह दिया, "बेटा, तुम आ गए हो, बहुत अच्छा किया है । घर में झगड़ा शोभनीय नहीं है । यही मैं शिव को कह रही थी । यही तुमको कहती हूं ।"

"माता जी !" गोवर्धनलाल ने मां तथा बहिन को बैठाते हुए और स्वय बैठते हुए कहा, "मैं तो उसी दिन भेंट करने वाला था जिस दिन न्यायालय का प्रथम

नोटिस प्राप्त हुआ था, परन्तु मुझको कुछ बाते विदित थी, जिनको समय से पूर्व मैं प्रकट नही करना चाहता था। उनके प्रकट हो जाने से अधिक गड़बड़ की जा सकती थी। यू तो मुझे विश्वास है कि अभी भी पर्याप्त गडबड की गई है। परन्तु दो-तीन दिन पूर्व इस वास्तविक इच्छापत्र के विषय मे बात फैलने पर तो लाखों इधर से उधर कर दिए जाते। आज जब रुपया खुर्दबुर्द करने पर प्रतिबन्ध लग गया है, तब मै आया हू।"

"पर वह इच्छापत्र, जो तुमने उपस्थित किया है, सच्चा है ?"

"हां मां ! वह न्यायालय मे 'रजिस्टर्ड' हो चुका है।"

"मगर शिव का कथन है कि उस वाला पीछे लिखा गया है।"

"माता जी, यह असत्य है। यदि उसको इसका निर्णय करना है तो न्यायालय में हो जाएगा और मा, जिस दिन यह फैसला हुआ कि वह इच्छापत्र शिवकुमार ने स्वय ही लाला जी के देहावसान के उपरान्त लिखा है तो इस छलना के लिए, जो वह कर रहा है, उसको पांच वर्ष का कठोर दण्ड भी मिलेगा।"

"परन्तु बेटा, न्यायालय मे क्या सत्य-सत्य निर्णय होता है ?"

"परन्तु और किसी अन्य का निर्णय वह स्वीकार भी नहीं करेगा। जिसकी बात उसको मान्य हो, मै उसके समक्ष यह सिद्ध कर दूगा कि उस वाला इच्छापत्र नकली है।"

"वह मेरी बात मान जाएगा।"

"तो माता जी ! गाय माता पर हाथ धरकर वह कह दे कि उसका इच्छा-पत्र लाला जी के जीवनकाल एव उनके सज्ञान अवस्था मे लिखा गया है, तो मै मान जाऊंगा।"

मा चुप कर गई। उसका कथन था, "कल प्रातःकाल तुम और गौरी यहां आ जाना। मैं चाहती हूं कि निर्णय घर में हो जाए।"

"माता जी !" गोवर्धनलाल ने कह दिया, "जब यह बात निश्चय हो जाए कि लाला जी की वास्तविक इच्छा क्या थी तो उसमें हेर-फेर करना तो भारी पाप हो जाएगा और साथ ही जब वे न्याय-बुद्धि से कार्य ले रहे है। शिवकुमार को उसका उचित भाग दिया गया है। उन्होने जितने दिन पिता जी के साथ काम किया है उन दिनों की गिनती कर सम्पत्ति में उसका भाग आंककर दिया है।

"केवल एक बात उन्होंने विलक्षण की है। वह यह कि लगभग दो लाख

रुपया मुझको दे दिया है। यह अपने अन्य दामादों को नही दिया। उन्होने लिखा है कि यह मेरे आदाता बनने के प्रतिकार में है। मै यह अपने परिश्रम से अधिक समझता हू, अत यदि इसको दे देने से कोई मानता हो तो मै अपना भाग सहर्ष दे दूगा, परन्तु माता जी, मै किसी दूसरे के भाग मे एक पाई का भी हेर-फेर स्वीकार नही करूंगा।"

"तुम प्रात. आ जाना। गौरी को भी लेते आना। मै तुम्हारे घर पर आने वाली थी, परन्तु अब तुम आ गए हो तो मुझको लडकी के घर की यात्रा मत कराओ।"

अगले दिन गोवर्धन एवं गौरी सात बजे माता कर्मदेवी के घर आ गए। शिव और राम भी आ गए। महेश और लाला जी के अन्य लडके-लडकियो को भी वहा ही बुला लिया गया।

शिवकुमार राम को भडकाकर लडने के लिए तैयार कर लाया था। शिव-कुमार ने राम को कहा था कि मुकदमा उसको करना चाहिए। वह न्यायालय मे अपने पिता जी के हस्ताक्षर पहचान ले और कह दे कि वह इच्छापत्र उसके सुझाव से लिखा गया है। ऐसा कहने एवं करने पर वह उसको पांच प्रतिशत के बराबर भाग देगा।

राम अधिक पाने का इच्छुक था, परन्तु बात पांच प्रतिशत से पांच लाख पर निर्णय हुई।

राम ने इसको तब माना जब शिव ने उसको मुकदमे के व्यय के हेतु पांच हजार तुरन्त देने का वचन दिया। वे वहां आए और परिवार के अन्य लोग एक-त्रित हो गए तो कर्मदेवी ने सबके सम्मुख कह दिया कि घर में झगड़ा करना ठीक नहीं। अब दोनो इच्छापत्रो के विषय मे घर पर ही बातचीत कर लो। बताओ शिव क्या कहते हो?

"मां! जीजा जी वाला इच्छापत्र पुरातन है। मेरे वाला तो लाला जी ने मृत्यु के केवल एक सप्ताह पूर्व लिखा था। यह नियम है कि दूसरा इच्छापत्र लिखने पर पहला रद्द हो जाता है।"

"क्यो गोवर्धनलाल! तुम क्या कहते हो?"

"मेरा यह कहना है कि भैया शिव वाला इच्छापत्र जाली है। उसपर हस्ताक्षर लाला जी के नहीं हैं। वह उनकी मृत्यु के उपरान्त लिखा हुआ है।

" न्यायालय मे तो मै इसके जाली होने के प्रमाण उपस्थित कर दूगा । यहां मै वह सब कुछ नही करना चाहता । यहा तो मेरा यह कथन है कि शिव दादा गौ माता की सौगन्ध खाकर कह दे कि जो कुछ भी वे इच्छापत्र के विषय में आज कह रहे है वह सत्य है, तो मै मुकदमा नही लड़ूगा ।"

सब उपस्थित जन स्तब्ध बैठे रह गए। वे उत्सुकता से शिवकुमार के मुख पर देखने लगे । शिवकुमार की आखे भूमि की ओर झुकी हुई थी । जब शिवकुमार ने कुछ उत्तर नही दिया तो राम ने उसके स्थान पर उत्तर दे दिया । उसने कहा, "मा ! इतनी बड़ी सौगन्ध डालकर गोवर्धनलाल 'ब्लेक मेलिग' करना चाहता है ।"

"वह क्या होता है, राम ?"

"ब्लेक मेलिग का अर्थ है डरा-धमकाकर अपनी बात स्वीकार करवा लेना । मै कहता हू कि वह इच्छापत्र असली है एवं जीजा जी वाला रद्द किया हुआ है ।"

मा ने कहा, "राम, तुम्हारी भी बारी आएगी । प्रथम मुख्य व्यक्ति से बात हो जाए । देखो शिव, यदि जो कुछ तुम्हारा कथन है वह सत्य पर आधारित है तो इस सौगन्ध से तुम्हारे सिर पाप नही लगेगा, बल्कि तुम पुण्य के भागी होगे । बताओ तैयार हो इस सौगन्ध के लिए ?"

"नही मा !" शिव ने अभी भी आंखे नीचे किए हुए कह दिया, "मै यह सौगन्ध नहीं खा सकता । मुझको जीजा जी वाला इच्छापत्र स्वीकार है ।"

"तो फिर न्यायालय में प्रार्थनापत्र दे दो कि तुमको इस रजिस्टर्ड प्रलेख का ज्ञान नही था और तुम्हारे वाला प्रलेख लाला जी के पत्रों में पडा प्राप्त हुआ था । तुम नही जानते थे कि वह रद्द किया हुआ लेख है ।" गोवर्धनलाल ने शिवकुमार को असत्य साक्ष्य देने से निकलने का मार्ग सुझा दिया ।

शिवकुमार ने कहा, "मै यह नियत तिथि से पूर्व कर दूगा ।"

"और सम्पत्ति का प्रबन्ध करने के लिए यद्यपि मै नियुक्त हू, परन्तु तुम चाहो तो मैं तुम एवं गोपाल से मिलकर काम करने के लिए स्वीकार करता हू ।"

इसपर गोपाल ने कह दिया, "और जो कुछ इस कार्य के हेतु जीजा जी को मिलने वाला है वह तीनो में विभक्त किया जाएगा ।"

"मेरे कहने का यही अभिप्राय है ।"

इसपर राम बोल उठा, "तब तो मुझको भी सम्मिलित कर लो ।"

"चार व्यक्ति किसी समिति में उचित नहीं रहते । तब महेश को भी ले लो एवं पांचो की एक समिति आदाता के रूप मे कार्य करे।"

महेश बोल उठा, "मुझे स्वीकार है।"

इसपर बात निश्चय हो गई। शिवकुमार गाय की सौगन्ध से इतना भयभीत हुआ था कि वह उस सब नकद रुपये के विषय में भी बक गया, जो उसने पिछले दो दिनों में, दुकान के खाते से निकालकर अपने नाम जमा करा लिया था।

मा के घर से लौटते हुए राम ने शिवकुमार को कहा, "दादा ! यह क्या कर दिया है तुमने ?"

"राम, गाय की सौगन्ध खाकर मै झूठ बात नही कह सकता था।"

"तुम भी धर्म-भीरु हो ?"

"भीरुता धर्म के सम्मुख ही तो की है न ? मुझको इसमे लज्जा की बात प्रतीत नही होती।"

"तब तो दादा, मैं बच गया। तुम मुझको फसाकर स्वयं भाग जाते।"

"राम ! मैं गौ-हत्या का पाप सिर पर नहीं ले सकता।"

"अरे दादा ! बिना हत्या किए भला कैसे हत्या का पाप लग जाता ?"

"असत्य बोलने से।"

"वह तो तुमने बोल दिया।"

"वह तो बिना सौगन्ध के बोला है न ?"

राम हंस पड़ा। हंसते हुए कहा, "मैने कान को हाथ लगाया है कि आगे से शिव दादा का कभी विश्वास नही करूगा। यह तो अपने साथियों को मंझधार में छोड़ जाने की बात हो गई है।"

"परन्तु राम ! जब शिव गाय की सौगन्ध से कुछ कहे तब तो तुम निश्चिन्त होकर मान जाओगे न ?"

रामकुमार ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "दादा, यह जीजा जी वाला इच्छापत्र देखा है ?"

"हा !"

"उसके अनुसार मुझको क्या मिलने वाला है ?"

"कुछ नही।"

"और तुम्हारे वाले इच्छापत्र के अनुसार ?"

"कुछ नहीं।"

"तब तो दादा, तुमने मेरे साथ भारी अन्याय किया है।"

"क्यों?"

"तुमने मेरे साथ मिलकर संयुक्त मोर्चा बनाया था और जब मै लड़ने के लिए लगोटा ही कस रहा था कि तुम भाग खड़े हुए।"

"देखो राम, अब तुम आदाता समिति में हो। उसमे के भाग से चालीस हजार के लगभग तुमको मिल जाएगा।"

वास्तव में शिवकुमार डरता था कि कचहरी मे असत्य बयान देने के अपराध में कही उसको दण्ड न मिल जाए। साथ ही वह गाय की सौगन्ध से डर गया था। उसके जीवन-भर के संस्कार उसको विवश करने लगे थे। नियत तिथि से पूर्व ही उसने एक दिन न्यायालय मे एक प्रार्थना कर दी। उसमें उसने लिखा था, "वह इच्छापत्र को जो मैंने इस कोर्ट मे अमुक तिथि को उपस्थित किया था, वह मुझको पिता जी की संदूकची मे पडा मिला था। मैंने समझा कि यह उनका अतिम इच्छापत्र है। मुझको अब विदित हुआ है कि उन्होने एक इच्छापत्र रजिस्ट्रार बहादुर के पास रजिस्टरी कराया हुआ था। अतः वही प्रमाणित होना चाहिए। इस कारण मैं वह इच्छापत्र वापस लेता हू एव उसको स्वीकार करता हूं जो लाला गोवर्धनलाल ने उपस्थित किया है।"

इस प्रार्थनापत्र के उपरान्त किसीने आपत्ति नही की और घर पर प्रबन्ध के अनुसार एक कर्ता-समिति बना दी गई एव वह 'सम्पत्ति' का विभाजन तथा मन्दिर की योजना बनाने लगी।

पूर्ण परिवार में असन्तुष्ट रामकुमार था और उससे कुछ कम रुष्ट गोपालकुमार था।

इनको सबसे कम मिला था। रामकुमार की पत्नी रोहिणी भी एक असफल वकील की लड़की थी और रामकुमार का भी कामधन्धा चलता नही था। इससे बेचारा बेकार वकील होते हुए भी घर मे मुकदमेबाज़ी आरम्भ नहीं करा सका।

जिस दिन शिवकुमार ने गाय की सौगन्ध से भयभीत हो, मुकदमा न लड़ने का निर्णय किया, उसी दिन घर पहुच राम शोकग्रस्त हो, अपनी मुसीबत की कथा अपनी पत्नी को बताने लगा था। वह कह रहा था, "रोहिणी! मै तो समझता

हूं कि पिता जी ने मुझको वकील बनाकर मुझसे भारी द्रोह किया है।"

"और मैं समझती हू कि यदि आप मेरे विवाह से पूर्व वकील बन गए होते तो मेरे पिता जी मेरा विवाह आपसे कदापि न करते।"

"तो इसका अर्थ यह हुआ कि जहा पिता जी ने मेरे साथ शत्रुता की वहा उन्होंने तुम्हारे साथ भी द्वेष किया है।"

"पर मैं पूछती हू कि आपके घर में इतनी सम्पत्ति थी और आपका कारो-बार इतना चलता था कि चार-चार मुनीम दुकान पर बैठे बही लिखते रहते थे, तो आपको एम० ए० तथा वकालत पास करने की आवश्यकता क्यो पडी थी ?"

रामकुमार अपनी पत्नी का मुख देखता रह गया। इसपर रोहिणी ने अपना कथन जारी रखा। उसने कहा, "मैं तो कभी विचार करती हू कि घर-बाहर को त्याग साधु हो जाऊ।"

"क्यो ? इससे क्या होगा ?" सतर्क हो राम ने पूछा।

"होगा यह कि अब पारो तीन वर्ष की हो गई है और नियम से आप प्रति तीन-चार वर्ष के पश्चात् एक नये बच्चे की नींव रख देते है। देखिए रूप इक्कीस वर्ष का हो गया है। कृपा सत्रह वर्ष की है, दया चौदह वर्ष की है एव मध्य में एक गर्भपात हो गया था। छाया सात की है और पारो तीन की है। मेरे मन में तो नित्य यह भय समाया रहता है कि अब क्या होगा ?"

"बात तो अवश्य शोचनीय है, परन्तु इसका उपाय घर त्यागकर भाग जाना कैसे हो गया ? इतनी लम्बी-चौडी सृष्टि करने के पश्चात् इसको किस भाड़ में झोककर जाओगी ?"

"तो कुछ उपाय करिए न ?"

"जरा तुम भी बुद्धि लडाओ। मैं तो जब भी विचार-मग्न होता हूं तो मेरा मन अपने पिता जी को जली-कटी सुनाने को करने लगता है। देखो न, एक पत्थर की मूर्ति को खड़ा करने के लिए तो बीस लाख के लगभग दे गए हैं और सात हाड़-चाम के प्राणियो के लिए एक पैसा भी नहीं।"

"कल मैं अपने पिता जी के पास गई थी। वे स्वय चिन्तामग्न बैठे थे। भाई सुरेश घर से अपनी मा के सब भूषण चुराकर बम्बई भाग गया है।"

"अरे ! यह क्यों ?"

"एक पड़ौस की लड़की से मित्रता हो गई है। वह भी साथ ही है।"

"तो यह पता कैसे चला है ?"

"सुरेश जाते समय पिता जी के नाम एक पत्र छोड गया था और उसके साथ भागने वाली लड़की दमयन्ती भी अपनी मा को लिख गई है। दोनों ने एक ही बात लिखी है। वह यह कि 'मै जा रहा हू। यदि मेरी आवश्यकता घर मे है तो बाम्बे क्रानिकल मे विज्ञापन दे दीजिए कि मेरे व्यवहार को क्षमा कर मेरा विवाह, जहां मै इच्छुक हू, कर देगे। तब मै लौट आऊंगा।'—यही बात दमयन्ती ने लिखी है। इससे यही अनुमान है कि दोनो इकट्ठे भागे है।"

"तो फिर क्या करने का विचार है, पिता जी का ?"

"पिता जी का तो कथन है कि उनको सुरेश की आवश्यकता नही। परन्तु सुरेश की मा रो-रोकर व्याकुल हो रही है। और दमयन्ती के पिता ने तो पुलिस मे रिपोर्ट लिखा दी है कि उनकी अल्पवयस्क लडकी का अपहरण किया गया है।"

"परन्तु यह तो 'कौगनिजेबल औफेंस' (सज्ञेय अपराध) है। पुलिस तो उनको पकड़ लेगी।"

"यही तो दमयन्ती के माता-पिता चाहते है। हमारे पिता जी दमयन्ती के पिता जी को समझा रहे थे कि यह तो बहुत बुरा किया है उन्होने। परन्तु दमयन्ती के पिता तो कहते थे, 'लडकी का भले ही कुछ हो जाए, परन्तु अपहरण करने वाले पापी को तो दण्ड दिलवाकर छोडेगे।' "

"बहुत दुष्ट है वह ?"

"सुना है नये-नये अमीर हुए है। इसलिए लड़के और लडकियों को पहले पूरी स्वतन्त्रता दे रखी है और पीछे झगडा करते है।"

"यह तो बहुत ही भयानक समाचार सुनाया है तुमने ?"

"क्या किया जाए ? यदि दमयन्ती के पिता पहले पूछ लेते तो बात बन जाती। अब सोचिए कि आप किस प्रकार सुरेश की मां की सहायता कर सकते है।"

"मैं आज सायंकाल जाऊगा।"

"और इस समय कहा जा रहे हैं ?"

"कचहरी।"

"वहा क्या है ?"

"श्रीमती जी, दुकानदारी है। वहां जाकर देखूगा, कोई भूला-भटका फस गया तो दो-चार रुपये ऐंठ लाऊंगा।"

"कितने वर्ष हो गए है, आपको न्यायालय जाते हुए ?"

"रूप तीन वर्ष का था, जब मुझको वकालत का आज्ञापत्र मिला था, तब से नित्य ही जाता हू। बीच मे काम कुछ चुस्त हुआ था, परन्तु अब तो दस वर्ष हो गए हैं, कोई पूछता ही नही।"

"मेरी राय मानिए। न्यायालय जाना छोड दीजिए तथा कुछ और कार्य आरम्भ कर दीजिए।"

"रूप ने एम० ए० पास किया है। मगर भाग्य की बात देखो, छः मास से इधर-उधर घूम रहा है। अभी कोई नौकरी नही मिली।"

"मै तो समझी थी कि वह कुछ करता है।"

"कैसे पता चला है ?"

"कई दिनो से उसकी जेब रुपयो से भरी रहती है।"

"कहां है वह ?"

"कुछ बता कर तो जाता नही, कपडे पहने और चल दिए।"

"और भोजन ?"

"कभी दोपहर को आ जाता है तो घर पर कर लेता है, नही तो सायकाल आता है और कह देता है : 'एक मित्र ने खिला दिया है।' "

"एक बात करो। उसकी जेब मे से थोड़ी-सी राशि निकाल लो, पुनः देखें वह क्या कहता है।"

"मैं कई दिन से कर रही हू। कभी पांच, कभी दस निकाल लेती हूं।"

"और वह इसको जान नही पाता ?"

"अभी तक तो पूछा नही। आज भी दस रुपये निकाल लिए हैं।"

"तो आज का खर्चा तो चल गया है।"

"हा। इसीलिए तो कहती हू कि कचहरी छोड़, कोई अन्य काम करिए।"

"कितनी जमा-पूजी है तुम्हारे पास। मान लो, कल से रूप जेब में लाने छोड़ दे तो कितने दिन तक काम चल सकेगा।"

"एक मास तो निकाल ही सकती हूं। तब तक आप सोचिए।"

५

रामकुमार को रहने के लिए मकान तो उसके पिता सुलक्षणमल ही दे गए थे। उन्होंने रामकुमार के अध्ययन का व्यय दिया और उपरान्त वकालत को कार्यान्वित करने के लिए दस हज़ार रुपया भी दिया था।

मानसिक विकारो में फंसे हुए व्यक्ति की स्मृति भ्रष्ट तो होती ही है, और यही बात रामकुमार के साथ हुई थी। उस काल की प्रथानुसार रामकुमार का विवाह, जब उसने पन्द्रहवें वर्ष मे पदार्पण किया था, कर दिया गया था। दुर्भाग्य से उसको स्वसुर मिले लाला कवरसेन मद्य-मासभक्षी तथा क्लब जानेवाले वकील—आय कम, व्यय अधिक करनेवाले एवं क्लब मे जुआ खेलते हुए सदा हारने वाले।

रोहिणी के विवाह में भी कंवरसेन की दिवालिया अवस्था ही कारण थी। रोहिणी अति सुन्दर थी और कंवरसेन ने नगर के चोटी के धनी का लड़का चुन लिया और विवाह के पश्चात् लडकी द्वारा सेठ सुलक्षण की सम्पत्ति को चूसना आरम्भ कर दिया। राम अपनी पत्नी के सम्मोहन में फसा हुआ सदैव पत्नी की रक्षा करता रहता था।

सुलक्षणमल सतर्क हो गए और रोहिणी की चोरी को सीमा मे रखने के लिए राम को दुकान से दूर करना आरम्भ कर दिया। जब राम ने बी० ए० की परीक्षा पास की तो उसके पिता ने कहा था, 'राम ! काफी पढ़ गए हो, अब उस पढ़ने का कुछ उपयोग करो।'

'तो क्या नौकरी करूं ?'

'नही। तुम दुकान पर हिसाब-किताब किया करो।'

'वह तो आपके पचीस रुपये के मुन्शी करते है। इतना पढ़-लिखकर पचीस रुपये के मुनीम का कार्य मुझसे नही हो सकेगा।'

'तो क्या करोगे ?'

'अभी और पढूंगा।'

'ठीक है, पढो।'

राम ने एम० ए० किया। पुनः पिता ने वही प्रस्ताव किया। राम का अभी भी वही उत्तर था। 'पिता जी आपकी दुकान पर मेरे जितना पढ़ा-लिखा क्या काम करेगा ?'

'तो कोई और काम विचार लो।'

'मैं वकालत पास करूगा।'

इस समय राम के घर प्रथम सन्तान हो चुकी थी। नामकरण सस्कार किया गया। लडका मा पर गया था। वह गौरवर्णीय एव सुन्दर था। नाम रख दिया गया रूपकृष्ण। इसके साथ ही रोहिणी ने सास के साथ लडना आरम्भ कर दिया। विवश कर्मदेवी के कथन पर रोहिणी को, उसके पति के अध्ययनकाल मे ही, पृथक् मकान मे रख दिया गया। दो सौ रुपया मासिक निर्वाह के लिए मिलने लगा। इसमें से भी एक सौ रुपया लाला कवरसेन के परिवार की ओर बहने लगा।

वकालत पास करने पर पिता ने काम जमाने के लिए दस हजार रुपया दिया तो लाला कवरसेन ने उसको अपने साथ काम करने का निमत्रण दे दिया। उस दस हज़ार मे अधिकाश तो स्वसुर के खान-पान मे काम आया और काम नही जमा।

वकालत पास करने पर भी सुलक्षणमल दो सौ रुपया प्रतिमास देते रहे। यह सहायता लाला जी के देहान्त तक मिलती रही। सुलक्षणमल ने राम को अपनी सम्पत्ति मे से एक पैसा भी नही दिया। उसका विचार था कि राम को अन्य सब लड़के-लड़कियों से अधिक दिया जा चुका था।

राम यह सब भूल गया। उसे एक बात स्मरण रह गई और वह थी, उसके पिता जी का अन्तिम कार्य, जोकि उसको उन्होने इच्छापत्र मे स्मरण तक नहीं किया था। रोहिणी भी, वह सब चोरी किया धन, जोकि उसके पिता एवं भाई-बहिनो की जेबो मे पहुचा था, भूल गई थी। उसको भी अपने स्वसुर की कठोरता ही स्मरण थी कि वह उनके लिए कुछ नही छोड़ गया।

लाला सुलक्षणमल के देहान्त के दिनों मे ही उसको अपने लड़के के रूप में एक विलक्षणता प्रतीत हुई थी। वह रात्रि का भोजन प्राय: बाजार मे ही करके आने लगा था। जब मा ने पूछा, 'रूप भोजन नही करोगे?'

तो वह कह देता, 'एक मित्र ने खिला दिया है।"

मां पूछती, 'अपने घर में।'

'नही मां! होटल में।'

जब कई दिन यही क्रम चलता रहा तो उसको भी सदेह हुआ कि रूप भी तो

उनको खिलाता होगा। कहां से ? इस प्रश्न का समाधान करने के लिए उसने एक दिन, जब रूप स्नान करने गया हुआ था, उसके कोट की जेब देख ली। उसका 'पर्स' नोटो से भरा हुआ था। उसने स्वभाववश एक दस रुपये का नोट निकाल लिया। वह रूप के पिता की जेब मे से निकालने की प्रवृत्ति रखती थी।

दिन-भर वह रूप के उन दस रुपयो के विषय मे प्रतीक्षा करती रही। रूप ने कुछ नही पूछा। अगले दिन उसने पाच रुपये निकाले। तब भी कोई हो-हल्ला नहीं हुआ। इसपर तो वह नित्य ही कभी पांच, कभी दस रुपये निकलने लगी थी।

रूप को तो रुपये के निकालने का सन्देह पहले दिन ही हो गया था। उसको अपनी मा का स्वभाव ज्ञात था। उसने मा को पिता जी की जेब को हाथ लगाते अनेक बार देखा था। उसने एक दिन मां को उसकी जेब से रुपये निकालते देख भी लिया। इसपर भी उसने मां से झगड़ा नही किया। हा, वह जेब में रुपये गिन-कर रखने लगा था।

यह धन रूप की जुए की आय थी। वह प्रायः रात को एक जुए के अड्डे पर जाता था और वहां से प्राय. जीतकर आता था। वह यह जानता था कि जीतने का सौभाग्य उसको सदा मिलता नही रह सकता। इस कारण वह रुपया बैंक में जमा करता जाता था। जुएखाने मे वह बीस रुपये से अधिक लेकर कभी गया नही था। प्रायः दो-तीन सौ जीतने के उपरान्त वह खेलना छोड़ देता। कभी हारता तो बीस हार वह वहा से चला आता था। जब भी जीतकर आता, जीता हुआ रुपया उसकी जेब में होता। मा उसमे से पाच-दस ही निकालती थी। उसको भय लगा रहता था कि अधिक निकालने से लड़के को सन्देह हो गया तो झगड़ा हो जाएगा और आगे से वह जेब में रुपये रखना छोड़ देगा। कभी जेब मे नही भी होते अथवा बहुत कम होते थे। तब वह कुछ नही निकालती थी। जब से वह निकालने लगी थी, ऐसे अवसर बहुत कम आए थे।

लाला सुलक्षणमल के देहान्त को डेढ मास होने जा रहा था और लगभग इतना ही समय हो गया था, रोहिणी को पुत्र की जेब से रुपये निकालते हुए। उसने देखा कि रूप रुपये निकालने के विषय मे या तो जान ही नही सका, अथवा जान गया है तो झगड़ा करना नहीं चाहता। अब उसने इस आश्रय पर पति को कह दिया कि वे कोई और काम ढूंढे। उसका वकालत की आय से तो पेट भी नहीं भरता।

राम को सन्देह हो गया था कि रूप जुआ खेलता होगा। वह अपने ससुर के इस स्वभाव को जानता था। वह स्वय भी एक-दो बार क्लब मे जा, दाव लगा चुका था, परन्तु भाग्य विपरीत होने से वह जीत नही सका। इससे उसने अपने विचार से इस पेशे (व्यवसाय) मे हाथ नही डाला।

दो-चार दिन अपने स्वसुर से अपनी आर्थिक अवस्था बता, उसमें उसकी सहायता के लिए पूछता रहा। इसपर कवरसेन ने कह दिया, "देखो राम ! मै तो दो ही व्यवसाय जानता हू। एक वकालत और दूसरा गैबलिग (जुआ)—मुझको इन दोनो मे कुछ विशेष लाभ नही हो रहा। तीसरी बात मै जानता नही। इससे मै तुमको कुछ नही बता सकता।"

"मैने इन दोनो में तरक्की करने का यत्न किया है तो बहुत बुरी तरह असफल रहा हू।"

"तुम अपने भाई शिव से राय लो। वह कुछ ऐसा काम करता है जिसमें सफल हो रहा है।"

राम अपने भाई की दुकान पर जा पहुंचा। दुकान अब भी चल रही थी। अब भी उसमे चार मुनीम बैठे बही लिख रहे थे। अब भी माल खरीदा और बेचा जा रहा था। कभी टेलीफून पर और कभी जबानी व्यापार होता था।

शिवकुमार ने राम को देखा तो पूछ लिया, "आओ राम ! किसलिए आए हो ?"

"भैया ! जीवन-भर इसी आशा पर बैठा रहा था कि पिता जी मरने पर कुछ दे ही जाएंगे। वे कुछ भी नही दे गए। इससे जीवन-आशा टूट गई है। एक क्षीण आशा तुम हो। बताओ, कुछ सहायता कर सकते हो ?"

"हां, कर सकता हूं। मगर जैसा मैं कहूंगा वैसा ही करना होगा।"

"क्या करना होगा ?"

"यह सूट उतारकर दुकानदारों के से कपडे पहनने आरम्भ कर दो।"

रामकुमार हंस पडा। हसकर पूछने लगा, "बस या कुछ और भी ?"

"यह तो केवल आरम्भिक कृत्य है। इससे तुम दुकान पर आने योग्य हो जाओगे।"

"ओह ! अच्छा और ?"

"यहां प्रातः आठ बजे आ जाया करो। मध्याह्न के समय भोजन करने के

लिए एक घटे का अवकाश मिलेगा और फिर दो बजे से सायं छ. बजे तक यहां रहना होगा ।"

"यह तो बहुत लम्बी ड्यूटी (नौकरी) है ।"

"हां। हम सब करते है। मेरा लडका निरजन भी ऐसा ही करता है।"

"अच्छा यह भी कर लूगा। काम क्या करना होगा ?"

"जो निरजन करता है। कुछ काम नही करता और सब कुछ कर लेता है। दुकान पर झाड़ू देने से लेकर बड़े-बड़े सेठ-साहूकारों से बातचीत करने तक, और घर की सब्जी-भाजी खरीदने से लेकर घर पर बीमारो की तीमारदारी करने तक। समय-समय पर मै बताता रहता हू और वह करता रहता है।"

"यह तो कुछ न हुआ। कोई ऐसा काम बताओ जिसको सीखकर मैं किसी दिन स्वतन्त्र रूप से कारोबार कर सकू।"

"देखो राम ! यह दुकान है, स्कूल नही। यहां कुछ भी सिखाया नही जाता, इसपर भी सीखने वाले सीखते है। देखो, मैं बताता हू। हमारा एक मुशी नन्द-किशोर बैठा-बैठा व्यापार करने लगा और अब हापुड में अपनी दुकान कर, दो-चार लाख का कारोबारी बन गया है। निरंजन की बात ही देख लो। वह भी यहा बैठा-बैठा सोने के व्यापार में हाथ चलाने लगा है। पिछले वर्ष मे उसको चालीस हजार का लाभ हुआ है। उसने मुझसे कभी पूछा नही, न ही मैंने उसको कभी कुछ सिखाया है।"

"अच्छा बाबा। 'भूखा मरता क्या न करता।' वाली कहावत है। मुझको तुम्हारा कहा मानने से मिलेगा क्या ?"

"जो दुकान से निरजन को मिलता है। मै उसको दो सौ रुपया प्रतिमास देता हूं। वही तुमको दे दिया करूगा।"

"निरंजन का लड़का क्या करता है ?"

"वह कालेज में पढता है। सन्त को इस वर्ष इण्टर की परीक्षा देनी है और सूर्य ने मैट्रिक की।"

"और वे दुकान पर नही बैठेगे ?"

"यह निरजन के विचार का विषय है। मैंने इस विषय में कभी विचार नही किया।"

"पर भैया शिव ! तुम मेरे कालेज मे पढ़ने के परिणाम देखकर भी उसको

मना नहीं करते।"

"देखो राम! सफलता-असफलता भाग्याधीन होती है। व्यवसाय तो अपने परिश्रम एव बुद्धि का परिणाम है। जो भाग्य से सफल होने वाले होते है वे किसी भी व्यवसाय में चले जाएं, सफल हो जाते हैं। कालेजों, स्कूलों के पढ़े भी तो सफल हो रहे है। हमारे पड़ोसी सन्तोषीलाल के बच्चों की ही बात देख लो। वह स्वय तो मुनीम का कार्य करता था, परन्तु एक लडका बड़े लाट के दफ्तर में बड़े पद पर है। मोटर मे कार्यालय को जाता है और मोटर मे आता है। मकान नया बन गया है। दूसरा लड़का भी पढकर कही परदेस मे गया है। सुना है अच्छा खाता-पीता है। जब भी मां-बाप से मिलने आता है तो उनके लिए और भाई-बहिनों के लिए बहुत बढिया वस्तुएं लाता है। यह तो सब भाग्य का खेल है।"

राम मुस्कराकर पूछने लगा, "तो यह भाग्य को कैसे बनाया जा सकता है? इसके लिए क्या करना चाहिए?"

"यह मुझको ज्ञात नही। गोवर्धन जी से पूछ लेना। वे कुछ कह गए हैं। अभी आए थे। कहते थे 'शिव भैया! पिछले जन्म की कमाई खा रहे हो। आगे के लिए भी कुछ जमा कर जाओ। नही तो राम की भांति मक्खियां उड़ाया करोगे।' यद्यपि मैंने उसको हंसी मे उडा दिया है मगर अपने भाग्य की बात देख, उनके कथन में भी तो तत्त्व दिखाई देता है।"

"मैंने स्कूल-कालेज मे नही पढा। पाधा के यहां लुडी में हिसाब-किताब सीख दुकान पर बैठ गया था। अब जिस भी काम मे हाथ लगाता हूं, वही धन उगलता प्रतीत होता है।"

"तो भैया! कब से आऊं?"

"कल से आ जाना। दो सौ रुपया प्रतिमास मिल जाएगा। धोती-कुर्ता नहीं, तो हमारे मुनीम की भांति पायजामा व बद गले का कोट। यह कोट-पतलून, नेकटाई, कालर यहां नहीं चल सकेगा।"

रामकुमार को शिव की बाते समझ नही आई थीं। भला ये कोट-पतलून दुकान पर क्यों नही चल सकेंगे? साथ ही बिना काम के भला वह क्यों वेतन देगा? परिश्रम और बुद्धि से व्यवसाय होता है, परन्तु सफलता भाग्य से होती है। वह भाग्यशाली तो है, परन्तु भाग्यशाली कैसे बना है, नही जानता? इसमें

उससे जाकर ज्ञात करना चाहिए जो स्वयं भाग्यशाली नही है ।

राम को शिव की बातों का कुछ भी अर्थ समझ मे नही आया था । वह उसकी बातों का विश्लेषण अपने ढग से करने लगा था और उसको कुछ भी सिर-पैर समझ नही आया था ।

इसपर भी वह देख रहा था कि शिवकुमार के पास पैसा था और वह स्वयं निर्धन था । इस कारण वह मन मे यह विचार कर कि अगले दिन से वह शिव की दुकान पर दो सौ रुपये की नौकरी करने आएगा, वहां से चल पड़ा । मार्ग में ही गोवर्धनलाल जी का मकान पडता था । गोवर्धनलाल घर पर नही था, बहिन गौरी घर पर थी ।

गौरी ने राम को देखा तो बैठा, जल आदि पूछने लगी । राम ने कहा, "जीजा जी से मिलने आया था ।"

"वे तो काम पर चले गए हैं । पिछले तीन दिन से अवकाश लिया हुआ था । आज अवकाश समाप्त हो गया है अतः वे चले गए है ।"

"मै यही पूछने आया था कि अब उस समिति का कार्य कब और कैसे चलेगा?"

"वे बता रहे थे कि प्रथम शिवकुमार न्यायालय में जाकर असली इच्छापत्र को स्वीकार करेंगे । पश्चात् परिवार के सब सदस्य भी ऐसा करेंगे, तब न्यायालय निर्णय देगा कि आपके जीजा सम्पत्ति के आदाता नियुक्त हुए हैं । तभी वे कार्यारम्भ कर सकेंगे ।"

"बहिन ! मुझको विस्मय होता है कि जीजा जी तो पिता जी से कभी मिलने जाते नहीं थे । तुम भी तो पिता जी के घर में सबसे कम जाती थी । फिर पिता जी ने मामूली उर्दू-फारसी पढ़े-लिखे व्यक्ति को तो बनाया कर्ता और मै वकील परन्तु मुझको कुछ नहीं ।"

"यह तो भैया, भाग्य की बात है । उनको दो लाख के लगभग मिल गया है और करने को काम मिल गया है । वे आज ही कह रहे थे कि अब वे नौकरी छोड़ देंगे ।"

"अभी तो उनके रिटायर होने की आयु नही हुई । इस समय छोड़ेंगे तो पेंशन नहीं मिलेगी ।"

"वे यह जानते हैं । परन्तु जब पिता जी के दिए दो लाख की वार्षिक आय

चौबीस हजार के लगभग मिलेगी तो फिर बीस रुपये की पेंशन के लिए दस वर्ष तक पाप कुण्ड में बैठे रहने की आवश्यकता क्या है ?"

"और तुमने इसपर आपत्ति नहीं की ?"

"आपत्ति क्यों करती। मुझको तो इसमे परमात्मा की अपने पर कृपा प्रतीत होती है कि वह उनको सद्बुद्धि दे रहा है।"

"पर बहिन, यह ईश्वर की कृपा है या भाग्य है ? भाग्य तो खोटा भी हो सकता है।"

"हां। परन्तु यह सौभाग्य है। इसीको हम ईश्वर की कृपा कहते है।"

"यह सौभाग्य कैसे बटोरा जा सकता है ?"

"देखो राम ! शास्त्रों मे एक कथा आती है। लक्ष्मी, जो सौभाग्य की देवी है, दैत्यों की बेटी थी। परन्तु दैत्यों के पास वह तब तक रही जब तक वे दान देते थे, जब तक वे धर्म से धन-सग्रह कर, लोक-कल्याण के कार्यों मे व्यय करते थे, अथवा जब तक वे 'सर्वं भूतेष्ववर्तन्त यथाऽऽत्मनि दया प्रति'—सब प्राणियों को अपने ही समान समझकर उनपर दयादृष्टि रखते थे।...

"परन्तु उपरान्त वे परस्पर और परायो पर अत्याचार करने लगे। वे बड़ों एवं विद्वानों का आदर करना त्याग बैठे। वे 'उत्सूर्यशायिनश्चासन् सर्वे चासन् प्रगेनिशाः'—सूर्योदय होने तक सोने लगे। प्रातःकाल को भी रात समझने लगे। दैत्यगण 'कृतघ्ना, नास्तिकाः पापा, गुरुदाराभिमर्शिनः'—कृतघ्न, नास्तिक, पापी, गुरुभार्यागामी और अमर्यादित जीवन व्यतीत करने लगे।

"तब लक्ष्मी उनको त्यागकर देवताओं के पास आकर रहने लगी।"

"बहिन ! यह तो गपोडे है। भला इनका क्या सम्बन्ध है भाग्य के साथ ?"

"राम, यह मैं नहीं कह रही; यह शास्त्र में लिखा है। बहस करनी है तो शास्त्र लिखने वालों से कर लेना। मैं तो यह कहने लगी थी कि तुम्हारे जीजा जी शास्त्र के इस कथन को मानते हैं और वे सौभाग्य प्राप्त कर रहे है।"

"क्या सौभाग्य पाया है उन्होंने ?"

"यह तुम उनसे पूछना। एक बात तो मुझको समझ मे आ रही है। बड़े-बड़े अफसर अपने जीवन का मुख्य भाग दूसरो की सेवा में निकालते हैं। तब ही उनको पेट-भर खाने को प्राप्त होता है और बूढ़े होकर ही दूसरों की गुलामी से मुक्त हो पाते है। कभी-कभी तो एक नौकरी से छूटने पर भी उनके पापकर्म निःशेष

नही होते ,और उनको पुनः दूसरी नौकरी करनी पड़ती है। तुम्हारे जीजा ने तो पेंशन पाने की आयु से पूर्व ही पेशन पा ली है।"

राम को समझ मे आ रहा था कि उसकी बहिन ने ही अपने पति का मस्तिष्क खराब कर रखा है। इसपर भी वह विचार करता था कि गौरी का घर सामान से शून्य ही प्रतीत होता है। उसको बैठाने के लिए भी बहिन को चटाई ही बिछानी पड़ी थी। इसपर भी वह स्वस्थ एवं प्रसन्न दिखाई देती थी।

इसके विपरीत उसकी स्त्री चोर थी, इसपर भी कभी वह उसको मना करता था तो वह लड़ पडती थी। अब वह अपने लड़के की जेब मे से रुपये चुराने लगी थी। अपने जीवन से असन्तुष्ट तो वह सदा ही रहती थी।

जब वकालत जमाने के लिए उसके पिता ने दस हज़ार रुपया दिया था तो रोहिणी के पिता ने उसको चकमा देकर आधे से अधिक रुपया ठग लिया था। एक दिन राम ने इस घटना पर दुःख प्रकट किया तो रोहिणी एक मास तक उससे बोली तक नही थी। कभी वह उसको बुलाता था तो जली-कटी गालियां सुनाने लगती थी।

६

राम घर पहुचा तो रूपकृष्ण भोजन कर, अपने शयनागार मे जा रहा था। इसपर राम ने पूछ लिया, "रूप! तुमको कुछ काम नही, जो दिन के समय ही सोने जा रहे हो?"

"भापा, छः महीनों से दफ्तरों की मिट्टी छान रहा हू। काम न मिले तो क्या किया जाए? सोना तो अपने बस की बात है। नौकरी नही।"

राम हस पडा। हंसकर उसने पूछ लिया, "मैं तो समझा था कि तुम्हारी कही नौकरी लग गई है। तुम्हारी जेबों मे रुपये दिखाई देने लगे है।"

रूप कुछ देर तक विस्मय में मुख देखता रहा। उपरान्त पूछने लगा, "तो यह माता जी ने आपको बता दिया है?"

"हां। वह नित्य तुमको रात घर से बाहर खाना खाते देख विस्मय करती थी और एक दिन यह जानने के लिए कि कितना कुछ तुम्हारे पास है, तुम्हारी जेब देखने लगी तो उसमें आशातीत धन देखा और अब नित्य उसमें देखने लगी है।'

"तो आप भी मां के रुपये चुराने की बात जानते है ?"

"वह तो उसका स्वभाव है।"

"पर भापा ! मेरा स्वभाव नहीं कि मै जेब में रुपये बिना गिने रखू। मुझको उनके रुपये निकालने का पता चल जाता रहा है। मै चुप तो इस कारण हू कि मैं समझता हू, माता जी को व्यय के लिए लेने ही चाहिए। हा, कभी कुछ अधिक निकालेगी तो बात बिगड जाएगी।"

"तो तुम जितना उचित समझते हो, स्वय दे दिया करो।"

"जब एक महीने तक वे स्वय नही निकालेगी तो मै देने लगूंगा।"

"तो रोज़ का खर्च कैसे चलेगा ?"

"आप जो लाते है वह कहां जाता है ?"

"मैने आज से काम पर जाना छोड दिया है।"

"तो अब आप भी दिन के समय सोया करेगे ?"

"नही। मैने कल से नौकरी कर ली है। नौकरी का वेतन तो मास के पश्चात् ही मिलेगा।"

"कहां नौकरी कर ली है ?"

"तुम्हारे ताया शिवकुमार की दुकान पर।"

"ओह ! क्या देंगे वे ?"

"दो सौ रुपया मासिक।"

"बहुत बेईमान हैं वे। भला एक वकील को दो सौ रुपया मासिक ?"

"मार्केट में तो सप्लाई और डिमाण्ड (प्रदाय तथा मांग) का प्रश्न है। मुझको मेरी सेवाओं के लिए तो कोई इतना भी देने को तैयार नहीं होता था।"

"आप कितना पैदा कर लेते थे महीने में ?"

"कुछ न पूछो।"

"इसपर भी ताऊजी महाराज को तो आपकी विद्या का ठीक-ठीक मोल लगाना चाहिए था।"

"विवशता है रूप।"

अपनी बात में रामकुमार रूपकृष्ण की आय की बात भूल गया। रूपकृष्ण कमरे में जा सो गया।

अगले दिन से रामकुमार अपने भाई की दुकान पर जाने लगा। वह धोती-कुर्ता तो नही पहन सका परन्तु बन्द गले का कोट और दिल्ली वालों की टोपी पहनने लगा था।

शिवकुमार की दुकान पर ही गोवर्धनलाल और गोपाल से राम की भेंट हुई। गोवर्धन द्वारा नियुक्त ट्रस्ट लाला सुलक्षणमल की सम्पत्ति का प्रबन्ध करने के लिए तो तब बैठा जब लाला जी के इच्छापत्रानुसार गोवर्धनलाल को सम्पत्ति का आदाता नियुक्त कर दिया गया। इस नियुक्ति के पश्चात् गोवर्धनलाल ने एक पत्र चारों भाइयों को लिख दिया कि वह उनके पिता की सम्पत्ति का कर्ता नियुक्त हुआ है। उसको बहुत प्रसन्नता होगी, यदि वे उसके इस कार्य में सहयोग देगे। वह उनको उनकी सेवाओ के लिए, अपने इस कार्य के लिए मिले धन में से, एलाउस (भत्ता) देने को तैयार है। यह भत्ता परस्पर वार्तालाप से निश्चय हो सकता है।

पत्रों का उत्तर लिखित रूप में प्राप्त कर ही गोवर्धनलाल ने इस प्रबन्धकर्ता-समिति की सभा बुलाई। यह सभा बुलाई गई शिवकुमार की दुकान पर। गोवर्धनलाल आया तो राम को वहां एक पत्र टाइप करते देख, चकित रह गया। उसने पूछ लिया, "राम ! क्या कर रहे हो यहां पर ?"

"जीजा जी ! भैया की नौकरी कर ली है।"

"ओह ! और क्या काम करते हो ?"

"भैया का काम अब विदेशों से भी होने लगा है। उनसे पत्र-व्यवहार अंग्रेज़ी में और टाइप में होता है। यह काम मुझको करना पड़ता है।"

"यह तो बहुत अच्छा काम है।"

"पर भैया वेतन बहुत कम देते है।"

"क्या देते है ?"

"दो सौ रुपया महीना।"

"राम, छोड़ना नहीं। वेतन की बात गौण है। व्यापार में आना मुख्य है।"

राम विचार करता था कि जहां लाखों के वारे-न्यारे पल-पल में होते हैं वहां वेतन की बात भला गौण कैसे हो सकती है ! इसपर भी वह चुप था। शिवकुमार के स्वभाव को वह जानता था। दुकान पर इधर-उधर की बात वर्जित थी। कभी की जाए तो वह डांट देता था।

यद्यपि गोवर्धनलाल से वह बातचीत दुकान के पिछले कमरे में उसे बैठाकर

कर रहा था और शिवकुमार अभी वहा नही आया था, फिर भी वह किसी समय आ सकता था इस कारण उसने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "जीजा जी ! आपने पत्र में एलाउंस की बात लिखी है। वह तो विचार आपका ही था। आप ही बताइए कैसे होगा यह ?"

गोवर्धनलाल ने बता दिया, "पहले पूर्ण सम्पत्ति मेरे चार्ज में आ जानी चाहिए। मुझको विदित हो जाना चाहिए कि मेरे चार प्रतिशत में मुझको क्या मिलने वाला है। तब ही तो आपका भाग निश्चय कर सकता हू।"

"भैया ने सम्पत्ति की एक सूची बनवाई है ?"

"वह लाला जी के इच्छापत्र मे दी गई सूची के अनुसार होनी चाहिए। अन्यथा मुझको पुनः न्यायालय का द्वार खटखटाना पड़ेगा।"

शिवकुमार और गोपाल ने आते ही पूछ लिया, "आप झगड़े की बात घर में निश्चय करना चाहेगे अथवा न्यायालय मे ?"

"घर पर। परन्तु सब कुछ सत्य-सत्य निश्चय होनी चाहिए।"

"हा। सब कुछ सौगन्धपूर्वक होगा।"

सौगन्ध पर गोवर्धनलाल चुप कर गया। सौगन्ध का जादू वह पहले देख चुका था। उसने शिव की बात स्वीकार करते हुए कहा, "हां। तो वह सूची निकाल दो।"

राम उठकर गया और अपनी सन्दूकची में से एक सूची और उसके साथ प्रमाणपत्रों की फाइल उठा लाया। शिवकुमार ने स्थावर सम्पत्ति के साथ-साथ उन रुपयों की भी सूची दी जो उसने बैंक से निकाल, अपने खाते मे जमा करा लिऐ थे।

गोवर्धनलाल ने सरकारी अधिकारपत्र को बैंक में दिखा, लाला जी के बैंकों में हिसाब की नकले प्राप्त कर ली थी। उसने उसके साथ शिवकुमार की सूचियों का मिलान किया। थोड़ा अन्तर निकला तो उसका स्पष्टीकरण लिखित मांग लिया। राम से उनके स्पष्टीकरण टाइप करवा, शिव के हस्ताक्षर करवा लिए।

इसपर गोवर्धनलाल ने यह निश्चय कर लिया 'इस समिति का प्रधान तथा मन्त्री का कार्य मैं स्वय करूगा। परन्तु अपनी सहायता के लिए एक मुन्शी नौकर रख लूगा।'

रामू ने सुझाव उपस्थित कर दिया, "इस कार्य के लिए रूप को रख लिया

जाए।"

"नहीं, राम ! इस काम के लिए वह ठीक नही।"

"क्यों ?"

"वह विश्वस्त व्यक्ति नही।

"क्या खराबी है उसमे ?"

"उसमें दो दोष है। एक तो वह जुआ खेलता है और दूसरा वह मद्य का सेवन करने लगा है। ये दोनो व्यसन बुद्धिभ्रष्ट कर देते है और इनसे नाश अवश्यम्भावी है।"

राम जुए की बात सुन, रूप की जेबो में रुपयो की बात समझ गया। इसपर भी मद्य सेवन की बात पर उसको विश्वास नही आया। उसने पूछ लिया ·

"जीजा जी ! आपको यह कैसे ज्ञात है ?"

"देखो राम ! मै डिप्टी कमिश्नर के कार्यालय में होने से बहुत बातो का ज्ञान रखता हूं। जो भी बात पुलिस के ज्ञान में आ जाती है वह न्यूनाधिक मात्रा मे हमको ज्ञात होती रहती है। रूप का नाम मुझको पता न चलता, यदि उसने किसी पुलिस अधिकारी के सम्मुख यह न कह दिया होता कि मै उसका सम्बन्धी हूं।"

राम मुख देखता रह गया। इसपर गोवर्धनलाल ने उसको कह दिया, "मेरी सम्मति उसको बता देना कि वह इस काम को छोड दे। कोई अन्य निर्दोष कार्य करने लगे। इसमे कभी भी, किसी समय भी वह कष्ट में पड़ सकता है।"

"परन्तु जब कोई ईमानदारी का काम न मिले तो क्या किया जाए ?"

"देखो राम ! यह भाग्य की विडम्बना है। इसके लिए सबसे पहले भाग्य को सुधारना चाहिए।"

"वह कैसे सुधरता है ?"

"तुम एक दिन अपनी बहिन से भी पूछ चुके हो। जो कुछ उसने बताया था, वही मैं जानता हू। ईमानदारी के मापदड दो है। एक तो समाज की स्वीकृति, दूसरे धर्म, शाश्वत धर्म की स्वीकृति।"

"परन्तु इन दोनों में तो परस्पर विरोध होता है।"

"हा। कभी-कभी ऐसा अस्थायी रूप मे हो जाता है। यह तब और वहां होता है जब और जहा अशिक्षा, रूढ़ियों तथा अज्ञान के कारण, समाज की मति भ्रष्ट हो जाती है।

" उदाहरण तुम्हारे सामने है। जुएखाने मे जानेवाले तो यही समझते है कि वे किसी व्यापार मे लगे हुए है। वास्तव मे यह व्यापार नही है। जुआरियों का समाज इसको अपने दूषित मन की अवस्था से व्यापार समझने लगता है।"

"और जीजा जी महाराज ! इस स्पैकुलेशन (सट्टे) को तुम क्या समझते हो ?"

"एक विचार से यह भी दोषयुक्त व्यवहार है। परन्तु इसमें एक गुण है। यह किसी कौमोडिटी (पण्य) के विषय मे होने से उसमें व्यापार को प्रोत्साहन देता है। उदाहरण के रूप में किसी कम्पनी के हिस्से है। उस कम्पनी में रुपया लगाने में रुचि उत्पन्न करने में अथवा किसीमे रुपया लगाने में अरुचि उत्पन्न करने में यह सट्टा सहायक होता है। इस कारण इसमे कुछ तो गुण है। परन्तु जुए में तो यह गुण भी नही। वहा कोई 'पण्य' लक्ष्य नही होता। इससे वह तो सर्वथा ही पाप है।"

"प्राय: हिस्से खरीदने वाले तो उसको बेच देने के लिए ही खरीदते है। यह तो शुद्ध जुआ ही मानना चाहिए।"

"इसपर भी इस क्रय-विक्रय का प्रभाव पण्य पर होता है। इस क्रय-विक्रय को सीमा के अन्दर रखने के लिए कानून की आवश्यकता है। परन्तु मानव-बुद्धि अभी इतनी दोषपूर्ण है कि वह कोई ऐसा कानून विचार नही कर सकी जिससे सट्टे का दुरुपयोग रोका जा सके और इससे वह लाभ उठाया जा सके, जिसके लिए इसका आविष्कार हुआ है। यह सट्टेबाजी का दोष नहीं, अपितु यह मानव-बुद्धि का अधूरापन है, जिससे एक उपकारी कार्य में घुस गए दोषों को निकाला नहीं जा सका।"

राम युक्ति करने में गोवर्धनलाल को गौरी से भी तेज़ समझने लगा था। शिवकुमार ने बात पुन: समिति के विषय पर घुमा दी। उसने पूछा, "तो अब बताइए हम समिति के सदस्यों को क्या-क्या भत्ता मिला करेगा।"

"भत्ते के तीन ढंग हैं। एक तो जितना रुपया है। उसको भी पांच भागों में विभक्त कर लिया जाए। इसको मैं पसन्द नहीं करता। इससे धन का सम्बन्ध प्रबन्ध से नहीं रह जाएगा। दूसरा है, वेतन के रूप में। यह हम वार्षिक आय का अनुमान लगाकर उसमें से पांच सदस्य निकाल सकते हैं। एक तीसरा ढंग है, प्रति मीटिंग कुछ न कुछ निकाल लिया जाया करे।"

यह अन्तिम ढंग सबको पसन्द आया। शिवकुमार और गोपाल तो 'तुरन्त दान महाकल्याण' की कहावत को पसन्द करते थे। इसपर गोवर्धनलाल ने कह दिया, "एक सौ रुपया प्रति मीटिंग प्रति सदस्य। प्रधान को पचास और अधिक। एक क्लर्क का सौ रुपया मासिक वेतन। इसके अतिरिक्त अन्य कुछ व्यय प्रबन्ध के हेतु होंगे।"

"ठीक है।" सबसे पहले राम ने स्वीकार किया।

जितने निर्णय हुए थे, एक रजिस्टर पर लिख दिए गए थे। सभा विसर्जित हुई। गोवर्धनलाल ने सम्पत्ति का चार्ज ले लिया। शिवकुमार ने बैंको से निकाला रुपया पुनः जमा करा दिया और कार्य होने लगा।

७

रूपकृष्ण से राम ने गोवर्धनलाल की बात बता दी। उसने अगले दिन रूप को सोए से उठाया। रूप अभी जागा नहीं था और राम को दुकान पर जाना था। रूप आंखे मलता हुआ पिता के समक्ष आ खड़ा हुआ। राम कपड़े पहन, दुकान पर जाने के लिए तैयार खड़ा था।

रूप ने पूछा, "भापा, क्या बात है ?"

"पहले ज़रा खिड़की में से झांककर बताओ, सूर्य निकला है अथवा नहीं ?"

"वह तो भापा, बिना झांके भी बता सकता हू। सूर्य निकल आया है।"

"देखो रूप ! तुम्हारी एक बूआ ने मुझको बताया है कि कोई कुछ भी काम करे, उसमें सफलता बिना भाग्य के प्राप्त नहीं होती। जुए में भी सफलता भाग्य से ही मिल सकती है। भाग्य एक समाप्त हो जाने वाली वस्तु है। यदि तुम इसका संचय किए बिना इसको व्यय करते जाओगे तो एक दिन यह समाप्त हो जाएगा और फिर असफलता आरम्भ हो जाएगी। तुम्हारी बूआ बताती थी कि भाग्य बटोरने के लिए सबसे प्रथम बात है कि सूर्योदय से पूर्व उठा करो, दूसरे यह कि अपनी कमाई से कुछ न कुछ दान-दक्षिणा दिया करो।"

"प्रातःकाल उठने की बात तो बहुत मुश्किल है, भापा। कभी-कभी तो रात को बहुत देरी हो जाती है। सवेरे जल्दी उठ सकता ही नहीं। हां, दान तो मैं करता हूं। जब मा मेरी जेब से नित्य निकालती हैं तो मैं उसको दान समझ लेता हूं।"

"यह घर मे रहने और भोजन का मूल्य नही समझते क्या ?"

"ये सब अभी पिता जी देते है। उनमे और अपने मे मैं अन्तर नही समझता।"

"ओह, परन्तु बेटा, तुम्हारे काम को मै न तो अच्छा समझता हूं और न ही तुम्हारे फूफा लाला गोवर्धनलाल।"

"लाला गोवर्धनलाल ? भला वे क्या जानते है मेरे काम के विषय में ?"

"वे जानते है कि तुम प्रतिदिन जुआ खेलने जाते हो। तुम्हारे मद्य-सेवन के विषय में भी वे जानते है।"

'उनको किसने बताया ?"

"उनके कार्यालय मे तुम्हारा नाम दर्ज है। जुआरियों और आदतन शराब पीने वालों का नाम उनके यहां लिखा जाता है। साथ ही तुमने किसी पुलिस अधिकारी के समक्ष कहा है कि तुम लाला गोवर्धनलाल के सम्बन्धी हो।"

रूपकृष्ण मुख देखता रह गया। उसे चुप देख राम ने कहा, "ये दोनो काम एक भाग्यशाली व्यक्ति कहता है कि गलत है।"

"मुझको उस कंगले की बात पर विश्वास नही। घर में भांग भुजती है परन्तु लोगो को उपदेश देते रहते है।"

"मैंने तो उनका उपदेश मानना आरम्भ कर दिया है।"

"क्या ?"

"यही कि जल्दी सो जाता हूं और सूर्योदय से पूर्व उठ पड़ता हूं। साथ ही दुकान जाते समय दो पैसे पहले दो मिलने वाले भिखारियों को दान कर जाता हूं।"

रूप खिलखिलाकर हंस पडा। जब पिता-पुत्र मे वार्तालाप हो रहा था तब रोहिणी, रूप की मां, भी वहा उनकी बात सुनने आ गई थी। वह भी हंस पड़ी। रूप ने कह दिया, "भापा ! नौ मन चूहे खाके बिल्ली हज को चली है क्या ?"

"देखो राम, चूहे तो मैंने खाए नही। वकालत का काम किया है। उसमें मुझको सफलता नही मिली। गोवर्धनलाल ने घूस लेना त्याग दिया था और सबका काम मुफ्त में दान-दक्षिणा समझ, करने लगा था और उसको सफलता मिलने लगी है। उसको चौबीस हज़ार रुपये की वार्षिक आय होने लगी है। उसमें भी उसने लगभग आधी हममें बांट देने् का निर्णय कर लिया है। उसका कथन है कि उसको इससे और भी अधिक सफलता प्राप्त होगी।"

"भापा ! वह मूर्ख है। हाथ मे आई वस्तु को जो नाली मे फेक देता है, उसकी बात मैं मान नहीं सकता।"

"तो मैं नाली हू। वह तो मुझको एक सौ रुपया प्रति मीटिंग भत्ता देने को कह रहा है।"

"कैसी मीटिंग भापा ?"

"तुम्हारे बाबा ने इच्छापत्र मे लिखा है कि उनकी सम्पत्ति का आदाता लाला गोवर्धनलाल हो और इस काम के लिए उसको लाला जी की सम्पूर्ण सम्पत्ति का चार प्रतिशत पारिश्रमिक मिले। वह लगभग सवा दो लाख बनता है। वह सवा दो लाख दस प्रतिशत ब्याज पर लगा हुआ है। उसकी आय लगभग तेरह हज़ार रुपये वार्षिक है। गोवर्धनलाल ने प्रबन्ध में अपनी सहायता के लिए एक सीमति नियुक्त की है। उसमें अपने अतिरिक्त लाला जी के चारों पुत्र हैं। और सबके लिए उन्होंने उस समिति की सभा में उपस्थित होने का एक सौ रुपया प्रति मीटिंग देने का निर्णय किया है। मैं भी लाला जी का लड़का हूं। इस कारण कम से कम एक मीटिंग प्रति मास तो हुआ ही करेगी। अतः मुझको भी गोवर्धनलाल के भाग में से कुछ तो मिलेगा ही।"

"तो लाला गोवर्धनलाल ने मुझको उस मीटिंग में क्यों नही रखा ?"

राम ने हसते हुए कहा, "समिति के सदस्य तो लाला जी के लड़के ही बनाए गए हैं। हा, मैंने उस समिति में तुमको नौकर रखने के हेतु कहा था, परन्तु तुमको जीजा जी ने स्वीकार नही किया। केवल इस कारण कि तुम मद्य-सेवन करते हो तथा जुआ खेलते हो।"

"समिति की नौकरी में क्या मिलता ?"

"एक सौ रुपया मासिक।"

"हा···हा···" ठहाका मारकर रूपकृष्ण हंस पडा। हंसकर उसने कहा, "भापा ! जानते हो पिछली रात मुझको क्या मिला है ?"

"क्या मिला है।"

"दस हज़ार से ऊपर।"

"दस हज़ार ? रूप, इसमे से कुछ दान-दक्षिणा कर दो, नहीं तो यह हराम की कमाई हजम नहीं होगी।"

"भापा, सौ रुपये तो रात ही एक को दान कर दिए थे।"

"किसको।"

"एक है। बहुत सुन्दर है और मुझको बहुत प्रेम करती है।"

"ओह! तो तुम यह भी करते हो?"

"क्यो? इसमे क्या हानि है?"

"यह तो पाप है रूप!"

"मै तो समझता हूं कि मैने उसको सौ रुपया देकर भारी पुण्य किया है। वह एक अति निर्धन विधवा की लड़की है। अभी कुवारी है। यदि एक-दो दिन और ऐसे ही लग जाए तो मै उससे विवाह कर लूगा।"

राम का मस्तिष्क भन्ना उठा था। वह रूप की बात गले के नीचे उतार नही सका। राम के एक ही लड़का रूप था परन्तु घर मे चार लड़किया थीं। उनमें सबसे बड़ी लड़की कृपा विवाह के योग्य हो चुकी थी। तीन और भी थी, जो घर मे ही रहती थीं। एक दया चौदह वर्ष की थी। दूसरी छाया सात वर्ष की थी और सबसे छोटी पारो तीन वर्ष की थी। इन लड़कियों का विचारकर, राम ने अपनी पत्नी की ओर देखकर पूछ लिया, "क्यों देवी जी, क्या समझती हो तुम?"

"मै इसमे क्या कह सकती हूं। वह आती है तो ले आए। हां, इतना ध्यान रखना चाहिए कि मेरे घर मे आकर यदि वह किसी अन्य से दान-दक्षिणा मागने चल पड़ी तो मै घर से धक्के देकर निकाल दूगी।"

"पर मां! उसको इस घर में से निर्वाह-योग्य मिलता रहा तो फिर वह क्यों जाएगी।"

"वह इसलिए कि प्रायः लोग कमाई इसलिए नहीं करते कि उनके घर में खाने को नही होता। खाना-पीना तो बहुत कम से हो जाता है। देखो रूप, तुम्हारे पिता सौ-सवा सौ से अधिक कमाकर नही लाते थे और उसमे भी सात प्राणी भोजन पा लेते थे। इतना ही नही, उसमें से कुछ तुम्हारे मामा और मामा के लड़कों को भी मै दे सकती थी। भोजन-वस्त्र के अतिरिक्त भी व्यय होते हैं और उनके लिए तो कुबेर का धन भी पर्याप्त नही हो सकता। प्रायः लोग परिश्रम और पाप-कर्म उन्हीं आवश्यकताओं के हेतु करते हैं। इसीसे कहती हूं कि उसको यहा लाओगे तो यहा रह सकेगी क्या?"

"मां? वह बहुत अच्छी है। कहो तो उसको पहले ट्रायल (परीक्षा) के तौर पर एक-दो दिन के लिए ले आऊं।"

"पहले उसको दिखा दो। तुम्हारी बहिनें है। दो विवाहने योग्य हो रही हैं उनके मन में कही कुछ विकार बन गया तो मुख पर कालिख पुत जाएगी।"

अपनी बहिन कृपा तथा दया की बात सुनकर रूप गम्भीर विचार में पड़ गया। उसने कुछ विचार कर कहा, "अच्छा मां! विचार करूंगा।"

रूप उस रात घर पर नहीं आया। अगले दिन रोहिणी ने अपने पति से कहा, "रात रूप घर पर नहीं आया।"

"उस विधवा की सुन्दर लड़की की संगत में रहा होगा।"

"मेरा मन डरता है। मैंने कल उसको लड़की को यहां लाने से मना तो नहीं किया था। इसपर भी भय का कारण तो है कि कही वह घर छोड़कर भाग न जाए। ले-देकर अपने पूर्ण जीवन की एक वही तो कमाई है।"

"तो आ जाएगा। कदाचित् वह उस लड़की को लेने गया होगा और उसने आने से ना कर दी होगी। ये वेश्याओं की लड़कियां भले घरों मे आकर रह नहीं सकती।"

राम का दुकान पर जाने का समय हो गया तो वह चला गया। घर पर कोई नही जानता था कि रूप कहा गया होगा। इससे प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त कोई उपाय न था।

रूप मध्याह्न तक नहीं आया तो रोहिणी को चिन्ता लगने लगी। इसपर भी वह कुछ कर सकने में असमर्थ थी। तीसरे प्रहर रोहिणी का पिता कंवरसेन रूप को साथ लेकर आ गया। रोहिणी उनको देख भौचक्की खड़ी रह गई। कंवरसेन ने लड़की को सम्बोधित कर कहा "रोहिणी, इस अपने लाल को समेटो।"

"क्या हुआ है पिता जी?"

"इसकी ज़मानत दे छुड़ाकर लाया हूं।"

"रूप का हाल-बेहाल हो रहा था। उसके कपड़े गन्दे हो रहे थे। डाढ़ी बढ रही थी और ऐसा प्रतीत होता था कि वह कई दिनों का भूखा-प्यासा है।"

इसके पश्चात् कंवरसेन ने रूप से कहा, "देखो बरखुरदार! अगर तुमको इस बात का शौक है तो मेरे साथ आना। मैं तुमको क्लब का सदस्य बनवा दूगा और वहां जुआ खेलने से कोई मना नहीं करता।"

"पर बाबूजी! यह क्यों?"

"यह कानून है। इसको समझने के लिए तुमको वकालत पढ़नी चाहिए थी।

अभी तो तुमको मेरी बात माननी चाहिए। उन लफगो मे मत खेलने जाया करो। देखो रूप, जहां तुम जाते थे, वहां जुआ नहीं, लूट होती है। वह पुलिस के लाभ के लिए खुला हुआ है। उसको जुआखाना कहते है। क्लब हम रईसो के लिए खुली है। एक व्यापारियो के लिए भी जुआ खाना खुला है। उसका नाम चेम्बर है।"

"चेम्बर के जुएखाने का नाम व्यापार है क्लब के जुएखाने का नाम मनोरंजन है और उस सदर बाजार वाले जुएवाले का नाम जुआखाना अर्थात् गुनाहों का घर है।

"अपने परिवार की मर्यादा का ध्यान करो तो अब वहां मत जाना।"

कवरसेन गया तो मा ने पूछ लिया, "क्या हुआ है?"

"मां! रात किसीने पुलिस मे रिपोर्ट कर दी थी, जब मै जीत रहा था। पुलिस आई और हम सबको पकडकर ले गई। हम तीस-चालीस थे। रात को हमको हवालात मे रखा। सुबह मुझसे जमानत मागी गई तो नाना जी का नाम याद आ गया। एक सिपाही को पाच रुपये दिए तो वह इनको न्यायालय से बुला लाया। ये मेरी ज़मानत देते नहीं थे। फिर पचास रुपये पर एक पेशेवर ज़ामिन ढूढ़ लाए और तब छूटकर आया हूं।"

"तो अब?"

"अब स्नान आदि से मुक्त हो, बात करूगा। हवालात तो बहुत ही गन्दा स्थान है। एक बड़ा-सा कमरा था। हम सब उस कमरे मे बन्द कर दिए गए थे। रात-भर सब कमरे में ही पेशाब करते रहे। बहुत गदा स्थान था। मुझको तो वहां रहते, पेशाब ही बद हो गया था।"

रूप शौचादि के लिए चला गया। पकडे जाने के उपरान्त भी रूप अपने जीत के रुपयों में से अधिकाश छिपाकर ले आया था। वह यह पुलिस-अधिकारियों को भारी घूस देकर ही बचा सका था।

८

रूप को समझ आ गई कि जहा वह जाता है वह बहुत बदनाम स्थान है। इसपर भी वह एक बार तो यह जानने के लिए कि उसकी प्रेमिका का क्या हुआ, वहां गया। सदर बाज़ार में दुकानों के पीछे माल के कई गोदाम थे। उनमें से एक

गोदाम मे एक बनवारीलाल मनचले ने यह जुआ खेलने का प्रबन्ध कर रखा था। रूप के एक मित्र किशोरीलाल ने उसको वहां का पता बताया था और तब से वह वहा नित्य जाता था। उसे वहां जाते हुए तीन मास के लगभग हो चुके थे और इन तीन महीनो में वह तीन-चार दिन के अतिरिक्त जीत ही रहा था। हारने वाले दिनो मे तो वह बीस रुपये हारकर खेलना बन्द कर देता था। उसके साथ खेलने वाले उसे प्रोनोट पर खेलने के लिए कहते भी थे, परन्तु वह कह देता, "न मै उधार पर खेलता हू, न ही किसी उधार लेकर खेलने वाले से खेलता हू।" इससे बहुत लोग उससे नाराज हो जाते थे, परन्तु वह किसी का आई० ओ० यू० स्वीकार नही करता था। न ही स्वय किसीको इस प्रकार का लिखकर देने को पसन्द करता था।

जुएखाने का मालिक उसके इस व्यवहार को पसन्द करता था। इससे दूसरे खेलनेवाले बहुत खार खाते रहते थे। जिस दिन पुलिस ने छापा मारा था उससे कई दिन पहले से रूप लगातार जीत रहा था। पिछले दिन तो उसने ग्यारह हजार के लगभग जीत लिया था। उसमें से एक हज़ार तो जुएखाने के मालिक का भाग बना था। उस दिन वह उसको कमीशन के रुपये देने गया तो बनवारीलाल ने कह दिया, "रूप जी! आज तो आपने सबको भगा दिया है।"

"हा भापा, एक के बाद दूसरा मेरे साथ किस्मत आजमाई करने आता रहा और सब ऐसे जाते रहे थे जैसे मशीनगन के सामने निहत्थे खेत रह जाते है।"

"कितना है?"

"तुम्हारा हिस्सा यह है। कमीशन तो प्रत्येक दाव के समय निकाल ली जाती थी, गिनाई तो वह एक हज़ार एक सौ रुपया से ऊपर निकली।" बनवारी ने कह दिया, "इसका मतलब है तुमको दस हज़ार मिला है।"

"हां।"

"आज किशनो से मिलने जाओगे?"

"मैं किशनो को तो पसन्द नही करता। हां, उसकी लड़की सुमित्रा से बात-चीत किया करता हू। किशनो मुझको टरका देती है। इसलिए मेरी रुचि नहीं रही।"

"भाई! वह कुंवारी लड़की है। उसका तो विवाह होगा।"

"वह भी कर लगा।"

"उसकी मां को क्या दोगे ?"

"वह क्या चाहती है ?"

"एक हज़ार नकद और लड़की के नाम कुछ जायदाद ।"

"जायदाद की बात तो यह है कि मैंने अभी अपने लिए भी कोई सम्पत्ति नही खरीदी। इस समय तक मेरे बेंक में पचास हजार के लगभग जमा हैं। वह लड़की का विवाह कर दे और फिर उसकी इच्छानुसार जैसी जायदाद वह कहेगी, खरीद दूगा ।"

"मैं समझता हूं कि सौदा हो जाएगा।"

"तो करा दो।"

किशनो को बुलाया गया। रूपकृष्ण ने उसके लिए एक हज़ार रुपया तत्काल दे दिया और बनवारी के समक्ष वचनबद्ध हो गया कि दो-तीन दिन मे विवाह कर लेगा। सुमित्रा को बुलाया गया तो उसने एक सौ रुपया उसे भी दे दिया। वह लेती नही थी। परन्तु बनवारी के कहने पर उसने पकड़ लिया।

इसी बात के लिए अपने माता-पिता का मन तैयार करने के निमित्त रूपकृष्ण ने विवाह का सकेत कर दिया था। मां ने कुछ शर्तें रखीं तो वह उन शर्तों के विषय में सुमित्रा से बात करने के विचार से रात को वहा जा पहुंचा। सदा की भांति उस दिन भी वह जेब में बीस रुपये लेकर ही वहा पहुंचा था। सुमित्रा के विषय में वह उसकी मां से कुछ जेब में जीत का धन लेकर मिलने वाला था। उस दिन भी लाभ तो हुआ था, यद्यपि पिछले दिन की भांति तेजी से नही। उसकी जेब में पांच सौ रुपया हुआ तो उसने ताश के पत्ते मेज़ पर रख दिए। उसके साथियों ने कहा भी, "रूप! हम तुमको इस प्रकार भागकर नही जाने देंगे।"

"भाई! मुझको तुम्हारी जेबें खाली होते देख दुःख होता है।"

"हमको किशनो के दामाद को जीतते देख प्रसन्नता होती है।"

"ओह! मुझको उससे मिलने जाना है।"

इतना कह वह बनवारीलाल की ओर जाने लगा कि उस गोदाम के दरवाज़ा खटखटाने का शब्द हुआ। किसीने भागकर दरवाज़ा खोल दिया। बनवारी ने आवाज़ भी दी। मत खोलो। उसको सन्देह हो गया था। वह स्वयं द्वार पर जा, कुछ ले-देकर उनको लौटा देता, परन्तु दरवाज़ा खुला तो फिर कुछ हो नहीं सका। वहां पर चालीस के लगभग लोग रगे हाथ पकड़ लिए गए।

रूपकृष्ण की जेब मे पांच सौ के लगभग रुपये थे। वह उसने भीतर के सलूके की जेब में रखे और पुलिस के साथ चल पड़ा। बनवारीलाल भी उसके साथ ही था।

कोतवाली में पहुंच, सबको हवालात के एक कमरे में बन्द कर दिया गया। रूप ने बनवारीलाल से कहा, "भापा ! अब क्या होगा ?"

"तुम्हारी जेब में कितना रुपया है ?"

"पांच सौ के लगभग है।"

"ठीक है, दिन निकलने दो। इतने से हम दोनों छूट सकेंगे।"

दिन निकलने पर बनवारीलाल ने रूप को कहा, "एक पांच रुपये निकालो।"

रूप ने पांच का एक नोट निकाल दिया। इसपर उसने पूछा, "कोई ज़ामिन है ?"

"एक लाला कंवरसेन एडवोकेट हैं।"

बनवारी ने एक सिपाही को, जो कारागृह के बाहर बन्दूक लेकर खड़ा था, पांच का नोट दे दिया और कंवरसेन एडवोकेट को बुलवाने के लिए कह दिया।

कंवरसेन आया और वृत्तान्त जान मजिस्ट्रेट के समक्ष उसको ले गया। उसने जमानत मांगी तो कंवरसेन एक पेशेवर ज़ामिन को ले आया। जब जमानत हो गई तो कंवरसेन ने एक सौ रुपया रूप से मांग लिया। रूप ने वे रुपये दिए तो कंवरसेन ने पचास रुपये ज़ामिन को दिए। दस रुपये मजिस्ट्रेट के अर्दली को दिए तथा शेष चालीस अपनी जेब में रख, रूपकृष्ण को उसके घर ले गया। बनवारी तो हवालात से ही अपने घर चला गया था। रूप जब घर पहुंचा तो मध्याह्नोत्तर दो बज चुके थे।

आज सायं पांच बजे रूप बनवारी के घर पहुंचा। घर को ताला लगा था। वहां से वह किशनो के मकान पर पहुंचा। वह जुएखाने और बनवारी के घर से कुछ अन्तर पर था। घर का दरवाजा खुला था परन्तु घर में कोई नहीं था। घर के नीचे एक ठेला खड़ा था और घर का सामान निकाल ठेले में लादा जा रहा था। रूप ने ठेले वालों से पूछा, "यह कहां लिए जा रहे हो ?"

"प्रीमियर फरनिशिंग हौस में। यह सामान भाड़े पर था।"

"और इसके लोग ?"

"हम नही जानते ।"

वहा से लौट, जुएखाने पर पहुचा । वहा भी कोई नहीं था । हताश रूपकृष्ण वहा से लौट, घर पहुचा । उस समय राम दुकान से लौट चुका था और रूप के साथ घटी घटना का वृत्तान्त, जैसा रोहिणी जानती थी, सुन चुका था ।"

"सुनाओ बरखुरदार ! आज कहा गए थे ?"

"जिस दुकान पर काम करता था, वह बन्द हो गई है ।"

"तो अब कोई और दुकान करोगे ?"

"नानाजी बता गए है कि दो स्थान पर जुआ खेलना मान-प्रतिष्ठा का काम माना जाता है । एक क्लब मे तथा दूसरे 'चेम्बर' में ।"

"हा, समाज ने वहां पर इसकी स्वीकृति दे रखी है । परन्तु रूप, बात वही काम की है जो गोवर्धनजी ने बताई थी । बिना भाग्य के कुछ नही बनता । किसी काम के अथवा उस काम के स्थान के अच्छा-बुरा होने के अतिरिक्त लाभ तो भाग्यशालियों को मिलता है ।"

"भापा, यह तो जाना, परन्तु जहा से लाभ हो और जिस काम से लाभ हो, वह काम ही तो अच्छा माना जाएगा ।"

रूपकृष्ण अपने पिता की भाति अच्छे-बुरे काम का मापदण्ड लाभ ही मानता था। राम इस बात पर आज ही गोवर्धनलाल से विचार करता हुआ आ रहा था ।

गोवर्धनलाल दुकान पर आया था । शिवकुमार ने अपने एक सौदे की बात बताई । उसने बताया था : 'जीजा जी ! मैने ईमानदारी से लाला जी का सब रुपया आपके पास लिखा दिया था। इस ईमानदारी से मुझे पाच लाख रुपये की हानि हुई थी। परन्तु भगवान की कृपा से आज ही एक सौदे मे मैं अपनी हानि पूरी कर आया हूं । सरकार ने सेना के लिए पांच लाख टन भूसे का टेंडर मागा था । वह टेंडर मैंने दो रुपये टन अन्य व्यापारियों से अधिक भरकर दिया हुआ था। मुझको स्वीकार होने की आशा नहीं थी । आज टेंडर खुले तो मेरा टेंडर स्वीकार हो गया । इसके लिए मुझे अफसरो का मुह मीठा करना पड़ा है ।'

गोवर्धनलाल ने पूछ लिया, 'कितना खर्च करना पड़ा होगा ?'

'एक लाख रुपया—कुछ अग्रिम और कुछ वचन से देना पड़ा है ।'

'और माल ?'

'वह तो मेरे पास तैयार रखा है । कल से डिलीवरी आरम्भ हो जाएगी ।'

'ठीक है शिवकुमार ! तुम बेईमानी से मृत पिता को धोखा देना चाहते थे। वह तुम कर नही सके और अब बेईमानी से सरकार को धोखा दे आए हो। जहां तक तुम्हारा सम्बन्ध है, तुम वही के वही हो।'

'दोनों मे भारी अन्तर है जीजा जी।'

'क्या अन्तर है ?'

'एक तो वह व्यक्ति जिसको धोखा दिया जाना था, जानता नही था और इस सौदे मे तो सब कुछ स्पष्ट है। सौदा स्वीकार करने वाले भी जानते थे कि मुझको दस लाख रुपये से ऊपर तो अनायास ही लाभ होने वाला है। इसके अतिरिक्त सामान्य लाभ तो है ही।'

'किसको विदित था ?'

'सरकारी अफसरों को।'

'तो यह भूसा उस अफसर के घर बधी गाय के लिए था ?'

'नही। था तो सेना के जानवरो के लिए।'

'और क्या सेना उस अफसर के बाप की कमाई पर पलती है ?'

'नही, सेना···हा, सेना तो सरकार की है। परन्तु सरकार ने ब्रिगेडियर माईकल को इस काम के लिए नियुक्त जो किया हुआ है।'

'जैसे आपके पिता जी मुझको सम्पत्ति का प्रबन्ध करने के लिए नियुक्त कर गए है। यदि मैं भी आपसे कुछ ले-देकर वह पाच लाख छोड़ देता तो मै भी ब्रिगेडियर माईकल बन जाता।'

'परन्तु जीजा जी ! आप वही कुछ करते जो ब्रिगेडियर साहब ने किया है, तो मै कैसे दोषी हो जाता।'

'परन्तु आपने घूस जो दी है।'

'यह तो हम सब अधिकारियों को देते है। इस सौदे में कुछ अधिक देनी पड़ी है। दोष सरकार का है कि उसने ऐसे अफसर रखे हुए है।'

'सरकार की बात सरकार निपट लेगी। वह ऐसे अधिकारियों को नियुक्त कर अपनी जड़ो को खोखला कर रही है। मैं तो तुम्हारी बात कर रहा हू। तुम यदि मुझको धोखा देकर या मुझको ले-देकर लाला जी का पांच लाख बचा लेते तो पाप के भागी तो तुम हो ही जाते। मेरे बेईमान बनने से अथवा बुद्धू बनने से तुम कैसे पाप से मुक्त माने जा सकते हो ?'

'हमारे व्यापार का नियम है कि जब तक हम कानून (राजनियम) से बचे रहते है तब तक हम धर्मात्मा है। धर्म समाज का नियम है और जब समाज का नियम हमको छूता नही तो हम अधर्मी नही हो सकते।'

'नहीं शिव जी! यह ऐसा नही। धर्म एक शाश्वत वस्तु है। वह ध्रुव की तरह सत्य एवं अटल है। समाज तथा राज्य के नियम उस ध्रुव सत्य धर्म के विपरीत न होने चाहिए, न होते है। कभी धोखाधडी से अथवा घूस देने से समाज के नियम उस ध्रुव धर्म के विपरीत हो सकते है, अथवा उनको किया जा सकता है। परन्तु उस धर्म द्वारा विरोध होते ही पाप सम्पन्न हो जाता है। उसका फल मिलता है।'

'देखिए संत जी महाराज! हमारे लाला जी समाज एवं राजनियम का पालन करते हुए ही लाखोपति बने है और मैं भी इसी प्रकार लाखों कमा रहा हूं। राज नियम से बचकर मेरा जीवन सुखमय हो जाएगा। उपरान्त जो होगा, तब विचार कर लूंगा।'

'अच्छा, एक बात बताओ। वह दुकान के बाहर, एक कुत्ता दस मिनट से मुख उठाए खड़ा है, क्यों?"

'उसको इस वक्त यहां से नित्य एक रोटी मिला करती है।'

'यह कोई अच्छी परिस्थिति है?'

'नहीं। आज रोटी बची नहीं। इस कारण इसके लिए है ही नहीं। और यह कुछ देरी तक और ठहरकर चला जाएगा।'

'तो यह दुःख, क्लेश और कष्ट पाएगा?'

'हां। यह तो है।'

'बताओ, इसने क्या किया है कि इसको यह परतन्त्रता का भोग करना पड़ रहा है और उसमें भी दुःख और कष्ट पृथक् हैं।'

'यह तो मै बता नहीं सकता।'

'मैं बताता हूं। शास्त्र में लिखा है—

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसा वृताः।
तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः॥

'वह मनुष्य जो आत्मा का हनन करता है अर्थात् ईश्वरीय नियमों को, जिनको दूसरे शब्दों में शाश्वत धर्म कहा है, नहीं मानता, वह मृत्यु के उपरान्त असुर

योनियों मे जाकर अन्धकार में विचरता है।

'इसका अर्थ यह है कि धर्म का पालन न करने वाले देहावसान के उपरान्त इन कुत्ते, बिल्ली इत्यादि की योनियों मे विचरते है। इन योनियों मे प्राणी अन्धकार मे वास करते है। अर्थात् इनमें ज्ञान, विवेक नहीं होता। ये अपनी अवस्था को सुधारने के हेतु कोई उपाय विचार नहीं कर सकते। इनका जीवन आसुरी अर्थात् इन्द्रियों के विषयों के अधीन होता है। समय आने पर ये वासना-तृप्ति कर लेते है अथवा भूख-प्यास लगने पर उनकी तृप्ति करते हैं। शीत लगने पर धूप में जा खड़े होते है अथवा गर्मी लगने पर जल में नहा लेते है। परन्तु यदि उन विषयों की तृप्ति के साधन भी समक्ष उपलब्ध न हों तो ये नही विचार कर सकते कि वे साधन कहां से प्राप्त करे।

'इसलिए शिव जी! मैं कहता हू कि धर्म की अवहेलना अति भयानक वस्तु है।'

रूप ने जब यह कहा कि नेक काम वह है जिससे लाभ हो तो राम को उक्त पूर्ण वार्तालाप, जो शिवकुमार एवं गोवर्धनलाल के मध्य हुआ था, स्मरण आ गया। उस समय जब कुत्ते को जिह्वा बाहर निकाले, मुख उठाए, दुकान की ओर देखते खड़े पाया तो रामकुमार को रोमाच हो आया था। शिवकुमार भी बहुत बेचैन दिखाई देने लगा था। इसपर भी उसने गोवर्धनलाल से पूछ लिया, 'परन्तु यह कैसे प्रतीत हो कि धर्म यह है। राजनियम तो लिखे रहते है। कानून की पुस्तक सरकारी छापेखाने में बिकती है। क्या धर्म की कोई पुस्तक भी ईश्वर के किसी छापेखाने मे बिकती है?'

गोवर्धनलाल हंस पड़ा था। उसने कहा था, 'हा धर्मशास्त्रो में लिखा है। लिखा है सदा सब आयुओं में और सब मनुष्यों के लिए धर्म है:

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

'अन्य सब धर्म इनके अनुकूल ही होने चाहिए। इनके विपरीत नही हो सकते।'

'शिवकुमार!' गोवर्धनलाल ने आगे कहा, 'तुमने अस्तेय धर्म का विरोध किया है।'

'तो तुम समझते हो कि मैं इस कुत्ते की योनि में पड़ूंगा?' शिवकुमार ने

पीतमुख हो पूछ लिया।

'यह मै क्या जानू, देखो शिव जी! एक चोर चोरी करता है उसको न्यायाधीश दो मास का दण्ड दे, मुक्त कर देता है। दूसरे को वैसे ही अपराध पर दो वर्ष की कैद का दण्ड देता है। वह न्यायाधीश इस भदेभाव मे कुछ तो कारण रखता ही होगा। परन्तु हम कैसे कह सकते है कि न्याय करते समय न्यायाधीश क्या विचार कर कितना दण्ड दे देगा। हमको तो इतना ज्ञान होना पर्याप्त है कि जो कुछ कर रहे है वह दण्डनीय है।'

शिवकुमार ने मुनीम को कहा, 'मोहन भैया, इस कुत्ते को आज आधा सेर दूध पिला दो।'

मुनीम गया और सामने ही हलवाई की दुकान से दूध लाकर कुत्ते को पिलाने लगा।

राम ने सोचा कि शिव भैया का, गोवर्धनलाल जी की बात से, हृदय कांप उठा मालूम होता है। वह स्वय भी उस समय से अपने जीवन का अवलोकन कर रहा था। वकालत के दिनो में अनेको बार वह किसी सम्भावित ग्राहक के आने पर मुख उठा उसके कथन की प्रतीक्षा करता रहता था। प्रायः आने वाला कुछ इधर-उधर की बात कर चल देता था। कोई बिरला ही ऐसा होता था जो उसकी आय की बात करता था। वह अपनी अवस्था की तुलना उस दुकान के बाहर खड़े कुत्ते की अवस्था से करता था। वह भी अपनी अवस्था सुधारने में कुछ नहीं कर सकता था। जो मनुष्य उससे गप्पे हाकने आते थे, वह उनको यह नही कह सकता था कि वे किसी मुकदमे की बात करे। यह ठीक कुत्ते को रोटी फेंकने अथवा न फेंकने के सदृश ही था।

राम ने अब पुनः रोमांच अनुभव करते हुए कहा, "रूप! मै तो तुमको समझा नही सकता। मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि जुआ खेलना श्रेष्ठ कार्य नहीं है!"

रूप को भी हवालात में रात्रि के आठ घण्टे नरक तुल्य ही प्रतीत हुए थे। वह विचार करता था कि यदि पिछली रात वह हार में होता और अपने बीस रुपये हार चुका होता और तब पकडा जाता तो वह आज दिन-भर छूट न सकता। कदाचित् एक रात उसको और कारागार मे वास करना पडता। इस बात को स्मरण कर उसको भी रोमाच हो आया। उसके पूर्ण शरीर में कंपकपी उठी और

वह अपने पिता को बातचीत में ही छोड, अपने कमरे में चला गया। राम उसके पीछे वहा जा पहुचा। उसने वहा जा, उससे पूछा, "मै एक बात जानने आया हूं कि क्या कवरसेन जी को भी कुछ देना पडा है तुमको ?"

"मैने उनको एक सौ रुपया दिया था। उसमे से उन्होने दस रुपये तो मजिस्ट्रेट के अर्दली को दिए थे। पचास रुपये पेशेवर जामिन को दिए थे और शेष उन्होंने अपनी जेब मे रख लिए थे।"

"ठीक है, तुम कवरसेन जी के एहसान से मुक्त हो।"

"जी, रहना ही चाहिए। वह अच्छा आदमी नही।"

रूपकृष्ण विचार करता था कि वह सदर बाजार वाले जुएखाने में न तो अब जा सकता है, न ही जाने की उसकी इच्छा हो रही थी। सबसे अधिक निराशा का कारण किशनो की लडकी सुमित्रा थी। वह उसपर मुग्ध था और अब उसको मिलना ही कठिन हो रहा था।

९

पूर्ण सम्पत्ति का चार्ज लेने में तीन मास लग गए थे। कई मकान थे, कोठियां थीं और पोर्ट ट्रस्टों के तथा अन्य कम्पनियो के हिस्से थे। सबसे पहली बात जो गोवर्धनलाल ने की, वह रुपये को सुरक्षित करना था। उसने उन व्यवसायों में लगा रुपया, जिनको सुदृढ नहीं समझता था, नक़द कर बैंकों मे करा लिया। मकानों की देख-रेख के लिए उसने एक मुन्शी सौ रुपये मासिक पर रख लिया। वह मकानो एवं कोठियों की देख-रेख करता था तथा किराया वसूल करता था।

गोवर्धनलाल ने नौकरी छोड दी थी। अब वह भगवद्भजन एव सुलक्षण ट्रस्ट के प्रबन्ध मे समय व्यतीत करता था। अपनी सास कर्मदेवी और अपनी साली सदारानी के भाग के रुपये के प्रबन्ध का भी वही विचार करने लगा था।

गौरी को भी अपने पिता की सम्पत्ति मे से एक लाख रुपये से अधिक प्राप्त हुआ था। अतः उसने इस पूर्ण धन को धर्मार्थ व्यय करने का निश्चय कर लिया था। वह इस धन को बैंक के पक्के खाते मे रखे हुए थी और उसके ब्याज से वह निर्धनों के बच्चों को छात्रवृत्ति देने का विचार रखती थी।

इस प्रकार पति-पत्नी अपने मन मे लोक-कल्याण के कार्यों में लीन, काम कर

रहे थे। इन दिनों एक विशेष बात होने लगी थी। रूपकृष्ण राम का लड़का अपनी बूआ गौरी से मेल-मुलाकात बनाने लगा था।

गोवर्धनलाल का नियम था कि वह प्रातःकाल ४ बजे सोकर उठता एवं शौचादि से निवृत्त होकर अपने पूजा-पाठ में लीन हो जाता था। सात बजे वह इस कार्य से निवृत्त होकर प्रातः का अल्पाहार लेता था। गौरी बनाती थी और पति-पत्नी दोनों खाते थे। यही समय होता था जब रूपकृष्ण इनसे मिलने आ जाया करता था। वह मकान के नीचे से आवाज़ देता, "फूफा जीऽऽ !"

और गोवर्धनलाल ऊपर बैठक मे से झांककर उसे देखता तथा आवाज़ दे देता, "आओ रूप, आ जाओ।"

मकान का दरवाज़ा खुला रहता था। वह ऊपर चढ़ आता। अल्पाहार में प्रायः चाय, मक्खन-टोस्ट और बाजार की मिठाई होती थी। रूप को निमंत्रण मिल जाता तो वह फूफा एवं फूफी के लिए चाय तैयार करने बैठ जाता और टोस्टों में मक्खन लगा देता।

वह जानता था कि उसका फूफा एवं फूफी अब अच्छे-खासे धनी हो गए है। परन्तु उनके घर में सामान तथा उनके वस्त्रादिक बहुत ही साधारण रहते थे। उनके घर में फर्श पर बैठने के लिए चटाइयां रहती थी। दो तख्तपोश थे और उनपर दरी तथा चादर-तकिया और ओढ़ने को दोहर ही होती थी। अति शीतकाल के लिए उन्होंने दो रज़ाइयां बनवाई हुई थी।

घर में दो सन्दूक थे एव बहुत सक्षेप में बर्तन—बस यही कुछ था। एक नौकरानी रखी हुई थी जो घर की सफाई और बर्तन साफ कर जाती थी।

गोवर्धनलाल और गौरी विस्मय करने लगे थे कि रूप उनके घर में क्यों आने लगा है। रूप की चार बूआ थी तथा तीन फूफा। एक बूआ तो विधवा थी। सदारानी भी धनवान हो गई थी। अन्य दोनों फूफियां तो पूर्व ही धनवान थी। इस कारण यदि धनाकर्षण होता तो वह उनके यहां भी—विशेष रूप से सदारानी के यहां जाता। परन्तु उनको विदित था कि वह उनके मुहल्ले की ओर भी नहीं जाता था। यह तो स्पष्ट था कि उसको ला० सुलक्षणमल की सम्पत्ति में से भाग मिला है, तब से ही वह उनके घर में आने-जाने लगा था।

कभी पति-पत्नी इस विषय पर विचार भी करते थे। गोवर्धनलाल का विचार था कि वह चोरी करने आता है। गौरी का कथन था, "चोरी करने के विचार से

आता होता तो एक-दो दिन में ही उसको समझ जाना चाहिए था कि यहां चोरी करने के योग्य कुछ है नहीं। मैं भूषण तक तो पहनती नही, फिर चोरी किस बात की करेगा ?

" इसपर भी यह तो स्पष्ट ही है कि उसका यहां आना हमारे धन से सम्बन्ध अवश्य रखता है। जब हम सर्वथा अकिंचन थे, तब तो वह कभी आया नही था।"

गोवर्धनलाल घर मे नकदी भी नही रखता था। उनके घर का व्यय अति अल्प था। उनका मुख्य व्यय था रोटी और नौकरानी। इन दोनों पर पचास रुपये मासिक से अधिक व्यय नही होता था। इतना भी वे मास में केवल दो बार बैंक से निकलवाते थे। अर्थात् उनकी जेब में कभी भी पचीस रुपये से अधिक नही होता था। विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति वे एक पाठशाला के मुख्याध्यापक के द्वारा देते थे और सबके लिए इकट्ठा चैक दे आते थे। वे इस दिशा में दान-दक्षिणा से प्रसन्न नहीं थे। इसके लिए वे विचार कर रहे थे कि कोई अधिक उपकारी कार्य करे।

इसपर भी वे रूप को न तो मना करते थे, न ही उससे किसी प्रकार का कठोर व्यवहार रखते थे। यू अनेकानेक विषयों पर बातचीत होती रहती थी। किसी भी विषय पर वार्तालाप आरम्भ होता, उसका अत सदैव परमात्मा, आत्मा एवं प्रकृति पर हो जाता। गौरी ने शास्त्राध्ययन किया था और वह अपनी बुद्धि से विचार कर इस परिणाम पर पहुची थी कि ससार की सब समस्याएं इन तीन मूल पदार्थों के रहस्य को जानने से सुलझ जाती है।

प्रातः का अल्पाहार लेते हुए कभी रूपकृष्ण पूछ लेता, "बूआ, तुमने अपने घर में सुख-सुविधा का सामान भी नही रखा हुआ ?"

"मैं तो समझती हू कि हमको सब प्रकार की सुविधा प्राप्त है। मकान अति साफ-सुथरा है। इसकी सफाई नित्य-प्रति होती है। वस्त्र हम धुले हुए पहनते हैं। साथ ही तन ढांपने और ऋतुओं के शीतोष्ण सहन करने योग्य भी पहन लेते हैं। भोजन जहां तक पेट भरने और शरीर को चालू रखने के लिए चाहिए वह हम लेते ही हैं। साथ ही उसको स्वादिष्ट बनाने के लिए हम सदा यत्नशील रहते हैं। तुम यदि कोई त्रुटि देखते हो तो बताओ।"

"एक-आध भूषण पहन लिया करती तो ठीक रहता।"

"जहां तक सुख-सुविधा का प्रश्न है, भूषण न होने से किसी प्रकार का कष्ट नही होता।"

"क्या किसी वस्तु का अभाव भी समझ नही आ रहा ?"

"अभाव ?" गौरी गम्भीर हो गई। कुछ विचारोपरान्त पूछने लगी, "अभाव का अनुभव करना अपने मन की बात है अथवा दूसरों के मन की ?"

"दोनो के, संसार देख चर्चा करता है। इससे अपने मन मे अनुभव होता है।"

"क्या चर्चा सुनी है तुमने ?"

"मेरी माता जी कहती है कि आप दोनो, फूफा-फूफी, अति कजूस है। एक चूड़ी तक तो बनवाई नही। वे कहती है कि जब तो आपके पास धन नही था तब तो भला यह भूषणो का न होना समझ आता था, परन्तु अब तो ईश्वर की कृपा है और अभी भी आपने हाथ मे चूडी नही पहिनी।"

"तुम्हारी माता जी को मेरे भूषण देखने की आवश्यकता क्यों हुई ? केवल एक व्यक्ति ही इस विषय मे विचार करते है। एक वे है जो मुझको भूषित अर्थात् सुन्दर बना देखना चाहते है। मुझको ऐसा देखने का अधिकार इस ससार में केवल एक व्यक्ति को है। वे है तुम्हारे फूफा। इसमें ये कहते है कि कृत्रिम सजावट से मेरा स्वाभाविक सौन्दर्य अधिक आकर्षक है। एक बार इस विषय में इनसे बात हुई भी थी। तुम्हारे फूफा कहने लगे, 'गौरी, बिरादरी के लोग तुम्हारे हाथो को रीता देख बुरा मानते होगे।'

"मेरा स्पष्ट उत्तर था, 'उनको अपने विषय में टीका-टिप्पणी करने का अधिकार मैने कभी नही दिया। इसपर भी यदि कोई अपने मन मे कुछ कहता है तो वह अनधिकार चेष्टा करता है।'

"'परन्तु समाज ने यह रिवाज़ बना रखा है कि सधवा स्त्रियां कम से कम हाथ मे चूडी अवश्य पहनती है।'

"'समाज का यह अनधिकारपूर्ण निश्चय है। मैं इसको मानने के लिए तैयार नही। आज चूड़ी की बात मानू। कल पर्दे की बात होगी। उपरान्त नित नये निकलने वाले फैशनो की बात होगी और न जाने क्या-क्या बन्धन यह समाज जारी करेगा और मुझको मानने पड़ेगे। मै समाज को अपनी सीमा के अन्दर रखना चाहती हू।'

"'इससे तो कोई स्त्री तुमको विधवा भी मान सकती है।'

"'मैं यही पूछना चाहती हूं कि देखने वाली स्त्रियों को मेरे विवाहित तथा सधवा होने के विषय में जानने की लालसा क्यो है ? समाज को भी मेरे सधवा

होने की डुग्गी पीटने की आवश्यकता क्यों अनुभव हुई है ? क्या समाज को मेरे सधवा होने का मुझपर टैक्स लगाना है ? देखिए जी ! यह सब व्यर्थ की बातें है। भूषण तो शरीर को अलंकृत करने के हेतु होते है। मुझको अपने को सजाने की आवश्यकता केवल आपके लिए है। आपको यदि मुझको सजाने की आवश्यकता अनुभव होती है तो जैसे भी मन करे सजा लीजिए। ससार मे अन्य किसी व्यक्ति को इस विषय में न तो इच्छा करने का अधिकार है न ही मै अधिकार किसीको देना चाहती हू।'

" 'रूप, इस वार्तालाप के पश्चात तुम्हारे फूफा जी ने मुझको भूषण पहनाने का यत्न नही किया। "

"परन्तु अपने मन की संतुष्टि के लिए क्या इनको पहनने की आवश्यकता नही ?"

"मन के विषय मे जानते हो कि यह क्या और कब चाहता है ?"

"नहीं।"

" तो सुनो। मन एक यंत्र है, जो हमारे आत्मा से संलग्न है। यह इच्छा करता है, यह इसका गुण है। परन्तु क्या इच्छा करे, यह इसपर पड़े संस्कारों के कारण है। इसमें प्रमाण यह है कि सब व्यक्तियो पर संस्कार एक समान नहीं होते, अतः सबकी इच्छाएं भी समान नही होती। कोई मद्य-सेवन की इच्छा करता है तो कोई मिष्टान्न खाने की। कोई खुली वायु मे भ्रमण करने की इच्छा करता है तो कोई बन्द हाल में बैठ नाटक देखने की। किसीको दु.खान्त नाटक पसन्द है तो किसीको सुखान्त। अभिप्राय यह है कि मन उसी बात की इच्छा करने लगता है जिसके सस्कार मन पर पड़े होते है।

" मन की इच्छाएं उन संस्कारो को बदलने से बदल सकती हैं। मैंने अपने मन पर ऐसे संस्कार डाल रखे है कि मुझको तुष्टि होती है ससार में लोगों का कल्याण होते देखने से।

" कल्याण का अर्थ उनकी इच्छाएं पूर्ण करना नही। कल्याण का अर्थ है जिससे वे ससार के बधनों मे से मुक्त होने में सुविधा समझे। इस संसार में सबसे बड़ी हित की बात यह है कि उनमे, इस ससार के नैसर्गिक कष्टों को सहन करने एव उन कष्टों से पृथक् होने की क्षमता उत्पन्न करना। "

"ये नैसर्गिक कष्ट क्या है ?"

"एक तो हम इस पृथ्वी पर कैद हैं। इसको त्याग हम कहीं भी जा नहीं सकते। यह पंचभौतिक शरीर इस पृथ्वी पर ही वास करने योग्य है। हम इसको आत्महत्या कर त्याग सकते है। परन्तु बिना कर्म-फल से मुक्त हुए इस शरीर के बंधन से, एतदर्थं इस पृथ्वी के बधन से, मुक्त नही हो सकते। एक शरीर को त्यागकर तो कर्म-फल से बधे हुए तुरन्त ही दूसरे शरीर मे चले जाएगे।

"इस पृथ्वी के अतिरिक्त हम देशों की सीमाओं में बधे है। यह ठीक है कि देशों की सीमाएं मनुष्य-निर्मित है। परन्तु इस प्रकार के मूर्ख समाज मे, और उसपर एक दुर्बल एवं पराधीन समाज में, जन्म लेना भी तो अपने कर्म-फल से बंधा होना है: अतः कर्म-फल से मुक्त होना और ससार के अधिक से अधिक प्राणियों को कर्म-फल से मुक्त करना परम कल्याण का कार्य है। यह करने से मेरे मन को तुष्टि होती है। मै इस दिशा मे कुछ सीमा तक यत्नशील रहती हूं।"

"परन्तु बूआ! कर्म-फल से मुक्त कैसे हुआ जा सकता है?"

"एक तो कुछ कर्म हैं जिनको करते हुए हमारे मन पर व्यर्थ की बातों के संस्कार नहीं पड़ते। उन विषयों में शास्त्र ने यह कहा है:

यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर॥

"रूप! इसका अर्थ यह है कि यज्ञ के अतिरिक्त किए हुए कार्य मनुष्य को बांधते है। अर्थात् यज्ञ कार्य-बंधनकारी नही होता। इसलिए मनुष्य को यज्ञ कर्म-फल की इच्छा त्यागकर करने चाहिए।"

"यज्ञ का अर्थ क्या है? हवन को ही यज्ञ कहते हैं न?"

"नहीं, उसको अग्निहोत्र कहते है। यह तो केवल एक प्रकार का यज्ञ है। यज्ञ के अर्थ अग्निहोत्र से अति विशाल हैं। लोक-कल्याण के उन कार्यों को जिनमें अपना हित गौण हो, यज्ञ-कर्म कहते हैं। स्कूल खोलना, अस्पताल खोलना अथवा अन्य ऐसे कार्य जिनमें से सर्वसाधारण का हित हो, वे यज्ञ होंगे। यह भी लिखा है:

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
भुंजते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥

"इसका अर्थ यह है कि यज्ञ करने के उपरान्त जो कुछ बचे, उसे अपने प्रयोग में लाने वाला व्यक्ति सब पापों से मुक्त हो जाता है। वे लोग जो केवल अपने लिए

ही उपार्जन करते है वे पाप-भक्षण करते है।

"बूआ ! तो तुम लोग क्या यज्ञ-कर्म करते हो ?"

"देखो रूप, ठीक-ठीक तो तुम्हारे फूफा तुमको बताएगे। मैं तो इतना ही जानती हू कि मेरी कमाई लगभग छ हजार छ सौ रुपया वार्षिक है। इसका पांच हजार हम दान कर देते है। उसमें से कुछ तो विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां जाती हैं। कुछ अकस्मात् किसी कष्ट में फंसे व्यक्ति के सहायतार्थ सुरक्षित रखते है। एक पुस्तकालय तथा वाचनालय इस मुहल्ले में निर्माण किया जा रहा है। शेष लगभग डेढ हजार रुपया वार्षिक हम अपने खाने-पहनने तथा भ्रमण करने मे व्यय करते है।

" मुझको अपने किए पर तुष्टि होती है। इसकी तुलना मे भूषण पहनने से भला क्या तुष्टि हो सकती है। "

"बूआ, अन्य लोग, मेरा अभिप्राय है अन्य स्त्रियां, तो ऐसा नहीं समझती ?"

"हा। मै जानती हूं। मैं उनके विचार पर आपत्ति नही करती। इतना ही कहना चाहती हूं कि उनकी भूषणादि-प्रसाधन की इच्छा उनके सस्कारों का फल है। जब तक उनके संस्कार ऐसे है, वे इन पदार्थो के लिए इच्छा करती है। उनके भूषणों से मेरा झगडा नहीं। मेरा झगडा तो उनके सस्कारों से है। जब सस्कार ठीक हो जाएंगे, तब वे अपने-आप ही इनको छोड़, किसी कल्याण-मार्ग की इच्छा करने लगेंगी।"

१०

रूपकृष्ण जिस दिन जुएखाने मे पकडा जाकर एक रात के लिए हवालात में रखा गया था, उस दिन से ही वह अपने विषय मे एक दूसरे ढग से विचार करने लगा था। ला० कंवरसेन, जो उसकी जमानत का प्रबन्ध कर उसको छुड़ाकर लाया था उसको क्लब अथवा चेम्बर में जाकर जुआ खेलने की शिक्षा दे गया था। वह उसकी इस शिक्षा का अर्थ लगा रहा था कि जुआ खेलना बुरी बात नही। बुरी बात है जुआ खेलते पकड़े जाना। यदि किसी ढंग से वह पकड़े जाने से बच सकता है तो जुआ खेल सकता है। वह कवरसेन के कथन का यह अर्थ समझा था कि चेम्बर और क्लब उसकी रक्षा कर सकते हैं। इसपर भी वह ताश के पत्तों से जुआ

खेलने में तो कठिनाई अनुभव नही करता था। ताश के पत्तो को चलाना तो वह पांच मिनट में सीख गया था। परन्तु क्लब का सदस्य होने और फिर वहा के सदस्यों में प्रतिष्ठित होने का भास कराने में तो कई बाते करनी आवश्यक थीं। इसके लिए तो उसको पहली किसी जगह पर अपना काम जमाना आवश्यक था, या तो वह किसी अफसरी की नौकरी प्राप्त करे अथवा वकालत इत्यादि व्यवसाय मे प्रवेश पाए। यह उसको अपने मान का प्रतीक नहीं लगता था; दूसरा सुझाव था चेम्बर मे जाने का। वहां हिस्से इत्यादि बेचने तथा खरीदने का काम करना तो और भी दुस्तर था। इस विद्या को सीखने एव समझने के लिए वह किसी व्यापारी की सगत मे रहना चाहता था। वह शिवकुमार से इस विषय में बात करने गया था परन्तु शिवकुमार तो इस प्रकार का व्यापार करता नहीं था। वहा गोवर्धन को इस विषय मे कुछ कहते सुन, वह उससे अधिक जानने एव अनुभव प्राप्त करने के लिए उसके घर में जाने लगा। गोवर्धनलाल से तो इस विषय मे कुछ विशेष सहायता मिली नही। हा, गौरी बूआ की बातों में उसको रुचि होने लगी।

गौरी बूआ का कथन था—अपनी आवश्यकताओं को न्यूनातिन्यून कर रखना चाहिए। रूप अपने कालेज के दिनों में पढा था कि जीवन-स्तर ऊचा करने से समाज मे उन्नति होती है। जीवन-स्तर का अर्थ है जीवन की आवश्यकताए। मतलब यह है कि जीवन की आवश्यकताए बढाना उन्नति का लक्षण है। उसने यह गौरी को बताया तो वह इसका अर्थ न समझती हुई अपने भतीजे का मुख देखने लगी। कुछ विचार करने पर वह इस भ्रमोत्पादक कथन में दोष-बिन्दु को जान गई। उसने पूछ लिया, "रूप, यह तुमको किस मूर्ख ने बताया है।"

"मूर्ख नही बूआ! दिल्ली के बहुत बड़े अर्थशास्त्री ने मुझको कालेज में पढ़ाया था।"

"तो कालेज मे नौकरी पा जाने से वह मूर्ख नहीं रहा? देखो, मैं तुमको उसकी मूर्खता का भास कराती हूं। उन्नति के अर्थ वह नही समझा, उन्नति का अर्थ न समझने मे कारण उसको मानव का अथवा मानव-समाज का मिथ्या ज्ञान है।

"रूप, आवश्यकताए कई प्रकार की हैं। आत्मिक, मानसिक, बौद्धिक एवं शारीरिक। वास्तव में मानसिक, बौद्धिक और शारीरिक अवश्यकताएं तो एक ही श्रेणी की हैं। मन, बुद्धि और शरीर—तीनों एक प्रकृति के भिन्न-भिन्न रूप होने

से इनकी आवश्यकताएं भी एक ही श्रेणी में आ जाती है। इनको प्राकृतिक आवश्य-कताएं कहते हैं। शरीर, बुद्धि एव मन उन्नति का सोपान है। इनको उन्नत करना ही चाहिए। इनकी उन्नति का लक्ष्य आत्मोन्नति है।"

"परन्तु शरीर, बुद्धि एव मन की आवश्यकताओं में उन्नति पूर्ण उन्नति का पर्याप्य कैसे हो गया? प्राय: तो आवश्यकताओ मे उन्नति इन तीनो मे ह्रास के लक्षण होते है।

"इसीलिए मै कहती हू कि आवश्यकताओ को बढाना उन्नति नही, प्रत्युत इसको कम करना उन्नति है।"

"बूआ! मोटरगाड़ी हो तो उपकारी काम करने मे तो सुविधा होती है।"

"मैंने मोटर बनाने मे आपत्ति नही की। परन्तु मोटर के प्रयोग करने की आवश्यकता पर विचार व्यक्त किए है। अब मै हू। मुझे न तो किसी रोगी की चिकित्सा करने जाना है, न ही मेरा कारखाना है, जो उसका माल एक स्थान से दूसरे पर पहुचाना है। इसलिए मुझको मोटर की आवश्यकता नही। इसी प्रकार तुम्हारे फूफा है। उनका काम दिल्ली में कुछ सम्पत्ति का प्रबन्ध करना है। उनके लिए मोटरगाडी को छोड़ घोड़ागाडी की भी आवश्यकता नही। इस कारण उनके लिए किसी प्रकार की सवारी का रखना उन्नति का लक्षण नही हो सकता।"

"इससे तो मोटर, हवाईजहाज और इसी प्रकार के सामान का आविष्कार ही न होता। इनके आविष्कार के लिए इनके बिकने का प्रबन्ध होना चाहिए। बिकने के प्रबन्ध के लिए इनका अधिक से अधिक प्रयोग होना आवश्यक है। इस-लिए जनता में इनके प्रयोग का अभ्यास डालना ही उन्नति मे सहायक होना है।"

गौरी हस पड़ी। हंसते हुए वह कहने लगी, "क्या युक्ति करना सिखाया है तुम्हारे अध्यापकगण ने! किसी विवाह के अवसर पर एक दावत में मिठाई की आवश्यकता है। इस कारण मिठाई बनाने की दुकान होनी चाहिए। दुकान को चलाने के हेतु मिठाई के खरीदार होने चाहिए। खरीदारों के बहुत सख्या में होने के लिए जनता मे मिठाई खाने का अभ्यास होना चाहिए। इस अभ्यास को डालने को मिठाई खाने की उन्नति का लक्षण कहना चाहिए।

"रूप, इस युक्ति के लंगड़ेपन का लक्षण यह है कि मिठाई खाने से पेट खराब होता है। इसके खाने से शारीरिक अवनति होती है, उन्नति नही।"

रूप इस युक्ति से चकित रह गया। वह अर्थशास्त्र तो पढा था परन्तु

'लॉजिक' नही पढा था। उसको संदेह हुआ कि कदाचित् उसका अर्थशास्त्र पढाने-वाला प्रोफेसर भी लॉजिक का ज्ञाता नही था। परन्तु, वह विचार करता था कि क्या उसकी बूआ लॉजिक पढी है। एक बात अभी तक उसके मन में स्पष्ट नहीं हुई थी। इससे उसने पूछ लिया, "तो बूआ! उन्नति किसको कहते है ?"

"देखो बेटा, प्राणी में तीन पदार्थों का सयोग है। शरीर, मन एव आत्मा। यदि हम प्राणी की उन्नति चाहते है, तो उसमे इन तीनों पदार्थों की उन्नति आवश्यक है। शरीर पचभौतिक है। मन सात्त्विक अहंकार एवं तेजस् अहंकार के सयोग से बनता है। जीवात्मा, जैसे मैंने ऊपर उपनिषद् के प्रमाण से बताया है, शरीर-रूपी वृक्ष पर पक्षी की तरह बैठा है जो वृक्ष का फल खाता है अर्थात् शरीर का भोग करता है। अब प्राणी के इन तीनों अंगो में उन्नति होनी चाहिए।

"शरीर में उन्नति का अर्थ यह है कि इसमें ज्ञानेन्द्रिया और कर्मेन्द्रियां सुदृढ होनी चाहिए। इसपर बाहरी दबाव, ऋतु, आयु और सुख-दुःख की विषमता सहन करने की शक्ति होनी चाहिए। इसमे विपरीत परिस्थितियों में कार्य करते रहने की क्षमता होनी चाहिए। जहा तक शारीरिक उन्नति का सम्बन्ध है यह मोटर पर सवारी करने से प्राप्त नही होती।

"मन मे उन्नति का अर्थ है कि इसमे इन्द्रियो पर अधिकार करने की शक्ति होनी चाहिए। इन्द्रिया विषय-वासना की ओर जाती हैं। मन इनका अध्यक्ष है। यह मन का कार्य है कि इनपर नियत्रण रखे।

"मन का एक आवश्यक अग बुद्धि है। इस बुद्धि के द्वारा मन उचित एवं अनुचित मे निर्णय करता है। बुद्धि के ठीक कार्य करने में जहां इसकी निर्मलता की आवश्यकता है, वहां इसकी प्रेरणा भी शुद्ध होनी चाहिए। प्रेरणा सस्कारों से मिलती है। अतः मन के संस्कार श्रेष्ठ होने चाहिए। श्रेष्ठ संस्कारो से संयुक्त मन-बुद्धि ठीक ढंग से कार्य करने में प्रेरक होते है। दोनों मिलकर शरीर की इन्द्रियो पर नियंत्रण रखते हैं।

"जीवात्मा मन तथा बुद्धि द्वारा, शरीर की इन्द्रियों पर ऐसे अधिकार रखता है जैसे रथ का स्वामी सारथी द्वारा घोड़ों पर। जीवात्मा की शक्ति का स्रोत है परमात्मा का सामीप्य। यह प्राप्त होता है सत्संग से। सत्संग भले मनुष्यों की संगत को अथवा श्रेष्ठ साहित्य के पढ़ने को कहते हैं।"

रूप, आज गौरी बूआ के घर से ऐसे लौटा जैसे हाथ में मशाल लिए हुए

चला आ रहा हो। परन्तु वह एक भूल कर बैठा। उसने मशाल अपनी आंखों के समक्ष कर रखी थी। इससे उसकी आखें चुधिया रही थी और वह चलता-चलता मार्ग पर ठोकर खा गया।

वह अपनी बूआ के घर से अपने घर को जा रहा था। मार्ग में उसकी दृष्टि एक स्त्री पर पड़ी। वह उसको पहचान गया। उसने भी इसको पहचाना। यह किशनो थी। किशनो ने रूपकृष्ण को देखा तो मुख मोड़ लिया और उसकी दृष्टि से बच-कर निकल जाने का यत्न करने लगी। रूप को सुमित्रा याद आ गई। वह किशनो के समक्ष जा खड़ा हुआ। किशनो ने माथे पर त्यौरी चढाकर उसकी ओर देख पूछ लिया, "क्या है ?"

"आप कहां रहती है ?"

"किसलिए पूछते हो ?"

"सुमित्रा से विवाह के लिए।"

"पुलिस के हवाले कर दूगी। एक भली औरत को सरे बाज़ार तंग कर रहे हो ?"

रूप डर गया। उसने मार्ग छोड़ दिया। किशनो निकल गई। जाते समय किशनो के मुख पर एक धीमी-सी मुस्कराहट दिखाई दी। रूप ने यह देखी तो उसके मन मे सशय उत्पन्न हो गया। वह उस औरत के माथे पर त्यौरी देखकर भयभीत हो, एक ओर हट गया था। उसने समझा था कि भूल कर बैठा है। वह किशनो नही थी। वह भूल से किसी भली औरत का मार्ग रोक खड़ा हुआ था। परन्तु क्षीण-सी मुस्कराहट से उसको यह समझ आया कि वह किशनो ही थी और उसको डरा सकने पर वह मुस्कराई थी।

रूप वही खड़ा विचार करता रह गया। उसके मन मे विचार आया कि अपने मन के संशय को दूर करना चाहिए। सशय को दूर करने के लिए यह पता करना चाहिए कि वह औरत कहां रहती है। शेष पीछे विचार किया जाएगा।

रूप साधारण जुआरियों की भांति प्रकृति नही रखता था। वह तो समझता था कि जुए की आय हराम की नही है। इस कारण उसको व्यर्थ में गवाना नहीं चाहिए। इसपर भी उसने परिश्रम किया था। उस कमाई को करने के लिए उसने भारी खतरा मोल लिया था। अतः वह उस रुपये को, जो जुएखाने से कमा कर लाता था, अपने गाढ़े पसीने की कमाई से कम नही समझता था। अतएव

उसको उस सहस्र रुपये का दुःख था जो उसने किशनो को सुमित्रा के विवाह के लिए दिया था।

बुरे के घर तक पहुंचने के विचार से वह उस औरत के पीछे-पीछे चल पड़ा। वह एक मानोचित अतर पर उसका पीछा करता गया। वह औरत सदर बाज़ार की ओर नही जा रही थी। इससे उसके द्वारा विस्मय नहीं हुआ। वह उससे सदर बाजार वाला मकान खाली किया जाता देख चुका था। वह औरत नई सड़क पर से होती हुई चावड़ी बाज़ार और फिर अजमेरी गेट मे से होती हुई पहाड़गज की ओर चल पड़ी।

वह औरत पहाड़गंज मे बड़ी मस्जिद के समीप एक गली में घुसी तो उसकी दृष्टि रूपकृष्ण पर जा पडी। वह स्वभाववश अपने घर मे जाने से पूर्व अपने पीछे देख रही थी। गली के बाहर रूपकृष्ण को खड़ा देख वह ठिठककर खड़ी रह गई। रूपकृष्ण को विस्मय मे खड़ा देख उसे अपने सन्देह की पुष्टि मिली।

गली वीरान थी। उन दिनों पहाड़गंज नगर के भले लोगों की बस्ती नहीं थी। बहुत ही छोटी जाति एवं निम्न सामाजिक स्थिति के लोग वहा निवास करते थे। दिन के दस बजे का समय होने के कारण प्रायः लोग अपनी मेहनत-मजदूरी करने गए हुए थे।

वह औरत किशनो ही थी। रूप का अनुमान यथार्थ था। उस औरत ने भी समझ लिया था कि वह रूप को धोखा नही दे सकी। इसपर उसने हाथ के संकेत से रूप को बुला लिया। रूप उसके सम्मुख जा खडा हुआ। औरत ने पूछ लिया, "किसलिए आए हो?"

"सुमित्रा को ले जाने के लिए।"

"विवाह करोगे?"

"हां।"

"तो मां को मुझसे मिला दो।"

"कहां।"

"इसी मकान में।" उसने उस मकान की ओर संकेत कर दिया, जिसके सामने खड़ी थी।

"तो तुम यहां रहती हो?"

"हां।"

"और सुमित्रा ?"

"वह भी मेरे साथ ही है।"

"परन्तु समाज मे एक प्रतिष्ठित व्यक्ति की बीवी इस मुहल्ले मे मिलने नहीं आएगी। तुम मेरे साथ अभी चलो। मैं तुमको अपनी मां से मिला देता हू।"

"इस समय मुझको फुरसत नही।"

'तो किस समय मेरे साथ चल सकोगी। बताओ यहां लेने आऊं या कहीं अन्य स्थान पर मिलोगी ?"

"यही मिलूगी। कल प्रातःकाल छः बजे।"

"मैं सुमित्रा के लिए कुछ लाया हू।"

"मुझको दे जाओ। मै उसे दे दूगी।"

"नही। यह तो उसके हाथ मे ही दे सकता हूं।"

"तो वह नीचे नहीं आ सकती।"

"पर मै तो ऊपर जा सकता हू ?"

"नहीं, लाला जी घर पर नही है ?"

"कौन लाला ?"

"लाला बनवारीलाल।"

"वे यहां क्या करते है ?"

"अपनी कमाई का भोग करते है।"

"मैं उनसे मिलना चाहूंगा।"

"तो तुम बताओ। वे तुमको कहां मिल ?"

'टाउन हाल के सामने मलिका विक्टोरिया के बुत के नीचे कल प्रात. छः बजे। वहां से हम दोनों मां के पास चले जाएंगे।"

"अच्छी बात है। अब तुम जाओ।"

रूप लौटा तो किशनो उस मकान में नहीं गई जिसके बाहर खड़ी थी। रूपकृष्ण गली के बाहर निकला और बाज़ार में पहुच, घूम गया। एकाएक उसको विचार आया कि वह औरत उसको धोखा दे गई है। वह यहां नही रहती। इससे वह पुनः गली में झाककर देखने लगा। उसको किशनो गली के आगे जाती हुई दिखाई दी। किशनो की पीठ उसकी ओर थी। वह दीपक की ओर पतगे की भांति आकर्षित हो, पुनः उसके पीछे चल पड़ा। कुछ दूर जाकर वह औरत पुनः

११

रूपकृष्ण बनवारीलाल को देख, निश्चिन्त हो, मकान मे चला गया। वहा सुमित्रा से भी मिला। इसके उपरान्त बनवारीलाल तथा किशनो से अगले दिन विक्टोरिया के बुत के नीचे मिलने का समय निश्चित कर वह सन्तुष्ट मन, घर लौट आया।

वह ठोकर खा गया। बनवारी उससे मिला और फिर उसको वह अपनी मां से मिलाने ले गया। रूप के सौभाग्य से रामकुमार अभी दुकान पर जाने की तैयारी ही कर रहा था, जब ये वहा पहुचे। मकान की बैठक मे रूप बनवारी लाल को बैठा ही रहा था कि राम बैठक मे रूप को किसीसे बाते करने का शब्द सुन, आ पहुचा और वह बनवारीलाल को वहां देख, भौचक्का हो, खड़ा रह गया। एकाएक राम के मुख से निकल गया, "बनवारी ! अरे तुम यहां कैसे ?"

"राम ? तुम ! यह रूप तुम्हारा लड़का है क्या ?"

"क्यों ? इससे तुम्हारा क्या मतलब है ?"

बनवारीलाल उठ खडा हुआ और बोला, "भैया रूप, मै गलत स्थान पर आ गया हू।" परन्तु राम ने, जो दरवाज़े मे खडा था, मार्ग नही छोडा। उसने कहा, "भाई ! बैठो न, चाय-पानी पीकर जाना। बहुत दिनों के बाद मुलाकात हुई है।"

"रूप !" राम ने लड़के को कहा, "जाओ ! मा को कहना कि एक अतिथि आए है। अल्पाहार उनके लिए भी बनेगा।"

रूप इसका अर्थ न समझते हुए टुकर-टुकर मुख देखता हुआ, बैठक-घर से निकला और ऊपर की मज़िल पर मा को चाय की कहने चला गया।

बात बनवारीलाल ने आरम्भ की। उसने कहा, "सुमित्रा से तुम्हारे शाहज़ादे विवाह करेंगे।"

"सुमित्रा !"

"हां। अब वह सज्ञान हो गई है।"

"ओह ! समझ गया। तो यह लडका तुमसे जुएखाने में मिला है ?"

"वह जुआखाना मेरा ही था। अब पुलिस के हस्तक्षेप के कारण टूट गया है।"

"सुमित्रा कितने वर्ष की हो गई है अब ?"

"पन्द्रह से कुछ ही कम है।"

राम एक क्षण तक विचार करता हुआ मौन रहा। फिर बोला, "यह शादी

तब ही हो सकती है जब तुम और तुम्हारी किशनो दोनों, उससे न मिलने का वचन दे ।"

बनवारीलाल ने अभी उत्तर नही दिया था कि रूप मां को चाय के लिए कह आया । उसे आया देख, बनवारीलाल ने अपने मन की बात कह दी, "देखो राम ! यह विवाह मैं नही कर रहा । ये तुम्हारे साहबजादे उसकी मुहब्बत मे फस गए है। मेरे लिए तो यह व्यापार की बात है ।"

"कितना रुपया तुमको लड़की के लिए चाहिए ?"

"पचास हजार रुपया ।"

"वह तो हमारे पास है नही ।"

"तुम्हारे साहबजादे के पास है ।"

"क्यो रूप ?"

"है तो । परन्तु वह लाला जी के लिए नहीं । वह तो सुमित्रा के लिए है । मैं लाला जी से मुहब्बत नही करता । मैं तो सुमित्रा से मुहब्बत करता हू ।"

बनवारीलाल ने कह दिया, "एक ही बात है ।"

"तब ठीक है । विवाह हो जाए और मैं इतने की सम्पत्ति उसके नाम खरीद दूगा । वह उसकी आय खा सकेगी ।"

रूप की बात दोनों बड़ो को विस्मय में डालने वाली सिद्ध हुई ।

बनवारीलाल ने कह दिया, "तो रूप, तुम सुमित्रा से भी मुहब्बत नही करते । मुहब्बत अंधी होती है । तुम तो समझ-समझकर पग रख रहे हो ?"

रूप ने केवल यही कहा, "मुहब्बत नहीं, यह काम है जो अंधा होता है ।" रूप गौरी की युक्तियां प्रयोग करने लगा था । उसको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि अब उसकी आंखें मशाल के सामने न होने से चुधिया नहीं रहीं । वह बनवारी और किशनो की बात से सतर्क हो गया था ।

बनवारीलाल ने कह दिया, "तो मैं लड़की की मां से बात कर बता सकूंगा कि उसको रूप की बात स्वीकार है अथवा नहीं ?"

"तो फिर कब तक पता देगे ?"

"एक सप्ताह के भीतर । मगर तुम हमारे मकान पर मत आना । वह इसको पसन्द नही करती ।"

रूप चुप रहा तो राम ने कह दिया, "इस बार आओ तो किशनो और सुमित्रा

सुन चुप कर गया। इसपर गौरी ने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया, "क्यों, क्या बात है रूप ! किसलिए यह प्रश्न तुम्हारे मन में उत्पन्न हुआ है ?"

"बूआ ! पहले यह बताओ कि बहिन पिता की लडकी माननी चाहिए अथवा मां की ?"

गौरी ने कह दिया, "शास्त्र का मत यह है कि लडकी माता की सपिण्ड न हो अर्थात् माता की सात पीढियों मे न हो और जो पिता के गोत्र में न हो वे ही द्विजो के हेतु विवाह के योग्य है।"

इसी समय गोवर्धनलाल आ गए। वे भी रूप को उस समय वहां बैठा देख विस्मय मे उसका मुख देखने लगे। गौरी ने पति को कहा, "आप रूप का संशय-निवारण करिए और मैं आपके लिए चाय तैयार करती हूं।" इतना कह, वह उठकर चली गई।

गोवर्धनलाल ने पूछा, "इस समय किस काम से आए हो रूप !"

" फूफा जी, मैने बुआ से पूछा है कि बहिन और भाई का विवाह क्यों नहीं होना चाहिए ?

" बूआ ने उत्तर दिया है कि यह ठीक तो प्रतीत होता है, परन्तु उसमें प्रमाण नकारात्मक ही है।"

"मै तो इस विषय मे एक ही प्रमाण दे सकता हू कि सगी मां और पिता की सन्तान तो प्राय: सब देशों में विवाह मे वर्जित की गई है। हां, मुसलमानों में मां की दूसरे पिता से सन्तान कुछ अवस्थाओं मे स्वीकार की गई है। संसार के सब देशो में इसका अस्वीकार होना ही सबसे बडा प्रमाण है कि ऐसा विवाह उचित नही। परन्तु तुमको इस विषय में जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता क्यों उत्पन्न हुई है ?"

"यदि आप किसीसे न कहने का वचन दे तो बता सकता हूं।"

"तुम्हारी स्वीकृति के बिना नही बताऊंगा।"

"बात यह है कि पिता जी की एक रखेल रही है। उसकी लडकी से मेरी मुहब्बत हो गई। पिता जी ने बताया है कि उनको सन्देह है वह लड़की उनकी है।"

"क्या प्रमाण दिया है उन्होंने ?"

"कोई प्रमाण तो दिया नही परन्तु एक बात मेरे मन में आती है। वह स्त्री पिता जी और उनके मित्र की सांझी पत्नी थी। जब गर्भ ठहर गया तो पिता जी

का उससे सम्पर्क छूट गया। उसके उपरान्त वह दूसरे मित्र के पास ही आज तक है। परन्तु उसकी पुनः कोई सन्तान नही हुई है।"

"यह एक पुष्ट प्रमाण तो है परन्तु निर्णयात्मक नही। इसपर भी क्या तुम उस लडकी के मोह में इतने फस गए हो कि उसका विचार नहीं त्याग सकते ?"

"उससे विवाह तथा बिना विवाह के भी सम्बन्ध का विचार तब ही छोड सकता हू जब मै उसको बहिन समझ लू।"

"बहिन तो केवल कहने से भी हो जाती है। किसीको मुख से कह दिया 'बहिन' तो वह बहिन हो जाती है।"

"यही पूछ रहा हूं कि कहूं अथवा न कहूं ?"

"इस सदिग्धावस्था मे कह दो। यही कल्याण का मार्ग है। रूप, ससार में इतनी लडकियां है कि किसी एक के लिए पागल होना तो महामूर्खता है। विवाह में माता-पिता की स्वीकृति अथवा विवाह-योग्य होने पर लड़के-लडकी की अनुमति अत्यावश्यक है। इसपर भी यदि बहिन-भाई का सम्बन्ध हो तो उक्त दोनों प्रकार की स्वीकृतियां भी निरर्थक हो जाती है।"

इसी समय गौरी चाय और नमकीन दालमोठ ले आई। वे तीनों लेने लगे तो गोवर्धनलाल ने अपनी पत्नी से कहा, "गौरी ! रूप के लिए कोई लड़की ढूढ़ दो न ?"

रूप हंस पड़ा। हसते हुए उसने कहा, "फूफा जी, मैं अपनी रुचि के विपरीत विवाह नही करूगा।"

"तो लड़की तुमसे पसन्द करा लेंगे।"

"परन्तु मै आपको सचेत कर देता हूं कि मेरा श्रेष्ठता का मापदण्ड बहुत ऊंचा है।"

"यह तो देख लिया जाएगा।"

१२

अगले दिन रूप ने अपने पिता को कह दिया, "पिता जी ! मैं सुमित्रा से विवाह नहीं करूगा।"

"ठीक है। तुम्हारी मां को कह देता हूं कि कोई और लड़की ढूंढ़े।"

"परन्तु पिता जी ! मुझ बेकार से कौन करेगा विवाह ?"

"तुम जो कहते हो कि तुम्हारे पास पचास हजार रुपया है ?"

"वह जुए की आय का है ।"

"उसको पूंजी में बदल दो ।"

"यह मै जानता नही । यह विद्या मुझको किसीने पढ़ाई नही ।"

"पढाई तो होगी । तुम अर्थशास्त्र मे ग्रेजुएट हो, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उसके क्रियात्मक रूप को किसीने बताया नहीं। देखो रूप, मैं तुमको एक प्रयोगशाला बताता हू तुम नित्य शिव ताया की दुकान पर आ जाया करो। वहां आखे खोलकर बैठा करो। अवश्य तुमको कोई न कोई ढग सूझ जाएगा, जिससे तुम फलो और फूलोगे ।"

इसपर रूपकृष्ण शिवकुमार की दुकान पर जाने लगा । पहले दिन तो उसको वहां बैठा देख, सबको विस्मय हुआ, परन्तु जब वह नित्य ही वहां पहुंचने लगा तो एक दिन शिव ने पूछ लिया, "रूप ! तुमको कोई काम नही, यहा आकर क्या सिद्ध करना चाहते हो ?"

"जो सिद्ध करना चाहता हू, वह अभी हुआ नही ।"

"क्या ? कुछ चोरी करना चाहते हो ?"

"हा । ताया जी ! आपके व्यापार की प्रतिभा की चोरी करना चाहता हूं ।"

"तो मिली ?"

"नही, अभी वह दिखाई नही दी । जिस दिन उसे देख पाऊंगा, चुरा लूगा ।"

"अच्छी बात है । यत्न करो, कदाचित् तुमको दिखाई दे जाए । केवल देखने से ही उसको ग्रहण नहीं कर सकोगे । उसको ग्रहण करने के लिए साहस भी होना चाहिए ।"

"ताया जी ! साहस तो मेरे पास है ।"

"साहस के साथ सामर्थ्य भी तो चाहिए ।"

"वह भी कुछ बटोर ली है ।"

"कितनी ?"

"मेरे पास बैंक में पचास हज़ार है ।"

"हां ! कुछ तो है । तो बैठो जो कुछ समझ में न आए पूछ लेना ।"

बनवारीलाल पुनः रूपकृष्ण से मिलने नहीं आया, न ही रूपकृष्ण सुमित्रा के

पीछे गया। उसने उसे मन से निकाल दिया था। गौरी के दिए ज्ञान से वह एक मशालची की भाति अन्धा हो, नाली मे गिरता-गिरता बचा था। वह यह समझता हुआ कि वह बहुत योग्य हो गया है। वह सुमित्रा के मोह मे फंसता-फंसत पुनः गोवर्धन एवं गौरी के हाथ पकड, वचता गया था।

उसको शिवकुमार की दुकान पर जाते हुए एक मास से ऊपर हो गया था। जैसे चलती गाड़ी को बहुत कम प्रयत्न से ही चलाया जा सकता है, वैसे ही शिवकुमार की दुकान चल रही थी। शिवकुमार का थोड़ा-सा प्रयत्न भी रूपकृष्ण को इस काल में दिखाई नही दिया। माल बेचने वाले लाला सुलक्षणमल के नाम से आकृष्ट हो आते थे। बिना रसीद-पर्चे के माल दे जाते थे। शिवकुमार ही अपनी बही मे लिखता था और इसको प्रमाण माना जाता था। लोग खरीदने वाले भी आते थे अथवा उनके एजेण्ट आते थे। दुकान की आढत इन सौदो में बहुत कम—दो पैसे से एक आना रुपया तक ही होती थी। हां, जब माल बिकने के पूर्व रुपया अग्रिम दिया जाता तो उसपर आठ आने सैकड़ा सूद काटा जाता था। प्रायः माल दुकान खरीद लेती थी और जब माल खरीदती थी तो फिर जब तक माल बेचने वाला रुपया नही ले जाता था, आठ आना सैकडा के हिसाब ब्याज दिया जाता था। कभी दुकान से माल क्रय करने वाला भी उधार खरीदता था अथवा हुंडी पर माल ले जाता था तब उस हुंडी पर साढे आठ आने का ब्याज ले लिया जाता था। इस प्रकार बहुत सस्ते में व्यापार चलता था। इसपर भी दुकान की आय चार-पांच लाख रुपये वार्षिक हो जाती थी। यह सब रहस्य राम अपने पुत्र रूप को बताया करता था।

"इसमें रहस्य क्या है ?" रूप का प्रश्न था।

"रहस्य है विश्वास। किसान लोग लाला सुलक्षणमल की दुकान का विश्वास करते है। उनके मन में यह बात अंकित हो चुकी है कि यहा माल जमा करा जाने पर, एक छटांक की हेरा-फेरी नही होगी। वे यहां रखा माल अपने घर मे रखने से अधिक सुरक्षित मानते है। शिव माल पर पचहत्तर प्रतिशत तक अग्रिम दे देता है। उसपर तब तक ही ब्याज लेता है जब तक ग्राहक का माल बिक नहीं जाता अथवा वह स्वयं खरीद नही लेता। ईमानदारी से उसी दिन अग्रिम दिए गए रुपये से सूद लेना बन्द कर माल के बकाया मूल्य पर ग्राहक को ब्याज मिलना आरम्भ हो जाता है।

" मुझको पांच मास कार्य करते हो गए हैं। इस काल में एक भी मनुष्य ऐसा नही आया जिसको दुकान की बही पर सन्देह हुआ हो और एक भी अक्षर बही पर ऐसा नही लिखा गया जो यथार्थ के अतिरिक्त हो।"

"पिता जी ! यह विश्वास किस प्रकार बैठता है ?"

" यह सुनने मे आया है कि जब तुम्हारे बाबा ने यह दुकान खोली थी और दुकान का मुहूर्त हुआ था तो घर के पुरोहित ने पूजा कराई थी। पूजा मे बहियां भी ठाकुर जी के समक्ष रखी गई थीं। पूजा पर यह कहा गया था कि जो कुछ उन बहियों पर लिखा जाएगा वह सत्य होगा एव जो कुछ सत्य होगा वही उनपर लिखा जाएगा और इस बात के साक्षी-रूप मे तब की बही के प्रथम पृष्ठ पर पण्डित जी ने गणेश का चित्र केसर से चित्रित किया था एवं उसका भी पूजन किया गया था।

" एक दिन शिवकुमार ने तब की बही मुझको दिखाई थी ; और प्रतिवर्ष नई बही लगाते समय वह साठ वर्ष पुरानी बही को निकाल नमस्कार करता है और तब नई बही पर लिखना आरम्भ करता है।"

"तो पिता जी ! आप इस बात को सत्य मानते है ?"

"सत्य का क्या अर्थ ? किस बात को सत्य मानता हूं ?"

"यही कि बही का पूजन करने से दुकान का विश्वास बैठ गया है।"

"तुम भी कुछ मूर्ख हो रूप ! मैने यह नही कहा। मेरे कथन का भावार्थ यह है कि उन बहियो पर सदैव सत्य लिखने से उसमें कभी भूल-चूक से गलत बात लिख देने पर भी वह सत्य ही मानी जाती है। भले ही वह दुकान के हितों के विपरीत जाती हो। मुनीम लिखने वाले है। वे कभी भूल भी कर जाते हैं। परन्तु ग्राहकों और दुकान के मालिक के मन में बही की सत्यता पर इतना विश्वास है कि सब उसपर लिखे को प्रमाण मानते है।

" शिवकुमार प्रतिवर्ष पुरानी बही को निकालकर अपने मन के संकल्प को हरा-भरा करता रहता है, जिससे वह बही के विश्वास को बनाए रखे।

" एक बात और भी बताता हू। मैं अभी नया-नया ही दुकान पर काम करने लगा था कि जीजा गोवर्धनलाल जी को शिवकुमार के किसी सेना विभाग के माल में धोखा-धड़ी का ज्ञान हो गया। माल का बाज़ार-भाव अढ़ाई रुपये मन था। और उसने टेंडर भर दिया था चार रुपये मन। इससे आठ आने मन की घूस देकर एक

रुपया मन बचा लिया। बीस हज़ार टन का सौदा था। इस प्रकार पाच लाख से ऊपर की नकद आय थी।

" गोवर्धनलाल ने पूछ लिया, 'ईमानदारी से कितना लाभ होना चाहिए?'

" 'जितना खरीदने एवं बेचने वाले में निश्चय हो जाए।'

" 'परन्तु यहां तो निश्चय करने वाला खरीदने वाला नहीं और उसने इस भाव का निश्चय अपने घूस के बल पर कराया है। शिव, यह बताओ, दूसरे टेंडर किस भाव के थे?'

" 'मुझसे नीचे वाला टेडर ही अढ़ाई रुपये का था।'

" 'मेरी राय मानो। तुम सब माल सप्लाई कर दो और बिल बनाते समय इसका भाव इतना लगाओ जिससे तुमको सब ले-देकर मुनासिब ही बचत हो।'

" 'मुनासिब क्या है?'

" 'जितना लाभ तुम साधारण खरीददार से लेते हो।'

" 'वह तो दो आना प्रतिमन लेता हू।'

" 'ठीक है, गिनती कर लो। व्यय में अफ़सरों को दिया धन भी डाल दो और फिर देरी से मिलने वाले धन का ब्याज भी लगा लो। तब बिल बनाकर रुपया वसूल कर लो। कारण यह लिखो कि अपनी दुकान की परम्परा के अनुसार तुम माल पर अधिक मूल्य नही ले रहे, इसलिए बिल टेंडर के भाव से कम का बनाया है।'

" 'रूप! शिवकुमार कुछ देर सोचता रहा और उपरान्त गोवर्धन जीजा का जादू चल गया और परसो अन्तिम हिसाब का चिट्ठा मैंने ही तैयार किया है और उसपर वही बात लिखी गई है जो जीजा जी ने कही थी। इस प्रकार सरकार से, बनने वाले बिल मे से, दो लाख अस्सी हज़ार रुपये कम मागे गए हैं।' "

रूप टुकर-टुकर मुख देखता रह गया। राम ने कहा, "भला कौन इस दुकान का विश्वास नही करेगा।"

रूप विचार कर रहा था कि गौरी एव गोवर्धनलाल में कौन बात है कि उनकी बात मानने के लिए शिवकुमार तैयार हो जाता है। वह स्वयं अपने पर भी विस्मय कर रहा था कि वह भी तो अपने जीवन पर उनके कथन का प्रभाव देख रहा था। इसपर भी वह सोचता था कि यदि अढ़ाई लाख रुपये की हानि की बात होती तो कदाचित् वह न मानता।

सुमित्रा के विषय में बहिन के साथ विवाह न करने का सस्कार उसके मन में पहले ही विद्यमान था; गौरी ने तो उसके सस्कारो का समर्थन-मात्र किया था। इसपर भी उसकी समझ में आया कि कदाचित् शिवकुमार के मन मे भी अपनी वही की सचाई एवं अपनी दुकान की प्रतिष्ठा के संस्कार पहले से ही उपस्थित थे और गोवर्धनलाल ने उन संस्कारों का समर्थन-मात्र ही किया था। यही कारण है कि उसकी बात सरलता से मान ली गई है।

तो सस्कार प्रबल है अथवा गोवर्धनलाल की शिक्षा?—इन दोनों में वह निर्णय नहीं कर सका।

एक दिन शिवकुमार की लड़की राधा का लड़का कृपाराम आया और अपने नाना से कहने लगा, "लाला जी! आपको कुछ रुपया चाहिए?"

"किसलिए पूछ रहे हो?"

"मेरे पास पचास हज़ार है। वह मैं कहीं रखना चाहता हूं।"

"तो बैंक मे रखो।"

"और यदि बैंक टूट गया तो?"

"टूटेगा क्यों?"

"सुना है बैंक वाले भी व्यापार करने लगे हैं।"

"व्यापार तो मै भी करता हू।"

"परन्तु उनके व्यापार और आपके व्यापार मे अन्तर है। बैंक के मैनेजर कम्पनियों के हिस्सों में सिट्टा करते है। आप चेम्बर का मुख नही देखते।"

"तो वह काम पाप का है क्या?"

"पाप-पुण्य की बात तो मैं देखता नही। मैं तो यह देखता हूं कि उसमें धोखा-धड़ी होती है।"

"क्या धोखा-धड़ी होती है?"

"मैंने कराची ट्रस्ट के पाच सौ हिस्से खरीदे थे। मैंने खरीदे थे नब्बे रुपये में। पिछले पांच-छ: दिन से एक आदमी मोटरकार में चेम्बर में आता है और सेक्रेटरी को, कराची ट्रस्ट के सब हिस्से, जो भी मिल सके, खरीदने के लिए कह जाता है। सेक्रेटरी मेरा मित्र है। उसने मुझको संकेत किया था कि हिस्सों के मूल्य बढ़ जाएगे। मैं दिन में चार चक्कर लगाने लगा। हिस्सों की खरीद आरम्भ हुई

तो दाम बढ़ने लगे। आज दाम एक सौ पन्द्रह हो गया। मैने हिस्से बेच दिए हैं। एक सौ चौदह रुपये पर। इस प्रकार मुझको बारह हज़ार रुपया लाभ का मिल गया है। पैंतालीस हज़ार लागत की असली रकम वसूल कर मैने निकाली हैं और लाभ की राशि से मैंने टाटा कम्पनी के हिस्से खरीद लिए है। वह पैंतालीस हज़ार मै बगाल बैंक मे जमा कराने चला तो मुझे किसीने बताया है कि यह खरीद करने वाला बैंक का 'लोकल डायरेक्टर' है। कदाचित् यह बैंक के लिए ही हिस्से खरीद रहा हैं। मुझको डर लग गया है कि हिस्सों मे हानि भी हो सकती है। हानि हुई तो बैंक टूट भी सकता है। बैंक के टूटने पर जमा रुपये मे हानि भी हो सकती है। इसीलिए मै बैंक में रुपया जमा कराने से डरता हू।"

शिवकुमार हंस पड़ा। हंसकर बोला, "मुझको रुपये की आवश्यकता नहीं है।"

"तो फिर बिना ब्याज के ही रख छोड़िए।"

"मै भी तो बैंक मे ही रखूगा। पहले ही हमारा तीन बैंकों में हिसाब-किताब चलता है। बगाल बैंक, ग्रिडले बैंक और सैंट्रल बैंक मे। यदि एक बैंक टूटा तो सम्भवतः दूसरे बैंकों को भी हानि पहुचे, तब मेरा पहले ही वहां जमा रुपया डूबने लगेगा। अब तुम्हारा बेकार में लेकर रखूगा तो वह भी डूबेगा। नही कृपाराम, मै नही रखूगा।"

"तो क्या करूं?"

"कुछ व्यापार करो।"

"क्या करूं?"

"यदि मेरे बताए काम में हानि हो गई तो क्या करोगे?"

"आपके बताए काम मे हानि क्यो होगी?"

"तुम मूर्ख हो। इसलिए।"

कृपाराम मुख देखता रह गया। वह समझ नही सका कि वह मूर्ख क्यों हैं। कृपाराम को प्रश्न-भरी दृष्टि से अपनी ओर देखते देखकर शिवकुमार ने कह दिया, "तुम यह नही जानते क्या कि व्यापार में रुपया डूब जाने का भय सदा बना रहता है। व्यापार एव व्यवसाय हानि उठाने का भय मोल लिए बिना किए नहीं जा सकते। जो यह भय सिर लेने का साहस नहीं रखते वे इससे लाभ भी नहीं उठा सकते।"

"परन्तु आपके व्यवसाय में तो हानि होती ही नही।"

"उसमें कारण दूसरा है। इसपर भी मै हानि उठाने के लिए सदा तत्पर रहता हूं।"

"ऐसा करिए कि कुछ सुझाव दीजिए।"

"मेरे पास कोई सुझाव नहीं है। केवल इतना कह सकता हूं कि आखे खोलकर चलो। कोई न कोई काम मिल जाएगा।"

कृपाराम निराश चला गया। रूपकृष्ण समीप बैठा सुना रहा था। वह आंखें खोलकर चलने की बात सुनकर विस्मित था कि कृपाराम क्या आंखे मूदकर विचर रहा है।

जब कृपाराम दुकान से बाहर निकल गया तो शिवकुमार हंस पडा। उसे हंसता देख, रूप ने पूछ लिया, "ताया जी! इसमें हंसने की बात क्या हुई है?"

यह अभी बहुत ही अनुभवहीन लड़का है। मैने इसको व्यापार ढूढ़ने का गुर बताया है। यह समझा है कि मैंने इससे हसी की है।

"क्या गुर बताया है?"

"रूप, आंखो के साथ कान खोलकर बैठा करो।" आंखे एवं कान खोलने की बात पर वह मनन करने लगा।

शिवकुमार ने कह दिया, "परमात्मा ने हमको दो ही इन्द्रियां ऐसी दी है जो दूर की बात का बोध कराती है। परन्तु जब मैं कहता हूं कि इनको खोलकर बैठो तो मेरा तात्पर्य है कि इनके द्वारा देखी-सुनी बातो पर मनन करो। मनन करो व्यापारिक दृष्टिकोण से। बस, बात समझ आने लगेगी।"

"व्यापारिक दृष्टिकोण क्या है?"

"व्यापारिक दृष्टिकोण यह है कि जो वस्तु तुम खरीदते हो अथवा बनवाते हो, देखो उसकी बाजार में मांग है अथवा नहीं। मांग कितनी अधिक है? क्या मांग का मूल्य खरीद के मूल्य से अधिक है अथवा नही? बस यही व्यापार है। यही व्यवसाय है। लाभ समझ मे आए तो व्यापार करो, न आए तो मत करो।"

"परन्तु समझ गलत भी तो हो सकती है।"

"बात को ठीक समझने के लिए उसी वस्तु में अनुभव प्राप्त करो।"

रूप ने समझा कि ये बाते तो संकेत-मात्र है। इनकी व्याख्या तो किसी भी कार्य में घुस जाने से ही होती है। किस कार्य में लीन हो जाए, यह शिवकुमार

नहीं बता सकता। इसका अपना काम तो अन्न-अनाज, भूसा-खली आदि को खरीदकर बेचने का है। रूप ने देखा कि इस काम में वह शिव की तुलना में दुकान नही कर सकेगा तो कोई ऐसा काम ढूंढा जाए जिसमें सुलक्षणमल की दुकान से मुकाबला न करना पडे।

आज वह शीघ्र ही दुकान से उठकर चला आया। वह विचार कर रहा था कि गोवर्धनलाल से बात कहे तो कदाचित् वह कुछ सुझाव दे सके। वह उसके घर की ओर चल पड़ा।

वह अभी हौज़काजी मे ही पहुचा तो वहां एक तबेले के बाहर डुग्गी पिटती देखी। दस-बारह बच्चे वहा एकत्रित हो रहे थे। कोई प्रौढ़ावस्था का व्यक्ति वहां पर नही था। डुग्गी पीटने वाले के समीप एक बाबू मेज-कुर्सी लगाए बैठा था। समीप ही एक स्टूल पर पुलिस का सिपाही बैठा था। रूप ने एक लड़के से पूछ लिया, "यहा क्या हो रहा है?"

"यह तबेला नीलाम हो रहा है।"

"पुलिस क्यों बैठी है यहां?"

"नीलाम करने वाला सरकारी आदमी है, इसलिए।"

"इस समय डुग्गी पीटने वाले ने आवाज़ दे दी। एक हज़ार पांच सौ रुपया, इस तबेले के लिए।"

कुछ लोग तबेले के भीतर आ-जा रहे थे। वे इसकी लम्बाई-चौड़ाई देख रहे थे। वह भी उसमें अन्दर चला गया। अच्छी लम्बी-चौड़ी जगह थी। एकाएक उसके मन में आया कि यह जगह बिक रही है। क्या इसकी माग है। और मांग इस दाम से अधिक दाम की है क्या? वह शिवकुमार का गुर जो अभी-अभी सुनकर आया था, प्रयोग करने लगा था। उसको समझ आया कि तबेला तो यहां रह नहीं सकता। बाजार में तो दुकाने बनेगी। दुकानों पर मकान बनेगा। मकान में रहने वाले आएंगे···

इस विचार के आते ही वह बाहर आया और मेज़-कुर्सी लगाए बैठे बाबू से पूछने लगा, "यह बोली किसकी है?"

"यह बताने की आज्ञा नही है।"

"तो मैं एक हज़ार छः सौ की बोली देता हूं।"

"मुंशी ने रजिस्टर खोल दिया और बोली का मूल्य, बोली देने वाले का नाम

तथा पता लिख हस्ताक्षर करवा लिए और कह दिया बोली इससे न बढी तो दस प्रतिशत जमा करना पड़ेगा।"

"करा दूगा।"

अब डुग्गी पीटने वाले ने घोषणा करनी आरम्भ कर दी, "एक हज़ार छः सौ रुपया।" रूप कुछ दूर हटकर खड़ा हो गया। वह देखना चाहता था कि क्या कोई बढ़ता है उससे ? और वह कौन है जो बढता है।

वह अभी खड़ा ही था कि रूपरेखा से पहलवान दिखाई देने वाला एक व्यक्ति उसके समक्ष आकर खड़ा हो गया। रूप ने उसकी ओर ध्यान नही दिया तो उसने पूछ लिया, "बाबू ! किसके नाम की बोली दे रहे हो ?"

"किसलिए पूछ रहे हो ?"

"इसलिए कि पहली एक हज़ार पांच सौ की बोली मेरी थी।"

"और तुम कौन हो ?"

"यह भूमि मेरी गिरी है।"

"मैंने यह नही पूछा। जब तुम यह पूछते हो किसके नाम की बोली दी है तो मैने भी यही पूछा है किसके नाम से तुम बोली दे रहे हो ?"

"बनवारीलाल के नाम से।"

"वही जो पहले सदर बाज़ार मे रहते थे और अब पहाड़गज में रहते है ?"

"हा।"

"वे तो बहुत बड़े आदमी हैं।"

"हां।"

"और मैं सुलक्षणमल की दुकान के लिए खरीद रहा हू।"

"तो उन लाला जी से जाकर कहो कि अगर यह ज़मीन उन्होने ले ली तो उन्हें यमलोक का द्वार दिखा दूगा।"

"पहलवान ! यह बात तुम उसको दुकान पर जाकर कह आओ।"

रूपकृष्ण को समझ में आया कि शिवकुमार ने साहस की बात कही थी। इस पहलवान की धमकी मे साहस से काम लेना चाहिए।

पहलवान ने उद्दण्डता से कहा, "तो तुम्हारी टागें टूट गई है क्या ?"

"नहीं जी। टागें तो है। केवल एक बात है। मै कहूगा तो उनको विश्वास नही आएगा और मकान वे ले लेंगे।"

"क्यों लेगे ?"

"एक लड़की सुमित्रा है। वे इस जमीन पर मकान बनाकर उसको नज़र में देना चाहते है।"

पहलवान भौंचक्का हो, मुख देखने लगा। फिर कुछ विचारकर, पूछने लगा, "सुमित्रा उनकी कौन है ?"

"यह मै क्या जानू। इतना मालूम है कि एक किशनो-किशनो विधवा है। वह लाला जी के पास आती-जाती है।"

"यह तुम कैसे कहते हो कि भूमि और मकान उसके लिए है ?"

"भाई, मैं तो अपना अनुमान ही बता रहा हू। कल किशनो आई थी और उसके जाने के पश्चात् ही मुझको आज्ञा मिली थी कि मैं इस मकान को खरीद लू।"

"और तुम्हारा क्या नाम है ?"

"मेरा नाम रामकुमार है। मै लाला जी के पास नौकरी करता हू।"

पहलवान रूप को वहीं छोड़, अजमेरी गेट से बाहर की ओर चला गया।

रूपकृष्ण भी वहां से टल गया। वह चलता हुआ विचार करने लगा कि किस प्रकार वह इस मकान को ले सकता है। वह मन में कल्पना कर रहा था कि पहलवान बनवारीलाल को बताने के लिए पहाड़गंज को गया है। इससे उसके मन मे गुदगुदी उत्पन्न होने लगी। वह मन ही मन बनवारीलाल और किशनो के मन की कल्पना करने लगा था। वे समझेंगे कि राम अपनी लड़की को देने के लिए मकान खरीद रहा है।···

उस समय दोपहर के दो बज चुके थे। नीलामी सायं चार बजे तक चलने वाली थी। इससे वह साढ़े तीन बजे यहां पुनः लौट आया। उसने देखा कि अब बनवारी और उसका एजेण्ट पहलवान दोनो खड़े थे। बोली अभी भी एक हजार छः सौ ही चल रही थी। इससे उसको यह समझ आया कि वे यह बोली उसके नाम में समाप्त करने की बात विचार रहे है। कदाचित् उनको विश्वास हो गया है कि सत्य ही मकान उनकी लड़की को मिलने वाला है।

रूप को आया देख, बनवारीलाल उसकी ओर बढ़ आया। वह उसके समीप पहुंच कहने लगा, "रूप, यह मकान कौन खरीद रहा है ?"

"मैं खरीद रहा हूं।"

"परन्तु तुमने झूठ क्यो बोला है कि सुलक्षणमल की दुकान खरीद रही है।"

"मैं पहलवान को यहां से टरकाना चाहता था।"

"तुम किसके लिए मकान खरीद रहे हो ? तुम्हारे पास तो अपना मकान है।"

"यह मेरा रहस्य है।"

"देखो रूप ! मै यह मकान किशनो के लिए खरीद रहा हूं। यदि तुम उसकी लड़की के लिए खरीद रहे हो तो मैं बोली नही बढाऊगा।"

"मैं यह खरीद रहा हूं अपनी पत्नी के रहने के लिए। वह पत्नी कौन होगी, कैसे कह सकता हूं। आप तो जवाब देने नही आए ?"

"तो तुमको तुम्हारे पिता ने नही बताया कि सुमित्रा उनकी लड़की है ?"

"उन्होंने बताया है परन्तु मुझको विश्वास नहीं आया। मुझको वह आपकी लड़की प्रतीत होती है। इसीलिए उसके लिए पृथक् मकान बनवा रहा हूं, जहां पिता जी का हस्तक्षेप न हो।"

"अच्छी बात है, मै बोली नहीं बढाऊंगा।"

बनवारीलाल ने पहलवान को आंखो से सकेत किया और वह वहां से टल गया। चार बजे तक बोली एक हजार छः सौ पर रूपकृष्ण के नाम समाप्त हुई। रूपकृष्ण ने दो सौ रुपये का चेक अग्रिम जमा कराया और उसकी रसीद ले ली। रूपकृष्ण समझ रहा था कि उसने जीवन में प्रथम व्यापार किया है और उसमें उसने सफलता प्राप्त की है। वहां से वह अपने घर गया।

अगले दिन उसने गोवर्धनलाल जी के घर जा, अपनी योजना बता दी। उसने कहा, "फूफाजी ! मैंने एक व्यापार आरम्भ किया है।"

"क्या ?"

"मैंने हौज काजी में एक जमीन का टुकड़ा नीलाम में मोल लिया है। सोलह सौ की बोली मेरे नाम समाप्त हुई है।"

"ठीक है, यदि किसीने उत्तरदारी न की तो यह टुकड़ा तुम्हारे नाम हो जाएगा। क्या करना चाहते हो इसपर ?"

"मैं मकान बनवाऊगा। नीचे दुकाने होंगी और ऊपर मकान होगा। जब बन जाएगा तो इसको मुनासिब लाभ पर बेच दूगा। यदि इसमे सफलता मिली तो यह काम मुझको पसन्द है।"

"ठीक है। यह सुझाव तुमको किसने दिया है ?"

" बात यह है कि राधा बहिन का लड़का कृपाराम ताया जी की दुकान पर आया था और बातों ही बातो में उन्होने दो सुझाव कृपाराम के सम्मुख रखे थे। एक तो हानि-लाभ व्यापार अथवा व्यवसाय मे होता ही है। इसमे हानि से डर-कर व्यापार से हाथ पीछे करने वाला सफल नही हो सकता। दूसरा यह कि किसी भी काम का अनुभव पुस्तके पढने से नहीं, अपितु काम में प्रवेश करने से होता है। इन दोनो बातो पर मनन करते हुए मै आपके घर की ओर आ रहा था कि हौज़ काज़ी मे नीलामी होती देखी। मैने विचार किया, मकान बन गया तो बिक जाएगा। ढग से मकान बनवाऊगा तो लाभ होगा। बस, साहस किया और बोली दे दी। बोली मेरे नाम पर समाप्त हो गई।

' अब मै आपसे दो बातो की सहायता लेने आया हूं। एक तो इस भूमि को लेने के लिए मुझको क्या करना चाहिए और दूसरे मकान बनवाने मे किससे बनवाऊं और कैसा बनवाऊ ? "

"पहले तुमको एक प्रार्थनापत्र सबजज के नाम देना होगा। दोपहर के समय मेरे साथ न्यायालय चलना। मैं तुमको यह बात करवा दूगा। इस प्रार्थनापत्र के उत्तर के पश्चात् ही विचार किया जा सकता है।"

दूसरा परिच्छेद

सुलक्षणमल की सबसे बडी लड़की विष्णुदेवी का विवाह बिरादरी मे एक धनी आदमी के पुत्र प्रतापकृष्ण से हुआ था। पहले तीन वर्ष तो विष्णुदेवी के अपने ससुराल मे बहुत सुख से व्यतीत हुए। जब उसके घर मे प्रथम सन्तान यमुना हुई, तो उसके ससुर का देहान्त हो गया और उसकी सास ने आत्महत्या कर ली। ससुर की मृत्यु हुई थी निमोनिया से, और सास ने मकान की छत पर चढकर छलाग लगा दी थी। दोनो की अर्थी एक समय निकली और एक ही चिता में फूकी गई थी।

माता-पिता के देहान्त के उपरान्त प्रतापकृष्ण बेलगाम हो गया। पिता की एक ही सन्तान थी और सम्पत्ति पर अधिकार पाते ही उसको मद्य-सेवन एवं जुआ खेलने की लत लग गई थी। परिणामस्वरूप पूर्ण सम्पत्ति चार-पांच वर्ष में समाप्त हो गई। इस समय उसके पिता का व्यापार नष्ट हो चुका था और कोष खाली होने तक प्रतापकृष्ण इतना बदनाम हो चुका था कि मुहल्ले में उसको कोई मुह नही लगाता था।

प्रताप के पिता की नई सड़क पर एक कटरे में कपड़े की थोक दुकान थी। अब उस दुकान पर मक्खियां भिनभिनाती थीं।

अवस्था के बिगडने पर भी प्रताप को चेतना न हुई। वह बढ़िया स्कौच व्हिस्की पीता-पीता अब देसी फरीदकोट की बनी शराब पीने लगा था। और इससे उसका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा था।

इस समय तक उसके घर दो लड़किया और हो चुकी थीं। दूसरी का नाम गंगा एवं तीसरी का नाम गोदावरी रखा गया। अब विष्णुदेवी घर पर पड़ोसियों के कपड़े सीकर निर्वाह किया करती थी।

इन दिनो मुहल्ले मे से किसीने सुलक्षणमल को आकर बताया कि उसकी लड़की विष्णुदेवी की अवस्था बहुत बिगड़ गई है और वह बेचारी हाथ से काम कर अपना निर्वाह करती है। पिता ने अपने बड़े लड़के को भेजा कि वह जाकर मालूम करे कि क्या कारण है उस अवस्था का, और उसने अभी तक बताया क्यों नहीं।

शिवकुमार अपनी बहिन से मिलने गया। विष्णु को अपने पिता के घर गए पांच वर्ष हो चुके थे और पाच वर्ष से वह भाग्य से होड़ लगाए हुए, परिश्रम कर रही थी।

शिवकुमार प्रातः के अल्पाहार के समय पहुचा था। यमुना खाना बना रही थी। वह इस समय आठ वर्ष की हो चुकी थी। विष्णुदेवी घर के वातायन के समीप बैठी मलमल का एक कुर्ता सी रही थी। उसकी आंखो पर चश्मा लगा हुआ था और उससे भी वह सीने मे कठिनाई अनुभव कर रही थी।

बहिन भाई को आया देख, अपनी बिगड़ी अवस्था पर लज्जा अनुभव करने लगी थी। उसने यत्न किया कि मलमल के कुर्ते को छिपा ले परन्तु वहा छिपाने के लिए स्थान नही था।

"यह क्या कर रही हो विष्णी ?"

"आओ भैया। आज तुम्हारा चित्त किया है बहिन को मिलने का ? बैठो, पानी पिओगे ?"

"नहीं। हमारे जीजा जी कहा है ?"

"कही गए हैं।"

"बता कर नही गए ?"

"बताने की आवश्यकता नही थी। मैं जानती हू, वे कहा गए है ?"

"कहां ?"

"देसी शराबखाने मे।"

"शराब के लिए पैसे कहा से पाते हैं ?"

"साथ ही जुआखाना है। वहां छोटे-छोटे दाव लगाते है—कभी जीत जाते हैं तो खूब पीते है और बदमस्त हो, घर पर आ जाते है। हारते है तो भूत की भांति दीवारो के साथ-साथ आश्रय ले, चले आते है।"

"कभी जीतते हैं तो कुछ घर के व्यय के लिए भी देते हैं क्या ?"

"हा। एक-आध रुपया खैरात के रूप मे फेक जाते है।"

"तो निर्वाह कैसे होता है ?"

"मैं और यमुना दिन-भर मे दो कुर्ते सी लेती हैं। गली के बाहर रमज़ान दर्ज़ी है। वह काम दे जाता है। आठ आना प्रति कुर्ते की सिलाई देता है। इस तरह निर्वाह हो रहा है।"

"परन्तु तुमने पिता जी को कभी बताया नही ?"

"उनको क्या बताती ? अपने दुर्भाग्य की कथा बता, उनको व्यर्थ में दुःखी करती।" विष्णुदेवी की आंखों से आंसू बहने लगे थे।

"परन्तु बहिन, तुमको इस नरक से निकाल लेते।"

"भैया, यह भाग्य की विडम्बना यदि मानवकृत होती तो मनुष्य के करने से छूट जाती। भला भाग्य को कौन टाल सकता है! आपने तो अच्छे आदमी ढूढ़े थे। दित्त-दाज भी खूब दिया था। भाग्य ने साथ नही दिया।" विष्णुदेवी की चोली भीगने लगी थी।

शिवकुमार ने कहा, "अच्छा, उठो, आज हमारे घर चलो। पिता जी को तुम्हारी दशा का वृत्तान्त कल किसी मुहल्ले वाले ने बताया तो वे तब से ही बेचैन हो रहे है। रात-भर वे सो नहीं सके। आज उन्होंने मुझको भेजा है कि तुमको वहां ले चलू। वहां चलकर इसका कुछ उपाय ढूढ़ा जाएगा।"

"क्या उपाय हो सकता है। मैं समझती हूं, आपने अपना कर्तव्य पालन कर दिया। भला मेरे दुर्भाग्य से झगड़ा कैसे होगा ?"

यमुना रोटी बना चुकी थी। वह रोटी थाली मे परस, ले आई। तीनों प्राणियों का भोजन एक ही थाली में था। मूग की दाल थी, आम का अचार था और बिना चुपड़ी रोटिया थी।

गगा तो पांच वर्ष की थी और खेल रही थी। रोटी आई देख वह भी वहां आ गई। सबसे छोटी गोदावरी अभी एक वर्ष की थी। उसको यमुना ने दूध पिलाकर सुला दिया था।

विष्णुदेवी ने अपनी दोनों लड़कियों को हाथ धो, भोजन करने के लिए कहा और स्वय अधसिले कुर्ते को एक ओर खाट पर रख, हाथ धोने चल पड़ी। "भैया शिव", उसने रोटी खाने के लिए बैठते हुए कहा, "भोजन करोगे ?"

"नहीं बहिन, मैं भोजन करने नही आया। मै तुमको यहा से बाहर करने के लिए आया हूं। मुझको बहुत ही दुःख है कि तुमने अपनी इस अवस्था का हमसे कभी वर्णन नही किया।" इन सूखी अधजली रोटियों को खाया जाता देख, शिव की आंखे भी तरल हो उठी थीं।

बहिन ने दृढ स्वर में कहा, "भैया, तुम लोग भी तो कभी खबर लेने नहीं आए। मैं तो यह समझ रही हू कि बिना भगवान के आश्रय के उद्धार होगा नही।"

"तो भगवान के रूप में ही तो कल पिता जी को कोई कहने आया प्रतीत होता है। विष्णी बहिन, तुम नही जानती, परन्तु आज से पाच वर्ष पूर्व प्रताप जी दुकान पर किसी काम से गए थे और पिता जी के कुछ कहने पर दुर्वचन कहने लगे थे। वहां से आते समय प्रताप जी ने कहा था, 'यदि लडकी के घर का खाने मे कुछ भी लज्जा लगती हो तो मेरे घर किसीको मत भेजना।' इसपर वे तुम्हारी मां को दुर्वचन कहते हुए चले आए थे। उस समय उनकी अवस्था इतनी बिगड़ी हुई प्रतीत नहीं होती थी। हमने यह समझा कि तुम पति-पत्नी सुखी रहो। हम दूर से ही सुख अनुभव कर लेंगे, तुमसे सम्बन्ध-विच्छेद कर बैठे।"

विष्णी को याद आ गया। गंगा का जन्म हुआ था। विष्णी की मां कर्मदेवी नई सन्तान के हेतु वस्त्रादिक लेकर आई थी। उसके साथ सदा और राम भी आए थे और विष्णी उनको मिठाई खिला रही थी। मां को जो कुछ देना था, देकर चली गई। सदा और राम दिन-भर शिशु लड़की को गोदी मे ले खेलाने का रस लेने वहां रह गए थे। उस समय प्रताप आया था। कदाचित् भारी रकम हारकर आया था। उसने भी वहां पर रखे वस्त्र और उनपर कुछ रुपये रखे देखे तो पूछा, 'ये कहां से आए हैं?'

'मां दे गई है।'

'मेरे लिए क्या है?'

'आपके लिए भी वस्त्र है।'

प्रतापकृष्ण ने बिना देखे वस्त्र फेंककर कह दिया, 'अब हम निर्धन हो गए हैं। इसलिए सूती कपड़े देने लगे है?'

'तो हमारा उनसे पाने का अधिकार है क्या, जो दे गए उनकी कृपा है।'

'ठीक है और इन दोनों को यहां की रोटिया तोड़ने की कृपा कर गए है।'

विष्णी समझ रही थी कि उसका पति भारी रकम हारकर आया प्रतीत होता है। इससे चुप रही। बात आई-गई हो गई। राम और सदा चले गए और फिर उसकी मा के घर से कोई नही आया। यह तो उसको आज ही विदित हुआ था कि उसका पति उसके पिता से लड आया है।

उस समय अवस्था इतनी पतली नही हुई थी। इसपर भी परिवार निर्धनता के गर्त में धसता जा रहा था। इन पांच वर्षों का पूर्ण इतिहास विष्णुदेवी को स्मरण आया तो वह पुनः आंसू बहाती हुई उन सूखी अधजली रोटियों को चबाने

लगी।

उसने रोटी खानी छोड़ दी। मन की अवस्था के कारण मुख का ग्रास गले से नीचे उतरता नही था।

वह उठ, स्नानागार में गई और मुख से ग्रास निकाल, गला और आंखो को धो-पोछ, भाई के समक्ष आ बैठी।

उसकी अवस्था पर शिवकुमार ने भी अपने आंसू पोछते हुए कहा, "मैं समझता हू, तुमको चलना चाहिए। पिता जी किसीको भेज, जीजा जी को भी बुला लेगे और फिर वहा बैठ, राय करेंगे।"

"मैं यह कहने वाली थी कि तुम जाओ। वे रात को आएंगे तो मैं उनको पिता जी से मिलने के लिए कहूंगी।"

"वह नही आएगा।"

"तो मैं वहां जाकर क्या करूंगी ?"

"कम से कम ये कुर्ते सीने तो बन्द हो जाएंगे, ये सूखी रोटियां तो कुछ तर हो जाएंगी।"

"बिना उनके कुछ नही होगा शिव ! फल खाए इस पेड़ के गन्दे कीने पात। यही हमारा धर्म है, जलेंगे इनके साथ।"

शिव बहिन की भावना समझता था और वह उसको पतित करना नहीं चाहता था। उसने कहा, "अच्छा बहिन ! मै उनको ढूढकर लाता हूं और तुम सबको इकट्ठा ही ले चलूगा।"

शिव मकान से नीचे उतर गया। मकान के नीचे एक दुकान पर से पूछने लगा, "भाई साहब ! यहां देसी शराबखाना किधर है ?"

दुकानदार ने शिव को प्रताप के मकान से उतरते देखा था। इस कारण उसने पूछा, "प्रताप को ढूढ रहे हो ?"

शिव को प्रताप की इतनी ख्याति देख विस्मय हुआ। उसने कह दिया, "तो आप जानते हैं कि वह कहां है ?"

अभी बहुत सुबह है। वह शराबखाने में नही होगा। इस समय शराबखाने के बाहर एक बैठक पर होगा।"

"किसकी बैठक है ?"

"नसीम रण्डी की।"

"वह किधर है ?"

दुकानदार ने बताया तो शिवकुमार उधर ही चल पड़ा। ढूढने मे कुछ कठिनाई अवश्य हुई परन्तु बैठक का द्वार खुला था और सीढिया चढने पर चार-पांच आदमी हंसते हुए और बाते करते हुए सुनाई दिए। शिवकुमार सीढियों मे खड़ा उनकी बाते सुनने लगा। वह यह देखना चाहता था कि उनमें किसी स्त्री की आवाज़ है क्या। किसी औरत की आवाज़ सुनाई नही दी। बातचीत प्रताप के विषय मे हो रही थी। एक सज्जन उसको गाली देता हुआ कह रहा था, "प्रताप! अब तो कई दिन से तुम निरन्तर हार रहे हो। बताओ, उधार कैसे दोगे ?"

"अरे भाई !" एक भर्राई हुई आवाज़, जिसको प्रतापकृष्ण की मानने को शिवकुमार को साहस नहीं होता था, कहने लगी, "कभी तो जीतूगा ही। कब तक पत्ते उलट चलते रहेगे।"

"नही, ओ उल्लू के पट्ठे ! अब एक पैसा और नहीं मिलेगा। कुछ बीवी की नथनी वगैरा है या नहीं। जाओ ले आओ तो बात करूगा।"

"अब तो उसके पास भी कुछ नही ?"

"तो तुमको शर्म नही आती यहा आते हुए ?"

"शर्म किस बात की ? तुमसे उधार लूगा। सुभीता होते ही दे दूगा।"

"देखो प्रताप ! जाओ। मण्डी में दलाली ही कर लो। कुछ तो मिल ही जाएगा।"

"एक बार इसको आरम्भ किया था। एक-आध रुपया दिन-भर की भाग-दौड़ के बाद मिल जाता था। उससे तो चुल्लू-भर पानी भी नही मिलता था। मैं अपने को इतना सस्ता नहीं समझता।"

"तो तुम अपना क्या मूल्य लगाते हो ?"

"यदि दांव सीधा पड गया तो सौ-दो सौ एक घंटे मे।"

"पर दांव लगाने के लिए कुछ तो जेब मे होना चाहिए।"

"उसके लिए तुम पांच उधार दे दो।"

"तुम्हारे जैसे नहूसत को देकर वापस मिलेगा ही नही।"

"और यह क्यों नहीं कहते कि तुम्हारा रुपया ही नहूसत (अपशकुन) है।"

"बकवास बन्द करो प्रताप, निकल जाओ यहा से, नहीं तो सीढियों से नीचे धक्का दे दूगा। सीधे यमलोक पहुंच जाओगे।"

"पर यह मकान तुम्हारा है क्या ?"

"जिसके पास पैसा है, नसीमा उसकी है। नसीम का मकान भी उसीका है।"

"आह ! नसीम के भी मालिक बन बैठे हो ? आ ले वह, पूछूंगा।"

"अच्छा जी। अब उसकी अदालत मे मुकदमा जाएगा ?"

"क्यों नही जाएगा ?"

"तो जाओ उसकी अदालत में।" इसके अनन्तर बैठक मे हाथापाई की नौबत आ गई। शिवकुमार सीढ़ियो में खड़ा उनके वार्तालाप और झगडे की बात सुन रहा था। एकाएक दो आदमी झगड़ते और लड़ते हुए सीढियों के पास आ गए। उनमे से एक प्रतापकृष्ण था। शिव ने आवाज दे दी, "प्रताप !"

दोनों लड़ते-लड़ते सीढ़ियों में देखने लगे। लडाई बन्द हो गई। शिव ने पुनः कहा, "प्रताप चलो ! मै तुमको बुलाने आया हूं।"

"क्यों, किसलिए बुलाने आए हो ?"

"एक नये जुएखाने मे ले चलने के लिए।"

"तो शिव, तुम भी जुआ खेलने लगे हो ?"

"हां, आओ।"

प्रताप नीचे न उतरता, यदि उसका साथी उसको सीढियो से नीचे धकेलने के लिए उसकी गर्दन पकड़े न खडा होता। बैठक मे कुछ लोग और भी थे परन्तु उनमे से कोई भी उसकी सहायता के लिए तैयार नहीं हुआ था। इसपर एक ने आवाज लगा दी—"सूम जाए !"

रूपकृष्ण नीचे उतर आया। शिव ने उसके कधे पर हाथ रखकर पूछ लिया, "प्रताप, कितना रुपया तुम्हे इसको देना है ?"

"कुछ नही दादा, यह रुपयो के लिए नही लड रहा था। यह तो नसीम के कारण लड़ाई थी। वह इस धनी बाप के बेटे पर भी मुझको तरजीह देती है।"

"पक्की बात कहते हो ?"

"हा दादा, अगर मैं दो दिन यहां न आऊ तो मुझको अपना नौकर भेजकर बुला लेती है।"

शिवकुमार को इस कथन पर उतना ही विश्वास आया जितना किसी भी मद्यसेवी और जुआरी पर आ सकता था। इसपर भी शिव ने अपने उद्देश्य की

पूर्ति के लिए मुस्कराते हुए प्रताप से पूछ लिया, "मालूम होता है वह तुमसे प्रेम करती है ?"

"ज़रूर करती होगी।"

"अच्छा देखेंगे, एक दिन। अब तुम मेरे साथ चलो, कुछ काम है तुमसे।"

"क्या काम है ?"

"कुछ तुम्हारे लाभ की बात विचार रहा हू।"

"क्या बात है, बताओ न।"

"यहां बाजार मे ही ? नही। चलो मेरे घर। तुम, विष्णी, यमुना, गगा, गोदावरी—सब चलो।"

"क्या है ? लड़के की सगाई करने वाले हो ?"

"नहीं भाई, सगाई-वगाई कुछ नही। वैसे ही कुछ आय की बात है।"

"परन्तु मैंने तो कसम खाई है कि तुम्हारे लाला जी के मकान पर नही जाऊंगा।"

"मकान पर नहीं चल रहे, तुम लोग मेरी दुकान पर चलोगे।"

इस समय वे प्रतापकृष्ण के घर पहुंच गए थे। विष्णी का विचार था कि उसका घरवाला आएगा ही नही। इसलिए वह हाथ धो, पुनः कुर्ता सीने बैठ गई थी। यमुना बर्तन साफ कर रही थी।

शिव प्रताप को लेकर मकान पर आया तो उसने विष्णी को कहा, "उठो बहिन ! ये भी चल रहे हैं।"

"तो चलूं ?" विष्णी ने प्रश्न-भरी दृष्टि से अपने पति की ओर देखते हुए पूछ लिया।

"शिव दादा कह रहे है कि कुछ लाभ की बात है। आज मेरी जेब में कुछ नही है। जो कुछ था, सबका सब एक ही दाव मे समाप्त हो गया है।"

"तो चलिए। दादा की बात भी सुन लें।" विष्णुदेवी ने कुर्ते से सूई टांक दी और उसको लपेटकर टोकरी में रख, कपड़े बदलने पिछले कमरे में चली गई।

२

विष्णुदेवी ने अपने पिता के समक्ष उपस्थित हो, कह दिया, "मैं अपने पति के साथ रहने मे धर्म समझती हूं। मैं यह भी जानती हू कि वे मद्य-सेवन करते हैं और जुआ

खेलते है। कदाचित् वेश्यागमन भी करते है, परन्तु मैं उनके इन कर्मों की भागीदार नही हू। मैं यथाशक्ति उनकी और अपनी लडकियो की सेवा कर देती हूं। यह मेरा धर्म है और मै इसको पूर्ण करने का यत्न करती रहती हू।"

"ठीक है विष्णी।" उसके पिता ने कहा, "मै तुमको उसे त्यागने के लिए नही कह रहा। मैं तो यह कह रहा हू कि उसका चरित्र सुधरेगा तो उसका स्वास्थ्य भी सुधरेगा और तुम्हारा सुहाग चिरकाल तक बना रहेगा। वर्तमान अवस्था में तो वह दो-तीन वर्ष से अधिक जीवित रह नही सकता। क्या तुम अपने सुहाग की भी चिन्ता नही करती?"

"करती हू।" मै उनको अपने वर्तमान व्यवहार को बदलने के लिए भी कहती हूं और जब देखती हूं कि मेरे कहने का प्रभाव नहीं होता तो भगवान से विनती करती हूं कि उनको सन्मार्ग दिखाए। बस यही तो मेरी सामर्थ्य की सीमा है।"

"इसमें कुछ हमको भी यत्न करने दो। हम तुम्हारी सामर्थ्य को अधिक करना चाहते है।"

"आप करिए।"

"तुम हमारे इस कार्य मे सहयोग दो तो।"

"मैं उनसे लड नही सकती। मैं उनको त्याग भी नहीं सकती। इसके अतिरिक्त जो एक पत्नी के धर्म के विपरीत नहीं, वह मुझको बताइए। मैं यथाशक्ति करूंगी।"

"एक तो घर में पौष्टिक तथा स्वादिष्ट भोजन बने। दूसरे, तुम स्वच्छ और सुन्दर वस्त्र पहनो। तीसरे, लडकियों को स्कूल में भेज, पढने का अवसर दो। चौथे, घर को सुख-सुविधा का स्थान बनाओ। इसके लिए शिव तुमको साधन देगा। परन्तु तुम नकद उसको कुछ नही देना। जो वह तुमको दे, उसको सावधानी से रखना। व्यर्थ कुछ न जाए। शेष हम स्वय प्रताप से निपट लेंगे।"

"कठिनाई तो यह है कि जब मेरे हाथ में वे रुपये देखेगे और वे जुए के लिए अथवा अन्य व्यसनों के लिए मागेगे तो मैं इन्कार नही कर सकूगी। यह मेरी प्रकृति में नही।"

"तुम्हारे हाथ में कुछ होगा ही नहीं। तुम चिन्ता मत करो। तुम आज से सीने-परोने का काम छोड़, गृहस्थी को सुखकारक बनाने का यत्न करो। दोनों

लड़कियों को स्कूल में भरती करवा दो।"

"तो खर्चा कैसे चलेगा ?"

"यह तुमको चिन्ता नही करनी चाहिए। शिव इसका प्रबन्ध करेगा।"

"मैं आपसे मांग नही रही। मैं इनसे अपना अधिकार नही मागती।"

"पर मेरे दिए को लेने से इन्कार कैसे कर सकती हो ! तुम मेरा अधिकार, कि मैं अपनी सन्तान को जो उचित समझू, दू, छीन क्यो रही हो ?"

विष्णुदेवी को पिता जी के कथन मे कुछ भी आपत्तिजनक नही दीखा। वस्तुतः उसपर अपनी इच्छानुसार व्यवहार रखने में किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नही था। वह चुप रही।

उसको समझा सुलक्षणमल ने उसे मा के पास भेज दिया। कर्मदेवी ने अपनी लड़की को पहनने योग्य वस्त्र दिए। लड़कियों को भी नवीन वस्त्र पहना दिए, और उनको अपने ही घर में कुछ दिन रहने का निमत्रण दे दिया।

दूसरी ओर शिव प्रताप को बता रहा था, " देखो प्रताप, जुआ खेलना एक अनिश्चित लाभ का कार्य है। इसमे कभी भारी लाभ भी हो जाता है। यह एक बहुत बड़ा प्रलोभन भी होता है। इसको छोड़ा नही जा सकता।

" परन्तु इस अनिश्चय के आधार पर यदि कुछ निश्चित न हो तो इसका परिणाम यही होता है जो तुम अपने मे देख रहे हो। पिछले पाच वर्ष मे तुम आधे रह गए हो। इस अट्ठाईस वर्ष की आयु मे तुम्हारे बाल पकने लगे है और मुख पर झुरियां पड़ने लगी है।"

"परन्तु भैया निश्चित आधार क्या हो सकता है ?"

" आय का निश्चित आधार है परिश्रम। कुछ घटे नित्य ऐसा काम करो, जिसका फल उसमे लगाए परिश्रम और उस परिश्रम मे प्रयोग की हुई बुद्धि के अनुसार हो। परिश्रम एव बुद्धि तो अपने है। इस कारण उससे उपलब्ध आय भी अपनी और निश्चित है। नित्य ऐसी आय किया करो। फिर उसमे से कुछ के साथ अपने भाग्य की परीक्षा जुएखाने मे लिया करो।

" परन्तु जुएखाने के कुछ नियम हैं। यदि उनका पालन करोगे तो उस मूर्ख से धक्के खा-खाकर जुएखाने से कभी निकल नही जाओगे।"

"क्या नियम हैं ?'

"उधार लेकर जुआ मत खेलो। अपने धन से जुआ खेलो। दूसरे के पैसों से

मत खेलो। यदि अपनी जेब में पूजी समाप्त हो जाए तो फिर खेलना बन्द कर दो। जब जीतकर आओ तो एक निश्चित राशि से अधिक जेब मे मत रखो। शेष को ऐसे कोष में जमा कर दो, जिसमे से अपने सुख-सुविधा के लिए ही निकाल सको।"

"यह तो बहुत कठिन है दादा, जब जुए मे हार जाता हू तो मन में और खेलने की प्रवृत्ति होती है। यह शराब पीने के तुल्य ही है। शराब पूर्व तो अति मृदुल मस्ती उत्पन्न करती है। परन्तु जब इसका प्रभाव मस्तिष्क पर होता है तो अधिक और अधिक पीने की उत्कट इच्छा होती है। यह सब तब तक रहती है जब मनुष्य सर्वथा अचेत नही हो जाता। यही बात जुए की है। ज्यों-ज्यो मनुष्य हारता तथा जीतता है। पहले तो यह मधुर-सा प्रतीत होता है उपरान्त जब इसका प्रभाव मस्तिष्क पर होता जाता है तो फिर निरन्तर खेलने की इच्छा होती जाती है। यह इच्छा उत्तरोत्तर बढती जाती है, जब या तो शराब की भाति बोतल रिक्त न हो जाए अर्थात् कोष रिक्त न हो जाए, अथवा मनुष्य सर्वथा अचेत—मेरा तात्पर्य है बुद्धि मन्द न हो जाए। तब मनुष्य युधिष्ठिर की भाति अपनी स्त्री तक को बाज़ी पर लगाने के लिए तैयार हो जाता है।"

"इसमें मै तुम्हारी सहायता करना चाहता हू। मै दो प्रकार से यह सहायता कर सकता हूं। एक तो प्रातः ठीक आठ बजे यहा आ जाया करो। दो-तीन घटे दुकान पर काम किया करो। इससे तुम्हारी निश्चित आय हो जाएगी। तुम जुए मे जीतो अथवा हारो, यह आय तुम्हारी आधारभूत आय होगी जिसका सम्बन्ध हारने-जीतने से नही होगा, तुम्हारी बुद्धि एव परिश्रम से होगा।

"पारिश्रमिक तुमको नित्य मिल जाया करेगा और इतना लेकर तुम जुएखाने मे चले जाया करो। जब इतना हार जाओ तो खेलना बन्द कर दिया करो। जिस दिन जीत जाओ उस दिन जीता हुआ रुपया मेरे पास जमा करा जाया करो। उसपर आठ आने सैकडा ब्याज दिया जाएगा और तुम्हारी लड़कियो के विवाहादि के समय वह धन दिया जाएगा। कभी तुम जुआ खेलते पकड़े गए अथवा नसीम ने तुमको किसी झगड़े के कारण पकड़वा दिया तो तुम्हारे मुकदमे पर व्यय किया जाएगा।"

"नसीम झगड़ा नही करेगी। मुझको विश्वास है।"

"तो उस अवस्था मे कुछ व्यय नही होगा। फिर भी तुमको विश्वास होना क्या उचित नहीं कि यदि किसीसे उलझ गए तो तुम बेयारो मददगार नहीं रहोगे?"

"अच्छा, तीन-चार घंटा प्रतिदिन काम करने से क्या मिल जाया करेगा ?"

"वह निर्भर है तुम्हारे काम पर। जितना चित्त लगाकर काम करोगे उतना अधिक तुमको मिल जाएगा। देखो प्रताप जी ! हमारे यहां बीस-पचीस कर्मचारी है। मै भी एक कर्मचारी हूं। कर्मचारी आठ आना नित्य से लेकर दस रुपये नित्य तक प्राप्त करते है। मैं दस रुपये नित्य लेता हू।"

"यह तो कुछ भी न हुआ। इतना तो जब मै जीतता हू तो शराब पिलाने वाले को टिप (बख्शीश) दे देता हू।"

"पर देखो प्रताप, जुए में जीती राशि में से वह कर सकते हो। वह फोकट की आय है। उसमे से दस से भी अधिक बखशीश दी जा सकती है। मगर मेहनत-मज़दूरी के दस रुपये का मूल्य तो जुए मे जीते हजार रुपये से भी अधिक होता है। इसमे अपना खून और पसीना होता है।"

वास्तव मे प्रतापकृष्ण को इस समय दस रुपये की अति आवश्यकता थी। वह अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा नसीम की बैठक मे पुनः प्राप्त करने की अभिलाषा रखता था। इससे वह पूछने लगा, "और मजदूरी नित्य की नित्य मिलेगी ?"

"हा। तीन घटे काम करोगे तो मजदूरी मिल जाएगी।"

"तो भैया ! काम बताओ। अब बारह बजे है। मैं सांयकाल से पूर्व उस बेईमान के बच्चे जग्गू को यह बताना चाहता हू कि नसीम उसकी कुछ भी परवाह नही करती।"

"इधर आओ।" शिवकुमार उसको दुकान पर ले गया। उसको एक स्थान पर बैठा दिया और पिछले वर्ष की बही उसके समक्ष रखकर कहने लगा, "देखो प्रताप, इसमें हमें कुछ से रुपये लेने है। कुछ को देना है। तुम लेन-देन का पृथक्-पृथक् चिट्ठा तैयार कर दो। जब तक तुम ये चिट्ठा तैयार कर दोगे तब एक दूसरा काम है वह बता दूंगा। अभी तुम खाली कागज पर ही बनाओ। जब मै देख लूगा कि ठीक बन गया है तो फिर नई बही में लिखने के लिए कह दूगा।"

तीसरे पहर शिवकुमार उसको चाय के लिए पुनः दुकान के ऊपर घर पर ले गया। वहां उसको विष्णुदेवी और अपनी लड़कियों के साथ बैठ, चाय पीने के लिए कहा गया। अल्पाहार लेते समय प्रताप ने अपनी स्त्री तथा बच्चों को नवीन रेशमी वस्त्रों में देखा तो पूछने लगा, "ये कहां से पा गई हो ?"

"मां जी ने दिए है।"

"किस निमित्त ?"

"लड़कियों की नानी होने के निमित्त । उन्होने इनको फटे-मैले कपड़ों मे देखा तो ये इनको पहना दिए है ।"

"तम जानो, तुम्हारा काम जाने ।"

प्रतापकृष्ण को अल्पाहार मे एक दिल्ली के सेठ के घर में बनी नमकीन दाल, भुजिया, फलों की चाट और उसके साथ लौग-इलायची से बनी चायमिली । ये वस्तुएं उसको कई वर्षो के उपरान्त प्राप्त हुई थी । जब से उसकी पत्नी को अपने तथा बच्चों के लिए मेहनत-मजदूरी करनी पडी थी, वह सूखी रोटी-दाल बनती देख घर पर खाना-पीना छोड़ बैठा था । बाजार से जैसी रोटी और साग-भाजी मिलती थी, उसीसे निर्वाह करता था ।

आज उसको घर का खाना-पीना बहुत स्वादिष्ट प्रतीत हुआ । इसपर विष्णु-देवी ने कह दिया, "मां जी कुछ दिन यहां रहने के लिए कह रही हैं ।"

"तो रह जाओ ।"

"आप भी यहां रहोगे तो रहूगी ।"

"मुझको रात को बहुत देरी हो जाती है ।"

"आपको कुछ जल्दी आ जाना चाहिए । साथ ही मद्य-सेवन कर यहां आना ठीक नही होगा ।"

"इसीसे तो कहता हू कि मैं यहा नहीं आऊगा ।"

"तो मैं भी यहां नही रहूंगी ।"

"क्यो ?"

"केवल इसलिए कि माता-पिता ने मेरा हाथ आपके हाथ में पकड़ाया था । अब तो आपके हाथ मे ही रहेगा । इससे हम दो घरों मे कैसे रह सकते हैं ?"

प्रतापकृष्ण को समक्ष रखी फलों की चाट का स्वाद अनुभव हो रहा था । यह उसको कई वर्षों के पश्चात् खाने को मिली थी । इससे कुछ विचारकर उसने कहा, "अच्छा, यदि शिव मुझको कहेगा तो मै रात सोने के लिए यहां आ जाऊंगा ।"

"भैया कह देंगे । जब तक हाथ तंग है यहां आ ही जाना चाहिए । हां, मद्य बाजार में ही पीकर मत आइएगा ।"

"क्यों ?"

"रात को मकान के बाहर चौकीदार बैठा रहता है । वह आपको देखेगा तो

क्या कहेगा!"

"क्या कहेगा ?"

"यही कि इतने बड़े बाप के बेटे और सेठ के दामाद गली की नालियो में गिर-गिर पडते है।"

"पर मुझको तो उसके बिना नीद नही आती।"

"आप घर पर ला रखिए।"

"तो अब तुम घर पर पीने को दोगी ?"

"हां, मा जी ने समझाया है घर पर दिया करू।"

"तुम पिलाओगी ?"

"नही। पियोगे तो स्वय ही। मै आपके लिए छिपाकर रख छोड़ूगी। जब मांगोगे तो दे दिया करूगी।"

"तो अब लडकियों पर उस पीने का प्रभाव नहीं होगा ?"

"वे पृथक् कमरे मे सोया करेंगी। शिव भैया के बच्चे है। ये सब इकट्ठे सोएंगी। एक बात और है। यमुना और गगा स्कूल मे भरती होगी।"

"बात यह है विष्णी, कि मैं पिता जी से लडकर गया था। पांच वर्ष से अधिक हो गए हैं। अब उनके घर रहने में मुझे लज्जा आती है।"

"भैया स्वयमेव आपको कहें कि आप यही रह जाइए तब तो लज्जा की बात नही रहेगी ? वे तो आपके झगड़े को भूल गए हैं और आप इसे भूल नही पाए। मज़ेदार बात तो यह है कि आप घर की अन्य अनेको बाते भूल जाते है।"

"मुझको वह भी स्मरण है कि झगड़ा क्यों हुआ था ?"

"किस कारण हुआ था ?"

" राम और सदारानी मेरे घर मे आए हुए थे। वे आनन्द से बैठे मिठाई खा रहे थे। मुझको कुछ ऐसा समझ आया था कि वे मेरे गाढ़े पसीने की कमाई हजम कर रहे हैं। मैं यहा आया था और तुम्हारे पिता जी से कहने लगा था कि 'आप अपने बच्चों को यहां बुला ले। उनको अपनी निर्धन बहिन के घर का खाते हुए लज्जा आना चाहिए।'

" 'अपने बड़ों के घर का खाने में तथा उनके अनुभव का भागीदार बनने में लज्जा नहीं लगती प्रताप ! यह सौभाग्य माना जाता है।' पिता जी का कथन था।

" इसपर मैंने उनसे लड़ना आरम्भ कर दिया। "

"तो आप अब अनुभव करते हैं कि आपने गलती की थी। साथ ही यह भी आपको मालूम होना चाहिए था कि माता जी जब उनको हमारे घर पर छोड़ गई थी तो उनके दिन-भर के खाने के लिए अपने पास से दे गई थी। उसपर हमारा एक पैसा भी व्यय नही हुआ था।"

"तो क्या करू ? मैं झगडा कर गया था।"

"तो ऐसा करिए, आप चुप रहिए। पिता जी तो कदाचित् भूल गए है कि क्या झगडा था और कब था। आपको शिव भैया यहां रहने के लिए कह दे तो कह दीजिए कि मुझको राजी कर ले। शेष मै सब ठीक कर दूंगी।"

३

प्रतापकृष्ण तो सभला नही। हा, विष्णुदेवी तथा उसके बच्चो का भविष्य अवश्य सुधर गया था। जब प्रताप को शिव ने अपने घर में निवास करने का निमन्त्रण दे दिया तो प्रतापकृष्ण मान भी गया, परन्तु कुछ ही दिनो के उपरान्त उसने वहां आना पुन. छोड दिया।

शिवकुमार ने तीन-चार घटे नित्य गलत-मलत काम करने का दस रुपये नित्य भी दिया और प्रतापकृष्ण ने कुछ दिन तक अपने जुए मे जीतने का धन उसको लाकर भी दिया परन्तु वह अपने इस निश्चय पर स्थिर नही रह सका।

पहले ही दिन जब वह नसीम की बैठक पर पहुचा तो वहां पर एकत्रित जुआरी उसको नित्य से अधिक प्रसन्न देख समझ गए कि आज फिर वह अपनी स्त्री का कोई आभूषण लेकर खेलने आया है। "आओ प्रताप ! कुछ है जेब मे ?"

"प्रताप की जेब मे दस रुपये थे। ये शिवकुमार ने उसे दिए थे। वह बैठ गया। जग्गू ने उसके सम्मुख ताश रख दी। "फेंट दो।" जग्गू ने कहा।

प्रताप ने 'ताश' को फेंटते हुए कहा, "नई मंगवाओ। इस गदी ताश से मैं नहीं खेलूंगा।"

"ओह ! बहुत कुछ लेकर आए हो जेब मे !"

"कुछ भी हो। मैं इससे नहीं खेलूंगा।" जग्गू ने बैठक के नौकर करीम की ओर देखकर कहा, "लाओ भाई, नई ताश ला दो।"

"आठ आने दाम।" करीम का प्रश्न था।

"प्रताप देगा।"

"नही। तुम जीते हुए हो। दाम तुम दोगे।"

"अच्छा, जो जीतेगा वह देगा। क्यों करीम! ठीक है न?"

करीम ने ताश की नई डिब्बी अलमारी मे से निकालकर सामने फेक दी। ताश के पैकट को प्रताप ने खोला। पत्तो को फेटा और जग्गू ने पत्ते बाटे। खेलने वाले चार आदमी थे। पत्ते बांटे तो प्रताप ने दस रुपये का नोट, जो वह शिवकुमार के पास से लेकर आया था, बाजी पर लगा दिया। सबने दस-दस रुपये बाज़ी पर लगा दिए।

जग्गू ने कहा, "बाज़ी दस नही पांच की ठीक रहेगी।"

बुद्धू मियां ने कह दिया, "जग्गू भैया, एक घटे से जीत रहे हो। अब दस रुपये मे पानी पतला पड गया है?"

यह सत्य था कि उस दिन प्रताप के आने से पूर्व जग्गू एक हज़ार तक जीत चुका था। इससे उसको चुप रहना पड़ गया। पत्ते खोले गए। प्रताप के हाथों में चारों बादशाह थे। जग्गू के हाथ छक्की-सत्ती थीं। अन्य के हाथो मे जग्गू से ऊचे पत्ते थे परन्तु प्रताप से घटिया थे। प्रताप के दस के चालीस हो गए।

अब बाटने की बारी प्रताप की थी। फेटने की बारी जग्गू की थी। प्रताप ने चालीस के चालीस बाज़ी पर लगाए। सबने भी उतने-उतने निकालकर रख दिए। इस बार पुनः प्रताप जीता। अब उसकी जेब मे एक सौ साठ रुपये थे। तीसरी बार उसने एक सौ साठ की बाज़ी लगानी चाही। बुद्धू मिया उठ गए। उसकी जेब में इतना धन नही था। उसने कहा भी, "प्रताप बाबू उधार दे तो मै खेल सकता हूं।"

प्रताप ने कहा, "बुद्धू भैया! तुम एक तरफ हट जाओ। आज तो मेरी बाज़ी जग्गू से लगेगी।"

इसपर अन्य दोनों हट गए। अब प्रताप और जग्गू में चलने लगी। तीन बार के खेल मे जग्गू खाली जेब हो गया। आज कई मासों के पश्चात् उसकी जेब मे बारह सौ से ऊपर रुपया था। जग्गू ने कहा, "अभी उधार दे दो तो में और खेलूगा।"

"नही ओ जग्गू। सुबह मै तुमसे पाच रुपये मांग रहा था। तुमने गर्दन से पकड़ सीढ़ियों के नीचे धकेलने का यत्न किया था। अब मैंने फैसला किया हुआ है कि जुएखाने में न तो उधार लूगा न दूगा।"

"अच्छा, नसीम को आने दो। फिर खेलूगा।"

"हां, तुम नसीम की प्रतीक्षा करो, मैं तो चलता हू।"

प्रताप ने नसीम के नौकर को कमीशन के एक सौ रुपये दिए और शेष रुपया बटोरकर चला गया।

आज उसने एक सौ रुपया मद्य पर व्यय किया। एकेशा न० १ की तीन बोतले खरीद घर पर जा पहुचा। सेठ सुलक्षणमल के घर मे बैठकर शराब पी जाने लगी। अगले दिन प्रताप ने शिवकुमार को पिछली रात की जीत की कहानी बताई तो शिवकुमार ने वह जीत का सब रुपया ले लिया और उसको काम पर लगा दिया। आज भी उसको कार्य का पारिश्रमिक दस रुपये दे दिया। इस दिन भी प्रताप जीतकर आया और उसने सब रुपये शिव के पास जमा करा दिए। यही बात कई दिन तक चलती रही। नसीम तक प्रताप के जीतने की खबर पहुंची तो वह एक दिन उस समय ही बैठक में आ पहुची और प्रताप को जीत का रुपया ले भागते हुए पकड़ बैठी, "क्या जी लाला! अब पाचों घी में है तो हमको भूल ही गए हो?"

"नही बाई जी! आपको कैसे भूल सकता हू!"

"तो कहां भागे जा रहे हो?"

"घर को?"

"आज यहां ही ठहर जाओ न?"

"बात यह है कि यह नीचे की ढाबे की रोटिया खाते-खाते ऊब गया था। इसलिए घर पर खाना-पीना होने लगा है।"

"पीना भी?"

"हां बाई जी। यमुना की मां भर-भरकर पिलाने लगी है।"

"ओह! तभी तो कहती हू, भूल गए हो वे दिन, जब मेरी मुहब्बत मे दीवाने बने रहते थे!"

"भूला तो नही। हां, जिस दिन धक्के दे-देकर यहां से निकाला गया था, उस दिन से तनिक सचेत और सतर्क हो गया हूं।"

"किसने धक्के दिए थे?"

"जग्गू ने—और करीम के देखते-देखते।"

"तो लाला जी। उस दिन बताना था। कब की बात है?"

"आज पन्द्रह दिन के लगभग हुए है। कहता था जिसके पास पैसा है, नसीम उसकी है और उसका मकान भी उसीका है।"

"वह बिलकुल मूर्ख है। पैसा तो चाहिए ही, मगर पैसे के अलावा इन्सान भी चाहिए। तुमने मुझको बताया होता तो मैने उसको उसी दिन कान पकड़कर उसकी बीवी के पास भेज दिया होता। कैसे-कैसे गन्दे लोग यहां आते है।"

बस, तीन मास की बिगडी दो मीठी-मीठी बातो से बन गई। शिवकुमार से दिए गए दस रुपये प्रताप ने पृथक् अपनी जेब मे रखे हुए थे। उसके मन मे विश्वास बैठ गया था कि वे रुपये बरकत वाले है और उन दस रुपयों को खर्च कर देने से डरता था। इससे उनको वह जीते हुए धन से पृथक् रखता था।

उस रात प्रताप बैठक की ऊपरी मज़िल पर नसीम के पास रहा। उसने जो छ: सौ रुपयो के लगभग जीता था, सब व्यय कर दिया। रात बहुत आनन्द से व्यतीत हुई। अगले दिन उसको शिवकुमार के घर जाने मे सकोच होने लगा। वह फिर वहा नही गया।

कई दिनों तक विष्णुदेवी और शिवकुमार उसकी प्रतीक्षा करते रहे। एक दिन शिवकुमार उसको खोजता हुआ नसीम की बैठक पर जा पहुचा। वहां कुछ लोग बैठे मिले, परन्तु प्रताप न मिला। शिवकुमार ने पूछा तो सब बैठक के नौकर करीम का मुख देखने लगे। करीम ने कह दिया, "साहब! प्रतापकृष्ण को यहां आए आज दस दिन हो गए है।"

"तो कहां होगा वह?"

"खुदा जाने।"

शिवकुमार जब सीढियां उतर रहा था तो उसने ऊपर बैठक पर बैठे हुओं को ठहाका मारकर अट्टहास करते सुना। वह सीढियो मे ठहर गया। परन्तु एकाएक सबकी हंसी रुक गई और बैठक में शान्ति छा गई। करीम साढियों के ऊपर झांक रहा था। शिवकुमार भी हसी की आवाज सुन, ठहर गया था और ऊपर को देखने लगा था। करीम ने आवाज़ दे दी, "लाला जी! प्रताप को ढूढना हो तो बानो की बैठक पर जाइए। किसीने उसको वहा पर देखा है।"

"वह किधर है?" शिवकुमार ने पूछा।

"चावड़ी बाज़ार के जामा मस्जिद वाले कोने पर दो बैठक छोड़कर।"

शिवकुमार को इन रडियों का अनुभव नही था। इसपर भी बहिन का विचार कर

वह पूछता-पूछता वहा पहुचा। वहा बानो नाचने के लिए पांवों मे पायल बाध, तैयार खड़ी मिली। वहां वह बैठ गया। बानो ने समझा कि कोई नया शिकार आया है। अतः उत्साह से नृत्य आरम्भ कर दिया। जब सब बखशीश देने लगे तो शिव ने भी एक दस का नोट निकालकर मैदान मे फेक दिया। बानो ने देखा तो कह दिया, "बस !"

शिवकुमार ने मुस्करा दिया। पान-सुपारी वितरण करने वाले से वह पूछने लगा, "मैं एक प्रतापकृष्ण की खोज मे आया हू।"

"कितनी आयु है उसकी ?"

"पचीस-तीस वर्ष की होनी चाहिए।"

"ओह ! मैंने समझा कि कोई नाबालिग है। लाला, उसकी घर पर प्रतीक्षा करिए, उसको घर का रास्ता तो आता होगा।"

लज्जित हो शिवकुमार घर लौट आया। छ: मास व्यतीत हो गए। प्रताप घर नहीं लौटा। इस दुर्घटना से विष्णुदेवी बहुत शोकातुर रहती थी। उसका विचार था कि उसके भाई की योजना से ही वह भाग गया। एक दिन उसने अपने पिता से कह दिया, "आपकी योजना से तो मै जो कुछ थी, वह भी नही रही।"

सेठ सुलक्षणमल भी इस बात को अनुभव करता था। उसने कहा, "हमारा विचार था कि वह इस प्रकार धीरे-धीरे सुधर जाएगा। परन्तु हमारा विचार गलत निकला। ऐसा प्रतीत होता है कि उसके पूर्वजन्म के कर्म अति प्रबल सिद्ध हुए है।"

"कुछ भी हो। यदि आप कहे तो मैं अपने घर चली जाऊं।"

"क्या करोगी वहां जाकर ?"

"उनके आने की प्रतीक्षा करूंगी।"

"और लड़कियां ?"

"यदि शिव भैया माने तो यमुना और गंगा यही ही रहेंगी। उनकी लड़की के साथ रहेंगी। गोदावरी को मैं अपने साथ ले जाऊंगी।"

"और फिर कुर्ते सीया करोगी ?"

"हा। पेट तो भरना ही होगा।"

"नही। मेरा कहा मानो। तुम उस घर में जाओ। उसको शिव सब सुखद सामान से सुसज्जित करा देगा। शिव तुम्हारे भोजन-वस्त्र की भी व्यवस्था कर

देगा। कुछ रुपया तुम्हारे अन्य व्ययों के हेतु तुमको मास की प्रथम तिथि को दे आया करेगा।"

"और मैं खाली बैठकर क्या किया करूंगी ?"

"रामायण का अध्ययन करो। भगवद्भजन किया करो और घर को उसके स्वागत के लिए तैयार रखो।"

विष्णुदेवी छः मास अपने पिता और भाई के घर रहकर पुनः अपने पति के मकान मे चली गई। मरम्मत, सफेदी, रग-रोगन और नये फरनीचर से मकान को ठीक रहने योग्य बनवा दिया गया।

विष्णुदेवी अब वहा रहने लगी। अपने पति की अनुपस्थिति में उसने निर्णय कर लिया था कि वह साध्वियों का सा जीवन व्यतीत किया करेगी। घर में तो पलग, दरी-कालीन बिछे थे। खिड़कियो और दरवाजों पर पर्दे टग गए थे। भोजन के लिए प्रत्येक प्रकार के स्वादिष्ट एवं पौष्टिक पदार्थ आ गए थे। परन्तु वह श्वेत परिधान में अनलकृत एव भूषणों से रहित रहती थी। उसके सोने के कमरे मे भूमि पर चटाई बिछी थी। बच्ची गोदावरी के लिए एक खटोला रहता था। वह नमकीन दलिया और शाक-भाजी पर निर्वाह करती थी।

शिवकुमार अथवा दुकान के वृद्ध मुनीम दूसरे-तीसरे दिन आकर समाचार ले जाया करते थे। इस प्रकार के जीवन के भी छः मास से ऊपर व्यतीत हो गए थे।

शिवकुमार आदि को इस परिश्रम के भी असफल हो जाने का विश्वास होता जाता था। इन दिनों एक दिन सेठ सुलक्षणमल स्वय लड़की के घर आए और उसको समझाने लगे, "तुम्हारे इस प्रकार अकेले रहने से तो मुहल्ले के लोग भी निन्दा करने लगेंगे।"

"इससे मेरा क्या बिगड़ेगा ?"

"हमारी बदनामी होगी।"

"तो आप मेरी खबर लेने न आया करिए। जब आपको कोई कुछ कहे तो कह दीजिए कि आपने मुझसे सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया है।"

"अर्थात् उनके लाछन का समर्थन कर दे। नहीं, यह नहीं हो सकेगा।"

"पर मैं अब यहां से जाऊंगी नहीं। मेरी तपस्या अभी अधूरी है। मैं उनको छोड़ नहीं सकती।"

सुलक्षणमल कह नहीं सका कि अपने नालायक पति की आशा त्याग दे।

अब तक यह विदित हो चुका था कि वह वही नसीम की बैठक पर उसके साथ रहता है। इतना कुछ विष्णुदेवी को बता दिया गया था। इसपर भी वह उसको छोड़ने के लिए मन को तैयार नही कर सकी।

उसने अपने पिता को अन्तिम बात कह दी, "पिता जी! पवित्र अग्नि को साक्षी बनाकर मैंने उनसे सम्बन्ध बनाया है। अब वह सम्बन्ध टूट नहीं सकता। सुख-दुःख तो भगवान के अधीन है।"

एक दिन रात के दस बजे मकान का द्वार खटखटाने का शब्द हुआ तो विष्णु-देवी ने वातायन से झाककर देखा। गली में अधेरा था। वह देख नही सकी कि कौन है। उसने आवाज दे दी, "कौन ? और क्या चाहते हो ?"

"मैं हूं, विष्णी।" आवाज भर्राई हुई थी।

"तुम कौन ?"

"प्रताप।"

"ठहरो।" वह नीचे गई। उसने सीढियों मे रखी मिट्टी के तेल की कुप्पी को जलाया और द्वार खोल दिया। लड़खड़ाते पगों से प्रतापकृष्ण भीतर घुस आया। उसको पहचान, विष्णी ने दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया और उसे बाह का आश्रय दे ऊपर ले गई। उसके मुख और वस्त्रों से मद्य की तीव्र गध आ रही थी।

ऊपर की मजिल पर पहुंच, उसने उसे एक सोफासेट पर बैठा दिया और उसको बेहाल, उसके कपडों को मिट्टी में लथपथ और सिर तथा पांव से नग्न देख सब कुछ समझ गई। वह समझ गई कि वे सब कुछ हारकर अकिंचन हो लौटे हैं।

विष्णी ने कह दिया, "ये कपड़े बहुत गन्दे हो रहे है। इनको उतार दीजिए। आपको धोती-कुर्ता देती हू।"

"मै स्नान करूंगा। गरम पानी मिलेगा ?"

"हा, कुछ समय लगेगा।"

जल गरम किया गया। प्रतापकृष्ण ने स्नान किया और फिर कपड़े पहने। विष्णुदेवी ने दलिया तैयार किया और उसको पेट-भर खिलाया, तदनन्तर सोने के लिए पलंग पर बिस्तर लगा दिया। स्नान करने से नशा उतर गया था। वह पलग पर लेटा तो उसको सुख अनुभव हुआ। उसने पत्नी को कहा, "तुम भी लेट जाओ।"

"मेरा बिस्तर उस कमरे में लगा है।"

स्तर पर चल रहा था जिस स्तर पर जीत के दिनों में था और जब निरन्तर हार होने लगी तो नसीम ने समझा कि प्रताप का सितारा मन्द गति मे चला गया है। वह अब किसी उच्च गति पर चलने वाले सितारे की खोज करने लगी।

आखिर वह मिला। एक दिल्ली के रईस घासीराम लोहिया का लड़का किशोरचन्द जुए की बैठक पर पहुंचा। उसको ऊपर की मजिल पर ले जाने में कुछ भी कठिनाई न हुई।

नसीम को अभी भी यह आशा थी कि प्रताप का सितारा उच्च स्तर पर आ सकता है। इस कारण वह दोनों से सम्बन्ध बनाए हुई थी। किशोरचन्द लोहिया मे दो विशेषताएं थी। एक तो वह जीते या हारे, नसीम के लिए भेंट सदैव उसकी जेब मे रहती थी। दूसरा यह कि वह मद्य को छूता तक नही था। इससे वह समझती थी कि यह आदमी लूटा नही जा सकता। प्रतापकृष्ण तो शराब में बदमस्त हो सब कुछ नसीम के हाथ में दे देता था।

एक दिन नसीम ने किशोर के मन की भावना को जानने के लिए कह दिया, "किशोर जी! आप प्रताप को जानते है?"

"हां, देखा है। वही जो आपके लिए सुपारी कतरा करता है और पान लगाया करता है।"

"वास्तव में वह मेरा प्रेमी है।"

"सत्य ?"

"हां।"

"पर मैने तो सुन रखा है कि आपकी जात वालियों का प्रेम धन से होता है, किसी व्यक्ति से नही।"

"आप तो बहुत समझदार है। इसपर भी मैं आपको बताना चाहती हूं कि प्रताप ने मेरे पास पचास हजार जमा करा रखा है, जिसको मैंने ब्याज पर चढ़ाया हुआ है। उससे पाच सौ रुपया महीना मुझको ब्याज आता है।"

"यह तो बहुत अच्छी बात है।"

"मैं यह कह रही हू कि आपसे कुछ अधिक की आशा रखती हू।"

"कितना अधिक ?"

"जिससे मैं प्रताप को छुट्टी देकर पूर्णरूपेण आपके आश्रय रह सकूं।"

"और मुझसे अधिक कोई देने वाला आ गया तो मुझको छुट्टी दे सको?"

"आप इतना कुछ दीजिए कि उससे अधिक देने वाला कोई आ ही न सके।"

"मेरे पास तो पचास हजार है ही नही। हां, मैं एक लाख के ब्याज के बराबर प्रतिमास दे सकता हूं।"

"अर्थात् एक हज़ार रुपया महीना ?"

"हां।"

"परन्तु विश्वास कैसे आएगा कि आप मुझको ये देना बन्द नही कर देंगे। मैं सदा जवान तो रह नही सकती।"

"मैं समझता हूं कि एक हज़ार मे तो तुमको बुढापे के लिए बचा रखने के लिए भी समझ लेना चाहिए। जिस बाबू का वेतन एक हजार रुपया हो, उसके पास तो बूढा होने तक एक लाख की सम्पत्ति एकत्रित हो जाती है।" नसीम के पास इस बात का उत्तर नही था। परन्तु जिस दिन किशोर ने नसीम को एक हज़ार दिया उस दिन ही उसने प्रताप को वहा से निकाल देने का आग्रह कर दिया।

"मैं औरत उसको कैसे निकाल सकती हू।"

"तुम चुप रहो तो मैं निकलवा दूगा।"

इस प्रकार नसीम की स्वीकृति ले, एक दिन प्रताप को तेज़ शराब पिला, अचेत कर, बैठक के नीचे नाली में डाल दिया गया। नसीम के सेवक ही इसमे उसके सहायक हो गए।

दो घंटे वहा पड़े रहने पर उसको कुछ चेतना आई तो वह उठा और स्मरण करने लगा कि क्या हो गया हैं। ज्योंही उसको समझ आया कि वह नाले मे पड़ा है, वह आत्मग्लानि में गलने लगा। वह उठा और नाली मे से बाहर निकला परन्तु सड़क पर चक्कर खाकर गिर पडा।

इस समय उसको अपनी पत्नी और बच्चो की याद आई। उसको विश्वास नही आता था कि इस अवस्था मे और उस व्यवहार के पश्चात् जो उसने पत्नी के साथ किया था, वह उसे, वापस जाने पर स्वीकार करेगी।

उसको यह विदित हो चुका था कि उसकी पत्नी पुनः उसके घर में आकर रहने लगी है। इससे वह अपनी पत्नी की परीक्षा के लिए मकान के नीचे जा पहुचा और दरवाज़ा खटखटाने लगा। आशा के विपरीत उसकी पत्नी उसको आश्रय दे ऊपर ले गई। उसके लिए पानी गरम किया। स्नान कराया और खाने को दिया। पश्चात् सोने के लिए पलंग दिया। इतने पर भी उसने उसके पलंग का भागीदार

बनना स्वीकार नही किया।

इस सब अप्रत्याशित व्यवहार पर विचार करते हुए रात-भर उसको नीद नही आई।

प्रतापकृष्ण ने रात कई बार उठकर देखा, उसकी पत्नी चटाई पर गहरी नींद सो रही है। अर्थात् उसको भूमि पर लेटने का भी किसी प्रकार कष्ट नही हो रहा। वह अपने विषय मे भी विचार करता। उसको कोमल गद्देदार पलंग पर भी नीद नहीं आ रही थी। वह समझ रहा था कि वह उससे अधिक सुखी प्रतीत होती है। क्यों? वह समझ नही रहा था।

दिन चढ़ने तक उसको नीद नही आई। विष्णुदेवी स्नान से अवकाश पा, सूर्योदय से पूर्व उस पलंग के पास आई। वह जाग रहा था। विष्णी ने उसे लेटा देख सोया हुआ समझा, इससे उसने अपने पति के चरण बिना छुए, माथा टेक दिया। एक क्षण तक प्रणाम कर वह अपने कमरे में चली गई और पूजा में लीन हो गई।

प्रताप को इसके पश्चात् कुछ काल के लिए एक झपकी लग गई। वह जागा तो दिन के आठ बज चुके थे। वह शौच आदि के लिए चला गया। वह लौटा तो उसके स्नान के लिए जल गरम किया जा चुका था। स्नान से निवृत्त हुआ तो प्रातः का अल्पाहार तैयार मिल गया। अल्पाहार करते समय उसकी पत्नी उसके सम्मुख बैठी थी। इस समय तक प्रतापकृष्ण ने मकान की सफाई, मरम्मत और फर्नीचर सब देख लिया था। यह सब कुछ ऐसा और इतना था जितना कि उसकी सम्पन्नता के दिनों में भी उसे अप्राप्त था। भोजन-व्यवस्था भी सुखद थी।

प्रतापकृष्ण ने पूछ लिया, "यह सब तो बहुत सुन्दर है।"

"सब क्या?"

"मकान, फरनीचर, और तुम तथा गोदावरी। तुम लोग अब हृष्ट-पुष्ट प्रतीत होती हो। यह सब कहां से आया है?"

"भैया दे गए है।"

"क्यों?"

"वे भैया हैं—इस कारण।"

"परन्तु तुम तो भूमि पर सोती हो। तो तुमको इससे क्या लाभ हुआ है?"

"यह सब आपके भोग के लिए है। विवाह के समय भी उन्होंने बहुत कुछ

दिया था । उस समय तो मैं बालिका-मात्र थी। वह सब कुछ आपकी माता जी के पास था । उपरान्त आपने उसका भोग किया। अब पुन. यह सब कुछ दे गए हैं। और यह आपके लिए ही है।"

"और तुम ?—मेरा अभिप्राय है कि तुम्हारे भोग के लिए कुछ नही ?"

"मैं तो केवल आपके द्वारा ही भोग कर सकती हूं, जो कुछ और जितना आप मुझको भोग के लिए देंगे वही मैं ले लूगी ।"

"यह सब मै नही समझ सका। तुम्हारे भाई ने दिया और तुम उसका प्रयोग नही करतीं ।"

"यह हमारी जात-बिरादरी की रीति है। लड़की के माता-पिता लड़की को और उसके साथ दित्त-दाज को उसके पति को देते है। वही उसको सुखी रखने का दायित्व अपने सिर लेता है।"

"परन्तु मै तो तुमको सुख दे नही सका ।"

"यह मेरे भाग्य के अनुसार ही है।"

"तुम अल्पाहार भी नही ले रही।" प्रताप ने बात बदलकर पूछ लिया ।

'आपके उपरान्त लूगी ।"

"मेरे साथ क्यो नही ? मुझसे घृणा है क्या ?"

"यह मेरा धर्म है। पति को खिलाकर ही पत्नी को खाना खाना चाहिए। ये धर्मशास्त्र मे लिखा है ।"

"तो तुम अभी अपने को मेरी पत्नी मानती हो ?"

"मेरे मानने न मानने का तो प्रश्न ही नही। ये तो देवताओं और परमात्मा की साक्षी मे निश्चय हुआ था। भला, मैं कैसे अस्वीकार कर सकती हू ?"

"कहा है देवता और परमात्मा ?"

"मुझको वह हर समय हर स्थान पर दिखाई देते है ।"

"परन्तु रात तुमने पत्नी के कार्य से इन्कार किया था ।"

"उस समय मैं अपने देवताओं को आपके लौट आने पर धन्यवाद करना चाहती थी।"

"परन्तु तुम तो सो गई थी।"

"वह शरीर सो गया था। मन और आत्मा तो उनके चरणों में लगा हुआ था।"

प्रताप हिन्दू-धर्मशास्त्र के जो भी कुछ संस्कार अपने बचपन मे रखता था, वे पिछले सात वर्ष के जीवन में विलीन हो चुके थे। मद्य के अति-सेवन से उसकी बुद्धि कुण्ठित हो चुकी थी और वह अपनी दुर्व्यवस्था को अपने परमात्मा में अविश्वास से जोड़ नहीं सका था। इसपर भी वह मन ही मन अपनी पत्नी की श्रद्धा-भक्ति और पति-सेवा को देख सुख अनुभव कर रहा था।

नसीम के पास उसको वासना-तृप्ति प्रचुर मात्रा मे प्राप्त होती थी। यहां उसका लेश-मात्र भी नही था। यहां श्रद्धा, भक्ति एवं सेवा थी। दोनो मे अन्तर स्पष्ट था। वहां और यहा मे कौन श्रेष्ठ था—प्रताप सोच रहा। परन्तु बुद्धि निर्णय नही कर सकी थी।

बिना निर्णय किए भी वह नसीम के पास भाग जाता, यदि उधर का द्वार खुला होता। उसको रात की पूर्ण घटना स्मरण थी। किशोरचन्द लोहिया ने उसको पिलाकर अचेत करवाया था। और अवश्य ही उसने उसको उठवाकर नीचे नाली में डलवाया होगा। यह सब कुछ नसीम के देखते-देखते हुआ था। यू तो एक मास से ऊपर हो चुका था नसीम को आखे बदले हुए। यह किशोर के आगमन पर ही हुआ था।

अपने घर आने से पूर्व उसने नसीम की बैठक का द्वार खटखटाया था। परन्तु वह द्वार खुला नही था। उसके नौकर-चाकर अवश्य जागते होंगे। कोई न कोई तो जागता ही रहता था। परन्तु द्वार नही खुला। इस घर में द्वार खुलने की आशा नही थी। यहां का द्वार तो विशेष प्रयास के बिना ही खुल गया था। उसने अपना नाम बताया और उसकी पत्नी ने द्वार खोल दिया था। सबसे मज़ेदार बात यह थी कि विष्णुदेवी ने पूछा भी नही कि रात वह दुर्दशा कैसे हुई और वह यहां कैसे आ गया।

अल्पाहार समाप्त होने पर प्रतापकृष्ण ने पूछा, "मै जानता नही कि मैं क्या करूं? वास्तव में मै काम करने का ढंग ही भूल गया हूं। जानती हो कि मै शिव की दुकान से क्यों भाग गया था?"

विष्णुदेवी के मन मे यह बात स्पष्ट थी कि उसकी प्रेमिका अवश्य उससे अधिक सुन्दर, आकर्षक और मधुभाषी होगी। परन्तु उसने कहा कुछ नहीं। उसे चुप देख, प्रताप ने कह दिया, "शिव ने मुझको बही में से कुछ नकल करने को दिया था। मैं नकल कर रहा था। दिन-भर के काम में बीसियों भूले, अशुद्धियां और काट-

छांट करता था। मैंने कई दिन तक ठीक काम करने का यत्न किया। जब नही कर सका तो भाग गया। अब पुनः फिर किसी काम करने की आवश्यकता अनुभव हो रही है, परन्तु क्या करूं, क्या कर सकूगा, समझ नही आ रहा।"

"आपको कुछ करने की अभी आवश्यकता नही। अभी तो आप अत्यन्त थके हुए-से प्रतीत होते है। आप यही रहिए। आराम करिए। जब तबीयत ठीक हो जाएगी तब विचार कर लिया जाएगा।"

अन्य कुछ चारा भी नही था। "यमुना, गगा कहां है ?"

"माता जी के घर पर हैं। वे स्कूल में पढती है और वहा अन्य बच्चे भी पढते है। वे उनके साथ रहती हैं और पढती है।"

"तो मेरे आने पर भी तुम्हारे भैया घर के लिए व्यय दे देगे ?"

"यह मैं कैसे कह सकती हू। जब तक देते है, लेती हूं। जब देना बन्द कर देंगे तब विचार कर लूगी।"

"अभी कितने दिन की रसद घर में है ?"

"अभी कई दिन तक के लिए है।"

प्रताप पुन: पलंग पर चढ़कर सो गया और विष्णी ने स्वयं भोजन किया और ताज़ी साग-भाजी खरीद लाई। उसने मध्याह्न के लिए भोजन तैयार कर दिया।

५

प्रतापकृष्ण को घर लौटे एक सप्ताह से अधिक हो गया। आरम्भ मे उसको घर से निकलते लज्जा आती थी। अब धीरे-धीरे वह सब्ज़ी-भाजी लेने जाने लगा था। मोहल्ले वाले और बाजार मे दुकानदार उसके घर मे लौट आने को जान गए थे। वह घर की आवश्यक वस्तुए खरीदने बाज़ार जाने लगा था और उनको उठा-उठाकर घर लाता देखा जाता था। इसपर भी किसीको उससे पूछने का न तो साहस होता था और कदाचित् न इसकी आवश्यकता अनुभव होती थी।

एक दिन वह सब्जी खरीदकर तथा अपने लिए कपड़े सिलवाकर दर्जी से ला रहा था कि शिवकुमार बहिन के घर की ओर जाता दिखाई दिया।

"ओह प्रताप जी, किधर से आ रहे हैं ?"

"राम-राम भैया !" प्रताप तो आख बचाकर निकल जाना चाहता था।

परन्तु शिवकुमार की दृष्टि में आ गया। अतः वह अब राम-राम करने पर विवश हो गया। शिवकुमार उसके घर आ जाने के विषय मे पूछे बिना शेष प्रश्न कर दिया, "अब क्या कारोबार करने का विचार है ?"

"अभी तक निश्चय नही कर सका। मुझको तो कोई काम ऐसा दिखाई नही देता जिसको सहस्रों और लाखों पहले न कर रहे हो। किसी नये आदमी के लिए किसी भी काम के लिए स्थान निकल सकेगा—समझ मे नही आता।"

"शिवकुमार उसके साथ उसीके घर की ओर चल पड़ा।" शिवकुमार ने कुछ विचारकर कहा, "मुझको एक काम सूझ रहा है, जिसमें बहुत कम लोग है।"

"क्या है वह ?"

"यह आप दुकान पर आइएगा तो इस विषय मे योजना बनाई जा सकती है।"

"कुछ दिन से मेरा स्वास्थ्य ठीक नही रहा। जरा ठीक हो जाऊं तो आऊंगा।"

"किसी वैद्य-हकीम को दिखाया है ?"

"हां, एक वैद्य को दिखाया है। उसने बताया है कि कुछ दिन के लिए परिश्रम का काम न करो। इसीसे प्राय: घर पर पडा रहता हू।"

"ठीक है। ईश्वर करे, आप शीघ्र स्वस्थ और सबल हो जाए। तब आ जाइएगा। मैं आपके लिए और कुछ भी विचार करूगा। एक बात और···"

"क्या ?"

इस समय वे प्रतापकृष्ण के मकान के नीचे पहुच गए थे। प्रतापकृष्ण ऊपर चढते-चढते रुक गया। वह अपने प्रश्न का उत्तर वही मकान के नीचे ही ले लेना चाहता था। शिवकुमार ने मुस्कराते हुए कह दिया, "प्रताप जी, चलिए, उस विषय पर फिर बात करेंगे।"

"तो आप ऊपर नही आ रहे ?"

"ऊपर ही चल रहा हू। बहिन से मिलने ही तो आया हूं।"

प्रताप ऊपर चढा तो शिवकुमार भी ऊपर की मजिल पर चढ़ गया। विष्णी ने अपने भाई की आवाज़ सुन ली थी। इस कारण वह सीढियों पर खड़ी उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। शिवकुमार ने 'जै राम जी की' कही तो विष्णी ने सजल नेत्रों से मुस्करा दिया। वह यह कह रही थी कि उसकी योजना सफल हो रही प्रतीत होता है।

शिव ने पूछा, "बहिन ! बताओ अब क्या आवश्यकता है ?"

"भैया ! अब तो ये आ गए है ।"

"ठीक है, परन्तु ये तो अभी आराम कर रहे है न ? देखो, मैने मुन्शी फकीरचन्द को ये वस्तुएं भेजने के लिए कह दिया ।"

उसने जेब में से एक कागज का पुर्जा निकालकर पढना आरम्भ कर दिया :

"दो जनाना सूती धोती, एक रेशमी धोती । चार टुकड़े बच्चे के फ्राक तथा जांघिये के लिए । चावल, दलिया, मूग की दाल, अरहर की दाल, उड़द की दाल और चने । बेसन, नमक, मिर्च, मसाला । घी, सरसों का तेल तथा तिल्ली का तेल । आटा और चीनी । और क्या चाहिए ?"

विष्णुदेवी चुप रही । इसपर शिवकुमार ने कह दिया, "अब प्रताप भैया आ गए है । इस कारण राशन दुगना कर दूगा और-इनके लिए छः धोती, छः कुर्ते, छः सलूके, छः टोपी और जूता । पाकेट खर्चा भी दुगना हो जाएगा ।"

"भैया ! ......" विष्णी कहते-कहते रुक गई । उसका गला आंसुओं से रुंध गया था ।

"बहिन !" शिवकुमार ने आश्वासन देते हुए कहा, "मैं समझता हूं, अब तुमको भूषण इत्यादि पहन लेने चाहिए । कुछ वस्तुएं तुम्हारी भाभी को लाने के लिए कह दूगा । तुम वह बताओ जो मुझको सूझ नहीं रहा ।"

विष्णुदेवी ने कहा, "मैं यही विचारती हूं कि इनके आ जाने के पश्चात् मुझको किसी भी वस्तु का अभाव नही रहा । अब यह इनका काम है कि यह देखे कि क्या चाहिए और क्या नही चाहिए ।"

"ठीक है । जो यह लाने वाले है उनके अतिरिक्त ही तुम बताओ ।"

"मुझको आपसे लेते हुए लज्जा आ रही है ।"

"यह तो तुम हमसे अन्याय कर रही हो, बहिन ! हम तुमसे ऐसी बात की आशा नही करते ।"

शिवकुमार ने बात बदल दी । उसने प्रताप को सम्बोधित करते हुए कहा, "भैया ! शीघ्र से शीघ्र मिलने का यत्न करना । बेकार बैठने से तो बीमारी बढ़ भी सकती है ।"

जब शिवकुमार चला गया तो प्रताप ने पूछा, "तुम भैया के सामने रोने क्यों लगी थीं ?"

"जब से पिता जी तथा भैया को मालूम हुआ है कि आप घर के व्यय के लिए कुछ नही देते तो ये निरन्तर मेरी सहायता कर रहे है। यहा इस मकान में आए मुझको एक वर्ष होने जा रहा है। ये रसद, पानी, वस्त्राभूषण और फरनीचर इत्यादि सबका ध्यान रखते है। सब आवश्यकता के पदार्थ स्वयमेव ही पहुचे चले आते है।"

"शिवकुमार कह रहे थे कि वे किसी ऐसे कार्य को जानते है जिसको मै कर सकूगा और जिसमें अभी बहुत गुजाइश है।"

"ओह! वे बता सकते है। उनके यहा दिन-रात अनेकानेक व्यवसायों के लोग आते रहते हैं। आपको जाना चाहिए।"

"मुझको इनके पास जाते लज्जा आती है। एक बार पहले भी मैने इनका कहा नही माना था।"

"तो इन्होंने इस विषय में कुछ कहा है?"

"नही, मेरे मन मे ही सकोच है।"

"सकोच जहां जाने का करना चाहिए वहां तक ही उसको रखिए। जहां अपने हैं और अपने होने से सदा सहायता के लिए तैयार रहते हैं, उनसे मेल-जोल में संकोच उचित नही।"

मन का चोर निकलने मे समय लगा। जब उसने देखा कि लाला सुलक्षणमल का मुन्शी फकीरचन्द प्रति सोमवार आता है और आवश्यक सामान पहुचा जाता है और फुटकर खर्चे के लिए रुपया दे ज.ता है तो उसका संकोच कम होने लगा। एक दिन वह ससुर की दुकान पर जा पहुचा।

लाला जी ने देखा और उसको अपने पास बैठाते हुए पूछने लगे, "सुनाओ। स्वास्थ्य कैसा है?"

"ठीक है।"

"देखो। अब तुम तीस वर्ष की आयु से ऊपर हो चुके हो। तुम्हारी बड़ी लड़की यमुना एक-दो वर्ष में विवाह के योग्य होने जा रही है। अब तुमको अपने पांव पर खड़ा होने का यत्न करना चाहिए।"

"इसी अर्थ तो आया हूं। भैया शिवकुमार ने कहा था कि वे ऐसा कोई काम बता सकते है जिसको संसार में करने वाले बहुत कम है।"

"हां! वह बताएगा। तुम नित्य यहां ठीक आठ बजे आ जाया करो। शेष

तुम हमपर छोड़ दो।"

प्रतापकृष्ण आने लगा। उसको काम यह बताया गया कि वह दुकान के कर्मचारियों पर जमादारी करे। बैंक से रुपया निकालने के लिए अथवा जमा कराने के लिए जाया करे। उसके साथ चौकीदार जाता था। इस काम के लिए उसको दो सौ रुपया मासिक मिलने लगा।

धीरे-धीरे उसको अधिक, और अधिक उत्तरदायित्व का काम दिया जाने लगा। एक वर्ष के भीतर उसके घर एक लड़का और हो गया। उसका नाम भूषण रखा गया।

भूषण के पश्चात् अन्य कोई सन्तान नही हुई। समय पाकर गगा-यमुना और गोदावरी का विवाह हो गया। इन तीनो लडकियों के विवाह के समय सुलक्षण-मल ने भरसक सहायता की। भूषण की शिक्षा-दीक्षा मे भी उसके नाना का काफी सहयोग रहा।

जिस दिन सेठ सुलक्षणमल के शव की अर्थी निकली तो उसकी अपनी सन्तान और उनके सम्बन्धियों की संख्या ही चार सौ से ऊपर थी। चार लड़के, चार लड़कियां थीं। एक विधवा को छोड़कर शेष सात की सन्तान और उनके अपने सम्बन्धी तथा उनकी सन्तान के सम्बन्धी थे। सन्तान की सन्तान और उनके भी बहुत-से विवाह हो चुके थे और उनके यहा भी सन्तान हो चुकी थी।

जब शिवकुमार ने झूठा इच्छापत्र न्यायालय मे उपस्थित किया और राम ने घूम-घूमकर सब सम्बन्धियों को बताया कि यह झूठा इच्छापत्र है तो पूर्ण परि-वार मे भारी हलचल मची थी। इस हलचल की गूज विष्णुदेवी और प्रताप के कानों तक भी पहुंची थी।

श्मशान घाट से सस्कार कर सब लौटे तो प्रताप ने अपनी पत्नी से बताया, "शिव भैया कह रहे थे कि लाला जी इच्छापत्र लिख गए है।"

"तो इसमें विचित्रता क्या है?"

"विचित्रता यह है कि उन्होंने इसका कभी किसीके सम्मुख वर्णन नही किया। यहां तक कि माता जी ने भी इसकी अनभिज्ञता बताई है।"

"हां! उनको किसीको तो बता जाना चाहिए।"

देहान्त के एक मास पश्चात् सब सम्बन्धियों को न्यायालय का प्रथम नोटिस

मिल गया। प्रतापकृष्ण को भी नोटिस मिला। वह नोटिस लिए हुए शिवकुमार के पास पहुंचा और पूछने लगा, "भैया ! इच्छापत्र मे क्या लिखा है ?"

"उन्होने पूर्ण सम्पत्ति का उत्तराधिकारी मुझको बनाया है। शेष बहिनों-भाइयों तथा उनकी सन्तानों तथा सन्तानो की सन्तानो को समय और आवश्यकतानुसार देने के लिए मुझको कहा है, परन्तु धनराशि के विषय मे मुझको स्वतन्त्रता दी है।"

प्रताप को दुकान से दो सौ रुपये लेते हुए उनतीस वर्ष हो चुके थे। इन दो सौ रुपये के अतिरिक्त दुकान से उसके बच्चो के विवाह के समय भारी सहायता मिलती रही थी। अतः उसको कुछ भी न मिलने का शोक नही था।

उस दिन उसने अपनी पत्नी को शिवकुमार की बात बताई तो विष्णुदेवी ने भी उसके मन की बात कह दी, "वास्तव में पिता जी की सम्पत्ति में से कुछ भी पाने का मेरा अधिकार नहीं है। इसपर भी शिव भैया सदा मुझपर स्नेह का हाथ रखते रहे हैं। इससे मुझको उनकी सद्भावना पर विश्वास है और मैं प्रसन्न हूं।"

इसके कुछ ही दिन उपरान्त लाला गोवर्धनलाल की ओर से न्यायालय का दूसरा नोटिस आया। प्रताप गोवर्धनलाल जी से भी मिला और उन्होने बताया कि रजिस्टर्ड इच्छापत्र मिल गया है और उसके अनुसार विष्णी बहिन को दो लाख के लगभग की सम्पत्ति मिलने वाली है।

प्रताप ने यह सूचना भी अपनी पत्नी को दी तो विष्णुदेवी ने कह दिया, "हमको इस विषय में किसी पक्ष की सहायता अथवा विरोध नही करना। कौन ठीक है और कौन झूठा है यह स्वयमेव न्यायालय मे निर्णय हो जाएगा।"

इसके कुछ ही दिन पश्चात् घर मे फैसला हो गया और न्यायालय के रजिस्टर्ड इच्छापत्र को स्वीकार कर गोवर्धनलाल को सम्पत्ति का आदाता बना दिया गया।

अब एक दिन गोवर्धनलाल ने एक लाख दस हजार के मूल्य की सम्पत्ति के कागजपत्र प्रताप के हाथ मे दे दिए। प्रताप ने कागजपत्रों का लिफाफा शिव के हाथ मे देते हुए कहा, "भैया ! मै नही जानता, इसको क्या करू ?"

"आप यह लिफाफा विष्णी के हाथ में दे दीजिए। वह जब आएगी तो मै उसको समझा दूंगा कि क्या करे।"

विष्णी आई तो शिव ने बहिन को कह दिया, "इस सब सम्पत्ति का प्रबन्ध

करने के लिए गोवर्धनलाल को ही कह दो। वे माता जी तथा सदा बहिन के भाग का प्रबन्ध कर रहे है। इससे वे आपकी सम्पत्ति का भी प्रबन्ध कर देगे।"

"क्या देना पड़ेगा?"

"यह तुम स्वयं निश्चय कर लो। जहां तक दुकान का सम्बन्ध है, प्रताप जी को काम कहते रहना चाहिए। उनको वेतन मिलता रहेगा।"

प्रतापकृष्ण का लडका भूषण अपने पिता के मकान में ही रहता था। उसने एम० ए० पास कर हिन्दू कॉलेज मे प्रोफेसर की नौकरी प्राप्त कर ली थी। वह अपनी पत्नी राजेश्वरी तथा अपने दो बच्चो के साथ रहता था।

राजेश्वरी बैरिस्टर रघुनाथसहाय त्रिवेदी की लड़की थी। वह भूषण के कॉलेज मे ही पढती थी। दोनों सेट स्टीफन कॉलेज के विद्यार्थी थे। जब भूषण ने एम० ए० किया तो राजेश्वरी ने बी० ए० पास किया था। दोनो का परस्पर प्रेम हुआ और विवाह हो गया।

विवाह के पश्चात छः वर्ष व्यतीत हो चुके थे और उनके घर मे एक लड़की तथा एक लड़का उत्पन्न हो चुके थे। इस समय सुलक्षणमल का देहान्त हुआ। राजेश्वरी को भी अपनी सास को दो-दो नोटिस मिलने का ज्ञान था। उसने भी अपने पिता त्रिवेदीजी से इस विषय मे राय ली थी। त्रिवेदी ने न्यायालय मे जाकर दोनों इच्छापत्रो को देखा और आकर अपनी लड़की को बता दिया था कि कुछ नही हो सकता।"

"क्यों?"

"लाला सुलक्षणमल की सम्पत्ति अपनी अर्जित है। इस कारण वह इसको नाली में भी बहा देने का अधिकार रखता है।"

इसके पश्चात् जब एक लाख दस हज़ार की सम्पत्ति राजेश्वरी की सास को मिली और उसने लाला गोवर्धनलाल को इस सम्पत्ति का कर्ता नियुक्त किया तो बैरिस्टर साहब को यह भला प्रतीत नही हुआ। त्रिवेदी ने अपनी लड़की को कह दिया, "तुम्हारी सास ने बहुत बडी भूल की है।"

"क्यों?"

"लाला गोवर्धनलाल एक साधारण क्लर्क है। वह इतनी बड़ी सम्पत्ति का प्रबन्ध नही कर सकेगा।"

"परन्तु बड़े लाला ने तो बाईस लाख की सम्पत्ति का प्रबन्ध उनके हाथ में दिया है।"

"वह इसलिए कि उनके सम्बन्धियो मे कोई बैरिस्टर नही।"

यद्यपि राजेश्वरी को बैरिस्टर होने और सम्पत्ति का प्रबन्ध करने में कोई सम्बन्ध समझ नही आया। इसपर भी वह अपने पिता से बहस नही कर सकी। परन्तु उसने अपने पिता की बात अपने पति से कही तो भूषण ने कह दिया, "असल बात यह है राजेश्वरी ! कि ससार मे धन-सम्पदा के विषय मे विचार और भावनाए बदल रही है। इन बदल रही भावनाओ के विषय मे मां को कुछ भी ज्ञान नही। इसीसे वे सब प्रबन्ध एक अनपढ क्लर्क को दे बैठी है।"

राजेश्वरी को जहा यह बात समझ नही आई थी कि बैरिस्टरी पास करने और सम्पत्ति के प्रबन्ध में क्या सम्बन्ध हो सकता है, वहा उसको यह भी समझ नहीं आया कि बदल रहे विचारो का सम्पत्ति के विषय मे क्या सम्बन्ध हो सकता है। वह टुकर-टुकर अपने पति का मुख देखती रह गई। प्रोफेसर साहब ने अपनी पत्नी के न समझने पर हसी उडाते हुए कहा, "इसीसे मै कहता हू कि इतिहास पढने का कुछ भी लाभ नही। आज पूर्ण ससार अर्थशास्त्र के आश्रय चल रहा है। उसका कुछ भी ज्ञान हो जाए तो इतिहास के भी अर्थ दिखाई देने लगेगे।"

"कुछ तो ज्ञान आपसे प्राप्त किया भी है। आपने बताया था कि देश की सम्पत्ति किसी व्यक्ति के हाथ मे नही होनी चाहिए। इसको ठीक मानकर ही भला मौसा जी के प्रबन्ध से इसका क्या सम्बन्ध हो सकता है ?"

"देखो मै बताता हू। देश की सम्पत्ति उस देश में रहने वाले समाज की सम्पत्ति है। यह किसी न किसी प्रकार कुछ एक आदमियों के हाथ मे एकत्रित हो गई है। यह पुनः समाज में फैल जानी चाहिए। ऐसा करने के दो उपाय हैं। एक तो यह कि सरकार धनिको से बलपूर्वक धन छीन ले और फिर उसका वितरण कर दे। यह अभी हो नही सकता। सरकार विदेशी है और वह स्वयं भी धन लूटने वालो मे है। एक दूसरा भी उपाय है। जिसके पास धन हो उससे खर्च करवा दो। इससे भी डिस्ट्रिब्यूशन ऑफ़ वैल्थ (सम्पदा का वितरण) हो जाएगा। इसके लिए धन वालों को व्यय करना सीखना चाहिए।

"अब न तो मां कुछ पढी-लिखी है और न ही गोवर्धनलाल जी। इस कारण धन को पूंजी का रूप देकर इससे गरीबों का एक्सप्लायटेशन (शोषण) करने पर

तैयार हो गए हैं।"

"तो आप मांजी को समझाइए। वे धर्म-कर्म तो बहुत करती है। यदि कोई नेक राय देंगे तो मान जाएंगी।"

"विचार तो है कि समझाऊ परन्तु वे समझ सकेंगी क्या ?"

"यत्न तो करिए।"

अतएव एक रात भोजन के उपरान्त भूषण ने मा से कह दिया, "मा ! सुना है नाना जी की सम्पत्ति से एक लाख रुपया मिला है ?"

"हा, एक लाख दस हज़ार था। सम्पत्ति के कागज़ बनवाने मे चार हज़ार से ऊपर व्यय हो गया है। शेष एक लाख पांच हज़ार से कुछ ऊपर मिला है। वह सब स्थावर सम्पत्ति के रूप मे है। उसकी मासिक आय पौने आठ सौ रुपये है। इसको प्राप्त करने के लिए दस प्रतिशत खर्चा बैठेगा। अत· लगभग सात सौ रुपया हमको मिल जाया करेगा। इसमे से दस प्रतिशत के लगभग सम्पत्ति की मरम्मत इत्यादि के लिए जमा रख, शेष छः सौ रुपया हमारे पास रहेगा।"

"यह तो ठीक है, परन्तु आप इसको जमा रख क्या करेंगी ?"

"मै छः सौ रुपया मासिक व्यय करने का यत्न करूंगी। देखो न, अढाई सौ तो तुम लाते ही हो, दो सौ तुम्हारे पिता लाते है। डेढ़ सौ तुम्हारी पत्नी राजेश्वरी वेतन पाती है। इस प्रकार छः सौ रुपया तो वही है। इधर छः सौ यह आएगा तो हम राजा-रईस हो जाएगे।"

भूषण हंस पड़ा। हसकर बोला, "मां, यह अर्थशास्त्र के सिद्धान्त के विपरीत हो रहा है।"

"वह क्या होता है ?"

"मां ! दुनिया के विद्वानों ने रुपये-पैसे के विषय में एक शास्त्र की रचना की है, उसको अर्थशास्त्र कहते हैं।"

"और वह क्या कहता है ?"

"वह शास्त्र कहता है कि बिना परिश्रम के प्राप्त धन हराम का होता है। मां इसको अपने शास्त्र मे 'अन-अर्ण्ड इन्कम' (अनुपार्जित आय) कहते हैं।"

"तो फिर ?"

"ऐसी सम्पत्ति के लिए दो मार्ग खुले हैं। एक तो यह कि सरकार इसको छीन ले दूसरे यह कि इसका स्वामी इसका व्यय कर दे।"

"तो आगे कहो।"

"आगे यह कि जो एक लाख पांच हजार तुमको मिला है वह अनुपार्जित सम्पत्ति है। यह व्यय हो जानी चाहिए, नहीं तो सरकार इसको छीन लेगी।"

"देखो बेटा भूषण! तुम्हारे शास्त्र ने यह कैसे कह दिया कि यह धन अनुपार्जित है? घास-फूस की भांति अनायास ही उत्पन्न नही हुआ यह।"

"तुम तो जानते नही। परन्तु मैं जानती हू कि तुम्हारे नाना अनाज का व्यापार करते थे। अन्न किसान भूमि से पैदा करते है। सौ मन पैदा करने पर सरकार को भूमिकर देकर उसके पास नब्बे मन बच जाता है। उसका बाज़ार-मूल्य चार-पाच रुपये मन के हिसाब से तुम्हारे नाना दे देते थे। उस अनाज को वे बाज़ार से दो पैसा चार पैसा प्रति रुपये के लाभ पर बेचते थे, बताओ इसमें अनुपार्जित धन कैसे आएगा?"

"मा! नाना जी की पचास लाख की सम्पत्ति पैसा-पैसा, दो-दो पैसा से एकत्रित हुई है क्या?"

"हां।"

"यह तो नही हो सकता। मैं इतना पढ-लिखकर उसका शतांश एकत्रित नहीं कर सकता।"

"तुम्हारे जैसे के लिए ही तो यह कहावत है, 'नाच न जाने आंगन टेढा।' तुम तो धन का एक ही प्रयोग जानते हो कि उसे व्यय कर दिया जाए। भला बताओ मैं इसको कहां व्यय कर दू।

"मां! मान लो कि नाना जी ने इसको पैसा-दो पैसा कर ही कमाया है तो भी एक मनुष्य की कमाई लाखों रुपये प्रतिवर्ष नही हो सकती।"

"कहां लिखा है? तुम अढाई सौ रुपया मासिक पाते हो और तुम्हारे कालेज का चपरासी चालीस मासिक पाता है। यह अन्तर क्यो है? यदि यह एक और छः का अन्तर हो सकता है तो एक और सौ का क्यों नहीं हो सकता?"

"पर मा! तुमने तो इस कमाई में कुछ उद्योग नही दिया। तुम तो अनायास ही पा गई हो।"

"मैं अपने पिता के घर में उत्पन्न हुई हूं। इससे पिता जी मुझको स्नेहवश दे गए हैं।"

"देखो भूषण! तुम प्रति सप्ताह अपनी पत्नी के साथ सिनेमा देखने जाते

हो। क्यो जाते हो ?"

"इससे हमारा मनोरंजन होता है।"

"तो तुम यह समझो कि जब एक पिता अपनी सन्तान को कुछ देता है तो उसका भी मनोरजन होता है। पिता जी की आत्मा को यह धन, मुझे देकर सन्तुष्टि हुई प्रतीत होती है।"

भूषण हस पड़ा। हसते हुए उसने कहा, "मां ! तुम कभी सिनेमा देखने नही गई। इसीसे तुम सिनेमा देखने और सन्तान मे धन बाटने को एक समान मानती हो।"

" एक समान तो नही कहा, वैसे व्यय तो दोनों ढंग से होता है। मैं सिनेमा देखने में धन खर्च करने को बहुत ही घटिया ढग समझती हू।

" भूषण, क्या व्यय करते हो प्रति सप्ताह ? "

"हम दोनों प्रति सप्ताह पांच रुपये व्यय करते हैं।"

"तो एक मास में बीस रुपये हुए, वर्ष में अढ़ाई सौ रुपये हुए और साठ वर्ष में पन्द्रह हजार हुए। इसपर पचास हज़ार से अधिक तो व्याज बन जाता है। तो बताओ, यदि तुम यह सिनेमा न देखो तो जीवन में सत्तर हज़ार एकत्रित कर ही लोगे; इसपर भी यह अनायास कैसे हो गया ? इसकी कमाई मे तुम्हारा पढना-पढाना दोनो का फल है। फिर इस सत्तर हज़ार को तुम राजकुमारी को दे दो तो यह हराम की कमाई कैसे हो गई ? भला सिनेमा मे व्यय करने से यह अच्छा नहीं क्या ?"

भूषण का अर्थशास्त्र निरुत्तर होता जाता था। इसपर भी उसने साहस नहीं छोड़ा और अब अनपढ मां को शिक्षा देने लगा। "मा, पन्द्रह पर पचास हज़ार व्याज ? यह भला कैसे हो गया ? यह तो रामनाम के बहाने लूट है।"

"यह तो धन के प्रयोग करने पर भाडा है। जैसे एक मकान का मासिक भाडा दस रुपये होता है परन्तु सौ वर्ष में बारह हज़ार हो जाता है। इसमें समय की लम्बाई का भी विचार करना पड़ता है।"

"हमारा शास्त्र मकान के भाड़े और रुपये के व्याज को अनुपार्जित आय कहता है।"

"अर्जित तो है। यह अर्जन है मकान में रहने वाले अथवा रुपये का प्रयोग करने वाले का। मकान के तथा रुपये के मालिक को यह मिलता है। इस कारण कि उसने इसके मूलधन का अर्जन किया है।

"मां ! तुम समझ नहीं सकतीं। इस बात को समझने के लिए अर्थशास्त्र का पढना आवश्यक है। जिस बात पर मेहनत की जाए उसको 'अर्जन करना' कहते है। जो बिना परिश्रम किए मिल जाए उसको अनुपार्जित कहते हैं। मान लो कि जीवन-भर सिनेमा न देखकर हम पन्द्रह हज़ार एकत्रित कर लेते है और वह अपनी लड़की राजकुमारी को देकर भी उतना ही सुख प्राप्त करते हैं जितना सिनेमा देखकर परन्तु राजकुमारी के लिए यह रुपया, और फिर उस रुपये का ब्याज तो हराम की कमाई ही हो सकती है। उसने तो इसके लिए कुछ भी परिश्रम नही किया।"

"तो फिर यह रुपया और यदि यह बैंक में रखा हो तो इसका ब्याज कौन ले?"

"सरकार ले।"

"सरकार क्यों ले?"

"वह हमारी रक्षा करती है।"

"उसके लिए तो लोग कर देते है। किसान भूमिकर के रूप में देता है। तुम्हारे नाना ने यह आयकर के रूप मे दिया है। सुना है प्रति सौ रुपया आय पर पचास रुपये से भी अधिक सरकार ले लेती है।"

"वह कम था।"

"तो और अधिक ले लेती ! परन्तु जब एक मतलब के लिए सरकार ने रुपया ले लिया तो फिर उसी मतलब के लिए दूसरी बार भी क्यों ले?"

"यह जो एक लाख मुझको मिला है, सरकार का कर देने के उपरान्त बचा हुआ है। इसको व्यय करने का अधिकार मालिक को होना चाहिए। पिता जी ने उसे मुझे दिया है अब सरकार को दुःख क्यो?"

"यह अच्छे-बुरे का निर्णय तुम मत करो। यह तो धन का मालिक करेगा। मालिक से मेरा अभिप्राय उस व्यक्ति से है जिसने मेहनत-मशक्कत से इसको पैदा किया है अथवा जिसने इसको सिनेमा जैसे व्यर्थ की बातों पर व्यय न कर जमा किया है। तुम उसको कह सकते हो कि वह स्कूल खोले, हस्पताल बनाए। परन्तु उसकी रुचि के विपरीत तुम व्यय क्यो करोगे? तुम्हारे नाना ने भी एक मन्दिर बनाने की इच्छा प्रकट की है और सुना है गोवर्धनलाल एक भूमि लेकर मन्दिर बनवा रहे हैं!"

"तो मन्दिर बनाने और हस्पताल खोलने को तुम एक समान समझती हो।"

"मैं मन्दिर की अधिक महिमा मानती हू। परन्तु यह तो रुपये के मालिक के मानने की बात है। मेरे,तुम्हारे अथवा सरकार के मानने की नही हो सकती।"

प्रतापकृष्ण मा-बेटे मे हो रहे इस विवाद को सुन रहा था और अपने पढ़े-लिखे लड़के को केवल-मात्र हिन्दी पढ़ी मा से निरुत्तर होते देख, रस ले रहा था। उसको इस विवाद के आधार मे एक दूसरी बात समझ आई। उसने विवाद में दखल देते हुए पूछ लिया, "भूषण, यह धन, जिसके विषय में तुम्हारे शास्त्र ने तुम्हारा दिमाग खराब कर रखा है, क्या वस्तु है ?"

"भापा ! यह है मनुष्य के परिश्रम का मूर्तरूप !"

"तो यह परिश्रम है न ?"

"हां।"

"तो इसको व्यय करने का अधिकार तुम्हारा शास्त्र परिश्रम करने वाले को क्यों नहीं देता ?"

"परिश्रम करने वाले को केवल अपने खाने-पीने का अधिकार है। उससे अधिक उसका अपना नहीं।"

प्रताप हस पडा। हंसते हुए उसने कहा, " तो इसके लिए कानून बनवा दो। फिर देखना कि जब मनुष्य अपने खाने-भर के लिए बना लेगा तो हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाएगा।

" देखो ! यही भूल मैंने अपने जीवन में की थी। मैने भी समझा था कि उपार्जित धन केवल व्यय करने के लिए ही है। मेरे पिता पाच लाख छोड़ गए थे। मैंने समझा कि यह जीवन-भर के लिए पर्याप्त है और व्यय करने लग पड़ा। कमाई बन्द कर दी, हाथ पर हाथ रख उसका भोग करने लगा। भोगो का तो अन्त होता ही नही। पांच वर्ष में सब समाप्त कर दिया। उसके पश्चात् भी जब मैं कमाने लगा तो मैंने परिश्रम किया, धन के भोग के लिए। जब खर्च से अधिक मिला तो ह्विस्की की बोतल खरीद लाया और बैठकर पी गया। यही तुम चाहते हो न ?"

"नहीं भापा, मैं तो यह कह रहा हूं कि जब खाने-पीने से बचे तो उसको सरकार ले ले, और उससे स्कूल-कालेजों पर व्यय करे।"

"मैं यही पूछता हूं कि सरकार क्यों ले ले ? यदि मुझको पता हो कि मेरी

कमाई मे से बचा, सौ रुपयों से अधिक को सरकार लेकर अपनी इच्छा से व्यय करेगी तो मैं या तो सौ रुपये की कमाई कर घर आकर लेट जाऊंगा अन्यथा अपना खर्चा बढा दूंगा। अन्न, अनाज तो कुछ अधिक खाया नही जा सकता इस कारण शराब पिऊंगा, वेश्यागमन करूंगा और बीस प्रकार की खरमस्तिया करूंगा।

"यही तो हुआ है। मै अपने पिता की सम्पत्ति और अपनी कमाई को खाने-पीने पर खर्च न कर सकने पर, मद्य, मांस और वेश्याओ पर व्यय करने लगा और तुम्हारे नाना अपने खाने-पीने के पश्चात् बचा धन जमा करते गए। मरने के अनन्तर भी वे अपने फालतू धन से मन्दिर बनवा गए है। यदि सरकार लेती तो तुम्हारे जैसे पढे-लिखे मूर्ख बनाने के लिए एक कालिज और खोल देती।"

अपने शराबी पिता के मुख से अपने को मूर्ख की पदवी मिलती सुन, भूषण का मुख, क्रोध से तमतमा उठा और उठकर अपने शयनागार मे चला गया। प्रतापकृष्ण हस पडा।

पुत्र के 'मूर्ख' कहे जाने पर तो मां को भी दु ख हुआ। भूषण के चले जाने पर मा ने कह दिया, "पढ़े-लिखे पुत्र को मूर्ख कहना ठीक नही। उसको क्रोध चढ आया है।"

"पर मां जी!" राजेश्वरी ने कह दिया। "वे भी तो अपनी मां को हराम की कमाई खाने वाली कह गए है।"

इसपर तो प्रतापकृष्ण और भी ज़ोर से हसने लगा। राजेश्वरी भी हसती हुई अपने पति के कमरे मे चली गई।

शयनागार मे पहुच, राजेश्वरी ने कह दिया, "आप तो नाराज़ होकर चले आए है! भला माता-पिता से नाराज़ होने में भी कुछ कारण हो सकता है?"

"देखो राजेश्वरी! मेरे पिता जी ने हमारे बाबा की सम्पूर्ण सम्पत्ति शराब और वेश्यागमन में व्यय कर दी है और मुझको 'मूर्ख' कहते है।"

"परन्तु उन्होने मूर्ख तो आपको इसलिए कहा है कि आप एक मनुष्य के परिश्रम को ही सरकार की सम्पत्ति मान रहे हैं। इसमें कोई ऐतिहासिक प्रमाण नही है।"

"वह इसलिए कि इतिहास में प्रजातन्त्र-शासन की परम्परा नही। जब राज्य प्रजातंत्र होगा तब राज्य पूर्ण जनता के परिश्रम का स्वामी हो जाएगा। ये इतिहास पढ़ाने वाले बुद्धू संसार में बदल रही अवस्था का ज्ञान नहीं रखते।"

राजेश्वरी ने हंसते हुए कहा, "मां को हराम की कमाई खाने वाला कहकर

पत्नी को बुद्धू कहने लगे है। और उस बुद्धू पत्नी के पति को किसीने मूर्ख कह दिया तो रोष करने की क्या आवश्यकता है !"

"तो मैने तुमको बुद्धू कहा है ?"

"मै भी तो स्कूल मे इतिहास पढाती हूं।"

"ओह, मेरा यह मतलब नही था।"

"पिता जी का भी आपको मूर्ख कहने से मूर्ख कहने का अभिप्राय नहीं था।"

इससे भूषण की हसी निकल गई। परन्तु नवीन अर्थशास्त्रियों की चक्की चलती गई। सरकारो के अधिकार विस्तार पाते गए और लोग जो परम्परागत ईमानदारी को समझते थे, उसको भूल नई ईमानदारी अर्थात् बेईमानी के ढंग सीखते गए।

६

रूपकृष्ण ने सरकारी अधिकारी द्वारा नीलाम की हुई भूमि खरीदी थी, एक हज़ार छः सौ रुपये में। उसने लाला गोवर्धनलाल के साथ जाकर सबजज के पास प्रार्थना-पत्र दे दिया कि उसे भूमि का पूरा दाम जमा करने की आज्ञा प्रदान की जाए।

इसपर दो मास के पश्चात् उसको आज्ञा हुई कि वह अमुक तिथि को हाज़िर होकर यह बताए कि क्यों न उसके नाम की हुई बोली को मनसूख (रद्द) कर दिया जाए।

इस नोटिस को लेकर रूपकृष्ण लाला गोवर्धनलाल के घर चला गया। गोवर्धनलाल ने बताया, "ऐसा प्रतीत होता है कि किसीने उजरदारी (आपत्ति) कर दी है।"

"क्या उजरदारी उठाई जा सकती है इसमे ?"

"किसीने कहा होगा कि यह नीलाम नाजायज़ है।"

"तो इसकी सफाई देनेवाला मै कौन हू ?"

"तुमको लाभ होने वाला है !"

"यह तो मेरी करनी से होगा। सरकार की बात इसमें क्या है ? मेरे लाभ को अथवा उसके तरीके को तो किसीने चुनौती दी नहीं। सरकार ने भूमि नीलाम की, किसीने उजरदारी की है कि नीलाम गलत है अथवा गलत हुई है। मैं पूछता

हू कि मैं इसमें क्यों कचहरी की मिट्टी छानू ?"

गोवर्धनलाल हस पड़ा। हंसते हुए उसने कहा, "रूप बेटा ! यह कानून है।"

"किस मूर्ख ने बनाया है यह कानून ?"

इसपर तो गौरी, जो यह तर्क-वितर्क सुन रही थी, हसने लगी। जब दोनों गौरी का मुख देखने लगे तो उसने कह दिया, "आप यहा क्यो झगड रहे है। झगड़ा करना है तो सरकार के यहा करना चाहिए।"

गोवर्धनलाल को बात समझ मे आ गई और उसने कहा, "तुम आज मेरे साथ सबजज के न्यायालय मे चलो। वहा इस आज्ञा मे कारण देखेगे। ज़रा जल्दी चलना; जज साहब के आने से पूर्व वहां पहुचना चाहिए।"

सबजज के पेशकार रूप के ताया गोपालकुमार थे। इस कारण जब वे अदालत के कमरे मे पहुचे तो पेशकार गोपाल उस दिन उपस्थित होने वाले मुकदमों की सूची कमरे के बाहर लगाने के लिए तैयार कर रहे थे। पेशकार ने गोवर्धनलाल को देखा तो हाथ जोड़कर प्रणाम कर दिया। गोवर्धनलाल ने सुख-समाचार पूछ, रूपकृष्ण को मिला नोटिस दिखा दिया। पेशकार ने कहा, "मै अभी फाइल मगवा देता हू। आप इस पिछले कमरे मे बैठ देख लीजिए। गोवर्धनलाल रूपकृष्ण को लेकर उस कमरे मे चला गया। पाच मिनट मे चपरासी वह फाइल ले आया। गोवर्धनलाल ने फाइल देखी।

वह तबेला पाच सौ रुपये पर लाला बनवारीलाल के पास गिरौ था। बनवारीलाल ने रुपये प्राप्त करने के लिए रुपये और ब्याज की नालिश की। एक वर्ष के मुकदमे के पश्चात् निर्णय बनवारीलाल के पक्ष में हुआ।" बनवारीलाल ने तबेले की नीलामी करा दी। नीलामी में बनवारीलाल स्वय सस्ते से सस्ते दाम पर खरीद लेना चाहता था। जो कोई भी उससे ऊची बोली देने आता था, उसका नौकर पहलवान डरा-धमकाकर उसको भगा देता था। जब रूप ने यह कहा कि वह मकान बनवाकर सुमित्रा को भेट करने वाला है तो बोली रूप के नाम समाप्त हो जाने दी गई।

परन्तु जब यह बात किशनो को पता चली कि रूप ने जुआ खेलना बन्द कर दिया है और वह बेकार घूमता है तो किशनो ने कहा कि उससे जमीन लिखा ली जाए, तब ही उसको मकान बनाने दिया जाए। उसको किसी भी जुआरी पर विश्वास नही है।

एक भेदिए को रूपकृष्ण के मन की बात जानने के लिए भेजा गया और उसे पता चला कि रूपकृष्ण ने तो मकानो का व्यापार करने के लिए भूमि खरीदी है। इसपर वर्तमान उजरदारी जमीन के मालिक से करवा दी गई है।

उजरदारी थी यह कि बनवारीलाल ने और रूपकृष्ण ने परस्पर षड्यंत्र कर भूमि का मूल्य बढने नही दिया और नीलामी पुनः की जाए। साथ ही ग्राहकों को बोली देने से मना करने वालों को नियत्रण मे रखने के लिए पर्याप्त पुलिस का प्रबन्ध किया जाए।

फाइल पढ गोवर्धनलाल ने उक्त विवेचना बता दी। उसका कथन था, "यह है पूर्ण उजरदारी का अभिप्राय।"

गोवर्धनलाल तो कचहरी मे नित्य होने वाली बातों की जानकारी रखता था और उसकी उक्त विवेचना इस आधार पर बनी थी। रूपकृष्ण को यह बात ठीक ही प्रतीत हुई थी। वह जानता था कि बनवारीलाल को पता चल गया है कि वह मकान सुमित्रा के लिए नही प्रत्युत व्यापार करने के लिए मोल लिया जा रहा है।

परन्तु वह विचार करता था कि मालिक-ज़मीन का फैसला तो न्यायालय को करना चाहिए। इसमें उसको क्यो बुलाया जा रहा है। इससे कचहरी से लौटते हुए रूपकृष्ण ने पूछ लिया, "फूफा जी! मुझको क्या करना चाहिए?"

"तुमको निश्चित तिथि को पेश होकर कहना चाहिए—नीलामी ठीक कायदे-कानून के मुताबिक हुई है और उसमे न तो नीलाम करने वाले ने और न ही तुमने कोई अनियमित बात की है। इससे रुपया तुमको दाखिल करा ज़मीन तुम्हारे नाम दाखिल-खारिज करने का हुक्म सादर किया जाए।"

"पर फूफा जी! यह बात तो अदालत को स्वयं करनी चाहिए। मैं क्यों करू?"

"तो तुमको यह जमीन नही लेनी?"

"लेनी है। परन्तु यदि उस विधवा को, जो इसकी मालिक है, नये नीलाम से अधिक दाम मिल रहा है तो मै क्यों उसको नुकसान पहुंचाऊं?"

गोवर्धनलाल की धर्मबुद्धि जाग पड़ी। न्यायालय के वातावरण ने उसके मन को विचलित कर दिया था। वह चुप कर रहा।

उसी रात रूप ने अपने पिता से बात की। राम लड़के की बात सुन हंस पड़ा। रूप को इस हंसी का अर्थ समझ नही आया। उसने पूछ लिया, "पिता जी, इसमें

हंसने की बात कहां से आई है ?"

" तुम वकील नहीं हो। इसलिए। मैं होता तो इस बुढ़िया पर डैफामेशन (अपमान) करने का दावा कर देता।

" इससे लाभ यह होता कि बुढिया को जब अदालत में रगड़ा चढता तो बक जाती कि उसको बनवारीलाल ने बहकाया है और बनवारीलाल होता कटघरे में और मैं उसपर जिरह करता। एक बार तो अदालत को भी मज़ा आ जाता।"

रूपकृष्ण ने एक क्षण तक विचार किया और कह दिया, "नही पिता जी ! मैं यह नही करूंगा। मैं तो चाहता हूं कि नीलाम पुनः हो और उस विधवा को कुछ लाभ हो जाए।"

राम ने कंधों को झटककर असन्तोष प्रकट किया।

एक दिन रूप शिवकुमार की दुकान पर पहुचकर एक चिट्ठी टाइप करने लगा।"

शिव ने पूछा, "यह क्या है ?"

"एक अदालती नोटिस का उत्तर दे रहा हूं।"

"तो तुम भी अपने पिता की भाति वकालत करने लगे हो ?"

"नही ताया जी ! यह नही।" उसने पूर्ण कथा सुनाई तो शिव ने पूछ लिया, "भला सुनाओ तो क्या लिखा है ?"

रूपकृष्ण ने चिट्ठी पढकर उसका अनुवाद शिवकुमार को सुना दिया। शिवकुमार अंग्रेज़ी नही जानता था।

रूप ने सुनाया, " श्रीमान सबजज की अदालत में। नोटिस संख्या ३६६, तारीख १३ जनवरी, १६३५ के जवाब में निवेदन है कि यह नोटिस भूल से मुझको आ गया है। हकीकत में यह उस क्लर्क को जाना चाहिए था जिसने नीलामी की थी अथवा यह नोटिस उस जज को जाना चाहिए था जिसके हुक्म से यह नीलामी हुई थी। साथ ही यह नोटिस उस पुलिस अधिकारी को जाना चाहिए था जो नीलाम की रक्षा के लिए खड़ा था।

" मेरे पास इस प्रकार की फिजूल जांच-पड़ताल में हिस्सा लाने के वास्ते न तो समय है न ही रुपया। अदालत अपनी ज़िम्मेदारी मुझपर डाल रही है। मैं इसके खिलाफ प्रोटेस्ट (विरोध) करता हूं।

प्रार्थी—रूपकृष्ण

कटरा खुशहाल राय, किनारी बाज़ार, दिल्ली।"

राम भी समीप बैठा अपने लड़के की अंग्रेज़ी की चिट्ठी लिखने की योग्यता को देख रहा था। वह पत्र सुनकर हंस पड़ा। शिवकुमार भी हंस पड़ा, परन्तु तुरन्त ही गम्भीर हो कहने लगा, "रूप ! यह तो अदालत से झगड़ा है।"

"हां।"

"इसमे तुम केवल प्रजा-मात्र हो। अदालत से झगड़ा कर तो हानि में रहोगे। है हिम्मत सरकार से लड़ने की ?"

"मै समझता हू कि यह एक वस्तुस्थिति का वर्णन है। यह किसीसे झगड़े का सूचक नही।"

इसपर राम ने कह दिया, "अच्छी बात है, कुछ गडबड़ हो जाए तो तुम मुझको अपना वकील बना लेना। मै तुम्हारी ओर से मुकदमा लड़ूंगा।"

जैसी शिवकुमार और रामकुमार को आशा थी, वैसा ही हुआ। जब रूपकृष्ण ने अदालत मे स्वय उपस्थित हो चिट्ठी दी तो सबजज बहादुर ने पढी और माथे पर त्यौरी चढ़ाकर रूप से पूछने लगा, "तुम्हारा वकील किधर है ?"

"मेरा कोई वकील नही है। इस छोटी-सी बात के लिए मै वकील की आवश्यकता नही समझता।"

"तुम कितने पढे हो ?"

"मै अंग्रेज़ी साहित्य मे एम० ए० हूं।"

"कहां नौकर हो ?"

"कहीं नही।"

"काम क्यों नही करते ?"

"करता हूं। मै प्रापर्टी डीलर बनना चाहता हूं। इसी निमित्त यह जमीन खरीदी है।"

"तो यह ज़मीन तुमको नहीं चाहिए ?"

"अगर श्रीमान जी नीलाम को नियमित ठहराएंगे तो लूगा और अगर नियमित नहीं ठहराएगे तो नही लूंगा। मेरी प्रार्थना यह है कि उस नीलामी को नियमित सिद्ध करना सरकार का काम है। मेरा इसमे कुछ लेना-देना नहीं। जिस किसीने भी यह चुनौती दी है, उसने सरकार को चुनौती दी है मुझको नही। मैं इसमें समय और रुपया व्यय करना नही चाहता।"

"पर अदालत आपको तहकीकात के लिए तो बुला सकती है ?"

"हा। उस समय मुझको एक साक्षी के रूप में बुलाया जाना चाहिए न कि एक अपराधी के रूप मे।"

"तुम अपने को अपराधी मानकर जवाब दो।"

"उस अवस्था मे सरकार मुझको अपराधी के रूप में बुलाती। मुझपर कोई आरोप लगाया जाता और मैं उसका उत्तर देता। मुझपर कोई आरोप नही है। अतः मै अपराधी के रूप मे कैसे आ सकता हू ?"

"अच्छा, बयान लिखाओ।"

"एक बयान जो नोटिस के उत्तर मे है वह मैंने लिखित रूप में दे दिया है।"

"तुम अपराधी के कटघरे में आ जाओ। वकील तुमपर जिरह करेगा।"

रूप एक बने कठघरे मे खड़ा हुआ तो राम, जो पीछे खड़ा सब कुछ सुन रहा था, अदालत के सामने आ खड़ा हुआ।

उसने कह दिया, "हुजूर, मैं इस मुलजिम की डिफैन्स (प्रतिरक्षा) के लिए हाज़िर हू। मुझको इसके खिलाफ चार्जशीट (आरोपपत्र) दी जाए।"

सबजज एक क्षण के लिए राम का मुख देखता रह गया। राम कचहरी में एक थर्ड रेट का वकील माना जाता था। परन्तु आज तो सबजज क्रोध से आगबबूला हो रहा था। उसने कहा, "तुम वकालतनामा पेश करो।"

राम इस सबकी सम्भावना मान ही कचहरी मे आया था। वह विचार कर रहा था कि रूप अदालत मे झगड़ा करने जा रहा है और इसकी रक्षा के लिए उसको भी अदालत मे चलना चाहिए। अतः वह वकालतनामा लिख उसपर उचित कोर्ट-फीस का स्टाम्प लगा तैयार लाया था।

उसने अपने बस्ते से वकालतनामा निकाला और रूप के समक्ष रख उसे हस्ता-क्षर करने को कहने लगा। रूप का विश्वास था कि यह धीगामस्ती हो रही है और इसका विरोध उसको करना चाहिए। उसने हस्ताक्षर किए तो राम ने वकालत-नामा अदालत मे उपस्थित कर कहा, "मेरी प्रार्थना है कि चार्जशीट बनाई जाए। फाइल में कोई नही है।"

"चार्ज यह है कि इस लड़के ने और बनवारी ने षड्यंत्र कर नीलाम की बोली होने नहीं दी।"

"हुजूर ! यह तो प्रार्थनापत्र है। इसपर कोई चार्जशीट तैयार नही की गई। उस चार्जशीट से पूर्व प्रार्थना करने वाले के बयान नहीं लिए गए। उन बयानों पर

कोई जिरह नहीं हुई। फिर इस आरोप का कोई साक्षी नही। नीलाम करने वाले एजेण्ट के बयान नही लिए गए; और...और एक बात और है। आज्ञा हो तो निवेदन करू।"

"हां, करो।"

"यदि यह आरोप ठीक भी हो तो यह जाब्ता फौजदारी (पीनल कोड) के अन्तर्गत है। इसलिए हुजूर इस मुकदमे को करने का अधिकार नही रखते, यह फर्स्टक्लास मैजिस्ट्रेट के पास जाना चाहिए।"

"मैं !" सबजज ने कहा, "मैं मुकदमे की तारीख डालता हूं। १५ फरवरी, १६३५ को प्रार्थी मुसम्मात फिरोज़ा बेगम हाज़िर होकर अपनी प्रार्थना का सबूत पेश करे।"

"चलो रूप।" राम ने गर्व से कहा।

रूपकृष्ण बाहर आया तो बनवारीलाल का वकील राम के साथ-साथ अदालत से निकलते हुए कहने लगा, "राम ! आज तो तुमने कमाल कर दिया।"

"हां भाई ! बात यह है कि न चलती दुकान पर खरीदार सस्ता माल लेने आते हैं और दुकानदार मुनाफा कम मिलने पर घटिया माल देता है। आज मैं वकालत करने नहीं आया था, आज तो मै अपने साहबज़ादे की तुम बड़े पेट वालो से रक्षा करने आया था।"

"तो यह रूप की चिट्ठी तुमने बनाई थी ?"

"नही। यह उसने स्वयं लिखी थी। मुझे तो यहां देने से पूर्व दिखाई थी। मैं समझ गया था कि आज सबजज साहब नाराज होने वाले है। वे पहले भी हुआ करते हैं, परन्तु तब हमको फिकर होती थी कि कही हमारे ग्राहक का मुकदमा खराब न हो जाए। अब जिम्मेवारी मुझपर नही थी। न ही मेरी किसी किस्म की मेहनत-मजदूरी में कमी होने वाली थी।"

"तो क्या फिर कभी सबजज के सामने किसी मुकदमे में उपस्थित होने का विचार नहीं ?"

"नहीं। मैं वकालत करना छोड़ चुका हूं।"

"ओह !"

"अब मैं पेशेवर वकील नहीं हूं।"

"मतलब यह कि पेशेवर औरत न होकर एक गृहस्थिन बन गए हो ?"

राम हंस पडा और कहने लगा, "भाई, देख लो। यह तो तुम्हारे ही विचार करने की बात है कि तुम क्या हो?"

७

गौरी को रूपकृष्ण अदालत में हुई घटना सुना रहा था। गोवर्धनलाल और रूप चाय पीने के लिए बैठे थे और गौरी उनके सम्मुख रखे प्यालों में चाय बना रही थी। जब रूपकृष्ण ने अपने पिता की कारगुजारी और फिर उनका बनवारीलाल के वकील को कटाक्ष सुनाया तो गौरी ने पूछा, "रूप, तुमको जेल जाने का डर नहीं लग रहा?"

"क्यों बूआ? जेल क्यों जाऊंगा?"

"तुमने सरकार के एक बड़े अफसर की भूल निकाली है।"

"और यह अपराध है क्या?"

"यह गुस्ताखी (धृष्टता) है।"

"एक भूल करने वाले को बताना कि वह भूल कर रहा है, एक पढ़े-लिखे व्यक्ति का कर्तव्य है।"

"मैं तुमको बधाई देती हू।"

"बधाई? यह कैसी बूआ?"

"तुमने अपने को आज पढा-लिखा समझा है।"

"मेरे समझने न समझने की बात नही बूआ। मै वास्तव में एम० ए० पास हूं।"

"हां, आज मुझको मालूम हो गया है। देखो रूप, विद्या से मनुष्य बुद्धिशील एव निर्भय होता है। आज तुमने ये दोनों बाते की है। बुद्धिशीलता तो यह है कि तुमने सरकारी नोटिस मे वास्तविक दोष पहचान लिया है। यह बुद्धि का काम है। और विद्या से बुद्धि निर्मल होती है। दूसरे विद्या कहते हैं आत्मज्ञान को। यथार्थ आत्मज्ञान से मनुष्य के सब सांसारिक भय छूट जाते हैं। ये दोनों बातें तुमने सिद्ध कर दी हैं और तुम कहते हो कि यह एक पढ़े-लिखे व्यक्ति का कर्तव्य है। इसलिए मै कहती हूं कि तुमको यथार्थ ज्ञान आज हुआ है।"

गोवर्धनलाल ने कहा, "यह मकान तो अब तुमको मिलेगा नही। अब कोई

और काम विचार करो।"

"काम तो यही करूंगा। हां, अब सरकारी नीलाम हो रही भूमि नही लूंगा। अब तो मै प्राइवेट मालिक से सीधे ही भूमि लेने का यत्न करूगा। इसलिए मै यह यत्न कर रहा हू।"

"क्या यत्न कर रहे हो ?"

"रोहतक रोड पर नगर से तीन मील के अन्तर पर चार आने गज़ जगह मिल रही है।"

"इतनी दूर जगह लेकर क्या करोगे ? वहा तो कोई जाकर रहेगा नही।"

"मैं अभी योजना बना रहा हू। जब बन जाएगी तो बताऊगा।"

इसपर गोवर्धनलाल ने कह दिया, "जुए का रुपया फोकट मे ही जाएगा।"

"फूफा जी ! मैं इस रुपये को शुद्ध-पवित्र कर लूगा।"

"वह कैसे ?"

" यही बुआ से पूछने आया हू। एक बार ताया शिवकुमार ने बताया था कि व्यापार में साहस से काम लिए बिना लाभ नही हो सकता। सो अब मैं साहस बटोर रहा हूं। एक दिन मैंने बुआ से पूछा था, 'साहस कैसे उत्पन्न होता है ?' तो बुआ बताने लगी 'संसार में सबसे बड़े शक्तिशाली से नाता जोड़ने से।'

" मैंने पूछा,"वह कौन है और कहां है ?'

" तो बूआ ने बताया, 'वह परमात्मा है। सब स्थान पर व्यापक है। हमारे हृदय मे भी है।'

" तो उससे कौन नाता बनाया जाए और कैसे बनाया जाए ? " मैने पूछा।

" बूआ बोली, 'उसको पिता बना लो और पिता के रूप मे उसके चरणों में बैठ साहस मागा करो।'

" सो फूफा जी, मैं अब यही करता हूं। अब मुझको अपने हृदय मे सत्य अनुभव हुई बात किसीको भी कहने मे सकोच नहीं होता। "

" देखो रूप !" गौरी ने कह दिया, "धन तो मिट्टी का ढेला-मात्र है। इसमें अच्छाई-बुराई कुछ नहीं। यह ठीक है कि इसके उपार्जन में की गई धोखा-धड़ी उपार्जन करने वाले को पापी बना देती है। धन को नही। यदि तुमने जुआ खेलने में धोखा-धड़ी नहीं की, तो तुमने कोई पाप नही किया। यह तो तुम जानो। हां, इस धन के प्रयोग में निर्मल बुद्धि एवं पवित्र उद्देश्य तुम्हारी कमाई को पवित्र कर

देगा।

" निर्मल बुद्धि तो उसीसे प्राप्त होती है जो सर्वज्ञ है। जहां उससे साहस मांगते हो, वहा उससे बुद्धि की निर्मलता भी मागा करो। शेष तो उद्देश्य की बात रह जाती है। उसके लिए शास्त्र मे लिखा है—परमात्मा ने जब मनुष्य की उत्पत्ति की थी तो इसके साथ यज्ञ की उत्पत्ति भी की थी। यज्ञ कामधेनु है। इससे इच्छित फल प्राप्त होता है।—इसलिए रूप, तुम काम करो। यज्ञ समझ करो तो निसन्देह तुमको इच्छित फल मिलेगा।"

"यज्ञ क्या होता है ?"

"जो स्वार्थ का विचार त्यागकर लोक-कल्याण के हेतु किया जाए।"

"और अपना खाना-पीना कहा से चले ?"

"कही अग्नि-होत्र होते देखा है ?"

"हां।"

"जब आहुति डाली जाती है तो पश्चात् बचा हुआ हविष जल के एक पात्र मे छोड़ दिया जाता है। वह अपने कार्य को चलाने के लिए होता है। इस प्रकार जब लोक-कल्याण का कार्य करते हुए कुछ बचे, तो वह अपने लिए प्रयोग करना चाहिए। इसी प्रकार जीवन मे किसी लोक-कल्याण के कार्य का उद्देश्य बना लो, उसके लिए धन उपार्जन करो, और उसमे से अपने निर्वाह के लिए निकाल लिया करो। इसपर भी प्राथमिकता कल्याण-कार्य को होनी चाहिए। यही यज्ञ है।"

"बुआ ! तुम तो परस्पर-विरोधी बाते करती हो। यदि कल्याण-कार्य प्रथम होगा, तो अपने खाने-पीने के लिए कुछ बचेगा ही नही।"

" तुम समझे नही। रूप ! मै समझाती हू। मुझको पिता जी की सम्पत्ति मे से एक लाख दस हजार मिला है और तुम्हारे फूफा जी को दो लाख तीस हजार मिला है। इस प्रकार हमारी सम्पत्ति पर हुए खर्च तथा प्रबन्धक समिति का खर्चा देकर दो हजार मासिक मिलता है। मैंने इस आय से एक विधवा आश्रम खोल दिया है। उस विधवा आश्रम में उन विधवाओ को, जो विवाह करना नहीं चाहती, कुछ तो अपनी जीविकोपार्जन का ढंग सिखाने की योजना है, कुछ उनमे धर्म-कर्म, चरित्र और अध्यात्मवाद की शिक्षा तथा अभ्यास करने का प्रबन्ध हो रहा है।

" मै इसमें मुख्याधिष्ठात्री हू और तुम्हारे फूफा जी व्यवस्थापक हैं। हम

दोनो इस काम में दिन का मुख्य भाग व्यतीत करते है। और फिर इस प्रकार पन्द्रह सौ रुपये में से अपने निर्वाह के लिए निकालते हैं। हमारा जीवन इस कार्य के लिए है। और जीवन को रखने के लिए भी यही कार्य करना होगा।

"कुछ ऐसा ही विचार कर लो।

"समाज में कुछ उपकारी कार्य करो। अपनी आय मे से उस कार्य का संचालन करो। और स्वय वह कार्य करते हुए जीवन को चलाने के लिए किया गया व्यय यज्ञ में से बचा हुआ हविष कहलाएगा।"

इस प्रकार की अस्पष्ट बातो को रूपकृष्ण समझ नही सका। इसपर भी वह विचार करता हुआ घर चला आया। घर पर बड़ी फूफी विष्णुदेवी और उसके पति आए हुए थे। कभी छ:-सात महीने मे वे एक-आध दिन को आया करते थे। राम और प्रताप दोनो शिवकुमार की दुकान पर कार्य करते थे। इससे बहन-भाई का सम्बन्ध कुछ दृढ ही हुआ था। प्रतापकृष्ण राम से राय करने आया था कि उनको मिला धन किस कार्य में लगाया जाए।

पिछले दिन इस रुपये के विषय मे घर में विवाद हुआ था। भूषण इसको हराम की कमाई मानता था। यद्यपि विष्णी ने उसको युक्ति मे परास्त कर दिया था। परन्तु उसके कथन ने, कि जिस धन-सम्पदा के अर्जन करने में परिश्रम न किया जाए वह हराम की है, दोनों के मन मे द्विविधा उत्पन्न कर दी थी। सब भाइयो मे राम सबसे अधिक पढा हुआ था। वह वकील था। राम का लड़का भी एम० ए० पास था। अतएव वे अपने लड़के भूषण के कथन की परीक्षा इनसे कराने आए थे।

रूपकृष्ण घर पहुंचा तो उसकी बूआ विष्णी कुछ दिन पूर्व हुए विवाद की बात बता रही थी। रूपकृष्ण ने इसका मुख्य अश सुना तो चकित रह गया। विष्णी ने आगे कहा, "मै राम भैया से भूषण की बात के विषय में जानने आई हूं। भूषण कालेज में प्रोफेसर है। यद्यपि वह मेरा सन्तोष नही कर सका, परन्तु उसकी बातों को मैं टाल नही सकती।"

राम ने रोहिणी को चाय तैयार करने के लिए कहा और पृथक् बैठ प्रताप से बात करने लगा, "यह लाला जी का धन कुछ कष्ट देता है तो भाई हमसे बाट लो।"

"मेरा होता तो इसकी चिन्ता न करता, पर यह है तुम्हारी बहिन का। उसके

संस्कार और बुद्धि तो कहती है कि यह रुपया और इससे होने वाली आय हराम की नहीं है। परन्तु वह योग्य प्रोफेसर, जिसकी शिक्षा में बेचारी ने अपना पेट काट-काटकर धन व्यय किया है, कहता है कि यह हराम की कमाई है। अब यह तुमसे राय करने आई है।"

"बहिन!" राम ने कहा, "हमारे घर मे तो रूप चौधरी बन रहा है। आज यह जज साहब के मुख पर चपत लगाकर आ रहा है। यही तुम्हारी बात की विवेचना कर सकता है।"

विष्णी सबजज के मुख पर चपत की बात सुन चिन्ता व्यक्त करने लगी। इसपर राम ने कचहरी में हुई घटना सविस्तार सुना दी। प्रताप सुनकर फड़क उठा। उसने कहा, "रूप! तुम तो वकील के भी कान कतरने लगे हो। पर मैं समझता हूं कि यदि राम भैया तुम्हारी सहायता के लिए वहां न पहुच जाते तो आज तुम हवालात मे होते।"

"पर मुझको भी तो प्रेरणा रूप ने ही दी थी। यह आज प्रातःकाल दुकान के टाइपराइटर पर अपने नोटिस का उत्तर टाइप कर रहा था। भैया शिव ने पूछा कि क्या कर रहा है तो इसने उत्तर पढकर सुना दिया। यह तो वह उत्तर अदालत मे देने चला गया और मै चिन्ताग्रस्त बैठा रह गया। शिव दादा ने मेरे मुख को देखा तो पूछ लिया, "क्यों राम! चिन्ता क्या कर रहे हो?"

" 'रूप हवालात में डाल दिया जाएगा। उसका कोई ज़ामिन चाहिए।'

" 'तुम जाओ और यदि मेरी आवश्यकता पड़े तो मुझको बुला लेना। मैं ज़मानत के लिए तैयार होकर आ जाऊंगा।'

" मैं चला गया और यह साहबजादे अदालत को शिक्षा देकर चले आए हैं और इसको मै चपत लगाना कहता हू।"

विष्णी ने कहा, "अच्छा रूप! तुम क्या समझते हो?"

"बूआ! एक बात मे तुमको बताता हूं। धन-सम्पदा में कभी दोष नहीं आता। यह तो पार्थिव पदार्थ है। दोष होता है इसके उपार्जन में। तुमने इसका उपार्जन करने मे कोई अनियमित बात नही की। बाबा ने तुमको दी है। यह उनकी थी और वे देने का अधिकार रखते थे।"

"यही तो भूषण कह रहा था कि पिता जी का इतना धनवान होना ईमानदारी से सम्भव नहीं। इसलिए यह हराम की कमाई है।"

"भूषण बहुत ही छोटी बुद्धि का प्रतीत होता है। बूआ, उसको कहो कि बुद्धि निर्मल करे।"

"यह कैसे निर्मल होती है ?"

"परमात्मा की उपासना करने से।"

"वह तो परमात्मा को मानता नही।"

"तो उसके लिए कोई आशा नही। एक बात मै कहता हूं, वह इसका उत्तर नही दे सकता कि उसको अढाई सौ वेतन क्यो मिलता है, जब मुझको कुछ नहीं मिल रहा ? मेरे अक उससे अधिक थे। मै उससे अधिक योग्य हू।"

"वह कहता है कि उसके स्वसुर ने उसकी सिफारिश की है। वह नौकरी पा गया है। तुम्हारी सिफारिश नही थी। और तुमको नौकरी नही मिली।"

" पर बूआ, सिफारिश तो परिश्रम नही है। इस कारण उसकी नौकरी हराम की है।

" बूआ, यदि बाबा की सम्पत्ति उसकी सन्तान को मिलना हराम की कमाई है तो स्वसुर की सिफारिश से नौकरी पाना भी हराम का है। उसको कहो कि दोनों में प्रेरणा स्नेह है। बाबा का स्नेह अपनी लडकी विष्णुदेवी के लिए और बैरिस्टर साहब का स्नेह अपनी लडकी राजेश्वरी के लिए। उसको कहना कि वह नौकरी छोड़ दे तो तुम भी बाबा की सम्पत्ति छोड दोगी।"

इस युक्ति पर तो प्रतापकृष्ण हस पडा। राम भी हसने लगा। इस समय रोहिणी चाय ले आई। राम चाय बनाने लगा तो रूप ने भी अभी-अभी गौरी से सुनी बात कह दी।

" बूआ ! मान लो कि पिता जी ने किसी अनियमित ढग से कमाई की थी, तो तुमको इससे क्या ? तुमको तो नियमित ढग से मिली है। हा, तुम उसको भले कार्य मे प्रयोग करोगी तो तुम्हारा भला होगा और बुरे काम मे व्यय करोगी तो बुरा होगा।

" इस रुपये से कोई लोक-सेवा का काम करो। स्वय भी उस काम में लग जाओ और वह सेवा का काम कहते हुए अपने निर्वाह के लिए लोगी तो यह यज्ञ होगा और यज्ञ कामधेनु है। इससे सब कामनाएं पूर्ण होती हैं।"

विष्णी मुख देखती रह गई। सब चाय पीने लगे। राम बात बदलने के लिए बोल उठा, "बहिन ! तुम्हारी भतीजियां बड़ी होती जाती हैं उनके विवाह कर

यज्ञ रचा दो।"

"क्या आयु हो गई है उसकी ?"

"बहिन ! एक नही चार-चार है। कृपा एफ० ए० मे पढती है। इस समय सत्रह वर्ष की है। दया मैट्रिक मे है। पन्द्रह वर्ष की है। छाया ग्यारह वर्ष की है। और पारो सात वर्ष की है।"

"बात बहुत सुन्दर की है तुमने। अच्छा, विचार करूंगी।"

विचार हुआ। इस विषय मे परामर्श देने वाले थे लाला गोवर्धनलाल, गौरी और शिवकुमार।

विष्णी को जो सम्पत्ति मिली थी वह कुछ तो मकान के रूप मे थी और कुछ एक बीमा कम्पनी के हिस्सों के रूप में। इन सबकी आय दस हजार रुपये वार्षिक के लगभग बनती थी। यह योजना बनी कि इसमें से आठ हज़ार के लगभग परिवार की लड़कियों के विवाह पर सहायतार्थ दिया जाया करे। सहायता की राशि निश्चित करने के लिए एक समिति बना दी गई। उसमें गौरी, विष्णी एवं राजेश्वरी, रूप तथा गोवर्धनलाल काम करने पर राज़ी हो गए।

भूषण ने मा की यह योजना सुनी तो खिलखिलाकर हस पड़ा। राजेश्वरी ने पारिवारिक विवाह समिति की सदस्यता स्वीकार करने से पूर्व अपने पति से इसकी चर्चा की थी।

भूषण ने जब योजना सुनी तो हसते हुए पूछने लगा, "और तुम इन घोंघावसन्तो में राय देना स्वीकार कर आई हो ?"

"मुझको यह योजना अति सुन्दर प्रतीत हुई है। क्या खराबी लग रही है आपको इसमें ?"

"क्या अच्छाई है इसमें ?"

"परिवार की लड़कियो के लिए अच्छे वर प्राप्त करने में यह एक अति सुन्दर विचार है।"

"तो मां अपने धन के बल पर स्वाभाविक सेलैक्शन (निर्वाचन) में हस्तक्षेप करेंगी ?"

"यह तो सब स्थानों पर होता ही है। हमारे परिवार में कुछ घर के तो सपन्न हैं और उनको धन की आवश्यकता नही। मामा शिवकुमार है। परन्तु उनके भाई राम जी हैं। बेचारे मस्जिद के चूहे की भाति है। फिर गोपाल दादा हैं। वैसे तो

उनको ऊपर की आय होती है, परन्तु उससे भी निर्वाह नहीं होता। उनके बड़े लड़के काहन का विवाह हुआ है। परन्तु उसकी पत्नी उसको अपने पिता से पृथक् ले जाकर सरकारी क्वार्टर में रहने लगी है। उसका पति बी० ए० पास करने पर सरकारी नौकरी पा गया है और सरकारी क्वार्टर मिलते ही न केवल पृथक् हुआ है प्रत्युत किसी प्रकार अपने माता-पिता को सहायता भी नही देता। अब रुक्मिणी मामी है, तीन युवा लड़कियां हैं। तीनों पढती है और सरस्वती अध्यापिका के कार्य की ट्रेनिंग ले रही है। महेश्वरी अभी इण्टर मे पढती है और लाज तो स्कूल में है। सबका खर्चा चलाने में गोपाल मामा पिस रहे है।"

"यह तो सब ठीक है। परन्तु राजेश्वरी, साधन न होने पर सन्तान उत्पन्न करने का अपराध भी तो इन्होने किया है। देखो, आज से बीस वर्ष पूर्व भारतवर्ष अन्न-अनाज मे स्वावलम्बी था। तब इसकी जनसंख्या लगभग तीस करोड़ थी। अब इसकी जनसख्या चालीस करोड़ से ऊपर है। दस करोड़ पेट भरने के लिए और हो गए है और भारतवर्ष, जो अन्न-अनाजं विदेशो मे भेजता था, अब बर्मा तथा इण्डोनेशिया से चावल मगवाता है।

"यदि मा की इस समिति ने कार्य आरम्भ कर दिया तो परिवार में दस लड़कियां इस समय जो विवाह योग्य है, बच्चे पैदा करने के लिए विवश कर दी जाएंगी और अगली मरदमशुमारी (जनगणना) के समय तक कम से कम तीस पेट भरने के लिए नये पेट पैदा कर देंगी। और कही देश मे दस-बीस ऐसी समितियां बन जाए जो हिन्दुओं की लड़कियो के विवाह में सहायता देने लगे, तो निश्चय जानो कि अगली मरदमशुमारी मे जनसंख्या पेतालीस करोड हो जाएगी।'

राजेश्वरी का पति अर्थशास्त्री एव समाजवादी था। वह अपनी गणना से भयभीत परेशानी अनुभव करने लगा था। परन्तु राजेश्वरी का दृष्टिकोण भिन्न था। वह समझती थी कि बच्चे विवाह के बिना पैदा नही होते क्या? उसको अपनी बात अभी भूली नही थी। वह ट्रेनिंग कालेज मे पढती थी। भूषण से मित्रता तो तब से ही थी जब वह अभी बी० ए० में पढती थी। परन्तु ट्रेनिंग कालेज की परीक्षा में अभी दो मास शेष थे कि उसे मां बनने का सन्देह होने लगा। उसने अपनी मा से कहा। मां ने अपने पति बैरिस्टर से वार्तालाप किया और उसने उसकी चिकित्सा कराई तब जान छूटी थी। इस सबका ज्ञान भूषण को नही था। अपनी मां की सम्मति से उसने इस घटना का वर्णन किसीसे नहीं किया था।

केवल चार प्राणियों को इसका ज्ञान था। उसको स्वयं, उसकी मा, पिता एवं लेडी डाक्टर को। राजेश्वरी की मां को भय था कि यदि भूषण को भी इस बात का ज्ञान हो गया तो वह विवाह नही करेगा। राजेश्वरी ने पूछा भी था, 'क्यों ?'

'तुम नही जानती। यह तुम्हारे पिता का विचार है। वे इस विषय में बहुत अनुभव रखते हैं। इससे हमको उनकी राय माननी चाहिए।'

इसके उपरान्त वह ट्रेनिंग लेकर इन्द्रप्रस्थ गर्ल्ज़ स्कूल में नौकरी पा गई और फिर विवाह की बातचीत होने लगी। यद्यपि भूषण उस विवाह के लिए इच्छा रखता था, परन्तु उसके माता-पिता बिरादरी से बाहर विवाह के लिए राज़ी नहीं होते थे। बैरिस्टर साहब का विचार था कि बिरादरी की बात ढोंग है। वास्तविक बात दहेज की है। अत: बीस हज़ार की कीमत के दहेज का प्रस्ताव करने के लिए राजेश्वरी की मां को भेज दिया; और विवाह हो गया। उस बीस हज़ार में दस हजार के तो भूषण, वस्त्र, फर्नीचर और अन्य भेंट की वस्तुएं थी और दस हजार नकद था। यह दस हज़ार अभी तक उसके पति के खाते में जमा था।

इससे वह समझती थी कि जहा तक सन्तान का प्रश्न है, वह तो बिना विवाह के भी हो सकती है और यदि भ्रूण हत्या नही करनी, तो जनसंख्या बढ़ेगी ही। जब तक धन से विवाह करने का प्रश्न है, इससे सन्तान तो होगी केवल भ्रूणहत्याएं नही होंगी। हा, विवाह में धन का आश्रय होने से योग्य वर मिलने की सम्भावना बढ़ जाएगी। यही परिणाम था उसके अपने अनुभवों का।

इस कारण वह कहने लगी, "जनसंख्या बढ़ती है अथवा घटती है, इससे हमको किसी प्रकार का सम्बन्ध नही। हम तो अपने परिवार की लड़किया अच्छे घरों में विवाहने का प्रबन्ध कर रही हैं।"

"रुपये से मिलने वाले परिवार अच्छे होंगे क्या ?"

"मेरा अनुभव तो यही है।"

"कितने विवाह कर देखे है तुमने ? अभी तो तुम्हारी लड़की बहुत छोटी आयु की है।"

"मैने एक विवाह किया है—अपना और उसमें यह अनुभव हुआ है कि विवाह प्रोफेसर साहब से न हो सकता यदि पिता जी के पास दस हज़ार नकद देने के लिए न होता।"

"तो यह किसीने मांगा था ? और न मिलने पर विवाह होने से इनकार

किया था ?"

"मैं यह निन्दा के भाव से नही कह रही। पिता जी ने इतना कुछ सहर्ष दिया था। हा, एक बात यह हुई है कि वे जीवन-भर और भी अपनी लडकी को कुछ न कुछ देने का विचार रखते थे। अब अपना हाथ खीच लिया है। वे कहते हैं कि प्रोफेसर साहब के माता-पिता लोभी है। किसी समय लोभवश वे माग बैठे तो उस समय उनका मुख बन्द करने के लिए कुछ जमा करना चाहिए।"

"किस समय माग सकते है ?"

"क्या जाने, राजकुमारी के विवाह के अवसर पर आपकी मां जी कह दे कि आधा खर्चा वे दे, तो उसके लिए वे तैयार रहना चाहते है।"

"मैं तो इस सबको बेहूदा समझता हू।"

"किसको ? लेने या देने को ?"

"दोनों को।"

"आप कहते तो ठीक है, परन्तु अपनी मा से कहिए कि वे मागे नही।"

"मा मेरी बात तो मानेगी नही। पहले तुम यह देने वाली समिति में सम्मिलित न होवो। फिर मैं मां से कह दूगा। इसपर भी वह क्या मानेगी या नही, कौन कह सकता है ?"

८

राजेश्वरी को दो बातो से बहुत भय लग रहा था। लड़के-लड़कियों के नियमित विवाह का प्रबन्ध न किया तो सम्भोग तो होंगे ही। ये रुक नही सकते। वह जब वासनाभिभूत भूषण से सम्बन्ध बनाने के लिए तत्पर हुई थी तब उस सम्बन्ध के परिणामों को भली भाति जानती थी। इसपर भी वह विवश थी। यौवन की मांग पर किसी प्रकार का अकुश न होने से वह दीपक की ज्वाला पर शलभ की भाति जलने चल पड़ी थी। वह उस सम्बन्ध के भयकर परिणामों से बच गई थी, पिता के अनुभव एव परिचय के कारण। सबके पिता इतने अनुभवी हो नही सकते। इससे वह समझती थी कि ठीक आयु में माता-पिता को बच्चों के विवाह का प्रबन्ध कर देना चाहिए। न केवल यह अपितु किसी भी युवक अथवा युवती को इस बात में सन्देह नही होना चाहिए कि उसका विवाह असम्भव

है। विवाह में कम से कम बाधाएं रह जाएं तो ठीक है। इससे परिवार की लडकियों के मार्ग की एक बाधा तो वे समिति बना हटा ही रहे थे। इस कारण वह अपने पति से इस बात में सहमत नही थी कि वह इस समिति की सदस्या न बने।

इसपर भी जब उसके पति ने कहा कि उसको इस कार्य मे सहयोग नही देना चाहिए तो वह चुप रही। हा, अपनी सास से उसने इतना कह दिया था, "मां जी! आपके पुत्र इस प्रकार के कार्य से प्रसन्न नही।"

"क्यों? उसको तो प्रसन्न होना चाहिए।"

"यह आप ही उनसे पूछ लीजिए।"

"परन्तु उसने ही तो कहा था कि इस प्रकार के रुपये को व्यय कर देना चाहिए।"

"मुझको तो उनकी बात समझ आती नहीं। वे मुझको इस कार्य मे रुचि लेने से मना कर रहे हैं।"

"तो बेटी! तुम इसमें सम्मति मत दिया करो। एक स्त्री को अपने पति को प्रसन्न रखना चाहिए।"

"उनकी अयुक्तिसंगत बातो और कामों में भी?"

"बेटी, जहा मतभेद हो प्रेम से समझ-समझा लेना चाहिए।"

"और जब वे न समझे तो?"

"तो उनका कहा मानना चाहिए।"

इसपर राजेश्वरी आखे नीचे किए बैठी रह गई फिर साहस पकड़ बोली, "मैं एक बात आपसे पूछती हूं। आप मेरा नाम बीच में न लाए तो कहू।"

"क्या बात है?"

"राजकुमारी अब अढ़ाई वर्ष की हो गई है। वे मुझको गर्भ न धारण के लिए कह रहे थे। कुछ रबड़ का सामान भी उन्होंने लाकर दिया था। मेरी उन वस्तुओं के प्रयोग में रुचि नहीं थी। पिछले मास से आपके परिवार की लडकियों के विवाह में सहायता की बात से तो मैं कुछ निर्भय हो गई थी और अब देखती हूं कि मुझको कुछ दिन ऊपर हो गए हैं। एक ओर तो वे मुझको कह रहे हैं कि इस प्रकार व्यय करना धन का अपव्यय होगा और दूसरी ओर मुझको कह रहे है कि किसी लेडी डाक्टर से मिलकर सफाई करवा दूं।"

"सफाई? क्या मतलब है तुम्हारा?"

"तुम चलो तो मार्ग में बताऊंगा।"

"तो ठहरिए। प्रिन्सिपल साहब से एक मिनट का काम है, उनसे मिलकर अभी आया।"

बैरिस्टर साहब के दो ही सन्तान थी। एक राजेश्वरी और दूसरा कमलकिशोर। कमलकिशोर राजेश्वरी से पाच वर्ष छोटा था और अब एम० ए० में पढता था। भूषण को समझ आया कि उसके विवाहादि के विषय मे विचार करने के लिए उसको ले जाया जा रहा है। कमलकिशोर अपनी बहिन के सदृश ही सुन्दर था। इससे वह समझता था कि उसके विवाह की चिन्ता उसके माता-पिता को नही करनी चाहिए। सैकडो पढी-लिखी सुन्दर लडकियां उसपर लट्टू हो जाएगी और उसको अपनी पत्नी के लिए किसीको चुन लेना कठिन नही होगा।

इस विषय मे वह विचार करता हुआ प्रिन्सिपल साहब से मिलने गया और काम कर लौट आया। बैरिस्टर साहब अपनी मोटर साथ लाए थे और स्वसुर-दामाद उसमे बैठ चल पडे। मार्ग मे भूषण ने पूछ लिया, "कमल की सगाई की बातचीत हो रही है क्या ?"

उसकी सगाई तो हो चुकी है। मौखिक रूप में बात हो चुकी है। एक दिन निश्चय कर पब्लिक फंकशन भी हो जाएगा।"

"अच्छा ! आपने तो बताया नही।"

"इसकी ज़रूरत नही समझी। यथार्थ में मेरे एक मित्र है भृगुदत्त। उनकी लड़की है। लड़की कमल की माता जी तथा कमल की भी देखी-भाली है। एक दिन भृगुदत्त आए और सगाई की बात करने लगे। मैंने लड़के और उसकी मां से बात की। हम तुरन्त सहमत हो गए और बात पक्की हो गई।"

"लड़की कितनी पढी है ?"

"सुना है, बहुत कुछ पढी है। कमल की मां एक दिन उनके घर गई थी और वह लड़की की शिक्षा के विषय में जानकारी ले आई है। मैं उससे सन्तुष्ट हूं।"

"क्या जानकारी लाई है मां जी ?"

"वह कुकरी की परीक्षा पास है। कपड़े कटिंग का लन्दन के 'स्कूल आफ कटिंग' का डिप्लोमा लिए हुए है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की साहित्य-रत्न की परीक्षा पास किए हुए है। अंग्रेज़ी भी जानती है।"

"यह तो कुछ न हुआ।"

"मैं समझता हूं तुमसे तो अधिक पढी है। तुमने तो केवल एक विषय में ही एम० ए० किया है और उसने तो कई विषयों की उच्चतम परीक्षा पास की है।"

एक दर्जी के काम मे डिप्लोमा को उसका स्वसुर एम० ए० इन इकानौमिक्स से बड़ी परीक्षा बता रहे थे। वह समझता था कि उनके दिमाग मे कुछ खराबी आ रही है। इससे उसने बात बदल दी। उसने कहा, "मैंने पी-एच० डी० के लिए थीसिस दे दी है। आशा करता हू कि मुझको डाक्टर की उपाधि शीघ्र ही मिल जाएगी।

"किस विषय पर लेख दिया है?"

"न्यू वे आफ डिस्ट्रीब्यूशन आफ वैल्थ (धन-वितरण के नये उपाय)।"

बैरिस्टर साहब का ध्यान कम्युनिस्ट ढग की ओर चला गया। इससे उन्होने पूछ लिया, "'न्यू वे' से क्या मतलब?"

"सोशलिस्ट वे (सामाजिक ढग)।"

"सामाजिक ढंग? वह क्या होता है? समाज तो अपने-अपने देश मे भिन्न-भिन्न प्रकार की है। भारत मे यदि अपना राज्य होता तो यहां का 'नैशनल' सामाजिक ढंग निश्चय करता। इसलिए कौन-सा ढंग सामाजिक ढग है?"

"मेरी थीसिस तो मार्क्सिस्ट ढंग पर है।"

"ओह! तब ठीक है। मुझको भी कुछ यही समझ आया था।"

"यह किस प्रकार समझ आ गया था, आपको?"

"तुम आबादी कम करने के विषय में बात कर रहे हो न?"

"आबादी कम करने के?" भूषण को स्मरण नही था कि उसने कभी इस विषय पर अपने स्वसुर से बात की हो। इसपर वह प्रश्न-भरी दृष्टि से बैरिस्टर साहब की ओर देखने लगा।

रघुनाथसहाय ने उसे समझाने के लिए कहा, "देखो? मैं एक घटना बताता हूं। मेरे पिता देहात के रहने वाले थे। हमारी छोटी-सी ज़मींदारी थी अलमोड़ा के पास। हमारे घर के आंगन में एक आम का पेड़ था। उसपर एक बार मधु-मक्खियों ने छत्ता लगा दिया। दूसरे-तीसरे दिन मक्खियां घर में किसी न किसीको काट जाती थी। एक दिन पिता जी पेड़ के नीचे बैठे रस्सी बट रहे थे। हवा का झोंका आया और एक पका हुआ आम मक्खियों के छत्ते पर गिरकर पिता जी के सामने आ गिरा। मक्खियों को कुछ ऐसा समझ आया कि पिता जी ने उनके छत्ते

पर ढेला फेका है। बस, सब पिता जी पर चिपट गई। पिता जी रस्सी छोड़कर भागे। मक्खिया उनके पीछे-पीछे थी। बहुत कठिनाई से वे घर के एक कमरे में घुस, भीतर से दरवाज़ा बन्दकर, जान बचा सके। इसपर तीन दिन तक वे खाट पर पड़े रहे। सारा शरीर सूज गया था और उनको तीव्र ज्वर हो गया था।

"जब वे ठीक हुए तो सबसे पहली बात जो उन्होने की, आम के पेड़ को कटवा दिया। उस समय मै पाचवी श्रेणी में पढता था। उस पेड के आम बहुत ही मीठे और रसदार हुआ करते थे। आमों के मौसम मे घर और आस-पास के लोग उन आमों को चूस-चूसकर रस लिया करते थे। पेड के कट जाने से मुझको बहुत शोक हुआ था, परन्तु पिता जी की मक्खियो के काटने से हुई वेदना को स्मरण कर सुख अनुभव करता था।

"आज जब मैं मार्क्स की जीवन-मीमासा पढता हूं और जो कुछ रूस में हुआ है उसको ध्यान करता हूं तो पिता जी के उस आम के पेड को कटवाने की बात स्मरण आ जाती है। मैं समझता हूं कि जैसी मूर्खता वह थी वैसी ही यह है।"

"समझा नही?" भूषण के मस्तिष्क मे अभी भी यह विचार जमा हुआ था कि बैरिस्टर साहब के दिमाग मे खराबी हो रही है।

"समझाता हू। पिता जी मक्खियो के काटने से इतने दुःखी थे कि उनको लोगों का कथन 'पेड़ न कटवाए' समझ नहीं आ रहा था। यही अवस्था तुम्हारी प्रतीत होती है।

"तुम देश में बढ रही जनसंख्या के आकड़ो को देख-देख इतने दुःखी हो रहे हो कि तुमको कोई भली सम्मति समझ आती ही नही। जैसे मक्खियों से बचने का उपाय पेड़ कटवाने के अतिरिक्त भी थे, परन्तु पिता जी की बुद्धि इतनी भ्रष्ट हो रही थी कि उनको पेड़ का समूल नाश करना ही ठीक समझ आया था। इसी प्रकार तुम जनसंख्या की समस्या के किसी अन्य उपाय पर विचार न कर बच्चे मरवाने के उपाय पर ही तैयार हो गए हो।"

भूषण को समझ आने लगा था कि कदाचित् राजेश्वरी ने कुछ बात अपने पिता से कही है। उसको राजेश्वरी पर क्रोध आने लगा था। पति-पत्नी की गुप्त बातें भला किसी अन्य से कैसे की जा सकती है? उसका मुख क्रोध से लाल हो रहा था।

रघुनाथसहाय उसके मुख पर क्रोध के लक्षण देख रहा था। इससे बात को

नरम करने के लिए वह कहने लगा, "यह तो एक उदाहरण है। वास्तव में मार्क्स की पूर्ण प्रतिक्रिया, जो उस समय के समाज की अवस्था से उसके मन पर हुई थी, वह पिता जी के मन पर मक्खियो द्वारा काटे जाने की प्रतिक्रिया के तुल्य ही थी।

"इंगलैड के कारखानेदार तत्कालीन मजदूरो पर अत्याचार करते थे। उस अत्याचार को दूर करने के उपाय के रूप में उन्होने कारखानो को तोड़ देने का विचार बना लिया। यह आम के पेड़ को जड़ से निकाल देने के तुल्य था। कुछ पति पत्नियों पर कठोर नियत्रण रखते थे और उनकी सम्पत्ति को हजम कर जाते थे इसलिए मार्क्स के अनुयायी विवाह-पद्धति को ही नाश करने पर तैयार हो गए।

"बच्चे जनने के पश्चात् प्रसूता बच्चे के लालन-पालन में लग जाती थी। इसको समय का अपव्यय समझ पैदा होते ही बच्चे मां की गोद से छीन लिए जाने लगे।

"पैदा होते ही बच्चे मा से पृथक् हो जाने के कारण माताए पुनः शीघ्र गर्भ-धारण करने लगी तो उन्होंने विवाहित पति-पत्नियो को बलपूर्वक पृथक्-पृथक् रखने का नियम बना लिया। इसपर भी बच्चे होने नही रुके तो बच्चों के हस्पताल में एक नियत सख्या से अधिक बच्चे हो जाने पर उन्हे इंजैकशन देकर शान्ति से मार डालने का प्रबन्ध करने लगे।

"क्या-क्या बताऊं इस मार्क्सिस्ट समाज के ढाचे की कहानी ? यह सब पढ़-पढ तो मेरे रोमांच हो उठता है।

"और भूषण जी ! अब तुम इस नये समाज के ढंग की प्रशंसा कर डाक्टर बनोगे ? क्या मैं गलत समझ रहा हू ?"

"आपको किसी अमरीकन अथवा चर्चिल के चेले-चाटे ने भड़का रखा है। पिछले वर्ष पण्डित जवाहरलाल नेहरू जी रूस गए थे और वे रूस की प्रशसा करते नही थकते।"

"उनके मस्तिष्क में भी वही प्रतिक्रिया हो रही प्रतीत होती है जो मक्खियों के काट खाने से पिता जी के मस्तिष्क मे हुई थी।"

"नही जी ! वे तो कुछ इस प्रकार लिखते हैं कि सोवियत रशिया कई विषयों में दुनिया का सबसे उन्नत देश है।"

इस समय वे बैरिस्टर साहब की कोठी में पहुंच गए थे। यह सिविल लाइन्ज

में राजपुरा रोड पर थी। मोटर से उतर वे कोठी के ड्राइगरूम में बैठ गए थे। राजेश्वरी की मां भी वहां आ गई और बैरा चाय लेने चला गया, बैरिस्टर साहब कहने लगे।

"समाचारपत्रों में यह छपा था कि पडित नेहरू तीन दिन मास्को में ठहरे थे और तीनों दिन उनका कार्यक्रम इतना सघन था कि इनको ठीक प्रकार सोने को भी समय नही मिला। विस्मय करने की वात यह है कि इन तीन दिनो मे वे सायवेरिया, युकेरन, आयजरवेजान और क्रीमिया इत्यादि सब स्थानों के समाचार जान आए है और सब स्थानों की उन्नति को देख दुनिया के अन्य देशों को पिछड़े हुए समझने लगे है।"

"तो उन्होने यह सब झूठ लिखा है?"

"मैं क्या जानू? एक सूत्र से प्राप्त सूचना यह है कि लेनिन ने १९१७ की क्रान्ति में लाखों निर्दोषों को अति क्रूरतापूर्ण ढंग से मरवाया था और जर्मन क्रान्ति के बादशाह कैसर से सोना ले सेना में वितरित कर अपने ही देशवासियों पर अत्याचार करवाया था। और दूसरी ओर पण्डित जवाहरलाल कहते है कि यह क्राति यूनीक (अद्वितीय) थी और कहते हैं कि ऐसी क्रान्ति ससार के अन्य देशों मे भी होनी चाहिए।

"मैने एक लेख पढा है जिसमे तत्कालीन रूस के समाचारपत्रो के उद्धरण है। इधर पण्डित जी का लेख है जिसका कोई प्रमाण नहीं।"

"तो आप उनको झूठा समझते है?"

"उनको 'मिस इन्फोर्म्ड' (वस्तुस्थिति से अपरिचित) मानता हूं। वे जो कुछ लिख रहे है एक पूर्वकल्पित विचार (प्रीकन्सीव्ड नोशन) के अधीन लिख रहे है?"

"वह पूर्वकल्पित विचार क्या है?"

"यही कि जो कुछ भी हिन्दुस्तान में है घटिया है और जो कुछ यूरोपियन है बढ़िया है। यूरोप मे भी जो कुछ आज है वह व्यतीत हुए काल से अच्छा है।"

"कुछ भी हो, भविष्य जवाहरलाल जी का है।"

"हा! इसमें तुम ठीक समझ रहे हो, परन्तु इसमें वर्तमान स्कूल-कालेजो की शिक्षा कारण है, जो तुम्हारे जैसे मक्खियां उड़ाने के स्थान पर पेड़ काटने वाले तैयार कर रही है।"

"यह आम के पेड़ की बात आपके मस्तिष्क मे खूब घुस गई है।"

"तुम जैसे लोग इसको याद जो कराते रहते है, कैसे भूल सकता हू ?"

"मै आपके इस बार-बार कहने का अर्थ नही समझा।"

"देखो ! तुम्हारे कितने बच्चे है ?"

"अभी तो दो है।" भूषण ने चाय का घूट पीते हुए कहा । उसको अब कुछ विश्वास हो गया था कि राजेश्वरी ने कुछ गर्भपात की बात यहां कही है। इससे वह चाय पी सावधान हो पत्नी की भर्त्सना करने के लिए तैयार हो गया।

"तुम दोनो को कितना वेतन मिलता है ?"

"पौने चार सौ है। पिछले मास ही मुझको पचीस रुपये उन्नति मिली है।"

"राजेश्वरी कह रही थी कि उसको भी दस रुपये उन्नति मिलने वाली है। मैं पूछता हू कि क्या तुम एक-दो और बच्चो का बोझ सहन नहीं कर सकते ?"

"पिता जी ! यह मेरे सहन करने की बात नही। यह पूर्ण देश के समाज की बात है। दिन-प्रतिदिन देश मे खाने वाले मुख बढ रहे है और अनाज की उपज बढ़ नहीं रही। हम स्थायी अकाल के गाल मे जा रहे हैं।"

"तो तुमको उनके बच्चो की अपने बच्चों से अधिक चिन्ता है, जो समाज के उपकारी अग नही बन सकते ? कम से कम इतना तो तुम भी समझ सकते हो कि एक प्रोफेसर और स्कूल की अध्यापिका के बच्चे देश के कल्याण में अधिक सहयोग देंगे और एक भिखारी का बच्चा उतना कल्याण नही कर सकता ?"

"कौन जाने भविष्य में कौन नेपोलियन और बिस्मार्क बनने वाला है।"

"ठीक है। यही तो मैं कह रहा हू कि यह तुम कैसे कह सकते हो कि राजेश्वरी के पेट का बच्चा उजड्ड गवार होगा, जो उसकी हत्या करने के लिए उसे कह रहे हो !

"देखो भूषण ! इसकी हत्या करने से तुम्हारे किसकी परवरिश होगी, बता सकते हो ? मैं तो एक बात जानता हूं कि यह ईश्वरीय बाते है। तुम अल्पज्ञान से उसकी योजनाओं को नष्ट-भ्रष्ट कर रहे हो।

"कहीं सुभाषचन्द्र बोस के मां-बाप भी यही करते जो तुम करने जा रहे हो तो भारतवर्ष एक शूरपुत्र की सेवाओं से वचित रह जाता और कही रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पिता भी यही कुछ करते तो वह भी न हो सकता। ये दोनों परिवार में सबसे छोटे थे।

" देखो ! अब चुपचाप चाय पियो और जाकर अपनी पत्नी को प्रसन्न करो। वह इस हत्या के पाप से इतनी भयभीत है कि अपने पति का घर छोड़ देने वाली थी। मैने उसको समझा-बुझाकर वापस तुम्हारे घर भेज दिया है।

" एक बात और किया करो। अपने इस मिथ्या अर्थशास्त्र को लपेटकर कालेज में ही छोड आया करो। इसका स्थान एक हिन्दू परिवार मे नही है। हमारा शास्त्र इस अधकचरे ज्ञान से अधिक श्रेष्ठ और सत्य के समीप है। "

९

भूषण आज प्रिन्सिपल से कहने गया था कि वे मालूम करे कि उसके लेख के परीक्षकों ने उसके लेख के विषय मे क्या लिखा है ? प्रिन्सिपल ने उसे बधाई दी कि उसको डाक्टरेट मिलने वाली है।"

इधर बैरिस्टर साहब से उसको डांट पर डाट पड रही थी और वह उनकी एक भी युक्ति का उत्तर नही दे सकता था; इससे उसने अपने स्वसुर की सम्मति मान ली कि वह चुपचाप चाय पीकर घर जाए और राजेश्वरी को प्रेमपूर्वक समझावे।

पर उसका मन पूछ रहा था कि क्या समझावे ? अपने मन की बात समझावे अथवा अपने स्वसुर के मन की। वह मन ही मन विचार कर रहा था कि जिस बलबूते पर वह डाक्टरेट प्राप्त कर रहा है और भविष्य में उसकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त होने वाला है, क्या वह मिथ्या है ? यदि यही है तो उसके परीक्षक उसको डाक्टर की उपाधि क्यों दे रहे है ?

साथ ही वह विचार कर रहा था कि जितनी युक्तिया उसने समाजवाद के पक्ष मे अपने लेख मे दी है, उनको तो एक झटके से बैरिस्टर साहब ने उसके देखते-देखते हलाल कर दिया है।

वह स्वसुर की मोटर मे अपने घर लौट रहा था और अपने मन में विचार कर रहा था कि यह क्या हुआ ? क्या समाजवाद का नियंत्रण जनसंख्या की वृद्धि पर नही होना चाहिए। यह तो अनर्थकारी होगा। तो क्या भ्रूण हत्या के अति-रिक्त कोई अन्य उपाय नही ? उसको तो कुछ सूझ नही रहा था। वह मन में गणना करने लगा कि उसके नाना के परिवार मे कितने प्राणी है ? लाला जी के

चार लड़के और चार लड़कियां। यह हुए आठ। शिव बड़े लड़के के एक लड़का और दो लड़किया। ये हुए ग्यारह। शिव के तीन पोते और तीन दुहिते-दुहितिया। ये हो गए सत्रह।

मोटर मे बैठा भूषण उंगलियों पर गिनती कर रहा था। लाला जी की सबसे बड़ी लड़की थी उसकी अपनी मा। मां के घर चार सन्ताने थी। इस प्रकार हो गए इक्कीस। उसकी मां के पोते-दुहिते थे नौ। सब बन गए तीस। लाला जी की दूसरी लड़की थी लक्ष्मी। उसके घर मे भी लड़के-लड़किया पोते-पोतियां, दुहिते-दुहितियां सब थे बारह। तो यह हो गए बयालीस। चौथा था गोपाल। गोपाल के घर चार बच्चे थे। एक पोता, एक दुहिता और एक दुहिती। ये सात मिलाकर लाला जी के परिवार में हो गए लगभग पचास प्राणी।

इस समय मोटर पहुंच गई थी हेमिल्टन रोड पर, जहां उसका मकान था। वह गणना समाप्त नही कर सका और तोबा! तोबा!! एक जोड़े के साठ सन्तान! कदाचित् साठ से भी अधिक! उसकी सूचना पूर्ण नहीं थी। इतने बड़े परिवार में एक-आध प्रतिमास उत्पन्न होना विस्मय करने की बात नही थी।

वह मोटर से उतरा तो ड्राइवर ने सलाम किया और मोटर ले गया। वह घर गया तो उसकी मा, पिता एवं राजेश्वरी रेशमी सफेद वस्त्र पहने कही जाने को तैयार खड़े थे। तीनों के मुख पर शोकमुद्रा थी। विष्णुदेवी ने कहा, "कहा ठहर गए थे भूषण?"

"मैं राजेश्वरी के पिता के घर गया था।"

"कुछ काम था क्या?

"हां, मा। तुम सब कहां जा रहे हो?"

"गोपाल भैया के लड़के काहनचन्द्र की पत्नी का देहान्त हो गया है।"

"कैसे देहान्त हो गया है?"

"मैटर्निटी होम मे। हम सब वहा जा रहे है। तुमको भी चलना चाहिए।"

"फजूल है मां।"

"नहीं बेटा! तुम्हारा भाई है काहन—मामा का लड़का। तुमको अफसोस करने जाना चाहिए।"

"तो कैसे चलोगे?"

"नौकर टांगा लेने गया है।"

भूषण मन में विचार कर रहा था कि इतने बड़े परिवार में यदि सबके मरने पर जाने लगा तो उसको तो कालेज जाने के लिए भी समय नही रहेगा। परन्तु मां और पत्नी को जाने के लिए तैयार देख वह भी उनके साथ चल पडा।

करौल बाग मे डाक्टर भार्गव के हस्पताल मे काहनचन्द्र की पत्नी सुधा को तीन मास का गर्भपात हुआ और देहान्त हो गया। काहन, उसका पिता गोपालकुमार और मा रुक्मिणी तथा परिवार के अन्य मुख्य-मुख्य सम्बन्धी हस्पताल के बाहर एकत्रित थे। शव को पंचकुइया रोड पर सस्कार के लिए ले गए। भूषण काहन के साथ चलता-चलता पूछने लगा, "भैया! क्या हुआ था?"

"एबारशन (गर्भपात)।"

"हो गया है या कराया था?"

काहन ने इस प्रश्न पर भूषण की आंखों में देखते हुए पूछ लिया, "कौन कहता है?"

भूषण को इस प्रश्न पर विस्मय हुआ। इसपर उसके मुख पर मुस्कराहट दौड़ गई और उसने कहा, "कहना किसने है? क्या मै अन्धा हू? देखता नही हू कि दिन-प्रतिदिन महंगाई बढ़ रही है? जीवन-स्तर ऊंचा और महंगा हो रहा है और आमदनी बढती नही?"

काहन मान गया। "मगर मै इसकी आशा नही करता था।"

"खैर छोडो। वह तो हो गया। अब विवाह न करना।"

"क्यों?"

"तो फिर यही कुछ करने का विचार है?"

"बच्चे पैदा करने की तो इच्छा नही, परन्तु बिना पत्नी के रह सकूंगा क्या?"

"दिल्ली में वह हवस भी पूरी होने के साधन है।"

"तुम्हारा मतलब है ब्राडर्थ रोड?"

"हां, वह भी है और अन्य भी है?"

काहन से भूषण की इतनी खुलकर बात पहले कभी नही हुई थी। इससे वह समझ नहीं सका कि वह आज क्यो इस प्रकार की बातें कर रहा है। कुछ दूर तक चुपचाप चलते हुए काहन को एक शरारत सूझी। उसने पूछ लिया, "तो भैया भूषण! तुमको इस प्रकार का बहुत अनुभव मालूम होता है?"

इसपर मुस्कराते हुए भूषण ने कहा, "हम कालेज में देश-विदेश की बातें

पढ़ाते हैं। यह आवश्यक नही कि हम उन देशों मे गए भी हो।"

"पर भैया! यह देश-विदेश की बात नही। यह तो गन्दी नाली है। तनिक इस नाली की सैर करने के लिए जाने से पूर्व अपने पिता से राय कर लेना। मैने सुना है कि उनको इसका बहुत अनुभव है।"

अपने पिता का कुछ इतिहास तो भूषण भी जानता था। इसपर वह मौन हो गया। वास्तव में कानों-कान सब जान गए थे कि सुधा, काहन की पत्नी, का देहान्त क्यों हुआ है और इस बात का सबसे अधिक शोक लाला सुलक्षणमल की स्त्री को था।

जब सब सस्कार कर काहन के क्वार्टर पर आए तो कर्मदेवी, काहन की दादी, ने कहा, "काहन! बच्चा कहां है?" काहन तथा सुधा के लड़के की बात थी। वह अभी एक वर्ष का नही हुआ था कि सुधा पुन: गर्भवती हो गई थी। इससे पति-पत्नी दोनो बहुत दु खी हुए थे और उस दु:ख-निवारण का सुगम उपाय करने चल पड़े थे।

"बड़ी मां!" काहन ने बताया, "पड़ोसियो के घर में है।"

"उसको ले आओ।"

वह गया और बच्चे को उठा लाया। कर्मदेवी ने उसको गोद मे ले लिया और काहन से कहा, "देखो काहन! या तो तुम मेरे घर मे चलो, नहीं तो मै यहां रह जाती हू।"

"मां, कूचा घासीराम मे मै जाकर रह नही सकता। वह गली बहुत तंग है और गन्दी है। इस खुली हवा में रहने के पश्चात् तो यह भी वहा बीमार हो जाएगा।"

"परन्तु यहां मै अकेली नही आऊगी। मै आऊगी तो मेरे साथ सदारानी भी आएगी। मै उनको वहां अकेली नही छोड़ सकती।"

"तो दोनों आ जाओ।"

"इसका किराया कितना पडता है?"

"वह तो दफ्तर में वेतन से कट जाता है।"

"मै यह पूछती हूं कि कितना देना पड़ता है?"

"पन्द्रह रुपये किराया। छ: रुपये बिजली पानी और कुछ भंगी-माली इत्यादि। सब मिल-मिलाकर पचीस रुपये।"

"तो ठीक है। हम दोनों आज ही यहां रह जाएगी।"

भूषण बड़ी मा की काहनचन्द से बाते सुन रहा था। इसपर उसने कह दिया, "बड़ी मां! मेरा विचार है कि तुम बच्चे को अपने साथ ले जाओ और काहन को कहो कि यह क्वार्टर छोड दे।"

"मुझको कुछ आपत्ति नही। मै जानती हू कि काहन अपना निर्वाह कर लेगा। मै यह भी जानती हू कि यह अपने पिता के पास जाकर नही रहेगा। मै तो इस बच्चे की रक्षा की बात कर रही हू।"

"तो तुम बच्चे को ले जाओ।"

"क्यों काहन! क्या कहते हो?"

"बड़ी मां! मुझको भूषण भापा की बात पसन्द नहीं। तुम यहां रहोगी तो मेरा विवाह भी हो सकेगा। अकेला रहने पर तो सम्भव नही।"

"विवाह तो होगा तुम्हारा। तेरह दिन निकल जाने दो। तब विवाह का प्रबन्ध कर दूगी।"

"कहां?" भूषण का प्रश्न था।

"तुम्हारी साली से।"

"कौन साली? बडी मां! मै समझता हू कि राजेश्वरी के पिता पहले ही बनियों के घर लड़की देकर पश्चात्ताप कर रहे हैं। और फिर उसकी छोटी बहिन कोई नही है।"

"मेरे पढे-लिखे मूर्ख बेटे! कल से काहन की सगाइयां आने लगेगी। निश्चय जानो, जब तक मै जीती हू, हमारे घर का कोई लड़का अविवाहित नही रह सकता।"

भूषण विचार करता था, बहुत अभिमान है धन का उसकी नानी को। इससे वह चुप रहा। वह मन मे विचार करता था, "यदि यहां समाजवाद चल जाए तो कम से कम इस बूढ़ी औरत का अभिमान तो चूर हो सकता है।"

जब सदारानी क्वार्टर में रहने के प्रबन्ध के बारे मे विचार कर रही थी, भूषण काहन को बाहर ले जाकर उसके मन पर बड़ी मा के प्रस्ताव की प्रतिक्रिया जानने का यत्न करने लगा था।

"काहन! अब तो प्रसन्न हो?"

"मुझको बड़ी मां पर विश्वास है। अपनी मां तो मुझसे उस दिन से ही

नाराज है जब मैने उसको वेतन मे से एक पैसा भी देने से इन्कार कर दिया था।"

"तो उसने मागा था ?"

"हां ! वह चाहती थी कि मैं अपने वेतन का एक-तिहाई भाग उसके पास जमा करा दिया करू।"

"किसलिए ?"

"वे कहती थी कि उतना धन परिवार के सुरक्षित कोष मे जाएगा। वह कभी परिवार पर मुसीबत के समय काम आएगा। पिता जी अपने वेतन का तीसरा भाग उसमे जमा कराते है।"

"तो तुमने क्यो नही माना ?"

"सुधा कहती थी, कौन मुसीबत आ सकती है ? दिल्ली मे भूचाल आते नही, अंग्रेजी राज्य जा नही सकता और नई दिल्ली मे चोर-डाकू घुस नही सकते। इस कारण जो बात होनी नही, उसके लिए चिन्ता क्यों करे ?"

"बहुत समझदार थी वह। काहन, तुमने उसकी हत्या कर ठीक नही किया।"

"भैया ! वह अच्छी तो थी नही। उसकी ऊपर की युक्ति मिथ्या सिद्ध हुई है। जब मै उसके आपरेशन के लिए हस्पताल लेकर गया तो डाक्टर उसका पेट चीरकर फटी नस को सीना चाहता था और पांच सौ रुपया मागता था। मेरे पास सिर्फ एक सौ था। उसने मुझको कहा कि मै रुपये का प्रबन्ध करू। तब तक वह रक्त रोकने का यत्न करता है। मै भागा-भागा आया और पड़ोसियो से भाग-दौड़कर किसीसे बीस, किसीसे पचास, एक-दो से सौ-सौ रुपया तक एकत्रित कर चार सौ ले गया। इसमें मुझको आधा दिन लग गया। डाक्टर ने मेरे जाने से पूर्व ऑपरेशन कर टांके भी लगा दिए थे। परन्तु वह इतनी दुर्बल हो चुकी थी और उसका इतना रक्त निकल चुका था कि वह बच नही सकी।"

"मुझको विश्वास है कि यदि तुरन्त ऑपरेशन हो जाता तो कदाचित् वह बच जाती।"

"चलो, बड़ी मां नया विवाह करने की बात कहती है। तो करोगे विवाह ?"

"क्यो नही करूगा ! हा, अब वैसी भूल नही करूगा जैसी सुधा के साथ की थी। बड़ी मां जी के पास रुपया लेने जाता तो यह घटना न होती।"

इस समय राजेश्वरी बड़ी मां से छुट्टी ले घर चलने के लिए आ गई। उसने अपने पति से कहा, "भैया की बाईसिकल लेकर एक टांगा पकड़ लाइए।"

विवश प्रोफेसर साहब काहन को विवाह के विषय में सीख न दे सका । इस शुभ कार्य को किसी अन्य दिन के लिए छोड वह तागा लेने चल पड़ा ।

रात घर चलकर राजेश्वरी से झगडा हो गया । घर पहुचते, भोजन बनते, करते आधी रात व्यतीत हो चुकी थी । सोने से पूर्व बात भूषण ने आरम्भ की । उसने पूछ लिया, "तुम पिता जी से मिलने गई थी ?"

"हां । माता जी लेने आई थी । स्कूल से आधे दिन की छुट्टी ले उनके साथ गई थी ।"

"कुछ विशेप काम था उनको ?"

"वे तो केवल मिलने ही आई थी । मैंने आज आपकी माता जी से आपके मन की बात कही थी । उनका कहना था कि वे तो इस बात की अनुमति दे नहीं सकती । इस विषय मे मै अपनी मा से राय कर लू । अतः जब मैं वहां गई तो आपकी बात बताई । उन्होने आपकी माता जी का समर्थन किया है । मैं वहा से तीन बजे चली आई थी ।"

"तुम्हारे पिता जी आज मुझसे कालेज में मिलने आए थे । फिर मुझको घर चाय पिलाने ले गए । मैंने समझा कि कमल की सगाई के विषय मे कुछ बातचीत करने जा रहे है। परन्तु उन्होने तो तुम्हारे गर्भ-पात की बात आरम्भ कर दी । मुझको भली भाति डांट-डपट कर कह दिया चाय पिऊ और घर आकर उनकी लडकी के साथ प्रेमपूर्वक रहू ।"

"यह तो बहुत अच्छी सीख दी है पिता जी ने ।"

"तुम वहा गई क्यों थी ?"

"मैंने बताया तो कि मैं नहीं गई थी । इसपर भी कल आपसे पूछकर प्रातः-काल जाने का विचार था । पर माता जी ने कुछ नही कहा ? वे कह रही थी कि वे अपने विचार आपको मिलकर बता देगी ।"

"वे कुछ नहीं बोली । वे कुछ कहती तो पिता जी से अधिक क्या कह सकती थी ।"

"वे मेरे मन की बात बतातीं ।"

"और तुम्हारे मन की क्या बात है ?"

'जब आपकी मां ने भी आपकी बात को पसन्द नहीं किया तो मैं भी आपका घर कम से कम एक वर्ष के लिए, छोड़ जाने का विचार कर रही थी । आज काहन

भापा की सुधा की कहानी सुनकर तो विचार आया है कि या तो आपको अपने विचार मे सुधार करना पड़ेगा अन्यथा मै अपना पृथक् घर बना लूगी।"

"ओह ! तुम तो मेरे बिना एक रात भी रह सकना असम्भव कहा करती थी ?"

" जी। जब मरकर पृथक् होना है तो जीवित ही पृथक् होना ठीक नही होगा क्या ? आज आपकी बडी मां कह रही थी कि न जाने आजकल लड़कियो को क्या हो गया है कि अपने-आप अपने सौभाग्य को धक्के दे-देकर घर से निकालती रहती है।

"वे अपनी कथा बता रही थी। उनका विवाह बारह वर्ष की आयु मे हुआ था और शिव का सोलह वर्ष की आयु मे हुआ। आठ बच्चे पैदा कर भी वे हट्टी-कट्टी बैठी है। प्रत्येक बच्चे के पैदा होने के समय उनको और आपके नाना को अत्यन्त प्रसन्नता होती थी और भगवान भी अवश्य प्रसन्न होता होगा। प्रत्येक सन्तान के बाद हमारे कारोबार में उन्नति होती थी। भगवान जिसको भी यहा भेजता है उसका भाग्य भी साथ भेजता है।"

"यह सब अज्ञानता के लक्षण है। न कोई भगवान है, न वह किसीको यहां भेजता है। अनेको परिवार बच्चे अधिक हो जाने से भूखे मरते देखे गए है। धोखाधडी लाला जी को खूब आती रही होगी और गरीब किसानों का धन लूटने मे सफल हो गए प्रतीत होते हैं। भोले-भाले किसानों के परिश्रम का धन लूट लिया और नाम लगा दिया बच्चो के भाग्य का।"

"खैर, इससे मेरा क्या सम्बन्ध है। मैं आपको कह देती हू कि मैं सुधा-सी मौत मरने के लिए तैयार नही।"

"तो ठीक है। अब सो जाओ। इस विषय पर कल बात करेगे।"

अगले दिन राजेश्वरी की सास काहन के क्वार्टर पर गई। मुहल्ले और सम्बन्धियों की स्त्रियां वहां शोक प्रकट करने जा रही थीं। यह रात ही निश्चय हो गया था कि वहा ही बैठेगी। इस दिन राजेश्वरी वहां नहीं गई। वह स्कूल गई थी।

स्कूल से वह जहांगीर रोड पर काहन के क्वार्टर में गई थीं। उसका विचार था कि अपनी सास को लेकर घर आ जाएगी।

भूषण कालेज से आया तो घर पर नौकर के अतिरिक्त कोई नही था। वह आज

मन में अपने और घर के अन्य प्राणियों में मतभेद पर ही विचार करता हुआ चला आ रहा था।

वह विचार कर रहा था कि यदि उसकी पत्नी को बडी मां की भांति आठ-दस बच्चे पैदा करने है तो वह नौकरी नही कर सकेगी। यदि नौकरी नही कर सकेगी तो घर की आय कम हो जाएगी। खर्चा बढ जाएगा। ऐसी अवस्था में उसकी मां को उसके बच्चों के पालन-पोषण का व्यय अपने ऊपर लेना चाहिए।

घर पर पहुच घर को जन-शून्य देख वह नौकर से चाय मगवा पीने लगा। अभी चाय पी ही रहा था कि प्रतापकृष्ण, उसका पिता, घर पर आ गया।

"कहा से आ रहे है पिता जी ?"

"काहन की ओर गया था। उसने कार्यालय से छुट्टी ले रखी है और ऐसे समय में उसके पास बैठने के लिए घर के एक-दो प्राणी रहने चाहिए। इस मुसीबत के समय यह आवश्यक होता है। मैं दुकान से आधे दिन की छुट्टी लेकर वहा चला गया था। दिन के पहले समय राम गया हुआ था। अब शिव वहां पहुचा तो मैं चला आया हूं।"

"तो दूसरे लोग भी जा रहे है ?"

"हां। मेरे बैठे-बैठे लक्ष्मीदेवी के घर वाला गणेशदत्त और शिव का लड़का बृजमोहन बैठे रहे थे। अब मेरे आते समय शिव का दामाद मोहन और उसके माता-पिता भी पहुंच गए थे।"

"तो मुझको भी जाना चाहिए ?"

"मैं समझता था कि तुम सुबह गए हो। घर से तो शीघ्र ही चले गए थे।"

"वह तो मुझको अपने लेख के एक परीक्षक श्री चतुर्भुज चटर्जी से मिलने जाना था।"

"हां, तो क्या हुआ है तुम्हारे लेख का ?"

"तीनों परीक्षकों ने भूरि-भूरि प्रशसा की है मेरे लेख की। मुझको विश्वास दिलाया गया है कि मुझको डॉक्टरेट मिल जाएगी।"

"मेरा विचार है, चाय पीकर अभी चले जाओ। तुमको जाना चाहिए। सुख-दुःख सबके साथ लगा हुआ है। परिवार में परस्पर सहानुभूति तो बनी ही रहनी चाहिए।"

भूषण काहन के क्वार्टर पर गया तो उसकी पत्नी और मां वहां से चली गई थीं।

१०

रूपकृष्ण को हौज़ काज़ी वाली जमीन मिल गई। वह नीलाम रद्द नही हो सका। भूमि की मालिक फिरोजा बेगम की उजरदारी स्वीकार नही हुई और नीलाम नियमित ठहराया गया।

रूपकृष्ण ने इसपर मकान बनवाने का नक्शा तैयार करवाया, म्यूनिसिपल कमेटी से पास करवाया और मकान बनवाना आरम्भ कर दिया।

काहन का विवाह राम की सबसे छोटी साली से हो गया। राम की पत्नी रोहिणी अति सुन्दर स्त्री थी और उसकी बहिन उससे कम सुन्दर नही थी।

काहन को इस विवाह में कुछ अधिक दहेज तो मिला नही। हां, पत्नी सुन्दर, चुलबुली और चतुर मिल गई। विवाह का निश्चय तो सुधा के तेरहवे से पहले ही हो गया था, परन्तु सगाई तेहरवे के पाच दिन उपरान्त और विवाह एक मास के मध्य मे हो गया।

जहां सम्बन्धी और मित्रगण काहनचन्द से उसकी पत्नी के देहावसान पर शोक प्रकट कर रहे थे वहां दो ही दिन में बधाइया देने के लिए आने लगे।

भूषण ने तो जब सुना कि रूप की मौसी से ही काहन का विवाह हो रहा है, तो उसके विस्मय का ठिकाना न रहा। तेरहवे दिन का इकट्ठा हो रहा था। क्वार्टर में भीतर स्त्रियां बैठी थीं। सुधा के माता-पिता की ओर से स्त्रिया शोक प्रकट करने आई हुई थी और रोना-धोना कर रही थी। उसमे से कुछ तो काहन की भावी पत्नी को गाली भी दे रही थी। परन्तु बाहर पुरुषो में काहन के नवीन विवाह की चर्चा चल रही थी।

भूषण ने मामा रामकुमार से पूछ लिया, "मामा जी! आपसे पूछकर यह विवाह हो रहा है?"

"हां। यदि यह कहा जाए कि मेरे ही सुझाव पर हो रहा है तो अधिक ठीक होगा।"

"आपको तो विदित होना चाहिए कि काहन अपनी पत्नी का हत्यारा है।"

"कौन किसीकी हत्या कर सकता है बिना ईश्वर की इच्छा के! सब अपने-अपने कर्मफल का भोग करते है।"

भूषण इस कर्मफल की मीमांसा को समझ नही सकता था। यदि कोई पैदा

हो तो कर्मफल से। यदि कोई मरे तो भाग्य से। विवाह हो तो भाग्य से और न हो तो भाग्य से। वह मन मे विचार करता था कि इन सब रूढिवादियो को सन्मार्ग दिखाने के लिए कम्यूनिज्म ही समर्थ होगा।

रूप काहन के पास बैठा था। काहन उससे उसकी मौसी की रूपरेखा के विषय मे पूछ रहा था। रूप कह रहा था, "काहन, ईश्वर का धन्यवाद करो कि सुधा मरी है। एक झगडालू, कुरूप और मूर्ख स्त्री के स्थान पर अति सुन्दर, चतुर और बुद्धिशील पत्नी आ रही है। किसी पूर्वजन्म के कर्म उदय हो रहे है।"

"परन्तु मित्र! सुना है कि तुम्हारी मा तो तुम्हारे पिता को लूट-लूट अपने पिता का घर भरती रही है।"

रूप ने मुस्कराते हुए कह दिया, "क्या तुम यह कल्पना कर सकते हो कि बिना पति की स्वीकृति से कोई भी स्त्री कुछ घर से बाहर ले जा सकती है? मां तो अब भी छोटे भाइयो को यथाशक्ति खिलाती-पिलाती रहती है।

"मैंने एक दिन पिता जी से पूछा था, वे कहने लगे कि वे सब कुछ जानते हैं परन्तु मेरी मां इतनी सुन्दर है कि वे यह थोड़ी-बहुत चोरी उस सौन्दर्य पर न्यौछावर ही समझते है।

"वे कहने लगे कि इससे मेरी मां प्रसन्न रहती है और वे इसमे सुख और तृप्ति अनुभव करते है।"

भूषण को तो पूर्ण परिवार से अरुचि हो रही थी। राम ने भूषण को अपने मन की बात कह दी, "हम परिवार में सुन्दर स्त्रियां ला-लाकर परिवार मे सुन्दर बच्चे पैदा कर रहे है। मैं रूप के लिए भी किसी सुन्दर स्त्री की खोज में हूं।"

"कटरे मे कोई न कोई मिल जाएगी।" आवेश में भूषण ने कह दिया।

राम ने ध्यान से उसकी ओर देखा और उपरान्त मुस्कराते हुए कहा, "मालूम होता है, बरखुरदार भूषण, कटरे की सैर करते रहे हो! क्या राजेश्वरी को वहीं से ढूढकर लाए हो?"

"वह तो बैरिस्टर साहब ने नियमित रूप से विवाह कर दी है।"

"मैं तो यही जानता था। पर भूषण! वह सुन्दर नही है क्या? क्या समझते हो उसको तुम? रूप तो वैसी ही पत्नी के लिए आग्रह कर रहा है।"

"ओह! तो उसकी दृष्टि मेरी पत्नी पर है?"

"नही प्रोफेसर साहब! वह ऐसा लड़का नहीं। राजेश्वरी को बड़ी भाभी

समझता है और हमारे धर्मशास्त्र में बड़ी भाभी को मां के समान पदवी दी गई है।"

"पर रूप कब से धर्मशास्त्र मानने लगा है ?"

"अपनी बूआ गौरी से पढता रहता है। मै समझता हू तुम भी गौरी मौसी से मिला करो। तुम्हारा भी कुछ तो कल्याण हो जाएगा।"

"तो वे देवी है।"

"देवी-लेवी की बात तो मै जानता नही। हा, बात वह ऐसे ढंग से करती है कि स्वीकार करनी ही पड़ती है। देखो, उसने और उसके पति ने लाला जी से मिले धन का एक ट्रस्ट बना दिया है और उससे एक विधवा आश्रम खोल दिया है। उस आश्रम पर एक हज़ार रुपया प्रतिमास का व्यय हो रहा है।

" गौरी बहिन ने तुम्हारी मा से कहकर, उसके रुपये का भी एक ट्रस्ट बनवा दिया है। उसमें लड़कियों के विवाह पर रुपये की सहायता दी जाया करेगी। मेरी लड़की कृपा की सगाई की चर्चा उसी ट्रस्ट द्वारा हो रही है।"

" अब एक और ट्रस्ट बनने का विचार हो रहा है। मा, मेरा तात्पर्य है तुम्हारी बड़ी मां और बहिन सदारानी मिलकर एक ट्रस्ट निर्माण कर रही है, जिससे परिवार के मेधावी बालकों की शिक्षा में सहायता मिला करेगी। "

"यह तो बहुत बढ़िया काम है।"

"और गौरी बहिन शिव भैया से कह रही है कि वे भी पाच-छ लाख का दान कर एक ट्रस्ट बना दे जिससे परिवार के निर्धन सदस्यो की बीमारी मे चिकित्सा का प्रबन्ध हो सके।"

"यह तो सब ठीक है। मैं तो गौरी मौसी को सर्वथा अनपढ मानता था, परन्तु वह तो पढ़े-लिखों के कान भी कतर रही है। हां, एक बात यदि वह कर देती तो दिल्ली-भर में उनका और बड़े लाला जी का नाम रौशन हो जाता।"

"क्या कर देती ?"

"यही कि इस दान-दक्षिणा का प्रभाव-क्षेत्र परिवार से बाहर सब पात्रों तक फैल जाए।"

"तो ऐसा करो। तुम स्वय मिलकर यह शुभ सम्मति उनको दे दो। परन्तु मैं समझता हू कि वह मानेगी नही।"

"क्यो ?"

"मिलकर स्वयं बात कर लो।"

भूषण को कुछ ऐसा समझ आया कि परिवार मे गौरी ही सब गडबड़ मचा रही है। इसमे वह गौरी के अनपढ होने को भी कारण मानता था। दूसरी ओर रूप काहन को बता रहा था, "मेरा प्रेम तो एक लडकी से है। परन्तु कई कारणों से मेरा उससे विवाह नही हो रहा। इससे मैं विवाह के लिए तत्पर नही होता। जब तक कोई अन्य लड़की उससे सुन्दर न मिल जाए, विवाह करने मे रुचि नहीं होती।"

"तो उससे विवाह क्यो नहीं हो रहा ?"

"कई कारण है। सबसे बड़ा कारण है कि उस लड़की के माता-पिता बहुत लोभी है। मै उनका लोभ पूर्ण नही कर सकता।"

"तो लडकी को भगा ले जाओ।"

"वह अभी अल्पवस्यक है।"

रूपकृष्ण ने विवाह न हो सकने का वास्तविक कारण नही बताया। वास्तव मे फिरोज़ा बेगम के मुकदमा हार जाने के उपरान्त किशनो कई बार रूप से मिलने आ चुकी थी और सुमित्रा से विवाह करने के लिए कह चुकी थी। एक-दो बार बनवारीलाल भी आया था। पहले तो रूप टालमटोल करता रहा, परन्तु उपरान्त उसने स्पष्ट कह दिया, "जब से मैने सुना है कि पिता जी का सम्बन्ध किशनो से रहा है, मैने विवाह न करने का निश्चय किया हुआ है।"

"परन्तु तुम तो कहते थे कि तुमको अपने पिता के कथन पर विश्वास नही ?'

"हां, विश्वास तो नही होता। फिर भी सन्देह तो होता है। कुछ भी हो, मेरा चित्त अब सुमित्रा से विवाह के लिए नहीं करता।"

बात समाप्त हो गई। काहन के विवाह के कुछ दिन पश्चात् रूपकृष्ण हौज़ काज़ी में मकान के बनवाने का निरीक्षण कर रहा था कि बनवारीलाल घबड़ाया हुआ उसके पास आया और पूछने लगा, "रूप! सुमित्रा से कब मिले थे ?"

"बहुत देरी हुई है। जहां तक मुझको स्मरण है कि फिरोजा बेगम की उजरदारी के पश्चात् तो मैं आपके घर की ओर भी नही गया। क्यों क्या हुआ है ?"

"वह लापता है। कुछ दिन से वह मां से तुम्हारे विषय मे पूछती रही थी। परसों भी बात हुई थी। किशनो ने उससे पूछा था कि क्यो पूछ रही है ? इसपर उसने पूछा था कि तुमसे विवाह की बात टूट गई है क्या ?

" किशनो ने उत्तर दिया कि तुम अ॰ विवाह करना नही चाहते ।

" 'क्यो ?' उसने पूछ लिया ।

" किशनो ने वास्तविक बाते बताने से छुटकारा पाने के लिए कह दिया, 'उसको कोई तुमसे अच्छी लड़की का सम्बन्ध मिल रहा है ।'

" इसपर वह कुछ उदास दिखाई दी थी । मै उसके लिए कोई उपयुक्त वर की खोज मे था । परन्तु पिछली रात वह अपने कमरे मे सोने गई थी और आज प्रातः वहां नही थी । रात को वह बिस्तर मे सोई तो प्रतीत होती है, परन्तु मै जब प्रात -काल उठा तो उसके कमरे का दरवाजा और मकान का बाहरी द्वार खुले थे ।

" मुझको सन्देह था कि वह भागकर तुम्हारे पास चली गई है ।"

" नही भापा । वह मेरे पास नही आई । अगर आती तो मै उसको अपनी बहिनो के पास रखता और उसको पूर्ण परिस्थिति से अवगत कर देता ।

" परन्तु भापा ! उसका मेल किसी बाहरी आदमी से था क्या ? "

"पिछले एक-दो मास से मैने अपना कारोबार करौलबाग मे आरम्भ कर रखा है । मैं वहां देरी तक रहता था और किशनो भी उसकी देखभाल के लिए वहा आती-जाती रहती थी । वह वहां से जल्द लौट आती थी । परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी अनुपस्थिति मे कोई उससे सम्बन्ध बना उड़ा ले गया है ।"

"भापा ! एक बात तो हुई है । तुम उसके विवाह पर खर्च करने से बच गए हो ।"

"पर किशनो को इसका बहुत शोक है ।"

"शोक तो मुझको भी है, परन्तु मेरी एक बूआ है और उसका कथन है कि भाग्य एवं काल मनुष्य को खीचता हुआ मृत्यु की ओर ले जाता है । काल खीचता है और भाग्य मार्ग को रजित अथवा अरजित करता रहता है ।"

"बकवास है । देखो, मैं यह समझा हू कि यदि मै उसका विवाह तुम्हारे पिता से मिलने के पूर्व कर देता तो ठीक था । किशनो ने भूल यह की कि वह एक रडी की लड़की को एक भले परिवार की लड़की की भाति विवाहिता चाहती थी । मैं उसके लिए तुम्हारे माता-पिता को देखने चल पडा । यह तो अब समझ आया है कि वह तुमसे विवाह न हो सकने की बात सुन निराश हो किसी अन्य के साथ भाग गई है । एक बार यह विवाह हो जाता तो फिर यह घटना न घटती ।"

"परन्तु भापा ! तुमने जान-बूझकर तो कुछ किया नही था । तुम तो उसके

भले का ही विचार कर रहे थे। हुआ वही जो उसके भाग्य मे था। कौन जाने यह सब उसके भले के लिए ही हुआ है।"

बनवारीलाल सिर लटकाए चला गया। बनवारीलाल का मन कहता था कि रूपकृष्ण सत्य बात नही बता रहा। जिस शान्ति और अलिप्तता से उसने बात की थी और इस घटना की मनोवैज्ञानिक विवेचना करनी आरम्भ कर दी थी, इससे बनवारीलाल का विचार था कि रूप को उससे अधिक ज्ञात है जितना वह प्रकट कर रहा है। इसपर भी कुछ निश्चयात्मक बात नही जान सका।

उस दिन रूप मकान से फूफा गोवर्धनलाल के मकान पर जा पहुचा। उसके विस्मय का ठिकाना नही रहा जब उसने गौरी से राजेश्वरी को घुल-मिलकर बातें करते देखा। आज वह कई दिनो के उपरान्त अपने फूफा से मिलने आया था। वह अपने कारोबार में लिप्त हो रहा था। अजमेरी गेट के बाहर उसने ब्राडर्थ रोड पर एक अन्य टूटा हुआ मकान मोल ले लिया था। उसकी रजिस्ट्री करवाने, टूटे के स्थान पर नया बनवाने की स्वीकृति मे वह भाग-दौड कर रहा था। इसमे उसको बूआ तथा फूफा से मिलने का अवकाश नही मिला था। आज वह सायंकाल की चाय के समय पर पहुचा था। उसका विचार था कि फूफा जी भी वहा मिलेंगे, परन्तु वे वहा नही थे। गौरी ने रूप को आया देखा तो कह दिया, "रूप ! बैठो। तुम्हारे फूफा आने ही वाले है।" वह बैठक मे एक ओर बैठ गया। बैठक के दूसरे कोने मे बैठी गौरी राजेश्वरी से बाते कर रही थी। रूप मन मे विस्मय कर रहा था कि वह वहां किस अर्थ से आई है और क्या फुस-फुस बाते हो रही हैं।

अभी उनका वार्तालाप समाप्त नहीं हुआ था कि गोवर्धनलाल आ पहुचा। "कहा गए थे आप ?"

"हमारा विधवा आश्रम वाले मकान को मोल ले लेने का निश्चय हुआ था। मैं उसके मालिक से बातचीत करने गया था। मकान का मूल्य तो तय हो गया है परन्तु उसका एक लड़का है और मकान पुरखो की सम्पत्ति मे से है। इस कारण कुछ झगड़े वाली बात है। अब उसके लड़के को मिलकर दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर कराने का काम रह गया है।"

"कितने में सौदा हुआ है ?"

"दस हजार रुपये में।"

"तो फिर इसको नया बनवाइएगा ?"

"अभी निकट भविष्य मे तो नही।"

"मैंने एक मकान आडर्थ रोड पर बनवाने का निश्चय कर लिया है।"

"वह भी बेचने के लिए ही ?"

"जी।"

"तुम्हारा यह हौज़काजी वाला मकान तो पूरा हो रहा है ?"

"जी ! उसके ग्राहक अभी आने लगे है।"

"भाड़े पर लेने वाले अथवा खरीदने वाले ?"

"दोनो प्रकार के ग्राहक हैं।"

"तो क्या विचार है ?"

"किराया तो लगभग दस-बारह प्रतिशत ब्याज देगा। मकान बेचने में तो एकदम बीस से पचीस प्रतिशत लाभ है।"

"तो क्या विचार है ?"

"अभी निर्णय नही किया।"

" मेरा विचार है, मकान बेच दो। इसको व्यवसाय के रूप में करो। मकान बनवाकर बेचते जाओ। देखो, मैं तुमको एक बात बताता हूं। भूषण कल मिला था और बता रहा था कि यूरोप में भयकर युद्ध होने वाला है। उस युद्ध में इगलैंड भाग लेगा तथा इगलैण्ड हारेगा, इंगलैण्ड का विरोधी पक्ष विजयी होगा। तब उसका विचार है हिन्दुस्तान स्वतन्त्र होगा। हिन्दुस्तान अपने पांव पर खड़ा नही हो सकेगा और इस जगह रूस जैसी व्यवस्था कायम होगी। उस समय मकान इत्यादि सब सम्पत्ति सरकार अपने अधीन कर लेगी। वह कह रहा था कि इस अवस्था मे बहुत लम्बी-लम्बी जायदादे रह नही सकेगी।

" इसलिए मै कहता हू नकद की बहुत महिमा होगी। नकद भी नोटों के रूप में नहीं, प्रत्युत सोने के रूप मे।"

रूपकृष्ण को बात समझ आ रही थी। इतना तो वह भी समझ गया था कि रूस जैसी अर्थ-व्यवस्था में निजी सम्पत्ति नही रखी जा सकेगी और उसको फूफा के सुझाव का अर्थ यह समझ आया था कि सोने के रूप में धन चोरी से रखना होगा। उसे फूफा जैसे धर्मात्मा आदमी के मुख से यह बात सुन विस्मय हुआ था। इससे उसने पूछ लिया, "तो यह विधि भी भूषण ने बताई है ?"

"कौन सी विधि ?"

"यह सोने के रूप में सम्पत्ति रखने की?"

"नहीं। यह मेरी सम्मति है।"

"पर फूफा जी! यह तो देश के साथ चोरी हो जाएगी।"

"देश के साथ नही रूप! हा, सरकार के साथ अवश्य चोरी हो जाएगी। सरकार और देश में अन्तर समझते हो?"

"परन्तु सरकार ही तो देश का भला-बुरा करने वाली होगी?"

"देखो! कुछ तो रूस के विषय मे मैने स्वयं समाचारपत्रों मे पढा है, कुछ भूषण ने बताया है। यदि वैसी व्यवस्था यहां हुई तो वह सरकार देश का प्रतीक नही होगी।

"देश का अर्थ है देश के रहने वाले। यदि स्वतन्त्र रूप से राय ली जाए तो कोई भी व्यक्ति, जो बुद्धि रखता है, अपने को पूर्ण रूप से सरकार के आश्रित कर देना नही चाहेगा। यह मानव-प्रकृति के विरुद्ध है। कुछ लोग जो सर्वथा बुद्धिहीन और अशक्त होगे, वे ही इस प्रकार की व्यवस्था को पसन्द करेगे। इन मूर्खों का संगठन वे बनाएगे जो इस प्रकार की व्यवस्था से राज्याधिकार पाने की आशा रखेगे। ये सम्भवत: राज्याधिकारी उन मूर्खों के सगठन के बल से बहुसंख्यक देशवासियो को अपना दास बनाकर सुख भोग करेगे।"

"यह तो दास बनाने वालो के विचार करने की बात है कि वे कितना सरकार का अधिकार मानते हैं। उतना उसको देना ही चाहिए। परन्तु उसके अतिरिक्त अपने लिए सुरक्षित करने का अधिकार उनका है। यही मैं तुमको करने के लिए कह रहा हू।"

"परन्तु। कितना सरकार का है और कितना एक व्यक्ति का है, यही तो विवादास्पद बात है।"

"इसका निर्णय किया जा सकता है। यदि धींगा-मुश्ती से नहीं, अपितु विचार विनिमय से करेगे, तो देश के विद्वान लोग जो निश्चय करेगे वह सबको मान्य होना चाहिए। परन्तु यदि सरकारी अधिकारी धोखाधड़ी से अथवा सेना से या देश के गुडों के बल पर कोई बात मनवानी चाहेगे तो मैं समझता हू कि अन्य व्यक्तियों को भी अधिकार है कि चोरी करे अथवा अपने जैसे भले लोगों का संगठन बना अपने विचार से अपने अधिकार की रक्षा करे। शठे शाठ्य समाचरेत।"

"परन्तु सरकार के विरोध में यह हो सकेगा क्या?"

"नहीं हो सकेगा तो इस कारण कि भले लोग मूर्खों से बढ़कर मूर्ख होंगे। यदि लोग आत्मविश्वास और ईश्वर मे आस्था का परित्याग कर बैठेंगे तो इस पृथ्वी के भगवान उनको कष्ट देंगे ही। पाठशालाओ और विद्यालयो में नास्तिकता की शिक्षा से व्यक्ति मे भीरुता एव विवेकहीनता आ रही है। ये लोग तो उस शासनपद्धति का विरोध कर नही सकेंगे। हृदय से उस सरकार की नीति को अन्याय एवं अत्याचारपूर्ण मानते हुए भी उनको उसका विरोध और प्रतिकार करने का साहस नही होगा। इसपर भी कुछ तो श्रेष्ठ जन सदैव रहते हैं और रहेंगे। उनको, जब वे प्रत्यक्ष रूप मे किसी अन्याय का विरोध न कर सकें, तो चोरी करने का अधिकार है।"

"परन्तु भापा! कितना सरकार का अधिकार है जो स्वेच्छा से सरकार को दे ही देना चाहिए।"

"मै तो इस समस्या का हल इस प्रकार समझता हू। प्राकृतिक सम्पत्ति तो परमात्मा की देन है। भूमि, भूमि में उत्पन्न होने वाले वन, वनस्पति, भूमि के गर्भ में खनिज पदार्थ इत्यादि एवं मां के गर्भ से उत्पन्न होने वाले मनुष्य किसी भी मानव-प्रयास अथवा सरकारी प्रयास का फल नहीं। ये मनुष्य और प्राणी-मात्र तो ईश्वर की देन हैं। इनको प्राप्त कर और इनका प्रयोग करने के योग्य बनाने मे मानव-परिश्रम ही सबल है। प्राकृतिक सम्पदा और मानव-पराक्रम किसी भी सरकार ने न कभी उत्पन्न किया है और न कर सकती है।

"अतः परिश्रम द्वारा प्राकृतिक साधनो से उपलब्ध पदार्थ परिश्रम करने वाले के हैं। सरकार तो यह देखने के लिए निर्मित हुई है कि वह देखे कि एक के परिश्रम का फल कोई अनधिकारी न ले जाए। ऐसा करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपने परिश्रम के फल मे से एक निश्चित भाग सरकार को देता है। यह भाग कितना हो? इसका निश्चय समय-समय की आवश्यकतानुसार होता है। कुछ भी परिश्रम का मुख्य फल परिश्रम करने वाले का है। व्यवस्था रखने वाले का भाग परिश्रम करने वाले से अधिक नही हो सकता। यदि शासन मुख्य भाग ले जाएगा तो वह बन्दर-बाट कहलाएगा।"

"परन्तु सरकार परिश्रम का अधिकांश लेकर क्या करेगी? क्या यह विचारणीय नही है? यदि शासन अपने कार्यो का विस्तार कर दे, यथा शिक्षा, चिकित्सा, सड़कों का निर्माण, विद्युत्, पानी इत्यादि तब तो सरकार का अंश

बढाया जा सकता है। यदि मनुष्य की सब आवश्यकताएं सरकार ही पूरी कर दे, यथा मकान, भोजन, वस्त्र, यौन-तृप्ति इत्यादि का सब प्रबन्ध सरकार कर दे तो फिर शत-प्रतिशत की स्वामी सरकार क्यो नही हो सकती ?"

"तुमसे अधिक अधिकार और योग्यता से इस सरकार की सहायता भूषण ने की थी। मैने पूछा, 'काहन की पत्नी को देखा है ? कैसी लगी है वह तुमको…'

" उसका कथन था, 'बहुत सुन्दर है।'

" 'उसकी तुलना मे राजेश्वरी कैसी है ?' मेरा दूसरा प्रश्न था।

' बोला, 'फीकी-फीकी है।'

" 'तो वह तुमको मिलनी चाहिए अथवा काहन को ?'

" वह बोला, 'काहन को तो नही मिलनी चाहिए। वह मुझसे कम पढ़ा-लिखा है, कम सुन्दर है और कम आय करने वाला व्यक्ति है।'

" 'तो ऐसा करो।' मैंने कह दिया, 'उसकी पत्नी से बात करके देखो, वह क्या चाहती है ?'

"वह हसकर बताने लगा, 'कर चुका हू और मुख पर गरमागरम चपत खा आया हू।'

" 'तो इस विषय मे सरकार की सहायता से उसको पाना चाहोगे क्या ?

" 'यदि यह अधिकार तुमने सरकार को दिया तो वह किसी मत्री की रखेल बना ली जाएगी और तुम तथा काहन मुख देखते रह जाओगे, साथ ही राम की साली के साथ भारी अन्याय हो जाएगा।'

" 'मै समझता हू कि वह अति प्रसन्न होगी, काहन जैसे मूर्ख से छुटकारा पा किसी उच्च राज्याधिकारी की पत्नी बन जाएगी।'

" 'यह तो उसने तुम्हारे मुख पर चपत लगाकर सिद्ध कर दिया कि वह अपने पतिव्रत धर्म को तुम्हारे रूप, बुद्धि और धन से अधिक मूल्यवान समझती है।'

" वह मूर्ख है। उसके माता-पिता के घर के सस्कारो ने उसकी विचारशक्ति को मलिन कर रखा हैं।

" मैंने उससे अधिक बात नही की। कारण यह है कि दुर्गा की विचारशक्ति मलिन है अथवा भूषण की, एक विवादास्पद बात है। इस विषय पर मैंने उसको शिक्षा देने का यत्न नही किया। मैंने लाभ भी नही समझा। वह मेरी बात को मानता भी नहीं।"

राजेश्वरी फूफा जी तथा रूप को नमस्कार कर गई तो चाय की व्यवस्था होने लगी।

११

राजेश्वरी के गौरी से मिलने आने का कारण उस समय ज्ञात नहीं हुआ। रूप-कृष्ण ने पूछा भी नही। इसपर भी वह विस्मय करता रहा कि क्या काम हो सकता है राजेश्वरी का फूफी से। उसने केवल यह पूछा था, 'राजेश्वरी भाभी पहले भी आया करती थी ?"

"कुछ दिनों से लगभग नित्य ही आ रही है।"

"बूआ! हमारे घर में यह और भूषण अल्ट्रा मॉडर्न (अति अर्वाचीन) विचार के प्राणी है। कुछ इनको भी शिक्षा दिया करो।"

"तुम भी तो अति पतित प्रकृति के व्यक्ति थे!"

"बूआ! दोनो में अन्तर है। मै जुआरी था और बस। जुआ खेलना तो बहुत ही प्राचीन व्यवहार है। वह अच्छा है या बुरा है, इसको मै नही जानता था। मुझको यह विदित था कि धर्मपुत्र युधिष्ठिर न केवल जुआ खेलते थे, अपितु जुए खेलने का ढग सिखाने का कार्य भी करते थे।"

"इसपर भी यह अच्छा कार्य नही था और युधिष्ठिर को जुआ खेलने का फल मिला था।"

"यह तो ठीक है। इसी कारण मैने जुआ खेलना त्याग दिया है। परन्तु अर्वाचीन मस्तिष्क की अवस्था तो असाध्य रोग है। यह छूटेगा नही।"

"तो इसका फल भी मिलेगा। प्रत्येक बात अपने समय पर फल लाती है। इस अर्वाचीन के फल को परिपक्व होने मे एक लम्बा समय लगेगा।"

इसके अनन्तर रूपकृष्ण पूछ नही सका और गौरी ने बताया नही। परन्तु जब कोई वस्तु गली-सड़ी हो तो वह चिरकाल तक छुपाकर रखी नही जा सकती। उक्त घटना को हुए तीन मास से ऊपर व्यतीत हो चुके थे। राजेश्वरी अब सातवे मास में जा रही थी और वह अपनी मां के घर मे प्रसव के हेतु गई हुई थीं। यह पूर्व से भिन्न बात थी। पूर्व दो बच्चों के होने के समय वह अपनी सास की देख-रेख मे रही थी। इस बार वह प्रसव से तीन मास पूर्व ही अपने पिता की कोठी में

जाकर रहने लगी थी।

रूप को इसका ज्ञान तब हुआ जब वह अपने विवाह का निमन्त्रण देने अपने सम्बन्धियो के पास जा रहा था। वह विष्णी बूआ और प्रतापकृष्ण को सपरिवार निमन्त्रण देने पहुचा तो दो बातों का पता चला। एक तो यह कि राजेश्वरी अपनी मा के घर प्रसव करने गई हुई थी। और दूसरे, भूषण अब घर नही आता। वह भी कदाचित् अपनी पत्नी के साथ वहा ही रहता है।

"कदाचित् का क्या अर्थ, बूआ ?"

"यह कि हमको ठीक-ठीक विदित नहीं। हमने सुना है कि वह कनाट प्लेस में एक भाड़े के मकान मे रहता है और हमको वह यह कहता रहा है कि वह राजपुरा रोड पर बैरिस्टर साहब के मकान पर रहता है। मैं पिछले सप्ताह राजेश्वरी से मिलने गई थी और मैने भूषण के विषय मे पूछा था। वह आँखो मे आसू भरती हुई चुप रही थी। उसने किसी प्रकार का उत्तर नहीं दिया।"

रूप ने कह दिया, "तो भाभी को निमन्त्रण देने वहां जाऊ ?"

"कहो तो मैं भी जा सकती हूं। परन्तु मेरा विचार है कि तुम ही जाओ और यदि वह भूषण का ठीक-ठीक पता बता दे तो उसको भी आमन्त्रित करने वहा चले जाओ और फिर पति-पत्नी मे सुलह करवाने का यत्न कर दो।"

रूपकृष्ण बात इतनी बिगड़ जाएगी, अनुमान नही लगा सका था। वह भूषण के मस्तिष्क की बनावट मे खराबी मानता था। अन्यथा एक डाक्टर की उपाधि से विभूषित व्यक्ति भला राजेश्वरी जैसी पत्नी से कैसे लड़ सकता है ?

वह राजपुरा रोड पर श्री रघुनाथसहाय की कोठी पर जा पहुचा। वह अपने साथ बैरिस्टर साहब के लिए सपरिवार बरात में सम्मिलित होने का निमंत्रण लेकर गया था।

जब भूषण वहां पहुचा तो बैरिस्टर साहब क्लब मे जाने के लिए तैयार हो रहे थे। औपचारिक नमस्कार के उपरान्त रूपकृष्ण ने बैरिस्टर साहब के लिए निमन्त्रण उन्हे दे दिया। बैरिस्टर साहब ने पढ़ा और निमंत्रण-पत्र के लिए शिवकुमार का नाम पढ़ पूछने लगा, "यह रूपकृष्ण कौन है ?"

"मै हू।"

"ओह ! तुम्हारा शिवकुमार से क्या सम्बन्ध है ?"

"वे मेरे ताया जी हैं।"

"सगे ?"

"जी।"

"अच्छी बात है ।"

"मेरा निवेदन है कि आप अवश्य आइएगा। आपके आने से तथा मेरी बरात मे सम्मिलित होने से मै अपने को बहुत ही सम्मानित समझूगा।"

"क्या सम्मान होगा मेरे जाने से ?"

"इसका अनुमान आप नहीं लगा सकते। मैं, मेरे पिता तथा अन्य सम्बन्धी इसको ऐसा समझते है। इसके अतिरिक्त मेरे ससुर आपको मेरे साथ देखकर बहुत प्रसन्न होगे।"

"किनके घर बरात जा रही है ?"

"ला० लक्ष्मीचन्द जी मिल वाले है। कर्जन रोड पर बरात जाएगी। बरात चढ़ेगी मिंटो क्लब से।"

"परन्तु इतनी बडी मुर्गी को कैसे फास लिया है तुमने ?"

"यह तो ईश्वर की दया से ही हो सका है। ईश्वर कैसे अपने प्रियजनो को लाभ पहुंचाता है, कह नही सकते। इसपर भी यह निश्चय है कि जिसपर उसके आशीर्वाद का हाथ पहुच जाता है, वह भवसागर पार कर जाता है।"

"लक्ष्मीचन्द को मै जानता हू। मेरे क्लब के सदस्य है और मुझसे भली भाति परिचित हैं। भाई, मै चलूगा। कम से कम दावत का मजा आ जाएगा।"

रूपकृष्ण ने हाथ जोड़ नमस्ते की और कहने लगा "माता जी को भी साथ लाइएगा। राजेश्वरी भाभी को तो मै स्वय निमत्रण देने आया हू।"

राजेश्वरी का नाम सुन बैरिस्टर साहब गम्भीर हो गए, रूपकृष्ण समझ रहा था कि कुछ दाल में काला है इससे वह बैरिस्टर साहब के कथन की प्रतीक्षा करता रहा। उन्होने विचारकर कहा, "अच्छी बात है, उससे मिल लो।"

रूपकृष्ण कोठी के चपरासी की ओर घूमा तो रघुनाथसहाय टैनिस का बल्ला घुमाते हुए मोटर की ओर चले गए।

चपरासी राजेश्वरी को बुलाकर लाया तो वह रूपकृष्ण को ड्राइग रूम मे ले गई। वहां बैठ उसने चाय-पानी के लिए पूछ लिया। रूपकृष्ण ने बताया कि वह घर से चाय पीकर ही चला है। इसपर श्रीमती तथा श्रीमान भूषणकुमार के लिए अपने विवाह का निमंत्रण देकर कहने लगा, "मै तो स्वय आपको आमन्त्रित करने

आया हूं।"

'बहुत-बहुत बधाई है रूप जी ! आखिर आपको भी कोई मिल गई है !"

"हां भाभी। बडो के आशीर्वाद से मेरा भी घर बनने जा रहा है। भाभी, उनको मेरी ओर से विनम्र निवेदन कर देना कि अवश्य आए।"

"किनको ?"

"राजकुमार के पिता को। और किसको !"

"यहां कहां है वे। उनके दर्शन किए आज तीन मास हो गए हैं।"

"सत्य ? तो कहां हैं वे ?"

"मैं उनकी चौकीदारी नहीं करती।"

रूपकृष्ण विस्मय मे मुख देखता रह गया। उक्त वाक्य मे मन की अति कटुता प्रकट होती थी। रूप ने राजेश्वरी के मुख पर देखा तो उसकी आखे आसुओ से भर गई थी। उसने अपने साडी के आचल से आखो को पोछते हुए कहा, "रूप भैया ! अब तुम समझ सकते हो कि मै आ नही सकूगी।"

"क्यो ?"

"यह निमंत्रण दोनों का है। और मै यहा अकेली रहती हूं और नही जानती कि वे कहा है।"

"तो भाभी ! तुम तो आना। तुम यह समझ लेना कि वे कहीं विदेश गए हैं, इस कारण तुम अकेली आ रही हो।"

"तो उनको आमंत्रित करने नही जा रहे हो ?"

"उसको ढूंढूगा और कही मिल गया तो निमत्रण-पत्र का उल्लेख कर दूगा कि वह यहा भाभी के पास रखा है। मै कल कालेज पहुच कह दूगा। इसपर भी यदि वह नही आया तो यही समझ लूगा कि वह कही विदेश में है। पर भाभी, तुम तो यहा हो। तुमको आना चाहिए।"

"मैं आ सकती हू। परन्तु कही वे भी आ गए तो वे नाराज भी हो सकते हैं।"

"किससे ? तुमसे अथवा हमसे ?"

"यदि कोई नौर्मल (सामान्य) प्रकृति का व्यक्ति हो तो उसके विषय में अनुमान लगाया जा सकता है कि वह अमुक परिस्थिति मे क्या करेगा और क्या नहीं करेगा। वे सामान्य आचार-विचार नही रखते। इससे कौन कह सकता है

कि वे कि किससे लड़ेगे अथवा नही लड़ेगे ?"

"तो भाभी, सुन लो। मैं तो अपने को सामान्य स्वभाव वाला समझता हू। इस कारण मै बताता हू कि उसके झगडे की प्रतिक्रिया मेरे मन में क्या होगी। यदि वह तुमसे झगडा करेगा तो उसको धक्के दे-देकर बाहर निकलवा दूगा। और यदि मुझसे या घर वालो से झगडा करेगा तो उसकी वह खिल्ली उड़ाऊगा कि वह अपने-आप ही वहा से भाग जाएगा।"

"इसपर भी रूप जी ! चित्त डरता है। मेरे लिए भाई-भाई लड़ पड़ें, कुछ अच्छी वात प्रतीत नही होती।"

"भाभी ! तुमको डरने की आवश्यकता नही। उसने एक खराबी की है और उसको उस खराबी के प्रकट होने से डरना चाहिए।"

"अच्छा, ऐसा करना। अपनी बूआ को कह देना कि वे मुझको आकर ले जाएं।"

"कह दूगा। वे आ जाएगी।'

रूप यही निमन्त्रण-पत्र काहन और उसकी पत्नी को भी देने गया। काहन की पत्नी रूप की मौसी थी। इससे उसका वहा आना-जाना बना था। हंसी-ठट्ठे मे रूप काहन को मौसा जी के नाम से सम्बोधन किया करता था और वह इसको बेटा जी कहकर स्मरण किया करता था। अत. जब रूप उसके क्वार्टर मे पहुंचा और काहन ने उसको टैक्सी से उतर क्वार्टर मे आते देखा तो बाहर आ उसका स्वागत करने लगा।

"आओ रूप बेटा ! कैसे आना हुआ है ?"

"मौसा जी। आप और मौसी के आशीर्वाद की आवश्यकता पड़ गई है।"

"आशीर्वाद की ? तो कुछ साहस का काम करने जा रहे हो ?"

"हा ! विवाह करने।"

"ओह ! आओ ! आओ ! बेटा रूप !" काहन हंसता हुआ उसको भीतर ले गया। उसको क्वार्टर की बैठक मे बैठाकर काहन ने अपनी पत्नी को आवाज दे दी। "दुर्गारानी ! बाहर तुम्हारा भांजा आया है।"

दुर्गा ने रूप की आवाज सुन ली थी। वह पिछले कमरे में वस्त्र बदल रही थी और स्वय ही बाहर आने वाली थी। वह आई तो उसने रूप को नमस्कार कर पूछ

लिया, "रूप जी ! विवाह की तिथि निश्चय हो गई है क्या ?"

"हा दुर्गा जी ! उसीके सम्बन्ध मे आया हू ।" रूप ने निमन्त्रण-पत्र सम्मुख रखते हुए कहा, "यह देने को ही आया हूं ।"

"कल बहिन रोहिणी आई थी और कह रही थी कि तुम स्वय आओगे ।"

"दुर्गा जी ! आप तो उस दिन प्रात काल ही घर पर आ जाना । काहन भापा तो बरात के समय मिटो क्लब मे आ जाएगे । तुम माता जी के साथ यहा आ सकोगी ?"

"मैं यह विचार करती हूं कि यदि हम सब घर की औरते वहा एकत्रित हो गईं तो तुम्हारे घर मे बैठने को जगह भी नही होगी ।"

"दुर्गा मौसी ! और किसीके लिए जगह हो चाहे न हो, पर तुम्हारे लिए तो होगी । तुम मां की छोटी बहिन हो न ? तुम आना । वैसे मैने अपने पडोसियो का मकान खाली करवा लिया है। आप सबके बैठने तथा सोने की भी व्यवस्था होगी। घर की औरते वहा आएगी और पुरुषवर्ग सीधे क्लब मे आएगे । ठीक साढ़े छः बजे बरात चढ़ेगी और सात बजे कर्जन रोड पर पहुचेगी ।"

"राजेश्वरी बहिन आएगी क्या ?"

"हा ! पर किसलिए पूछ रही हो ?"

"वैसे ही । भूषण ने उससे दगा किया है न ?"

"क्या दगा किया है ?"

"तो तुमको ज्ञात नही ?"

"बस इतना ही विदित है कि वह तीन मास से घर नही गया ।"

"उसने अपना नया विवाह कर लिया है ।"

"अच्छा ! कहां रहता है वह ?"

"कनाट सरकस में, फायर ब्रिगेड के सामने एक फ्लैट पर रहता है ।"

"क्या नम्बर है मकान का ?"

"११०/६ है ।"

"तो आपसे वह मिलता रहता है ?"

"यहां तो वह आ नही सकता । हां, इनसे वह मिलता रहता है । उसकी नवीन पत्नी तो यहां आना चाहती है, परन्तु इन्होने उसको कभी निमन्त्रण नहीं दिया । वे प्रायः सायंकाल कनाट प्लेस के पार्क में घूमते मिल जाते है ।"

"मैं उसको भी आमन्त्रित करने के लिए जाना चाहता हूं। हां! देखो, वह आता है या नही।"

"तो उसकी नवीन पत्नी को भी निमन्त्रण दोगे?"

"यदि विधिवत् विवाह हो गया है तो देना ही पड़ेगा।"

"विधिवत् का क्या अर्थ?"

"हिन्दू रीति से अथवा कचहरी में जाकर।"

इसपर काहन ने कह दिया, "हिन्दू रीति-रिवाज से तो हुआ नही। घर में किसीको भी बुलाया नहीं गया और कोर्ट में हो सकता नहीं। पहली पत्नी के रहते तो उस विधि से विवाह हो सकता नही।"

"तब तो समस्या विकट है। इसपर भी मैं उससे मिलने जा रहा हू।"

१२

रूपकृष्ण भूषण के मकान का नम्बर ढूढता हुआ वहा पहुचा तो वह अपनी पत्नी के साथ मकान से उतरता दिखाई पड गया। वह भूषण की पत्नी को देख स्तब्ध खडा रह गया। भूषण की पत्नी किशनो की लडकी सुमित्रा थी। सुमित्रा ने भी रूप को सीढियो के नीचे खडे देखा तो ठिठककर खडी रह गई। भूषण आगे-आगे उतर रहा था। वह उतरता चला आया। जब तक वह सीढिया उतर भूमि पर पहुचा, रूप अपने-आपको सतर्क कर चुका था।

"भूषण भापा! मैं तुमसे मिलने आया हू परन्तु ··।"

सुमित्रा अभी भी दीवार का आश्रय लिए खडी थी। इस समय तक भूषण को भी ज्ञान हो गया था कि उसकी पत्नी उसके साथ नही, पीछे ही रह गई है। इस समय दोनों सीढियों के ऊपर की ओर जहा सुमित्रा खड़ी थी, देख रहे थे, "सुमित्रा! आओ न!" भूषण ने आवाज दे दी।

सुमित्रा को भी विदित हो गया था कि रूप और उसका पति परस्पर परिचित हैं। इस कारण उसने वही सीढियों मे बैठते हुए कहा, "मेरी तबीयत ठीक नहीं। मैं आज नही आऊंगी।"

भूषण सीढियों पर वापस चढ गया। रूप उसके पीछे-पीछे था। दोनों सुमित्रा के समीप जाकर खड़े हुए तो भूषण ने सुमित्रा का परिचय करा दिया, "रूप! यह

मेरी दूसरी पत्नी सुमित्रादेवी है।"

"ओह ! ठीक है। समझ गया। कुछ कष्ट है सुमित्रा ? यहां क्यों बैठ गई हो ?"

भूषण को कुछ समझ आया कि रूप सुमित्रा से जान-पहचान रखता है। सुमित्रा का मुख पीतवर्ण हो रहा था। उसने बहुत ही धीमी आवाज़ मे कहा, "हम सैर करने जा रहे थे परन्तु मुझको कुछ हो गया है। कह नही सकती कि क्या हुआ है। टांगों में बिलकुल ताकत नही है।"

भूषण ने कह दिया, "तो ठीक है। चलो लौट चलो। ऊपर चलकर आराम करो। रूपकृष्ण मेरा भाई है। मामा का लड़का है। आओ !" भूषण ने आश्रय देने के लिए हाथ बढ़ा दिया।

सुमित्रा ने बाह का आश्रय लिया। वह उठी और धीरे-धीरे ऊपर को चल पडी। रूप उसके पीछे-पीछे था। वह सुमित्रा के घर से भाग आने के विषय में भारी चिन्ता अनुभव करने लगा था।

जब घर की बैठक मे जाकर बैठे तो रूप ने भूषण से कहा, "भैया ! विवाह किया है अथवा नही ?"

"हमारा नैचुरल ढग से विवाह हो चुका है।"

"विवाह तो नैचुरल होता ही नही। विवाह की विधि तो कृत्रिम है। नैचुरल तो समागम होता है। इसपर भी विवाह का विधिवत् होना समाज ने नियत किया है।"

" मैं इसमें समाज के हस्तक्षेप को अनधिकार मानता हूं।"

"भूषण भैया ! तुम तो समाजवादी थे। तुमसे ही समाज की अवहेलना तो समझ नही आ रही।"

"तुम हमारी बात छोड़ो। बताओ, कहां से पता पा गए हो मेरा ?"

" राजपुरा रोड पर मैं अपने विवाह का निमन्त्रण देने गया था। निमन्त्रण-पत्र दे आया हू। मैं तुमको और तुम्हारी पत्नी को बरात में सम्मिलित होने के लिए कह आया हूं। यह तो काहन से मालूम हुआ है कि तुम यहां रहते हो। मन मे विचार आया कि तुमको कह दूं कि तुम्हारा निमन्त्रण-पत्र राजपुरा रोड पर रखा है।

" परन्तु यहां तो सुमित्रा को देख चकित ही रह गया हूं।"

"वहां निमत्रण-पत्र किसको दे आए हो ?"

"राजेश्वरी भाभी को।"

"वह मिली थी ?"

"हां।"

"कुछ कहती थी ?"

"यही कि जब तुम घर पर आओगे तो मेरा सदेश तुमको दे दिया जाएगा।"

"तो उसने यह नही बताया कि मैं अब उस घर में नही जाता ?"

"उसको कदाचित् तुम्हारे इस घर का और सुमित्रा के यहां होने का ज्ञान नहीं। इस विषय में उसने कुछ नहीं बताया।"

भूषण गम्भीर हो मुख देखता रह गया। वह विचार कर रहा था कि क्या कहे। एकाएक उसके मन में एक विचार आया। उसने रूप से पूछ लिया, "अच्छा रूप! अब तो तुम सब बाते जान गए हो। यदि तुम मुझको अपने विवाह पर बुलाना चाहते हो, तो मुझको मेरी नई पत्नी-सहित पृथक् निमंत्रण दे दो। राजेश्वरी वाला निमत्रण तो न मुझको मिलेगा और न ही मैं लेने जाऊगा।"

"भूषण भापा! तुमको तो मै निमत्रण दे सकता हू, परन्तु सुमित्रा को कैसे दूं! तुम्हारा इससे विवाह तो हुआ नही।"

"तुम इसको विवाह नही मानते परन्तु मैं तो विवाह मानता हूं।"

"तुम मान सकते नही। सुमित्रा अभी अल्पवयस्क है। उसके माता-पिता की स्वीकृति प्राप्त कर ली है क्या ?"

"हां। बहुत झगड़ा करना पड़ा है। परन्तु वे मान गए हैं।"

"पता करूंगा।"

"तुम इसको कैसे जानते हो ?"

"मैं इसके माता-पिता को जानता हूं। जिस दिन तुम इसको घर से भगाकर लाए थे, लाला बनवारीलाल मुझसे मालूम करने आया था। इसीसे पूछ रहा हू कि उनकी स्वीकृति ली है अथवा नहीं ?"

"इसकी मां यहां आकर रहना चाहती थी। परन्तु सुमित्रा ने पसन्द नहीं किया। आखिर वह मान गई है। अब वह कभी-कभी मिलने ही आती है।"

"इस समय मेरे पास छपे निमंत्रण-पत्र तो है नहीं मौखिक रूप में तुम दोनों को आमंत्रित करता हू। सुमित्रा भाभी! तुम निस्संकोच आ सकती हो। बरात मिंटो क्लब से साढे छः बजे चलेगी।"

"हम ग्राएगे रूप ! तुम्हारी पत्नी के लिए कुछ भेट भी लाएगे।"

"तो उसका धन्यवाद मेरी पत्नी देगी।"

"बरात कहां जाएगी ?"

"कर्जन रोड, लाला लक्ष्मीचन्द की कोठी पर।"

"किनकी लड़की है ?"

"लाला जी की ग्रपनी लड़की है।"

"क्या विशेषता देखी है लाला जी ने तुममे ?"

"यह तो देखने वाले ही बता सकते है। हा, एक बात हुई है। बड़ी मां इनके घर गई थी ग्रौर बाबा का नाम जादू कर गया प्रतीत होता है।"

"पर ग्रपने बाबा के साथ तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ? कही भूठ-मूठ बताकर चार सौ बीसी तो नही कर रहे ?"

"नही भूषण। मेरे स्वसुर मुझको देखने ग्राए थे ग्रौर फिर ग्रपनी मोटर में बैठा मुझको ग्रपनी कोठी मे ले गए थे। मैने स्वय उनको ग्रपनी ग्रार्थिक स्थिति बता दी थी। वे कहने लगे, 'सुलक्षणमल के पोते हो ग्रौर व्यापार मे लगे हुए हो। यदि ग्रपने बाबा की व्यावसायिक प्रतिभा का एक ग्रश भी तुम्हारे मे हुग्रा तो भविष्य उज्वल है।'

"मैंने बताया, 'ग्रजमेरी गेट के मकान पर मैंने साढ़े दस हज़ार व्यय किया ग्रौर बीस हजार पर बेच दिया है।'

"वे पूछने लगे, 'कितने महीने मे काम समाप्त किया है ?'

"'पाच महीने मे।'

"'ठीक है। मतलब हुग्रा कि तुम ग्रभी भी डेढ हजार रुपये से ग्रधिक प्रति मास पैदा कर सकते हो।'

"मैंने बताया कि ब्राडर्थ रोड पर एक ग्रौर मकान बनवा रहा हूं। वह भी बेचने के लिए है।

"मेरे इस प्रकार बताने पर उन्होंने मुझको उसी दिन पाच मुहरे देकर बात पक्की कर दी। बातों ही बातों में उन्होने कह दिया, 'व्यापार तीन टागों पर चलता है—एक पूंजी, दूसरे व्यावसायिक बुद्धि ग्रौर तीसरे काल।'

"मेरे में दो बाते तो हैं। तीसरी को एकत्रित कर रहा हूं।"

भूषण ने पूछ लिया, "क्या है ग्रौर क्या एकत्रित कर रहे हो ?"

"व्यावसायिक बुद्धि तो है। काल के मूल्य का ज्ञान भी है और पूजी थोड़ी है। शेष एकत्रित कर रहा हू।"

रूप गया तो भूषण ने सुमित्रा से पूछ लिया, "तुम इसको देख घबरा क्यों गई थी?"

"मेरी इनसे सगाई हो चुकी थी फिर न जाने क्या हुआ कि विवाह होने में ही न आया। जब आपसे सम्पर्क बना तो मै राज़ी नही होती थी। कारण यही था कि मुझको विदित था कि इनसे विवाह होगा। भागने से एक दिन पूर्व मैने मां से पूछा था कि इनसे विवाह होगा अथवा नही? मा ने बताया कि बात टूट चुकी है तो मैने आपके साथ भाग जाने का कार्यक्रम बना लिया।"

"तो तुमने रूपकृष्ण को देखा था?"

"ये कभी-कभी हमारे घर आया करते थे। एक बार जब बात पक्की हो चुकी थी, तो इन्होने मुझको एक सौ रुपया भी दिया था। एक बार यह सूचना मिली थी कि ये मेरे नाम पचास हजार की सम्पत्ति करने वाले हैं। स्वाभाविक रूप मे मेरे मन मे इनके लिए आदर था।"

"परन्तु इसके पास पचास हज़ार कहां से आया? इसका पिता दो सौ रुपये महीने का नौकर है। यह बेकार घूमता था। अब यहा चोरों वाला व्यापार करने लगा है।"

"परन्तु इसको स्वसुर तो बहुत बड़े आदमी मिल गए हैं। सेठ लक्ष्मीचन्द तो एक विख्यात व्यक्ति हैं।"

"इन्होने अवश्य चार सौ बीस खेली है। पीछे जब भेद खुलेगा तो बहुत झगडा होगा। सम्भव है कि पति-पत्नी पृथक्-पृथक् हो जाए।"

"परन्तु चार सौ बीस तो आपने भी खेली है।"

"मैने? भला कैसे?"

"मैं स्मरण कराती हू। आप एक दिन करौलबाग में बाईसिकल पर जा रहे थे। मै अपनी मा के साथ तागे में बैठी घर को जा रही थी। आपकी दृष्टि मुझपर पड़ी और आप हमारे तागे के पीछे-पीछे हमारे घर तक आए। इस घटना के कई दिन उपरान्त आपने हमारा दरवाज़ा खटखटाया। मैने झांककर देखा तो आपने कह दिया, 'बनवारीलाल के नाम एक सरकारी चिट्ठी है।' मैं लेने आई तो आप मुझपर डोरे डालने लगे। मा घर पर नहीं थी, इस कारण मेरे मन में भी

आपके प्रति सवेदना उत्पन्न होने लगी, मै उस सरकारी चिट्ठी के लोभ मे बातें सुनती रही।

"आप जाते समय मुझको ये कर्णफूल, जो आज भी मुझको बहुत ही भले प्रतीत होते है, भेट में दे गए।

"बताइए यह चार सौ बीस वाली बात नही थी क्या? वह सरकारी चिट्ठी अभी तक भी आपने नही दिखाई।"

भूषण हंस पडा। हंसते हुए उसने कहा, "तुम अब प्रसन्न हो अथवा नहीं?"

"वह तो सब लडकियां अपने पति के घर जाकर हो जानी है। इसपर मैं समझती हू कि आपके मामा के लड़के आपसे अधिक सुन्दर और बलिष्ठ दिखाई देते हैं।"

भूषण के मन मे एक सन्देह उत्पन्न हो गया। वह मन में विचार करने लगा था कि सुमित्रा की कितनी घनिष्ठता रूप के साथ रही होगी। उसके मन में उठ रहे सशय का सुमित्रा और रूप दोनो के मुख पर परस्पर देखने पर घबराहट से समर्थन होता था। इसपर भी वह अपने मन के सशय को प्रकट करने से डरता था।

जिस दिन सुमित्रा के अपनी मा को पृथक् समझाने के पश्चात् किशनो भूषण को दामाद के रूप मे स्वीकार कर बैठी थी, उसने भूषण को एक चेतावनी दी थी। उसने कहा था, "ठीक है। मै तुमको दामाद के रूप में स्वीकार करती हू, परन्तु स्मरण रखना कि यदि तुमने इस लडकी को धोखा दिया तो मेरे हाथ बहुत लम्बे हैं। तुम इस ससार मे जीवित रह नही सकते।"

इससे भूषण सुमित्रा को कुछ कह नही सका। इसपर भी रूप के साथ इसका सम्बन्ध एक जाच का विषय बन गया।

उसने पूछ लिया, "चलोगी रूप के विवाह पर?"

"यदि आपको मुझे अपने सम्बन्धियों से मिलाना है तो इससे अच्छा अवसर मिलना कठिन है।"

"ठीक है। तैयार हो जाओ। एक बात के लिए तैयार रहना चाहिए, मेरे सम्बन्धी कदाचित् तुमको अभी वह मान-प्रतिष्ठा न दे जो देनी चाहिए, तुमको कुछ धीरज और सतोष से काम लेना पडेगा।"

"आप चिन्ता न करिए। मै आपकी पहली पत्नी से ही मित्रता बना लूगी। तब तो सब प्रसन्न हो जाएगे?"

माता मोटर के पास खड़े उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। इस समय भूषण ने कह दिया, "राजेश्वरी ! मैं इनका परिचय करने के लिए आया हूं।"

राजेश्वरी जाते-जाते खड़ी हो गई। भूषण ने परिचय करा दिया।

"यह है श्रीमती सुमित्रादेवी, मेरी दूसरी पत्नी; और सुमित्रा ! ये है श्रीमती राजेश्वरी जी, मेरी पहली पत्नी।"

इसपर सुमित्रा ने मुस्कराते हुए राजेश्वरी से कहा, "आपकी छोटी बहिन हूं, कृपा की पात्रा हू।"

"यह तो देखना है।" राजेश्वरी ने सतर्कता से उत्तर दिया।

परन्तु सुमित्रा कम सतर्क नही थी। "परीक्षा के लिए उपस्थित हू।"

"परीक्षा का समय नही आया। समय पर सब पता चल जाएगा। पानी का पानी और दूध का दूध हो जाएगा।"

"तो परीक्षा के लिए उपस्थित होने की स्वीकृति दीजिए। बहिन जी ! यदि कुछ नम्बर कम रह गए तो ग्रेस मार्क्स (रियायती अक) देकर तो पास कर ही देना चाहिए।"

इस प्रकार की वार्तालाप मे सतर्कता पर राजेश्वरी मुस्कराई और फिर अपने पिता की ओर चल दी।

रघुनाथसहाय ने भी भूषण को एक लडकी के साथ देखा था। उसने राजेश्वरी से पूछ लिया, "यह भूषण के साथ कौन लड़की है।"

यह उनकी नई बीवी है।"

"नई बीवी ? तो तुमने उसको दो-तीन सुनाई क्यों नही ?"

"क्या होता सुनाने से ?"

"उसको धक्के दे-देकर यहा से निकलवा देता।"

"रूप ने मुझको कहा था कि यदि इन्होने किसी प्रकार की असभ्यता का व्यवहार किया तो उसके सम्बन्धी मेरा पक्ष लेगे। यदि मै कुछ भी अपनी ओर से झगड़ा करती तो फिर वे क्या करते, आप समझ सकते है।"

"मै समझता हू कि हमको घर लौट जाना चाहिए।"

"क्यों ?"

"मैं तुमको अपमानित किया गया समझ रहा हूं।"

"मेरा इससे क्या सम्बन्ध है ?"

"वह तुम्हारा पति छीनकर ले गई है।"

"पति पर पत्नी का एकाधिकार मानते है आप ?"

बैरिस्टर साहब को समझ आ गया कि यह हिन्दुस्तान है और यह हिन्दू समाज है। इसमे पति एक से अधिक विवाह कर सकता है।

बैरिस्टर साहब ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कह दिया, "यह तो समाज का अन्याय है और मेरा मन इससे विद्रोह कर रहा है।"

"ठीक है। विद्रोह का उद्देश्य भी तो होना चाहिए।"

"उद्देश्य तो है ही। मै समाज मे से पतितो की इस उच्छृंखलता को निर्मूल करना चाहता हू।"

"कैसे करिएगा ?"

"पहले तो आज ही इस बरात को छोडकर वापस लौटना चाहता हू। इसके अनन्तर ला० लक्ष्मीचन्द द्वारा इस परिवार पर दबाव डालकर इस लडकी को निकलवाऊगा। तीसरे हिन्दू समाज मे एक पत्नी के रहते दूसरे विवाह को वर्जित कराने का आन्दोलन खड़ा कर दूगा।"

"तो अभी तो वापस लौटने की बात है न ?"

"हा।"

"तो लौट जाइए। मैं किसी अन्य मोटर में चली जाऊंगी।"

"तो तुम साथ नही लौटोगी ?"

"नही। मै अपने सुसराल वालो के सहयोग से अपनी समस्या सुलझाना चाहती हू। उनका उपाय दूसरा है।"

"तो उनसे बात हो चुकी है ?"

"जी। इनकी एक मौसी है। नाम है गौरी। घर की सब प्रकार की समस्याओं का समाधान उनकी राय से ही किया जाता है। वे कल मुझको कोठी मे मिली थी और उन्होने मुझको बताया है कि ठीक ढग से की हुई तपस्या ही फल लाती है। झगडा, आन्दोलन और बहिष्कार तो तपस्या नही होते, ये तो उत्तेजनात्मक कार्य होते है। इनका प्रभाव विनाशकारी होता है और तपस्या सदा निर्माणात्मक होती है।"

"तो क्या तपस्या बताई है उन्होंने ?"

"मौसी का कथन है कि विवाह के उपरान्त इसपर विचार करेंगे। इस

विवाह की बात सबको एक-दो दिन हुए ही ज्ञात हुई है।"

रघुनाथसहाय गम्भीर हो गए। उनको गौरी की बात ठीक प्रकार से समझ नही आई। अतएव वे अपनी पत्नी, राजेश्वरी की मा, की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगे। राजेश्वरी की मां ने कह दिया, "बिटिया ठीक कहती है। हमको इस विषय मे हस्तक्षेप किए बिना इसकी इच्छानुसार सहायता के लिए तैयार रहना चाहिए।"

रघुनाथसहाय चुप रहे और वे बरात मे सम्मिलित हो गए। भूषण को राम ने एक टैक्सी मे बैठा दिया। उसके साथ गौरी और गोवर्धनलाल को बैठा दिया। प्रत्येक टैक्सी मे चार-चार सवारी बैठाई जा रही थी।

जब गौरी सुमित्रा के पास बैठ गई तो भूषण ने सुमित्रा का परिचय करा दिया, "मौसी ! यह है सुमित्रादेवी।"

"समझ गई हू।" गौरी ने कह दिया, "तुम्हारी नई बहू। क्यों बहू ! क्या गुण देखा है तुमने इस लड़के मे ? मैंने सुना है कि तुम इसके साथ मां के घर से भाग आई थी ?"

सुमित्रा बात इस प्रकार आरम्भ होने की आशा नही करती थी। इसपर भी उत्तर देने मे वह तेज थी। उसने कह दिया, "जो लडकिया लडको मे देखती है, किसीके माता-पिता देख लेते है। मेरे माता-पिता देख नही सके। अतः मुझको स्वय देखना पड़ गया है।"

"अत· माता-पिता के शीघ्र वर न ढूढ सकने पर अधीर हो गई थी ? परन्तु मै तो कह रही हू कि तुम्हारा चुनाव ठीक नहीं हुआ।"

"क्या दोष पाती है आप इनमे ?" सुमित्रा का पुनः सतर्क प्रश्न था।

"यह मूर्ख है। यह तर्क करना नहीं जानता, इससे यह अपना बुरा-भला पहचान नही सकता। मनुष्य का इस ससार मे सबसे बडा आश्रय हरि है। हरि जो सबके दु.ख और क्लेश हरता है। इसका उसपर विश्वास नहीं, यह कृतघ्न है। इस कारण यह किसीके किए का प्रतिकार नही दे सकता···"

बात बीच में ही काटकर भूषण ने कहा, "मेरे मुख पर ही निन्दा कर रही हो मौसी ?"

"जो बात मुख पर कही जाए वह निन्दा नहीं होती, वह आलोचना मानी जाती है। निन्दा पीठ-पीछे कही बात को कहते हैं। भूषण ! राजेश्वरी ने अपने

जीवन का पूर्ण वृत्तान्त मुझको बताया है और एक ब्राह्मण की कन्या को तुमने किस प्रकार मोह-जाल मे फसाया था, सब कुछ मुझको विदित है। उसके आधार पर तुम्हारे ये गुणानुवाद कर रही हू।"

भूषण समझ गया कि मौसी के साथ यदि वह विवाद मे पड गया तो अपनी पत्नी के सम्मुख कुछ अन्य कटु बाते प्रकट हो सकती है। इससे उसने कह दिया, "मौसी, तुम बड़ी हो। तुम गाली भी दोगी तो आशीर्वाद ही हो जाएगी। इसलिए मैं बैठा हू। जो मन मे आए कह लो।"

"सुमित्रा! तुम सुखी हो?"

"हां मौसी। अभी तक तो कोई कारण दिखाई नही दिया है मुझको इनसे असन्तुष्ट होने का।"

"भगवान करे कि तुम सदा सुखी रहो।"

अब सुमित्रा ने अपनी चतुराई का परिचय दे दिया। उसने कह दिया, "मौसी! कभी आप जैसे वृद्धजनो से शिक्षा लेने के लिए अवसर मिल सके तो आपका आर्शीवाद फलेगा।"

"मैं घर पर मध्याह्न दो बजे से सायकाल तक रहती हू।"

"परन्तु आपका घर कैसे ढूढूगी और फिर ये घर से अकेली निकलने नहीं देते।"

"भूषण मेरे घर का मार्ग जानता है। सुना है, इसको तीन बजे काम से छुट्टी मिल जाती है।"

इस समय भूषण ने बात बदल दी। उसने सुमित्रा से कह दिया, "सुमित्रा! ये हैं मौसा जी। इनका नाम है श्रीयुत गोवर्धनलाल जी।"

सुमित्रा ने हाथ जोड़ दिए। बरात चल रही थी। गौरी ने रूप की सगाई की बात बता दी। उसने कहा, "लाला लक्ष्मीचन्द के घर मां गई थी और उनके कहने से समझो अथवा पिता जी के दान-दक्षिणा की ख्याति के कारण समझो अथवा हमने तीन ट्रस्ट बनाए है उनके कल्याणकारी प्रभाव के कारण समझो, लक्ष्मीचन्द के मन पर बहुत प्रभाव हुआ और वह दूसरे दिन ही रूप को मिला, उनको अपने घर ले गया। सब परिवार वालों ने देखा और पसन्द कर लिया। बहुत भाग्यशाली है रूप!"

"मौसी? लड़की कैसी है?"

"पढी-लिखी है। घर पर हिन्दी और संस्कृत पढ़ी है, सीनियर कैम्ब्रिज की परीक्षा पास की है। सुना है, सितार अच्छा बजा लेती है।"

"मौसी, मै यह नही पूछ रहा। मै उसकी रूपरेखा की बात पूछ रहा हूं।"

"रूपरेखा? साधारण है।" गौरी ने टैक्सी के साथ-साथ चल रहे गैस के हडे के प्रकाश मे सुमित्रा की ओर देखकर कह दिया, "तुम्हारी इस बहू के साथ तो किसी अंश में भी तुलना नहीं रखती। राजेश्वरी से भी बहुत साधारण है।"

"तो रूप को यह बताया है आपने?"

"हां। और उसने अस्वीकार नही किया।"

"धन के लोभ मे मान गया है। मौसी! यह विवाह स्थिर नहीं रहेगा। और यदि रूप की बहू में धनी बाप की बेटी होने का कुछ भी अभिमान विद्यमान हुआ तो यह विवाह एक वर्ष भी नहीं चलेगा।"

"यह सब अपने-अपने भाग्याधीन है। रूप को तो पश्चात्ताप नहीं होना चाहिए। मैंने स्वय उसको लड़की के सब गुण-अवगुण बताए है।"

"और कही लक्ष्मीचन्द जी की लडकी को पश्चात्ताप होने लगा तो?"

"तो लड़की को गिला अपने पिता से होना चाहिए। हमने उसके पिता से कुछ नही छिपाया।"

बरात का बहुत शानदार स्वागत हुआ। उसी रात विवाह का विधि-विधान पूर्ण हुआ और अगले दिन रूप अपनी पत्नी को लेकर घर आ गया।

उत्तरावस्था

तीसरा परिच्छेद

उक्त घटना सन् १९३६ की थी। इसके पश्चात् परिवर्तन द्रुत गति से हुए। द्वितीय विश्वव्यापी युद्ध आरम्भ हुआ। इसमें जापान मित्रराष्ट्रों के विपरीत युद्ध में सम्मिलित हुआ। रूस मित्रराष्ट्रो की ओर सम्मिलित हो ग ा।

युद्ध की इस अप्रत्याशित करबट ने भारत के इतिहास और आचार-विचार पर भारी प्रभाव डाला। जापान के अमेरिका के विपरीत युद्ध आरम्भ कर देने से अमेरिका युद्ध मे सयुधि हो गया। अमेरिका की तकनीकी उन्नति और प्राकृतिक साधन अत्यधिक थे। इससे अन्य मित्रराष्ट्र इगलैड, फ्रास और अमेरिका की बेढंगी बातें मानने पर विवश थे।

रूस कुटिल नीति मे अत्यन्त कुशल था। एक ओर सरल चित्त परन्तु शक्तिशाली अमेरिका का प्रधान और दूसरी ओर कूटनीतिज्ञ स्टालिन दुर्बल इंगलैड और फ्रास को उगलियो पर नचाने लगे। भारत इगलैड के अधीन होने से इंगलैड के साथ ही मिल गया।

अमेरिका ने चीन में च्यांग काई शेक को चीन के कम्यूनिस्ट नेताओं से समझौता करने पर विवश कर दिया। परिणाम में कम्यूनिस्ट चीन पर छा गए। अमेरिकन सिपाही भारत की रक्षा के लिए और चीन की सहायता के लिए बहुत बड़ी सख्या में भारत मे आए और भारतीयों में नैतिक पतन के कारण हो गए।

स्टालिन के रूस के साथ मित्रराष्ट्रों की सन्धि होने से भारत में कम्यूनिज़्म का व्यापक प्रचार होने का सुभीता हो गया।

युद्ध में सरकार का युद्ध के लिए सामग्री निर्माण कराना तथा व्यापार अपने हाथ मे लेने से देश का घोर पतन हुआ। जहां भी शासन ने व्यापार और उद्योग-धन्धों को अपने हाथ मे लिया है, वहा ही जनता में अनैतिकता का व्यापक प्रचार हुआ है।

कम्यूनिस्टों अथवा कम्यूनिस्टों के सहचरों का कहना है कि कम्यूनिस्ट देशों में यह नैतिक पतन नहीं हुआ। यह कथन निर्विवाद सत्य नहीं। इसपर भी भारत

में तो युद्धकाल में सरकार के व्यवसाय और उद्योग में हस्तक्षेप से पतन व्यापक हुआ है।

इसके पश्चात् स्वराज्य आया और स्वराज्य आया एक अति प्रभावशाली और दृढनिष्ठ समाजवादी के हाथ में। इसने रही-सही भारत की नैतिकता का मलिया-मेट कर दिया।

सन् १९५७ आ गया। बाईस वर्ष भारत के नैतिक जीवन में एक महान विनाशकारी प्रभाव उत्पन्न करने वाले हुए। दिल्ली के नैतिक पतन मे एक कारण और हो गया। भारत मे पाकिस्तान बना। पजाब के लाखो हिन्दू पाकिस्तान से भागकर हिन्दुस्तान में आए। इनमे अधिकाश लुट-पिटकर आए थे। सन् १९४७ मे भारत सरकार इनकी रक्षा नही कर सकी। तत्कालीन सरकार पाकिस्तानी लुटेरों की सहायता करती रही। स्वराज्य-प्राप्ति के पश्चात् तो सरकार पाकिस्तान की उच्छृंखलता रोकने में अशक्त सिद्ध हुई। काश्मीर पर पाकिस्तान ने आक्रमण किया और भारत सरकार ने पाकिस्तान से युद्ध विराम-सन्धि कर ली। इससे सरकार की राजनीतिक दुर्बलता स्पष्ट हो गई। सन् १९५०-५१ मे पुनः पूर्वी पाकिस्तान से हिन्दू भगाए गए।

सरकार भारतीय नागरिको की न बर्मा में, न ही लका में, न तिब्बत में, न ही दक्षिणी अफ्रीका मे रक्षा कर सकी।

सरकार की मित्रता गलत राष्ट्रों से रही थी। देश के आभ्यन्तरिक विषयों में भी सरकार समाजवादी होने से युद्धकाल के बेईमान प्रशासकों के हाथों में खेलने लगी।

इसका प्रभाव दिल्ली में देश के अन्य भागो से अधिक हुआ। इस समय लाला सुलक्षणमल का परिवार छिन्न-भिन्न हो चुका था। गौरी और गोवर्धनलाल सब कुछ छोड़-छाड़ संन्यासी हो कहीं हिमालय में जा चुके थे। उनके विषय मे कोई नही जानता था कि कहा है। शिवकुमार और गोपालकुमार का देहान्त हो चुका था। शिवकुमार का लड़का निरजन शिवकुमार की गद्दी पर बैठता था, परन्तु दुकान की साख (प्रतिष्ठा) मिट्टी में मिल चुकी थी। अब दुकान का विश्वास पहले से शतांश भी नहीं रहा था। ग्राहकों से झगड़े होते थे। फिर मुकदमे होते थे। कभी दुकान जीतती थी, कभी ग्राहक जीतते थे और बदनामी दोनों अवस्थाओं में दुकान की होती थी।

रामकुमार अब वृद्ध होने के कारण काम-काज कुछ नही करता था। उसका लड़का रूप एक बहुत बड़ा ठेकेदार बन गया था। घर में रुपया बरसता था और रूप की पत्नी सुभद्रा देवी घर पर शासन करती थी। इस शासन में सबसे बुरी दशा रूप की मां रोहिणी की थी।

परिवार मे तीन व्यक्ति अभी भी परस्पर मेल-मुलाकात रखते थे—रूप, काहन और भूषण। रूप ठेकेदार होने से सबसे अधिक समृद्ध था। काहन अब बहुत बड़ा अफसर बन गया था और दुर्गा से सात बच्चो का पिता बन, सुख और चैन का जीवन व्यतीत करता था। वह एक बार 'रिटायर' होकर पुनः 'आडीटर जनरल' के दफ्तर मे काम पर ले लिया गया था। भूषण ने यूनिवर्सिटी छोड़ दी थी और भारत सरकार के उद्योग मन्त्रालय में सार्वजनिक उद्योग यन्त्र का एक मुख्याधिकारी बन गया था।

भूषण की दूसरी पत्नी सुमित्रा भूषण को छोड गई थी। राजेश्वरी भूषण से पृथक् अपने लड़के राजकुमार के साथ रहती थी। उसकी लड़की राजकुमारी तो विवाह कर अपने पति के साथ अमेरिका चली गई थी। भूषण के घर में एक शिमला के समीप के गाव की स्त्री नौकरानी के रूप में रहती थी और वह घर पर राज्य करती थी।

भूषण महादेव रोड पर एक सरकारी बंगले में रहता था। भूषण की सेविका सुन्दरी भूषण से मिलने के लिए आने वालों के साथ ऐसा व्यवहार करती थी, जैसे वह उसकी प्राइवेट सैक्रेटरी हो। लाखों रुपयों का काम उसके द्वारा हो जाता था और भूषण दिन-प्रतिदिन मोटा होता जाता था।

सुन्दरी का साहस दिन-प्रतिदिन बढता जाता था और वह मिलने वालों से पृथक् मे भेंट करती थी और अनेकों बार बिना भूषण की जानकारी के भी वचन दे देती थी और उसके लिए अग्रिम रिश्वत ले लेती थी।

यह सब काम उस समय होता था, जब भूषण मन्त्रालय में गया होता था। एक दिन भूषण आया तो सदा की भांति वह सुन्दरी के कमरे में चला गया। सुन्दरी के सामने बीयर की बोतल और गिलास रखा था। भूषण आया तो उसने उसे भी निमन्त्रण दे दिया, "आइए। आज तो बाहर लू चल रही है। कुछ चित्त ठंडा कर लीजिए।"

"बाहर तो लू चल रही है परन्तु भीतर कूलर लगा है।"

"भीतर रुपये की गर्मी है।"

"तो आज कोई बडी-सी मुर्गी हलाल की है ?"

"मुर्गी नही, मुर्गा है। रूप का लड़का प्रबोध आया था। वह दस हज़ार दे गया है।"

"किस मतलब के लिए ?"

"उसको इमारती स्टील का परमिट चाहिए था।"

"कितने स्टील का ?"

"दस हज़ार टन का।"

"ओह ! इतना स्टील है कहां ?"

"क्यों ? सरकारी तीन लोहे के कारखानो मे कितना प्रतिदिन तैयार होता है ?"

"परन्तु सुन्दरी ! अकेला मैं ही तो नहीं हूं इसका वितरण करने वाला। और भी हैं। फिर मैं मत्री नहीं हूं। एक अण्डर सैक्रेटरी-मात्र हूं। मैंने पहले ही बहुत परमिट स्वीकार करवाए है।"

"रूप का काम तो करना ही होगा।"

"ठीक है। यत्न करूंगा।"

"जी नही, मैंने उससे यह वचन लिया है कि सौ रुपया प्रति टन वह हमको देगा। इसमें से पचास रुपया प्रति टन तो आप जिसको चाहे दे दे, शेष हमारा होगा। देखिए, दस हजार टन का मतलब है पाच लाख रुपया। यह माल एक वर्ष के भीतर देना है। इतना तो आप कर ही सकेंगे। यह अग्रिम दस हज़ार रुपया तो उक्त गणना से बाहर है।"

भूषण गम्भीर हो गया। देर तक वह गम्भीर हो मौन बैठा रहा। एकाएक उसको विचार आया कि आज पहली बार रूप उसके पास किसी काम के लिए आया है और पहली ही बार उसने दस हज़ार रुपया उससे ऐंठ लिया है। वह मन में क्या सोचेगा। रूप उसके मामा का लड़का है। इसपर उसने बहुत धीरे से कह दिया, "रूप से रिश्वत लेकर तुमने ठीक नही किया।"

"क्यों ?"

"वह मेरे मामा का लड़का है।"

"मां गई तो मामा भी गया।"

"तो क्या रिश्ता भी टूट गया ?"

"मैंने तो आपकी उससे नवीन रिश्तेदारी पैदा कर दी है। आप नही जानते, परन्तु मै जानती हूं कि इस रिश्तेदारी से आपको बहुत लाभ होने वाला है।"

"इस घूस की रिश्तेदारी की बात कर रही हो न ?"

"हां, मैं समझती हूं कि यह अधिक सुदृढ होगी।"

"इसके पश्चात् मुझको रूप के सामने आखे करते लज्जा लगा करेगी।"

"इस प्रकार लज्जा करने लगे तो बस बात हो चुकी !"

"तुम आज कुछ अधिक पी गई प्रतीत होती हो।"

"जी नहीं। अभी तो आधी बोतल भी खाली नही हुई।"

"प्रबोध रुपया नोटो मे दे गया है ?"

"तो और किस मे देता ?"

"छोटे नोट है ?"

"सब दस-दस के हैं।"

"कहां रखे है ?"

"तहखाने में रख आई हूं।"

"देख लिए है ?"

"सब ठीक है ?"

चाय पीने के पश्चात् भूषण तहखाने में चला गया। यह उसने बिना सरकारी अधिकारियो को बताए अपने 'लम्बर रूम' (माल गोदाम) में से खुदवा लिया था और उसपर लोहे का ढकना लगवा दिया था। रुपया, भूषण, जवाहरात, सोना, जिसको वह बैंक मे नही रख सकता था, उसमें रखा रहता था। कोठी मे नौकर थे, परन्तु उन नौकरों को भी इस तहखाने की बात विदित नही थी। कभी कोई नौकर इस गोदाम में घुसने नहीं दिया जाता था।

आज भूषण उस तहखाने में उतर गया और अपनी चोरी से रखी सम्पत्ति का निरीक्षण करने लगा। सुन्दरी उसके समीप खड़ी थी। सब कुछ ठीक-ठाक देख, वह बाहर निकल आया। लोहे का ढकना द्वार पर चढ़ा दिया गया। वह ढकना ऐसा प्रतीत होता था, मानो मार्वल चिप्स की सिल हो। वास्तव में लोहे के ऊपर मार्वल चिप्स-सीमेंट की तह चढ़ाई हुई थी और रखने पर वह तह वैसी ही प्रतीत होती थी, जैसा उस कमरे का शेष फर्श था।

लगभग तहखाने में पचास लाख रुपये का सामान रखा था। भूषण गम्भीरता-पूर्वक विचार कर रहा था कि वह इस माल को किस प्रकार अपने प्रयोग में लाएगा। उसको कोई उपाय नही सूझ रहा था।

आज उसको यही चिन्ता लग रही थी। आज रात का खाना खाते समय उसका लड़का राजकुमार आया। वह दसवी श्रेणी में पढते-पढ़ते पढाई छोड, घर पर भाषाओं का अभ्यास करने लगा था। उसके शिक्षक ने उसको सस्कृत भाषा पढ़ने के लिए कहा और पांच वर्ष में वह दुनिया की सात प्रमुख भाषाओं का ज्ञाता हो गया। वह भाषा-विज्ञान का विशेषज्ञ बन गया। वह सरकारी विदेश विभाग में अनुवादक के रूप में ठेके पर काम किया करता था।

आज उसको आया देख भूषण बितर-बितर मुख देखता रह गया। वह पहले कभी भी अपने पिता से मिलने नही आया था। और सुन्दरी ने उसको कभी नही देखा था।

"क्या मैं भीतर आ सकता हूं?"

"कौन?" सुन्दरी का प्रश्न था।

भूषण ने डाईनिंग हाल के द्वार पर खड़े देख पहचान लिया था। इसपर उसने कह दिया, "हां! आ जाओ। सुनाओ, किसलिए आए हो?"

"आप मुझको पहचानते है क्या?" राजकुमार ने भीतर आ एक कुर्सी पर बैठते हुए पूछ लिया।

"मैं समझता हूं कि तुम राजेश्वरी के लड़के राजकुमार हो। क्या मैं ठीक कह रहा हूं?"

"ठीक है। मद्य-सेवन पर भी आपकी बुद्धि में कुछ तो निर्मलता है। मैं आज बीस वर्ष बाद आपके घर पर आया हूं। यूं तो चलते-फिरते आपके दर्शन कई बार किए हैं।"

"किसलिए आए हो?"

"अपनी मां के कहने पर अपने पिता का श्राद्ध करने।"

"पर मैं अभी मरा नही। जीवित हूं। तभी तो तुमसे बातचीत कर रहा हूं।"

"आर्यसमाज के सिद्धान्तानुसार जीवित पितरों के श्राद्ध में विश्वास रखता हूं। इच्छा तो नहीं थी, परन्तु मां के मस्तिष्क में अभी भी कुछ हिन्दू संस्कार शेष

है। इस कारण उन्होंने कह दिया कि जाओ और अपनी ओर से श्रद्धाञ्जलि दे आओ।"

"हां, तो बरखुरदार! यह पुण्य-लाभ भी कर लो।"

"मा ने कहा है कि मै आपको कह दू कि आप शीघ्रातिशीघ्र अधिक से अधिक सम्पत्ति लेकर यहा से लापता हो जाएं। यदि सम्भव हो तो विदेश चले जाए।"

"पर क्यो?"

"आपका इस देश में तथा दिल्ली मे रहना भय से रहित नही।"

"यह तुमको किसने कहा है?"

"यह मै नही बताऊंगा।"

"उसको यह सूचना कहां से मिली है?"

"यह मै जानता नही।"

"तो बूढे जीवित बाप को मरने के लिए कहने आए हो।"

"मैं तो आपके जीने-मरने मे रुचि नही रखता। यह तो मां है, जो आप जैसे निकम्मे पति के होते भी अपने को सधवा मानती है और अपना सुहाग बनाए रखने के लिए मुझको भेज दिया है।"

"बस या और कुछ?"

"इस सुन्दरी को भी साथ ले जाइए। इसकी भी खैर नही यहां।"

"अब तुम जा सकते हो।"

राजकुमार उठकर जाने लगा तो सुन्दरी ने कह दिया, "राजकुमार! भोजन तो कर जाओ।"

"मां ने भोजन कराकर भेजा है।"

"तुम्हारा विवाह नहीं हुआ?"

"हो चुका है। पत्नी प्रसव करने मां के घर गई हुई है।"

"यह कौन-सी सन्तान होगी?"

"पहली।"

"बहनों का क्या हाल है?"

"एक तो अमेरिका मे है और दूसरी संस्कृत अध्ययन कर रही है।"

सुन्दरी हंसी और बोली, "अच्छा, भोजन नहीं करना तो जाओ। रात के समय पुत्र को घर के बाहर गए जान मां का दिल धड़कता होगा।"

राजकुमार ने दोनों को नमस्कार किया और चला गया । उसकी टैक्सी के जाने का शब्द सुना तो भूषण ने सुन्दरी से पूछ लिया ।

"क्या समझी हो इसका अर्थ ?"

"मै समझी हूं कि इसकी मां को कोई बुरा स्वप्न आया है। वह भयभीत है। इसपर भी मेरा विचार है कि कल आप दो महीने की छुट्टी ले लें मैडिकल सर्टिफिकेट पर, मैं आपको पहाड़ पर ले चलूगी। वहां आराम से बैठकर विचार कर लेगे।"

"यदि कोई गड़बड़ कल ही हो गई तो ?"

"कुछ नही होगा। वह आपको व्यर्थ मे डरा गया।"

भूषण को सतोष नही हुआ। जब से रूप का दस हजार रुपया उसके कोष में आया था, उसको किसी प्रकार का अज्ञात भय लग रहा था, इसपर भी वह अपने मन का भय सुन्दरी को बता नहीं सका।

रात-भर भूषण करवटे लेता रहा। प्रातः चार बजे उसको नीद आई। सुन्दरी तो गहरी नींद सोती रही थी। दोनों देरी से उठने के अभ्यस्त थे। इस कारण वे आठ बजे उठे। दोनो ने बैरा के लिए घण्टी बजाई तो बैरा आया और चाय पलगों के पास रख बोला, "बाहर आपसे कोई मिलने आया है।"

"कौन है ?"

"मैंने उससे नाम पूछा है और कार्ड मांगा है। उसने कहा है कि आप बाहर आएगे तो पहचान जाएगे। नाम-धाम बताने की आवश्यकता नही।"

"अच्छा चलो। उनको बैठाओ। मैं कपड़े पहन आता हू।"

बैरा गया तो भूषण ने समझा कि कोई परमिट इत्यादि लेने वाला आया है और अपना नाम बैरे को बताना नही चाहता। इससे वह चाय पी, शौच गया और हजामत बना, स्नान कर, कपड़े पहन आधे घण्टे मे ही बाहर आ सका।

बहुत बढ़िया कपड़े पहने दो भद्र पुरुष ड्राइग-रूम मे बैठे थे। दोनों अपरिचित थे। भूषण ने सामने आते ही कह दिया, "मैं भूषणदेव हूं।"

"डाक्टर साहब! मै पुलिस विभाग का मुख्याधिकारी बत्रा हू। कदाचित् आपने नाम सुना होगा।"

"नही सुना! मैं क्या सेवा कर सकता हूं आपकी ?"

"आप चलने के लिए तैयार हो जाइए। आपको पुलिस थाने में ले चलना है।

साथ ही आपके इस घर की तलाशी लेनी है।"

भूषण को राजकुमार की रात की बातचीत स्मरण हो आई। वह हतोत्साह हो, वहां ही बैठ गया। उस पुलिस अधिकारी ने आवाज दी, "बैरा ! बैरा !"

बैरा भागा हुआ आया तो मिस्टर बत्रा ने कहा, "साहब के लिए जल्दी ठडा पानी लाओ।"

बैरा भागा हुआ गया और 'फ्रिज' मे से ठडे पानी का गिलास भरकर ले आया। भूषण ने जल पिया। उसकी धड़कन कम हुई तो उसने कहा, "आपके पास वारंट है ?"

"हा।" बत्रा के पास बैठे दूसरे आदमी ने कह दिया। उसने अपने थैले में से एक कागज निकाला। उसपर हस्ताक्षर कर वह कागज बत्रा को दिखा दिया। भूषण ने पढा। लिखा था, "प्रारम्भिक जांच पर यह पता चला है कि डाक्टर भूषण के विरुद्ध रिश्वत लेने के पर्याप्त प्रमाण है। मै मिस्टर के० अग्निहोत्री मिस्टर भूषण, अण्डर सेक्रेटरी, केन्द्रीय मत्रालय, को पकडकर जांच के लिए हवालात मे रखने की आज्ञा देता हूं और उनके घर की तलाशी की आज्ञा देता हूं।" इस समय दो पुलिस के सिपाही सुन्दरी को बाह से पकड़े हुए भीतर ले आए। एक कान्स्टेबल ने बताया, "हुजूर ! यह औरत कोठी के बाहर जा रही थी। हमने इसको जाने से मना किया तो यह नही मानी। हमने रोका तो यह भाग खड़ी हुई। इस कारण इसको पकड़ लाए है।"

मजिस्ट्रेट ने आज्ञा दे दी, "बैठ जाओ ! तुम्हारे बयान होने है।"

इस समय तक लगभग दो दर्जन सिपाही जो कोठी को घेरा डाले हुए थे, कोठी के अहाते में घुस आए और सब नौकरों को एक कमरे में एकत्रित कर लिया।

२

सुन्दरी के बयान हुए। उसने बताया, "मैं भूषणदेव की 'हाउस कीपर' हूं। मुझको रोटी-कपड़ा और दो सौ रुपया महीना वेतन मिलता है। मैं नौकर-चाकरों से काम लेती हूं और खाने-पीने का प्रबन्ध रखती हूं। मैं मिस्टर भूषण जी के अन्य किसी काम इत्यादि के विषय में कुछ नही जानती।"

"तुम मिस्टर भूषणदेव की रखेल हो अथवा विवाहित पत्नी ?"

"दोनों में से कुछ नही।"

"तुम शादीशुदा हो ?"

"मैं विधवा हूं।"

"यह सब सामान, जो तहखाने से निकला है, तुम्हारी जानकारी में था क्या ?"

"मैं इसके विषय मे कुछ नही जानती।"

"तुम यहां से भाग क्यों रही थी ?"

"पुलिस की वर्दी देख मुझको डर लग गया था।"

"तुम्हारा यहां कोई ज़ामिन है ?"

"नहीं।"

"तो एक हजार रुपये का मुचलका भर दो। तुम अपना पता पुलिस वालों को दे दोगी और बुलाने पर हाज़िर हो जाओगी।"

लाखों रुपयों का सामान सील कर, और बहुत-से कागज़-पत्र अधिकार में ले सुन्दरी को छोड़ पुलिस भूषण को साथ ले गई। जाते-जाते मध्याह्न के दो बज गए थे। उनके चले जाने पर सुन्दरी ने भोजन किया और अपने शयनागार में लेट विचार करने लगी। उसको समझ आया कि यदि वह रूप के घर पहुंच, घटना की बात बताए तो पता चलेगा कि वह इसमें कारण है अथवा नही। यदि वह कारण नही तो निःसदेह वह सहायता करेगा।

अतः वह सायकाल की चाय पी रूप की कोठी, जो श्रीराम रोड पर थी, जा पहुची।

रूप घर पर था। वह सुभद्रा के साथ लॉन में बैठा चाय पी रहा था। रूप ने सुन्दरी को देख पूछ लिया, "सुनाओ किसलिए आई हो यहां ?"

"भूषण जी आज पकड़ लिए गए है।"

"मुझको विदित है।"

"तो आपने पकड़वाया है ?"

"नही! यह शरारत प्रबोध ने की है। परन्तु सुन्दरी, तुमको भी तो उससे रुपये लेने मे संकोच नही हुआ।"

"वह कल दो बजे आया था। मैंने रुपया मांगा नहीं था। उसने स्वेच्छा से ही नोटों का ढेर मेरे सामने लगा दिया। इतना रुपया सामने देख, मैं लोभ में फंस गई

थी। मुझसे बहुत भूल हुई है। मै क्षमा मांगने आई हूं।"

"किससे ?"

"आपसे और प्रबोध से भी।"

"प्रबोध से क्षमा माग लो। मैने तो इसमे कुछ किया नहीं।"

"आपने किया है अथवा नही किया, मैं इसमे कुछ नही कहती। मै यह कहने आई हू कि इसमें आप बहुत कुछ कर सकते है।"

"क्या कर सकता हू ?"

"अपने भाई को छुडा सकते हैं।"

यह सुन रूप ने कह दिया, "सुन्दरी, चाय पियोगी ?"

सुन्दरी चाय पीकर आई थी, परन्तु वह जानती थी कि इन्कार करने से काम बिगड़ेगा। इस कारण वह चुप रही। सुभद्रा ने बैरा को बुलाया और चाय लाने के लिए कह दिया।

जब चाय आई और सुभद्रा ने एक प्याला उसके लिए बना दिया तो वह पीने लगी।

इतनी देर में रूप ने मन में पूर्ण योजना विचार कर ली। उसने पूछ लिया, "सुन्दरी, भूषण को छुड़ाने के लिए कितना कुछ खर्च करने के लिए तैयार हो ?"

"आप कितना उचित समझते है ?"

"तुम्हारे पास कितना है ?"

"जो कुछ कोठी से निकला है, वह तो जाएगा ही। उसके अतिरिक्त पचास हज़ार और है।"

"तो मैं प्रबोध को कह दूगा और कदाचित् वह तैयार भी हो जाएगा।"

"इतना कुछ हो जाएगा।"

"तो ठहरो। एक घण्टे तक प्रबोध आने वाला है। उससे बात कर लो।"

सुभद्रा के चार बच्चे थे। प्रबोध सबसे बड़ा था। वह इस समय उन्नीस वर्ष का हो गया था। पिता का कारोबार वह सभालने लगा था। रात के आठ बजे प्रबोध आया और सुन्दरी को वहां देख हंस पड़ा, "क्यो ताई ! अब बुद्धि ठिकाने हुई है अथवा नही ?"

"ठिकाने कब नही थी, प्रबोध ?"

"उस दिन, इम्पीरियल में, चाय-पार्टी में क्या कहा था तुमने ?"

कुछ विचारकर वह बोली, "ओह ! मिस्टर सरकार से जो कह रही थी ?"

"हां । वह मेरा मित्र है । तुमने कहा था, 'यह समाजवादी देश है । यहां सब कुछ समाज के लिए है । सरकारी कर्मचारी समाज के हाथ-पाव है । इस कारण जो कुछ उनके पास जाता है, वह समाज के पास ही जाता है ।'

" 'ताई, इसमें मतभेद हो गया है । हाथ उसको कहते है, जो धन पैदा करता है । अतः उद्योग-धन्धों में लगे हुए लोग समाज के हाथ-पांव है । कर्मचारी तो मुख और पेट है । इस कारण जो धन मुख ने दांतों तले दबाया हुआ था, वह हाथो की उंगलियों ने मुख से निकाल लिया है । "

"निकाल लिया है न ? मैं अपने कथन के लिए क्षमा मागने आई हूं ।"

प्रबोध ने अपने पिता की ओर देखा । रूप ने पूछ लिया, "प्रबोध, कुछ कर सकते हो अब ?"

"हा, कर तो सब कुछ सकता हूं, कीमत बहुत देनी पड़ेगी।"

"बता दो, कितना चाहते हो ?"

"मैं कल बता सकता हू ।"

तीन दिन की भाग-दौड के पश्चात् भूषण हवालात से छूटकर कोठी में आ गया । सुन्दरी उसके स्वागत के लिए बरामदे में खड़ी थी ।

नई दिल्ली कोतवाली से टेलीफोन आया था, "मोटर भेज दो । मैं आ रहा हूं ।"

सुन्दरी ने तुरन्त मोटर भेज दी और भूषण की प्रतीक्षा करने लगी । प्रबोध ने दस हज़ार रुपया खर्चे की प्रथम किश्त मागी थी, वह दे दी गई थी । प्रबोध ने रुपया पानी की तरह बहाया और डाक्टर भूषण की एक लाख रुपये की जमानत हो गई । मुकदमा नही उठाया गया ।

भूषण आया तो साथ प्रबोध भी था । डाक्टर ने स्नान किया, कपड़े बदले और चाय पर आ बैठा । प्रबोध ने सुन्दरी को बताया, "तुम्हारे द्वारा दिया गया दस हजार रुपया सब व्यय हो गया है । अभी मुकदमे में वे नोट ही उपस्थित किए गए है, जो मैंने तुम्हे दिए थे और जिनमे से कई के पीछे मजिस्ट्रेट के हस्ताक्षर थे । अन्य सामान, जो तहखाने से निकला है, उसकी दो सूचियां बनी है और दोनो पर गवाहों के हस्ताक्षर है । एक सूची मे तो केवल दस वस्तुएं हैं, जिनका दाम लगभग पांच सौ रुपया है । दूसरी मे सब वस्तुए दर्ज हैं और सबका मूल्य उनचास लाख आंका जाता है । अब ताया जी बताइए, आप कौन-सी सूची

उपस्थित की जानी पसन्द करते हैं ?"

"मैं तो पहली पांच सौ रुपयों के दाम की वस्तुओं की सूची उपस्थित की जानी पसन्द करता हूं।"

"यह हो सकता है। परन्तु वह सब सामान पुलिस के लोग और आपके कार्यालय के अधिकारी परस्पर बांट लेंगे। उसमें से अब आपको कुछ नही मिलेगा।"

"परन्तु।" सुन्दरी ने कह दिया, "यदि 'नोट' मुकदमे मे उपस्थित किए गए तो डाक्टर जी को दण्ड तो मिल ही जाएगा।"

"उस दण्ड को कम कराने अथवा उसके लिए कोई बहाना बनाना काम रह जाएगा। परन्तु यह पचास लाख का सामान आपके पास कहां से आया, बताना असम्भव हो जाएगा।"

सुन्दरी और डाक्टर भूषण टुकर-टुकर मुख देखते रह गए। चाय पीते हुए प्रबोध ने डाक्टर को कहा, "मान लो कि आपकी सिफारिश लग जाए, अर्थात् आपको नोटों के मुआमिले मे छुडा भी लिया जाए, तो भी इस लाखों रुपयों की सम्पत्ति की सफाई तो दी नही जा सकेगी।"

सुन्दरी ने कहा, "प्रबोध भैया! बात तो बनी नही। रिश्वत तो रिश्वत ही है। दस हजार की क्या और दस लाख की क्या ?"

"पर देखो ताई। मैं परमात्मा तो हू नहीं। मैं ताया जी महाराज को छुडाने का यत्न कर रहा हू। मैंने यह कुछ किया है। शेष के लिए यत्न कर रहा हूं। पिता जी ने एक लाख रुपये की जमानत भी दी है। इतना कुछ भी तो कोई दूसरा करने को तैयार नही था।"

सुन्दरी समझ गई कि अवस्था इतनी बिगड़ गई है कि अपने को प्रबोध की दया पर छोड़ने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नही। इसपर भी अब डाक्टर मुक्त था और घूम-फिरकर अपने छूटने का यत्न कर सकता था। अतः उसने कह दिया, "इस समय तो हमारा भी मस्तिष्क काम नहीं करता। मै समझती हू कि आप कल आ जाएं और कुछ शान्त होकर विचार करेंगे कि क्या हो सकता है।"

इस प्रकार प्रबोध को चाय-पानी पिलाकर अपनी मोटर मे विदा कर दिया।

जब प्रबोध चला गया तो भूषण ने कहा, "यह धन कहां से दिया है तुमने ?"

"सैण्ट्रल बैंक के लौकर में था। वह लौकर मेरे नाम था।"

"कितना और रखा है, उसमे ?"

"तीस-चालीस के लगभग होगा। कुछ गांव में भूमि में गाड़ा हुआ रखा है। वह सोना है और रत्नादिक है।"

"मैं तो बिलकुल उजड़ गया हूं। यह सब जो तुम्हारे पास है और जो कुछ मेरे पास भी गुप्त रखा है, मिल-मिलाकर डेढ-दो लाख से अधिक नहीं होगा। यदि इस ढग से चलने लगे, जैसे प्रबोध ने आज धन लुटाया है तो मैं सर्वथा अकिंचन हो जाऊंगा। साथ ही मैं कैद से बच सकूगा अथवा नहीं सदिग्ध है।"

"मैं सोचती हूं कि राजकुमार को यह सब कैसे पता चल गया था? हम भी कितने मूर्ख थे कि उसकी बात को हसी-ठट्ठा समझते रहे थे।"

"अवश्य वह प्रबोध से मिला होगा और प्रबोध से ही उसने कुछ सुनकर अपना अनुमान लगाया होगा।"

"यदि आप कहे तो मैं राजकुमार और उनकी मां को मिलकर बात करूं।"

"क्या बात करोगी?"

"देखूगी कि वे आपके लिए प्रबोध और अन्य किसीपर क्या बल डाल सकेगे?"

"देख लो करके। मुझको आशा नही कि कुछ भी हो सके। मेरा विचार है कि तुम रूप के पिता राम जी के पास चली जाओ। यह बूढा वकील कुछ सहायता करना चाहे तो बहुत कुछ कर सकता है।"

सुन्दरी मोटर के लौटकर आते ही उसमें पहले तो राजेश्वरी के घर और फिर राम से मिलने के लिए चल पडी।

राजेश्वरी घर पर नहीं थी। वह राजकुमार की पत्नी से मिलने उसकी मां के घर गई हुई थी। राजकुमार अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में बैठा एक पुस्तक का अनुवाद कर रहा था। सुन्दरी आई तो राजकुमार अपने कमरे से उठकर बैठक मे चला आया। वह अपनी मा के साथ हैमिल्टन रोड पर रहता था।

बैठक मे बैठाकर राजकुमार ने पूछ लिया, "हां, अब बताओ क्या चाहती हो।"

"कुमार! हम तुम्हारी सम्मति पर आचरण करने का विचार कर रहे थे कि यह दुर्घटना घट गई। तुमने समाचारपत्र मे पढ लिया होगा। तुम्हारे पिता पकड़ लिए गए और अब प्रबोध के पिता द्वारा एक लाख रुपये की जमानत पर छूटकर आए है।"

"यह सब मुझको विदित है। मैंने तो यह पूछा है कि मेरे यहां किसलिए आई हो।"

"तुमसे राय करने कि कैसे उनको बचाया जा सकता है।"

"जो कुछ कर सकता था, मैंने कर दिया था। यदि उनमे कुछ बुद्धि होती तो वे उसी समय सब सामान, उठाने योग्य सम्पत्ति लेकर भाग जाते। मैंने कहा था—शीघ्रातिशीघ्र; परन्तु आप रात-भर वहा पड़े रहे। अपकी कोठी का तो प्रातः तीन बजे घेरा डाला गया था और मै रात के आठ बजे आपके पास पहुचा था। सात घण्टे आपके पास थे। इन सात घण्टो मे आप यदि चाहते तो देश से भी बाहर जा सकते थे।"

"भूल यह हुई कि तुम्हारे शीघ्रातिशीघ्र का अर्थ हम घण्टों और मिनटो मे नहीं लगा सके। हम दिनो और सप्ताहो मे लगा बैठे थे। कुमार! अब बताओ, क्या किया जा सकता है। जहां से तुमको इस घटना की सूचना मिली थी, क्या उस स्थान से किसी प्रकार की सहायता नही हो सकती?"

"क्या सहायता चाहती हैं आप?"

"मुकदमा वापस ले लिया जाए।"

"मैं देश का प्रधानमन्त्री नही हूं। प्रधानमन्त्री भी इसमें कुछ कर सकेगा, मुझको सन्देह है।"

"परन्तु तुमको यह सब सूचना कहां से मिली थी?"

"यह बताने का न तो मेरा अधिकार है और न ही इच्छा।"

"इच्छा क्यों नही?"

"यह अब आपकी इस कठिनाई की घड़ी में बताऊंगा नही। मैं एक गरीब मां का बेटा, मेहनत-मज़दूरी से जीवन-यापन करने वाला, भला आप जैसे श्रीमानों की क्या सहायता कर सकता हूं?"

"मै तुमको भी श्रीमान बनाने की सामर्थ्य रखती हूं।"

"मुझको उसमे रुचि नही। मौसी! मैं सत्य कहता हू कि आप लोगो की सहायता करता, यदि मेरी सामर्थ्य मे कुछ भी होता। हां! एक राय दे सकता हूं। परन्तु मैं जानता हू कि तुम मानोगी नहीं।"

"क्या, बता दो।"

"ईमानदारी से सब रुपया सरकार के पास जमा करा दो और अपनी स्मृति

के अनुसार, जो-जो, जिस-जिससे आज तक अनुचित रूप में प्राप्त किया है, लिखा दो और अपने किए के प्रायश्चित्त के रूप मे अपने को सर्वथा भिखारी के रूप में जज की दया पर छोड़ दो।"

"कौन मानेगा इसको ?"

"एक परमात्मा ही सबके हृदय की बात जानता है और वह सत्य हृदय से पश्चात्ताप करने वालों की सहायता करता है।"

इस मुसीबत की घड़ी में भी सुन्दरी की हंसी निकल गई। इस समय राजेश्वरी आ पहुची और वह सुन्दरी को बैठा देख आश्चर्य से देखती रह गई।

"मां! क्या हाल है?" राजकुमार ने अपनी पत्नी के विषय में पूछ लिया।

"लडका हुआ है।"

"तो मां! तुम दादी बन गई हो ?"

"पर संतोष को बहुत कष्ट हुआ है। कुछ कांट-छाट भी करनी पड़ी है। हलका औपरेशन हुआ है। डाक्टर कहता है कि चिन्ता की बात नहीं, परन्तु कष्ट की बात तो है ही।"

"मां, मे जाता हूं।"

"तुम क्या करोगे जाकर ?"

"जाकर उसके पास बैठूंगा।"

"अच्छा जाओ। देख आओ। परन्तु बैठने की आवश्यकता नही होगी। संतोष की मां रहेगी, और तुम चले आना।"

३

राजकुमार को भूषण के विपरीत किए गए षड्यन्त्र का ज्ञान विदेश मंत्रालय से हुआ था। वहा उसका अधिकारी, जो विदेशों से आने वाली चिट्ठी-पत्री का अनुवाद कराया करता था, कह बैठा, "आज एक बहुत बड़ी मुर्गी पकड़ी जाने वाली है।"

"कौन है ?"

"एक भूषणदेव है। एम० ए० है, पी-एच० डी० है। मज़े में प्रोफेसरी

करता-करता राम-नाम की लूट में हिस्सा लेने के लिए उद्योग मत्रालय मे आ गया। समाजवादी विचार रखने के कारण नौकरी मिल गई और लगे समाजवाद का प्रचार करने।"

"परन्तु क्या किया है उसने ?" राजकुमार ने बताया नही कि वह उसका पिता ही है।

अधिकारी ने बताया, "मै अभी-अभी एक स्थान से आ रहा हू और वहा नई दिल्ली के पुलिस अधिकारी बैठे योजना बना रहे थे।"

राजकुमार से रहस्य न खोलने की सौगन्ध ली हुई थी। इससे उसके विभाग का अधिकारी निश्चित हो बता रहा था। उसने बताया, "आज रात ही उसको पकड़ लेने का प्रबन्ध किया जा चुका है।"

राजकुमार साय छः बजे घर पहुचा तो उसने उक्त सूचना मां को दे दी। मां ने कह दिया, "यह तो बहुत बुरा होगा।"

"मा ! हम क्या कर सकते है इसमे ?"

"हम उनको सूचना दे सकते है कि वे अपनी रक्षा का प्रबन्ध कर लें।"

"क्यो ?"

"राज ! वे तुम्हारे पिता है।"

"पर मां, वे बहुत दुष्ट है।"

"बेटा ! दुष्ट माता-पिता का भी तो श्राद्ध किया जाता है।"

"मै अपने कार्यालय से प्राप्त रहस्य किसीको बता नही सकता।"

"ठीक है। एक तो यह तुम्हारे दफ्तर की बात नही है। दूसरे तुमको न तो दफ्तर का नाम लेना है, न ही पूर्ण विवरण बताना है। तुमको तो केवल यह कहना चाहिए कि उनका जीवन और सब कुछ खतरे में है और उनको शीघ्रातिशीघ्र भाग जाना चाहिए।"

"मा ! यह तो तुम एक महादुष्ट को सहायता कर रही हो।"

"राज ! वह मेरा पति है। मैंने उसके साथ जीवन की कुछ सुख की घड़ियां व्यतीत की है और यह अतिम भेट उसकी स्मृति मे है।"

राजकुमार समझ गया कि मां ने उसके लिए जो कुछ किया है, यह तो उसका एक बहुत ही तुच्छ प्रतिकार है। वह बिना किसी हील-हुज्जत के वहां से चल पड़ा। उसने टैक्सी की और महादेव रोड पर जा पहुंचा।

अगले दिन वह कार्यालय में पहुंचा तो उसके अधिकारी ने भूषण की शेष सूचना दे दी। उसने बताया, "इस पूर्ण विषय की कारंवाई मेरे एक सम्बन्धी पुलिस विभाग में हैं, वे कर रहे है। उनका कहना है कि लाखों की सम्पत्ति मिली है। साथ ही कुछ नोट मिले हैं, जिनपर मजिस्ट्रेट के हस्ताक्षर कराए गए थे।"

"किनके नोट थे?"

"एक रूपकृष्ण ठेकेदार है, उसके लड़के प्रबोध ने मुखबरी की थी और वास्तव में उसने ही यत्न कर इस पाजी डाक्टर को पकड़वाया है।"

राजकुमार कभी-कभी प्रबोध इत्यादि से मिलने जाया करता था। उस दिन शेष समाचार लेने के लिए वह उनकी कोठी पर जा पहुचा। वहां पर पहले ही भूषण की चर्चा हो रही थी। वहा से उसको यह पता चला कि उस घर में दो दल हैं। एक में रामकुमार और उसकी पत्नी रोहिणी थी। वे भूषण को छुड़ाने के पक्ष मे थे। प्रबोध अभी अविवाहित था। वह और उसकी मां सुभद्रा, भूषण को फांसी पर लटकवा देने के पक्ष मे थे। रूपकृष्ण तटस्थ था। वह दोनों मे वाद-विवाद सुन आनन्द ले रहा था।

राजकुमार पहुंचा तो रूप ने ही उसको भी इस वाद-विवाद मे सम्मिलित कर लिया, उसने कहा, "लो राज! तुम भी अपने को बहुत बड़ा विद्वान मानते हो। बताओ, इसमें क्या करना चाहिए?"

राज ने नहीं बताया कि वह भूषण ताया के विषय मे कुछ भी जानता है। इससे वह चुप प्रश्नभरी दृष्टि से प्रबोध के पिता के मुख पर देखता रहा। कहानी प्रबोध ने सुनाई। उसने इसमें अपनी कारगुजारी सुनाई तो राज ने पूछ लिया, "अब क्या होगा?"

"होगा यह कि ताया जी महाराज को सात वर्ष का कठोर कैद का दण्ड मिलेगा। मैं चाहता हूं कि जो कुछ अभी उस बदकार औरत सुन्दरी के पास छुपाकर रखा है, वह खर्च हो जाए, और वह चादनी चौक मे खड़ी भीख मागने लगे तो चित्त को शान्ति मिले।"

राम हंस पड़ा और हंसता हुआ कहने लगा, "प्रबोध, तुम भाग्यविधाता कब से बने हो?"

"जब से आपके घर में जन्म लिया है।"

"बेटा! अपनी समेटो, दूसरों से द्वेष कुछ अच्छी बात नही।"

"भापा ! मुझको दो बातों का रोष है। एक यह कि भूषण समाजवादी बना घूमता था। वह अपनी मा को हमारे परनाना की सम्पत्ति मिलने पर कहता था कि हराम की कमाई है। अपने बडों को गाली देने का मजा चखाना चाहता हूं। पिता जी को भी तो वह कहा करता था, जुए की आय की लाग है। एक दिन कहता था, सब सम्पत्ति सरकार की है। इत्यादि। बगल मे छुरी और मुख में राम-राम। सब भेद प्रकट हो गयाहै।"

राम ने गम्भीर हो कहा, "देखो बेटा प्रबोध ! हम सब परमात्मा के अधीन है और जो कुछ होता है अपने कर्मफल से होता है। सुख, सम्पदा, पुत्र, कलत्र, भोग, ऐश्वर्य सब कुछ पूर्वजन्म के नेक कर्मों के कारण से ही मिलते है और फिर जब कोई दुर्घटना होती है तो उन पुण्य कर्मों का फल समाप्त हो जाने पर ही होती है। इससे मत समझो कि यह हो तो वह करूं और वह करूंगा तो यह होगा। यह सब व्यर्थ का अभिमान है। तुम अपने कर्मो को देखो और अपने दिनों की बात विचार करो। कौन जाने क्या होने वाला है।"

राम के मन मे अभी भी गौरी बहिन की शिक्षा का प्रभाव था। यू तो रूप भी गौरी का चेला था और वह अपने पिता की बात को ठीक समझता था, परन्तु उसकी पत्नी सुभद्रा अपने लडके प्रबोध का पक्ष ले रही थी और रूप का साहस नही होता था कि उसका विरोध कर सके। वह एक अतिधनी बाप की बेटी होने से सदा अपने पति पर और उसके माता-पिता पर शासन करती रही थी। उसने एक बात कही, "क्या पुण्य है और क्या पाप है इसका निणर्य तो आज तक कोई नहीं कर सका। न ही इस बात का ज्ञान पूर्ण है कि परमात्मा कहा है, और क्या करता रहता है। इस कारण अपनी बुद्धि से विचार कर ही तो बात की जा सकती है। मेरा मन कहता है कि इन ठग समाजवादियो को निःशेष करने के लिए पूर्ण यत्न करना चाहिए। मैं जानती हूं कि यदि इन समाजवादियों का बस चल गया तो ये सभी मित्रता, रिश्तेदारी और किए का एहसान भूलकर पैसे वालो की हड्डियां तक पीस डालेंगे। इन्होने, सब कम्यूनिस्ट देशो मे, यही कुछ किया है। अतएव, इनको तो पानी भी पीने नहीं देना चाहिए।"

"परन्तु बेटा !" राम ने कह दिया, "यह भूषण तो कागज़ी पहलवान है। यह नाम का समाजवादी है। इसकी हत्या कर तो समाजवाद समाप्त नही होगा।"

इसपर राजकुमार बोल उठा, "भापा ! मै भूषण की सिफारिश नहीं करना

चाहता, परन्तु एक बात का भ्रम निवारण करने के लिए कहता हू । इन समाज-वादियों की बात ही कहता हू । समाजवाद हो चाहे पूजीवाद हो, कुछ भी बिना धन के चल नही सकता । यह सोना, जवाहरात इत्यादि तो धन का मूर्तरूप ही है। समाजवादी भी इसको एकत्रित करते है और फिर इनमे भी जो नेता बन जाते हैं, वह उस एकत्रित धन का अपनी नेतागीरी स्थिर रखने के लिए प्रयोग करते हैं।"

"आप पैसे वालों से एक बात उनमें अधिक है । आप तो केवल सोना-चादी को ही धन मानते हैं और वे इसके भी स्रोत मानव-परिश्रम को धन समझ चुके है । जहां आप सोने-चादी के टुकड़ों को तिजोरियों में जमा रखना चाहते है, वहां वे इसके स्रोत मानव-परिश्रम को भी अपने अधिकार मे रखना चाहते है ।

"वास्तव मे समाज का हित न इनके पास है न आपके पास । यदि उनको नि:शेष करना है तो आपको क्यो नहीं ?"

"तो समाजवाद ढोग है ?"

"बिलकुल । वास्तव मे यदि कोई वाद इस संसार में चलना चाहिए तो वह धर्मवाद है । धर्म है सबसे वह व्यवहार करना जो कोई अपने से किया जाना पसन्द करता हो । एक क्षण के लिए अपने को दूसरे के स्थान पर बैठा और उसीकी स्थिति में पडा हुआ समझ लो और जो कुछ तुम अपने साथ दूसरो से आशा और इच्छा करते हो, वही तुम स्वयं उसके साथ करो ।"

सुभद्रा समझ रही थी कि राजकुमार अपने पिता की अति योग्यता से सिफा-रिश कर रहा है । इस कारण उसने उसको गलत सिद्ध करने के लिए पूछ लिया, "यदि तुम हमारी स्थिति मे होते तो क्या करते ?"

"मै तो उनके पीछे पड़ने के स्थान पर अपने को धर्मपथ पर आरूढ़ करने का यत्न करता । मैं न कभी बेईमानी करता और न कभी किसी भी बेईमान की भांति अपराधियो के कठघरे मे खड़ा होने के योग्य होता । शेष पुलिस वालो के करने के लिए छोड देता ।"

"तो तुम समझते हो कि हम बेईमान हैं ?"

"चाची, मैने चाचा जी के बही-खाते देखे नही । इससे मैं कुछ नही जानता और मैंने आपके विपरीत कुछ नही कहा । मैंने तो एक सिद्धान्तात्मक बात कही है । यदि आप समझती है कि यहां पर दाल मे काला नही है और आप कभी उस कठघरे में खड़े हो सकते ही नहीं तो आपका अधिकार है कि दूसरों को फसाने में

सहयोग दें।"

"हम अपने को ऐसा ही समझते है।"

"तो ठीक है।"

रूप ने अंतिम निर्णय दे दिया, "राज की बात सोलह आने ठीक है। प्रबोध! यदि तुम सत्य हृदय से समझते हो कि तुमने कभी कोई ऐसी बात नहीं की, जिससे तुम अपराधी के कठघरे मे खड़े किए जा सकते हो, तो तुम भूषण को फासी चढ़वा सकते हो।"

राम ने बात बदल दी, "राज! बहू कैसी है?"

"एक-दो दिन मे मां बनने वाली है।"

"भगवान करे तुम्हारे घर मे भी बच्चों की चूं-पी होने लगे।"

"और काहन ताया की भाति आधी दर्जन बच्चे घर मे टट्टी-पेशाब करते फिरे।" प्रबोध ने हसते हुए कहा।

सब हसने लगे।

अगले दिन राजकुमार को पता चल गया कि लाखों रुपयो का माल जो भूषण के घर से मिला था, वह कुछ लोगों ने परस्पर बांट लिया है। और तलाशी मे मिली वस्तुओ मे नही लिखा गया। तीसरे दिन सुन्दरी राजकुमार से मिलने आई।

राजकुमार अपनी राय देकर अपने ससुराल, जो निकलसन रोड पर थी, चला गया। राजेश्वरी ने सुन्दरी की बात सुनी तो कह दिया, "बहिन! रूपकृष्ण के पास जाओ। वह सब करने की सामर्थ्य रखता है।"

"परन्तु बहिन! वह तो हमको इस प्रकार निचोड़ लेना चाहता है, जैसे रस निकालने वाले नीबू को निचोड़ लेते है।"

"कुछ भी हो। यदि अब इस घर मे किसीके मन में दया है तो रूपकृष्ण के ही है और यदि वह भी तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता, तो फिर समझो कि कुछ नही हो सकेगा।"

सुन्दरी वहा से राम के पास जा पहुची। राम तो सर्वथा अपने पुत्र और बहू के आश्रित था, इससे उसने सुन्दरी की बात सुनी तो रूप को बुला बैठा। उस समय सुभद्रा अपने मां के घर गई हुई थी और प्रबोध अभी घर आया नही था। रूप के अन्य बच्चे अभी छोटे थे। अतः राम ने रूप को स्वतन्त्रतापूर्वक बात करने के लिए सुन्दरी के सामने बुला लिया।

"रूप। यह भूषण की श्रीमती आई हैं।"

"भापा ! व्यर्थ है। मै कुछ नही कर सकता। तुम जानते हो कि सुभद्रा और प्रबोध मेरी एक नही चलने देते।"

"पर मैं पूछता हू, तुम सुभद्रा के दास हो? तुममे आत्मसम्मान कुछ भी है तो अपने मन की बात करो।

" पहले यह बताओ कि तुम क्या करना चाहते हो?"

"भापा ! मैंने भूषण दादा की जमानत भी अपनी इच्छा से दी है। सुभद्रा तो इसके लिए भी राय नहीं देती थी। मैने जमानत इसीलिए दी थी कि दादा मुझसे मिलकर योजना बनाएगे। वे स्वय तो आए नही और भेज दिया है इसको। इससे मै बात नही करना चाहता।"

'मैंने क्या पाप किया है?"

"तुमने मति भ्रष्ट की है दादा की। तुम मद्य का सेवन करती हो और तुम ही उसका सब लेन-देन करती हो।"

"परन्तु रूप जी ! क्या मै उनकी इच्छा के बिना कुछ भी कर सकती थी?"

"मै तो सब खराबियो का मूल सुन्दर औरत को समझता हू।"

इसपर राम ने कह दिया, "परन्तु रूप ! तुम्हारी पत्नी तो बहुत सुन्दर नहीं है।"

"भापा ! उसमे एक अन्य दोष है। वह धनी बाप की बेटी है। यह दोष शारीरिक सौदर्य से तो कम है, इसपर भी बहुत प्रबल है। रूप, धन, यौवन सब पाप की जड़ है।"

राम हस पड़ा। हंसकर बोला, "रूप ! अपनी मा का सौदर्य स्मरण है?"

"हा भापा !"

"परन्तु मेरी मति तो भ्रष्ट हुई नही थी, उसके कारण।"

"हुई तो थी। उस ज़माने मे जितनी आपकी सामर्थ्य थी, उसके अनुरूप ही तो खराबी हो सकती थी।"

"कैसी अनर्गल बात करते हो रूप? मै सौ-डेढ सौ रुपया महीना कमाने वाला वकील तुमको एम० ए० तक पढ़ा सका था। तुम्हारी चारों बहिनो को पढ़ा-लिखाकर अच्छे घरों मे विवाह कर दिया था। तुम्हारा विवाह भी ईश्वर की कृपा से बहुत अच्छे परिवार में हुआ था। मेरे पर तो तुम्हारी मां के सौन्दर्य का

कोई बुरा प्रभाव हुआ नही।

"और तुम्हारी धनी बाप की बेटी, पत्नी ने तुम्हारे बड़े लडके को दसवी जमायत तक पढाकर बस कर दिया। तुम्हारी दोनों लड़किया प्रतिवर्ष मास्टर रख-रखकर पास होती है और कमल तो नीम-पागल ही हुआ है।"

रूप इस सब वस्तुस्थिति को जानता था, परन्तु इसका कारण नही समझता था। उसने आज बात चली तो पूछ लिया, "पर भापा! मै समझ नही सका कि इसमें कारण क्या है। सुभद्रा स्वयं तो बहुत समझदार और पढने-लिखने में बहुत तेज़ है।"

"कारण मैं बताता हू।" राम ने आखे मूदकर विचार करते हुए कह दिया, "इसमे एक कारण सुभद्रा का धनी होना है। वह घी बहुत ज्यादा खाती है। वह मिठाई, दूध-मलाई की बहुत शौकीन है। यही बात है, उसके सब बच्चो की रुचि चिकनी वस्तुए खाने मे है। इसीसे सबके मस्तिष्क मे चर्बी बैठ गई है। धनी होने से एक और दोष उनमे उत्पन्न हो गया है। वे समझने लगी है कि संसार में सब काम धन से निकल सकते हैं। पाप, पुण्य, आत्मा, परमात्मा सब धन से सीधे हो जाते है। मेरे जमाने मे भैया शिव परमात्मा से डरता था। वह गौ की झूठी सौगन्ध न खाकर लाखों रुपये छोड़ने के लिए राज़ी हो गया था।

"परन्तु तुम्हारी इस अवस्था का एक दूसरा कारण भी है। वह परिवार में परस्पर सहानुभूति और सहायता नही रही जो हमारे ज़माने मे थी। तुम सब लोग 'सैल्फ सेन्टर्ड' (निपट स्वार्थी) हो गए हो।

"इन दोनों कारणों के अतिरिक्त एक अन्य बड़ा कारण भी है। वह है कि तुम बैल हो। यदि तुममें आत्मबल होता तो तुम उक्त दोनो कारणों को सीमा से बढ़ने न देते।"

"मैं क्या करता और क्या करू?"

"मेरा कहा मानो। भूषण की सहायता करो। मै सत्य कहता हू कि भूषण के व्यवहार को पसन्द नही करता, और यह उसको कहो कि अपना व्यवहार ठीक रखे। परन्तु वह तुम्हारी बुआ का लडका है। उसकी यथासम्भव सहायता करो।"

"तो सुन्दरी।" रूप ने सुन्दरी को कह दिया, "भूषण जी को कहना। कल प्रातः मुझसे मिले। यहां इस कोठी मे नहीं। मै कुदसिया बाग मे आ जाऊगा, वे भी वहां आ जाएं। हम पृथक् मे बैठ बातचीत करेंगे। उसको कहना, मै ठीक छः बजे

वहां पहुंचूगा ।"

अगले दिन रूप समय पर कुदसिया बाग मे जा पहुंचा तो भूषण भी आ गया। रूप ने बताया, " मै इस समय प्रातः भ्रमण के लिए यहा आया करता हूं और मै चाहता हू कि इस समय ही हम मिला करे तो ठीक रहेगा।

" बताओ इस कठिनाई से बचने के लिए क्या त्याग करना चाहते हो ? "

"मै तहखाने से निकला पूर्ण धन देने के लिए तैयार हू ।"

"भूषण जी ! वह तो गया। उसके पच्चीस भाग होकर बट गया है। एक मुख्याधिकारी को पच्चीस प्रतिशत गया है। पच्चीस प्रतिशत रूप और मजिस्ट्रेट अग्निहोत्री के पास आया है। शेष पचास प्रतिशत लगभग बीस आदमियो मे बंटा है और उसका खुर-खोज भी नही रहा।"

"और तो मेरे पास कुछ है नही ।"

"भूषण दादा ! ऐसी बात मत करो। देखो, मैंने रात-भर एक योजना विचार की है। तुम अब बिल्कुल बच तो सकते नहीं। कुछ न कुछ दण्ड अवश्य मिलेगा। वह सम्पत्ति जो तहखाने में से निकली है, मिल सकती नही। इससे मै दो दिशाओ पर विचार करता हू। एक यह कि तुमको कम से कम दण्ड मिले, जिससे तुम जीवित ही जेल से बाहर आ सको और दूसरे जो शेष तुम्हारे पास बचा है, उसका कम से कम खर्च हो। मुझको तुम्हारे दस हज़ार का, जो पिछले तीन-चार दिन मे व्यय हुआ है, भारी दुःख है।

" सुनो। तुमको न्यायालय में पेश किया जाए तो तुम बयान दे दो कि तुम लोभ में आकर यह दस हज़ार रुपया, जो प्रबोध ने दिया था, ले बैठे थे। उससे पहले तुमको इस प्रकार के काम करने का न तो अभ्यास था न ही रुचि। तुमसे भूल हुई है। तुम अपने को जज की दया पर छोड़ते हो। भविष्य में ऐसा न करने का वचन देते हो।

"वह सब धन जो तुम्हारे पास है, वह सुन्दरी को दे दो। उसको मैं एक बहुत योग्य वकील कर दूंगा। यह यत्न किया जाएगा कि तुमको कम से कम दण्ड हो। तुम उसकी अपील मत करना और कैद के दिनो मे तुम्हारे धन से तुमको अधिक से अधिक सुख-सुविधा जेल में पहुंचाने का यत्न किया जाएगा।

"जब तुम आओगे तो फिर तुम किसी पहाड़ी सस्ते-से स्थान पर रहकर जीवन व्यतीत कर सकोगे। देखो, मै तुम्हारी सदा सहायता करूंगा, परन्तु अपनी

पत्नी और प्रबोध से चोरी-चोरी।"

"वे मेरे विरुद्ध क्यों है ?"

"क्या करोगे जानकर ? यदि बात स्वीकार हो तो कल यहां इसी समय आ जाना। मैं तुमको एक परिचित वकील के पास ले चलूगा और उसको अपना दृष्टिकोण समझा दूगा। वह तुम्हारा बयान लिख देगा। तुम वह निश्चित तिथि को न्यायाधीश के सामने स्वय उपस्थित कर देना। इसके विषय में सुन्दरी के अतिरिक्त किसीको मत बताना। यदि तुम्हारे विरोधियों को पता चल गया तो वे तुम्हारे बयान को, कि तुमने यह पहली रिश्वत ली है, झूठी सिद्ध कर देंगे।"

घर जाकर भूषण ने सुन्दरी से बात की और उसकी सहमति से वह अगले दिन रूपकृष्ण से मिला और वहा मिस्टर खन्ना से बातचीत हुई तो वह मुकदमा लेने पर तैयार हो गया।

निश्चित तिथि को भूषण ने अपना लिखित बयान दे दिया। उसमें उसने अपना दोष मान लिया। अब प्रबोध को समझ आई कि तहखाने वाला धन बांट लेने से और उसको मुकदमे का अश न बनाने से भूषण के खिलाफ मुकद्दमा दुर्बल पड़ गया है।

मजिस्ट्रेट ने पुलिस से कहा, "इस बयान पर क्या आपत्ति है ?" सरकारी वकील इसके लिए तैयार न था। उसने केवल यह कहा, "हमारा केवल यही कहना है कि इस व्यक्ति को कडा से कड़ा दण्ड मिलना चाहिए, जिससे अन्य रिश्वत लेने वालों को सबक मिले।"

मजिस्ट्रेट ने फैसले की तारीख नियत कर दी। उस दिन मजिस्ट्रेट ने स्पष्ट कह दिया, "अपराधी के अपने अपराध मान लेने और आगे से ऐसा न करने का वचन देने से मैं इस परिणाम पर पहुचा हू कि छः मास के कठोर दण्ड से न्याय का उद्देश्य पूर्ण होता है। पुलिस के अपने बयान से यह सिद्ध होता है कि अपराधी स्वभाव से अपराध करने वाला नही।"

४

न्यायालय में मजिस्ट्रेट का निर्णय सुनने के लिए घर के कई प्राणी गए हुए थें। सुन्दरी तो थी ही, साथ ही राम, रूप, प्रबोध, राजकुमार, काहन और उसका

सबसे बड़ा लड़का विश्वम्भर भी था। वह पहली पत्नी से था। वह इस समय बाईस वर्ष का हो गया था। काहन ने उसको विदेश मंत्रालय मे नौकर करा दिया था और राजकुमार से उसकी बहुत घनिष्ठ मैत्री थी।

राजकुमार ने निर्णय हो जाने के पश्चात् भूषण के समीप आकर कहा, "पिता जी ! ईश्वर का धन्यवाद है कि सहज ही छूट गए है।'

"राजकुमार ! सुन्दरी को अपने घर ले जा सकोगे ?"

"घर माता जी का है। उनसे पूछकर ही बता सकता हू।"

"उसको एक सप्ताह के भीतर मकान खाली करना है। वह तो रूप की कोठी मे जाना चाहती है। परन्तु मैं पसन्द नही करता।"

"क्यो ?"

"प्रबोध के कारण। वह अच्छा लड़का नही।"

"वह कोई मकान भाड़े पर लेकर रह सकती है।"

भूषण चुप रहा। राजकुमार इसमें किसी प्रकार की रुचि नही रखता था। साथ ही वह जानता था, उसकी माँ इस मद्य-सेवी औरत को घर पर नही आने देगी।

जब भूषण पुलिस वैन में चला गया तो राम ने प्रबोध से कहा, "क्यों बेटा प्रबोध ! बहुत डींग हांक रहे थे न कि इसे सात वर्ष की कैद कराकर सांस लोगे !"

"मै यत्न करूगा कि पुलिस अपील कर दे।"

इसपर रूप ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, "ठीक है बरखुरदार ! अब पुलिस के मुकदमे ही लड़ा करो। कुछ काम-धन्धे करने की क्या आवश्यकता है ?"

"पिता जी ! काम तो किया है। कर रहा हू। एक महीने में नकद छः लाख रुपये का लाभ हुआ है।"

इस समय सब अपनी-अपनी मोटर के पास आकर खड़े हो गए थे। सुन्दरी ने राजकुमार को कहा, "आओ राजकुमार, मै तुमको घर छोड़ दूगी।"

"मौसी ! बहुत चक्कर पड़ेगा तुमको।"

"नहीं। मै तुम्हारी मा से मिलने जा रही हू।"

राजकुमार को यह समझ आया कि उसकी मा के घर में रहने की बात करने जा रही है, इससे वह उसके साथ जाना नही चाहता था, जिससे मा उसको स्वतन्त्रतापूर्वक रखने अथवा न रखने का विचार कर सके।

उसने कह दिया, "मुझको अपने दफ्तर में कुछ काम है। मैं बस में सीधा वहा जाऊगा।"

इस प्रकार वह उसे टाल गया। जब सुन्दरी अपनी गाड़ी पर चलने लगी तो रूप ने आगे आ पूछ लिया, "अब तो सरकारी बगला खाली करना पड़ेगा।"

"जी! आशा कर रही हू कि एक सप्ताह के भीतर खाली कर दूगी।"

"तो कहा जा रही हो?"

"मैं दिल्ली से बाहर जाना नही चाहती। कही भाड़े का मकान देखना चाहती हू।"

"मकान तो मैं दे सकता हू। मगर…।"

"हा! हां!! मगर क्या?"

"घर वालो से चोरी…"

सुन्दरी ने मुस्कराकर पूछा, "घर वालो से अथवा घर वाली से?"

"एक ही बात है।"

"तो कब दिखाइएगा मकान?"

"तुम कोठी पर कब मिलोगी?"

"आप अपनी सुविधा का समय बताइए। मैं तो आजकल बेकार हू।"

"तो रात के खाना खाने के समय आऊगा।"

इतना कह रूपकृष्ण अपने लड़के प्रबोध के पास चला। उनके साथ मोटर में बैठकर वह श्रीराम रोड को चल पडा। मार्ग मे राम ने पूछ लिया, "क्या कहती थी वह औरत?"

"यही कि उसको किसी मकान की आवश्यकता है।"

"तो तुमने क्या कहा है?"

"मैंने कहा है, प्रबोध के पास बहुत जगह खाली है।"

"बहुत मूर्ख हो, रूप!"

"क्यो भापा! क्या मूर्खता की है?"

"प्रबोध के पास कौन-सी जगह खाली है?"

"क्यो प्रबोध? कोई मकान खाली नही है क्या?"

"मकान तो पिता जी कई खाली हैं। परन्तु मैं इस औरत से किसी भी प्रकार का सम्पर्क रखना नहीं चाहता।"

"क्यों ? इसमें क्या खराबी है ?"

"तो आपको वह एक भली औरत दिखाई देती है ?"

इसपर राम ने कह दिया, "प्रबोध ठीक कहता है। गन्दगी मे हाथ डालने से कुछ कल्याण की आशा नही की जा सकती।"

रूप चुप रहा। घर पहुच, सायकाल की चाय पी गई। प्रबोध ने कह दिया, "मा आज सिनेमा देखने जा रही है।"

"साथ कौन-कौन जा रहा है ?"

"मैं और कमल। सोमा और दिति बहिन घर पर स्कूल का काम करेगी।"

"उनको साथ क्यो नही ले जा रहे ?" राम ने पूछ लिया।

"पिता जी ! वे आपके साथ जाएगी।"

"पर मैं तो सिनेमा देखने जाता नहीं।"

"तो वे भापा जी के साथ चली जाएगी।"

बात समाप्त हो गई। रूप उठकर कोठी मे चला गया। वह अभी ड्राइग रूम में बैठा था कि सोमा और दिति आ गई और बोली, "पिता जी ! मा को कह दीजिए, हमको भी सिनेमा देखने ले चले।"

"मा को बुलाओ।"

सोमा गई और मा को बुला लाई। सुभद्रा ने आते ही कह दिया, "सोमा दो बार नौवी श्रेणी मे फेल हो चुकी है। जब तक वह परीक्षा पास नही करेगी, उसको मैं साथ नही ले जाऊगी।"

"और कमल को क्यों ले जा रही हो ! उसने भी तो तीसरी जमायत दो वर्ष में पास की है और वह भी मास्टर की सहायता से।"

"यह तो दो वर्ष मे भी पास नही कर सकी।"

"और प्रबोध तो तीन बार फेल होकर पढ़ना ही छोड चुका है।"

"परन्तु वह तो व्यवसाय मे लग गया है। लाखो कमाकर लाने लगा है।"

"अच्छा सोमा !" राम ने कह दिया, "तुम भी कल से पढ़ाई बन्द कर दो तो तुमको भी तुम्हारी मां सिनेमा देखने ले जाएगी।"

"चोटी मरोड़ दूगी। यदि ऐसा किया तो।" सुभद्रा का कहना था।

रूप देख रहा था कि यह भूमि ही खराब है।

सोमा और दिति मन मसोसकर अपने कमरे में जा पढ़ने लगी।

सुभद्रा अपने दोनो लड़को के साथ प्लाज़ा मे एक पिक्चर देखने चली गई। रूप ने टैक्सी मंगवाई और चल दिया। सुभद्रा इत्यादि सब सिनेमा से लौटे तो रूप वापस नही आया था। सुभद्रा ने अपनी सास से पूछा तो उसने बता दिया, "प्रबोध के बाबा को बताकर गया होगा।"

"और वे कहा है ?"

"राजकुमार के साथ कही गए है।"

सुभद्रा बाप-बेटा दोनों के व्यवहार को पसन्द नही करती थी। उसने कह दिया, "इस अवस्था में रात के समय सड़कों पर भटकना तो बिलकुल बेहूदी बात है।"

"बहू ! आ जाएगे। चिन्ता किस बात की कर रही हो ?"

रूप रात के बारह बजे लौटा। सुभद्रा अपने पति की प्रतीक्षा कर रही थी। रूप ने आते ही पूछ लिया, "तुम सोई नही ?"

"मुझको आज भय लग रहा है।"

"भय किस बात का ?"

"आप कहा रहे है इतनी देर तक ?"

"मै भी पिक्चर देखने गया था। साढ़े नौ बजे के शो में।"

"कौन पिक्चर देखने गए थे ?"

"ताज !"

"मुझको पसन्द नही है।"

"परन्तु तुम देख चुकी हो क्या ?"

"हां। एक दिन गई थी।"

'तुमने बताया नही।"

"मैंने आवश्यकता नही समझी।"

"अच्छा ! आज क्या देखकर आई हो ?"

"टू मिलियन ईयर्स एगो ?"

"कैसी है यह पिक्चर ?"

"सप्लैंडिड। हमने इसको बहुत पसन्द किया है।"

"अच्छा ! अब सो जाओ।"

"भोजन कहां किया है ?"

"गेलार्ड में।"

"हमने वैंगर में खाया है।"

दोनो सो गए। अगले दिन पुनः रूप काम पर जाने के समय से बहुत पहले ही घर से चला गया था।

राम को पिछली रात राजकुमार अपने घर ले गया था। राजेश्वरी ने राय करने के लिए बुला भेजा था। राजेश्वरी ने बताया, "भूषण की उपपत्नी सुन्दरी आई थी और इस घर मे रहने की स्वीकृति चाहती थी। मैंने उससे कारण पूछा तो कहने लगी कि राजकुमार के पिता उसको यहा रहने के लिए कह गए हैं।"

राम ने पूछ लिया, "तुमने क्या कहा है?"

"मैंने यही कहा है कि वह मद्य का सेवन करती है। इससे उसको यहां कष्ट होगा।

"इसपर उसने कहा है कि वह इस घर में रहती हुई मद्य का सेवन नहीं करेगी। वह सदा मेरे अनुशासन मे रहेगी।"

"देख लो। मै समझता हू कि उसको यहां रखना नही चाहिए।"

"तब ठीक है। वह कल आने के लिए कह गई है। मै उसको कोई पृथक् मकान लेने मे सहायता कर दूगी।"

"हां, क्यो राजकुमार! तुम्हारा क्या विचार है?"

"यही बात मैंने मां से कही है।"

"राजेश्वरी! इसमें मुझसे राय क्यों कर रही हो?"

"इस समय घर में पुरखा आप हैं। कदाचित् राज के पिता आपसे कुछ कह गए हों। इससे मैंने आपसे राय करनी ठीक समझी है।"

"देखो राजेश्वरी! अब न घर है न घर का कोई पुरखा है। यू तो लाला सुलक्षणमल की सन्तान दूर-दूर तक फैल गई है। हम सैकड़ो की सख्या में हैं। परन्तु परस्पर वह मेल-मुलाकात भी नही रही, जो किसी पडोसी से भी होती थी। लाला जी का मन्दिर लाला गोवर्धनलाल के सन्यास लेते ही दादा महेश के अधिकार मे चला गया है और पाकिस्तान बनने के समय से अब तक वह भाड़े पर चढ़ा रहता है। उसके हिसाब-किताब का कही पता भी नही चलता। घर का कोई प्राणी उससे पूछता ही नही। महेश किसीकी सुनता भी नहीं।"

राजेश्वरी चुप रही। राम घर लौट आया और अपने कमरे में जाकर सो

"जी, वह यहां नहीं रहती।"

भूषण गम्भीर विचार में लीन बैठा ही था कि राजेश्वरी और सतोष आ गईं। राजेश्वरी ने हाथ जोड़ नमस्कार किया और पूछ लिया, "कब आए है आप ?"

"बस, चला ही आ रहा हूं। मैं सुन्दरी से मिलने आया था।"

राजेश्वरी ने मुस्कराते हुए कह दिया, "जी, मैंने भी यही समझा है। मैं यह समझने की धृष्टता नही कर सकती कि आप मुझको दर्शन देने आए हैं।"

"तो वह कहा है ? राज कह रहा है कि उसने उसको कभी देखा नही।"

" वह आपके मुकदमे के निर्णय के दिन सायकाल यहां आई थी। मुझसे यहा रहने की स्वीकृति चाहती थी।

" वह मेरी शर्त, कि मद्य-सेवन नही करेगी, मान गई थी और मैंने उससे राज से पूछकर यहां रखने की वात कही थी। वह अगले दिन आने की बात कह गई थी। उस दिन के पश्चात् वह नही आई और उससे किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रहा।"

"बहुत विचित्र है। वह मुझको इसके विपरीत बताती रही है।"

"तो ऐसा करिए। इस समय स्नानादि कर अल्पाहार लीजिए और फिर अन्य कही पर उसकी खोज करिए। यहा तो वह है नही।"

इतना कह राजेश्वरी अपनी बहू के पीछे-पीछे चली गई। भूषण स्नानागार मे चला गया। वह अपने साथ जेल में अपने सूटकेस मे दो पोशाके ले गया था, जो उसको वहां पहनने की आवश्यकता नहीं पड़ी थी। वहा से आते समय उसको कपड़े वापस मिल गए थे।

उनमें से एक पोशाक पहन, वह राजकुमार के साथ अल्पाहार लेने, खाने के कमरे में चला गया। भोजन कर उसने राजकुमार से दस रुपये उधार लिए और सुन्दरी की खोज में निकल पड़ा।

राजेश्वरी के मकान से वह रूपकृष्ण के घर पर जा पहुचा। वहा राम सिगरेट फूकता हुआ मिल गया। राम की पत्नी उसके समीप बैठी रूप के विषय में ही बतला रही थी। वह कह रही थी, "सुभद्रा ने आज मुझको यह अतिम चेतावनी दी है कि यदि रूप ने अपना व्यवहार ठीक न किया तो वह अपने बच्चों के साथ यह घर छोड़ जाएगी।"

"तो फिर क्या होगा ?"

"होगा यह कि प्रबोध का कारोबार रूप से पृथक् हो जाएगा।"

"मुझको तो यह ज्ञात है कि रूप पहले ही पृथक् कार्य करता है। दोनों के कार्य के पृथक्-पृथक् रजिस्टर है।"

"परन्तु घर पर तो वे इकट्ठे रहते हैं।"

"इससे क्या होता है ? वह नया घर बना लेगा। आजकल घर बनाने में कुछ भी कठिनाई नही है।"

"तो आप भी यही ठीक समझते है ?"

"नही रोहिणी ! मै तो यह कह रहा हूं कि इस घर को छोड़ने से किसको अन्तर पडेगा ? सुभद्रा पति से वचित हो जाएगी। उसका मूर्ख लडका मूर्खता करने में और भी स्वतन्त्र हो जाएगा और वह दिवाला निकालने के समीप हो जाएगा।"

"तो इससे हमको हानि नही होगी क्या ?"

"मै समझता हूं कि मुझको सुभीता हो जाएगा। रूप मेरा और तुम्हारा लड़का है। उसको हमारे से अधिक सहानुभूति है। सुभद्रा और उसके लाडले प्रबोध ने तो हमको कैदी बना रखा है। हर रोज़ दो रुपये खाने-पीने के लिए दे जाता है, जिससे डेढ रुपया तो सिगरेट पीने में चला जाता है।"

"परन्तु वह रूप की शिकायते जो करती है।"

"क्या करती है ?"

"रूप मद्य का सेवन करने लगा है। वह रात को बारह बजे और कभी उससे भी देरी कर आता है। पिछले पांच महीने से उसने अपनी पत्नी के पलंग पर पांव नही रखा और वह अपने 'एकाउण्ट' की किताब 'सेफ' में बन्द कर रखता है। वह घर पर भोजन नही करता। प्रातः काम पर जाता है और रात को बारह बजे लौटता है।"

"सत्य ही यह बुरी बात है, परन्तु इसका इलाज सुभद्रा का घर छोड़ जाना नहीं। परमात्मा ने उसको कुरूप बनाया है, परन्तु वह इस अवगुण से हुई त्रुटि की पूर्ति अपने प्रेममय व्यवहार से कर सकती थी। वह उसने की नही। मुझको भय है कि उसने अभी भी अपना नया घर बना लिया है।"

"आप दोनों मे सुलह करा दीजिए।"

इस समय भूषण आ गया। राम ने देखा तो प्रसन्नता मे बोल उठा, "भूषण, आओ बैठो। कब आए?"

"बस आ ही रहा हू। अभी तो राजेश्वरी के मकान मे ठहरा हूं। सुन्दरी यहां रहती है क्या?"

"नही। वह यहां नही। इसपर भी इतना ज्ञात है कि वह दिल्ली मे ही है।"

"कैसे पता चला?"

"एक दिन प्रबोध कह रहा था कि उसने उसे रेसकोर्स मे देखा था।"

"क्या करते हुए?"

"किसी घोड़े पर 'बिड' करते हुए।"

"ओह। पर भापा, क्या वह अकेली थी?"

"हां।"

"और उसने पूछा नही कि वह कहा रहती है?"

"प्रबोध एक मूर्ख लडका है। वह सुन्दरी से घृणा करता है और मन के इस आवेश में उसने जानना आवश्यक नही समझा।"

"प्रबोध पुनः कभी नही गया रेसकोर्स मे?"

"यह तो मुझको विदित नही। वह इस समय काम पर गया हुआ है। मध्याह्न भोजन के समय आएगा। तब पूछ लेना।"

"अच्छी बात है। मैं भोजन के समय आ जाऊगा। यदि आप मुझको निमंत्रण दे तो भोजन यहा ही करूगा।"

"भूषण, तुम मेरी बहिन के लड़के हो। इससे मेरे भी अज़ीज़ हो। तुम चाहे कितनी भी खराबी करो पर तुम अपने हो। इससे तुम निःसकोच और अनिमन्त्रित भी आ सकते हो। जैसी रूखी-सूखी मैं खाता हू, वैसी तुमको भी मिल जाएगी।"

भूषण वहा से चला आया। वह पैदल ही कश्मीरी गेट की ओर चल पड़ा। वहां से वह लालकिले की ओर चलता हुआ चांदनी चौक में घूम गया। इस समय वह थका हुआ अनुभव करने लगा था। उसने घडी मे समय देखा। अभी साढ़े ग्यारह बजे थे। वह लौट पड़ा और पैदल चलता हुआ श्री राम रोड पर सवा बारह बजे जा पहुंचा। रूप की कोठी मे ड्राइग रूम में पहुंचा तो सुभद्रा वहां बैठी

एक उपन्यास पढ रही थी। उसने भूषण को वहां आते देखा तो विस्मय में उठ खडी हुई और अनायास ही उसके मुख से निकल गया, "कब आए हो?"

"आज ही आया हूं।"

सुभद्रा न तो बैठी, न ही उसने भूषण को बैठने के लिए कहा। वह पूछने लगी, "यहा किसलिए आए हो?"

भूषण अढाई घण्टा-भर पैदल चलने के कारण थका हुआ अनुभव कर रहा था। अतः उसने एक सोफा पर बैठते हुए कहा, "इसलिए कि पैदल चलते-चलते थक गया हू और भूख से व्याकुल हो रहा हू।"

"तो यहा होटल समझ रहे है आप ?"

"नही भाभी ! इसको अपने मामा का मकान समझ आया हूं।"

"आपके मामा तो यहां है नही।"

"कहां गए है ?"

"अपने कमरे मे है।"

"तो वे मामी के साथ होगे। मै उनकी यहीं प्रतीक्षा करूगा।"

"और मामी काटती है क्या ?"

भूषण को यह बिलकुल अशिष्टता प्रतीत हुई थी। इसपर भी मरता क्या नही करता। वह बैठ तो गया था, परन्तु सुभद्रा की इस अशिष्टता का प्रतिकार करना चाहता था। इसलिए उसने कह दिया, "नही भाभी ! मामी काटती नही परन्तु मामी की सगत से भाभी की सगत अधिक रसमय प्रतीत हो रही है।"

"ओह ! यह सब जेल से सीख आए हैं !"

"भाभी, बैठ जाओ न ? खड़े-खड़े सुनने मे क्या मजा आ सकता है !"

"मै चाहती हू कि आप यहां से चले जाए।"

"क्यो ?'

"मैं कहती हूं।"

"तुम कौन हो ? जब तक तुम्हारा पति जीवित है, तब तक घर उसका है और वह मेरा भाई है। मै उसके घर में हू।"

"यह घर मेरा है।"

"होगा। न्यायालय निर्णय कर देगा।"

इस समय प्रबोध आ गया और भूषण को बैठा देख और मां को खड़े-खड़े ही

लाल-पीली होते देख, पूछने लगा, "ताया जी ! कैसे आना हुआ है ?"

"मै तुम्हारे बाबा और अपने मामा रामकुमार जी के निमत्रण पर भोजन करने आया हूं।"

"तो वे तुमको किसी होटल में ले जाए अथवा हलवाई की दुकान पर ले जाएं। यह घर उनका नही है।"

भूषण इस बात को सुन स्तब्ध रह गया। वह अवाक् बैठा रह गया। उसे चुप देख, प्रबोध ने कह दिया, "क्यों ताया जी महाराज ! समझ आई बात अथवा नही ? आप यहां से तशरीफ ले जाइए, नहीं तो बलपूर्वक यहां से निकाल दूंगा।"

भूषण समझ गया कि यह तो अपमान की पराकाष्ठा है। वास्तव में वह अपने मुकदमे मे पूर्ण परिवार की अपने साथ सहानुभूति देख, इनके घर आने की भूल कर बैठा था। राम तो उससे सदा सहानुभूति रखता था और उसने रूप को कहकर मुकदमे में उसका ठीक मार्गदर्शन कराया था।

इस अपमान से उसकी आंखों मे आंसू छलक आए थे। वह उठा और ड्राइंग-रूम से बाहर निकल आया। कोठी के बरामदे मे खड़ा, वह राजेश्वरी के मकान को लौट जाने का विचार कर ही रहा था कि राम और रोहिणी अपने कमरे से आते हुए दिखाई दे गए। राम ने दूर से ही आवाज़ दे दी, "तो आ गए हो भूषण ?"

भूषण ने कुछ उत्तर नही दिया। वह खडा रहा और अपने आसू भीतर ही भीतर पी जाने का यत्न करने लगा। रोहिणी ने भूषण की तरल आंखें देखीं तो चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया, "क्यों, क्या हुआ है ?"

"मुझको धक्के देकर कोठी से निकाल देने की धमकी दी गई है। मामा जी! मैं तो इसको आपका मकान समझ आया था। यहां ये कह रहे हैं कि मकान सुभद्रा और प्रबोध का है।"

"भागो नहीं भूषण ! इधर आओ।" राम ड्राइंग रूम में चला गया था, परन्तु सुभद्रा अभी भी वहां खड़ी थी। राम ने ड्राइग रूम मे जाकर आवाज़ दे दी, "भूषण आओ।"

रोहिणी भूषण की पीठ पर हाथ रखे हुए उसे भीतर ले आई। सुभद्रा इस कृत्य से आग-बबूला हो रही थी। इसपर भी वह बिना कुछ कहे यह नाटक देख रही थी। राम ने भूषण को अपने समीप एक सोफे पर बिठा लिया, सुभद्रा सामने

खड़ी थी। राम ने एक कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "सुभद्रा जी बैठ जाओ।"

"मा जी ! आप यह बात अनधिकार कर रही है।"

"अरी पगली ! मा बनाकर भी अधिकार-अनधिकार की बात कर रही हो! इधर आओ। आज रूप को आने दो, उसके कान पकड़कर तुमसे सुलह करा दूगी।"

"नही ! मैं यह सहन नहीं कर सकती।"

इसपर राम ने कह दिया, "जाओ। फ्रिज से निकालकर एक कोकाकोला पी लो। जब चित्त शान्त हो जाए तो आ जाना। मै तुम्हारे लिए एक बहुत अच्छा सन्देशा लेकर आया हूं।"

भूषण समझ रहा था कि यद्यपि राम आजकल वकालत का काम नही करता था, परन्तु उसमे एक अच्छे वकील का बीज उपस्थित है। वह अब अधिक विश्वास से बैठा था। रोहिणी ने सोफा-सैट से लगी घटी का बटन दबाया तो बैरा भीतर आ गया। रोहिणी ने बैरा को कहा, "बुद्धू मिया। एक ठडा कोका-कोला ले आओ।"

रोहणी विद्रोह के किनारे पर पहुंच चुकी थी। परन्तु वह जानती थी कि अब प्रबोध भी धमकी नही दे सकेगा, जो उसने भूषण को दी थी। इसलिए वह विचार कर रही थी कि कैसे बात करे।

बैरा कोकाकोला गिलास में डालकर ले आया। उसने गिलास रोहिणी के आगे किया तो उसने कह दिया, "बहू को दे दो।"

कोई मार्ग न पाकर सुभद्रा एक कुर्सी पर बैठ गई और गिलास लेकर चुस्कियां भरने लगी। अब राम ने बैरा को कह दिया, "बुद्धू ! खाने के कमरे मे दो के लिए खाना लगा दो और यहां तीन के लिए खाना लगा दो।"

बैरा इसका अर्थ नही समझा। इसपर राम ने तनिक डांटकर कहा, "शीघ्र करो। हमें खाने के तुरन्त पश्चात् ही कही जाना है।"

बैरा चला गया। राम ने सुभद्रा को सम्बोधन कर कहा, "अब तुम शान्त हो गई तो सुनो। रूप ने अभी-अभी एक पत्र भेजा है। वह तुमको पढकर सुना देता हूं।"

राम ने अपनी जेब से एक लिफाफा निकाला। लिफाफा खुला था। उसने उसमे से पत्र निकाला और पढ़ने लगा। लिखा था, "पिता जी, आज मुझको पता

चला है कि भूषण छूट गया है। मुझको यह विदित हुआ है कि वह राजेश्वरी भाभी के घर गया है। मुझको यह जानकर बहुत हर्ष हुआ है। मैं आज किसी समय उससे मिलना चाहूंगा और उसके भविष्य के विषय में सुझाव उपस्थित करूंगा।

"अब मैं कुछ अपने विषय मे लिखना चाहता हूं। मैंने अपना एक नया घर बना लिया है। वहां मैं अपनी नई पत्नी के साथ रहता हूं। अभी तक तो मैं नित्य रात के समय आपके घर आ जाया करता था, परन्तु आज से नही आऊंगा। मैं आपको श्रीराम रोड वाली कोठी नम्बर ३३ रहने के लिए देता हूं। सुभद्रा यदि उसमे रहना चाहे तो कृपया रहने दीजिए। यदि न रहना चाहे तो जहां चाहे जा सकती है। यही बात प्रबोध और उसकी बहिनों के विषय मे है। कोठी का सब फर्नीचर मेरा है और मैं आपको दे रहा हूं। आप जैसा चाहे करें।

"मैं अभी नये मकान का पता नहीं दे रहा। मैं इसको तब तक गुप्त रखना चाहता हूं, जब तक पता न चल जाए कि सुभद्रा अब क्या करना चाहती है। मैं उससे ऊब गया हूं। यदि प्रबोध काम-धन्धे के विषय मे कोई बात करना चाहता है तो उसको कहिएगा मुझको मेरे काम पर कल बारह बजे मिल ले।"

चिट्ठी के नीचे लिखा था, "अपनी मां से सुभद्रा के अभद्र व्यवहार के लिए क्षमा चाहता हूं। आपका नालायक पुत्र रूपकृष्ण।"

सुभद्रा ने पत्र सुना और उठकर डाइनिंग हाल में चली गई। प्रबोध वहां बैठा प्रतीक्षा कर रहा था।

राम ने भूषण को कहा, "तुम भोजन कर राजेश्वरी के मकान में चले जाना। मैं समझता हूं कि रूप तुमको जीवन मे स्थिर होने मे सहायता देगा।"

"तो रूप यहां नही आ रहा है?"

"मध्याह्न के समय तो वह कई महीने से नहीं आता।"

भोजन आया तो वे तीनों खाने लगे।

६

डाइनिंग हाल मे सुभद्रा और उसका लड़का प्रबोध इस नई परिस्थिति पर विचार कर रहे थे। प्रबोध ने कहा था, "मां! मैंने तो ताया जी को धमकाकर भगा दिया था। मगर भापा जी ने सब काम बिगाड़ दिया है।"

"नहीं प्रबोध ! यह तुम्हारे भापा जी ने काम नही बिगाडा। यह तुम्हारे पिता जी की करनी का फल है। उन्होंने एक पत्र आज भापा जी को लिखा है, जिसमें इस कोठी का मालिक उनको लिख दिया है।"

"और हम ?"

"हम भी चाहे तो उनकी स्वीकृति से यहां रह सकते है। इसी पत्र ने उनको शेर बना दिया है; अन्यथा उनका कभी साहस नही हुआ कि मेरे सामने बोल भी सके।"

"यह तो पिता जी ने बहुत बुरा किया है।"

"केवल इतना ही नही, अपितु यह भी कि उन्होने अपना एक नया घर बना लिया है। घर का मतलब है, उन्होने एक नई पत्नी बना ली है।"

"कहां है वह ?"

"यह उन्होने बताया नही।"

"तो अब क्या होगा ?"

"मैं अभी बता नहीं सकती। अभी तो यहां पर रहूंगी। आगे स्थिति कैसे बदलती हैं, उसके अनुकूल ही मैं अपना व्यवहार निश्चय करूंगी। तुम अपने काम की बात बताओ। कितना रुपया उसमें लगा है और कितना रुपया पिता के काम में है ?"

"हमारी दो कम्पनिया हैं। एक है 'अग्रवाल कम्बाइन।' यह पिता जी की है। इसमे वे स्वयं मुखिया है। दो प्रतिशत का हिस्सेदार राजकुमार है और दो प्रतिशत की राज की बहिन राजकुमारी। बस, ये तीन पत्तीदार है। एक कम्पनी है, 'राजधानी निर्माण संस्थान।' इसमे मेरे दस हिस्से हैं। शेष तुम्हारे तथा मामा जी के है। मां! मेरे और तुम्हारे मिलाकर नब्बे प्रतिशत हिस्से है। इस कम्पनी का सरमाया है बीस लाख और पिता जी की कम्पनी का है पचीस लाख। पिछले वर्ष तक तो लाभ की कुल राशि मिला लेते थे। मेरा अभिप्राय है दोनों कम्पनियों की। इस वर्ष मैंने नही दिया और सब प्रकार के कर देकर मेरे पास बचा है, साढ़े तीन लाख।"

" यह तो तुमने बहुत बुद्धिमत्ता की है। अब कौड़ी नही देनी उनको।

" एक बात और है। आज किसी समय तुम्हारे पिता भूषण से मिलने राजेश्वरी के घर आने वाले हैं। मेरा कहना है कि भोजन कर वहां चले जाओ और अपने ताया जी को मोटर में बैठाकर राजेश्वरी के घर ले जाओ। वहीं उससे चिपटे रहो।

मीठी-मीठी बाते कर उससे पिछली बातों का प्रायश्चित्त कर लो और यह जान आओ कि तुम्हारे पिता क्या चाहते है भूषण से और तुमसे भी। वह तुमसे भी मिलना चाहते है।"

प्रबोध बाहर आया तो भूषण और राम बाहर ड्राइंग रूम मे बैठे हुए कॉफी पी रहे थे। खाने की प्लेटे बैरा उठाकर ले गया था। रोहिणी आराम करने अपने कमरे में चली गई थी। प्रबोध आया तो राम ने प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा। प्रबोध ने आते ही बात आरम्भ कर दी, "भापा! यह कोठी पिता जी ने आपको दे दी है?"

"हां, रहने के लिए।"

"क्या मतलब?"

"मतलब यह कि इसको मैं दूसरे को न तो दान में दे सकता हूं, न ही इसको बेच सकता हूं।"

"और हमारे विषय मे उन्होंने क्या लिखा है?"

"यही कि यदि तुम्हारी माता, तुम और तुम्हारी बहिने चाहें तो मैं उनको रहने दू।"

"और आप न चाहे तो?"

"मेरे चाहने न चाहने की बात नही है, यह तुमपर छोड़ा है।"

"कुछ तो हमारा भी विचार आया है पिता जी को!"

"हां। तुम और तुम्हारी मां से वह अधिक नेक और समझदार है। आखिर रामकुमार का बेटा है। उसने अपने बाबा और भापा को देखा है। वे धर्मात्मा जीव थे। एकबार दस-बीस लाख का मुकदमा था। तुम्हारे एक बडे फूफा थे गोवर्धन जी, जो साधु हो गए है। उन्होंने कह दिया, 'शिव! गौमाता की सौगन्ध खाकर कह दो कि तुम्हारा दावा सच्चा है, तो सब कुछ तुमको छोड़ दूंगा।'

"मुझको स्मरण है। शिव के माथे से पसीने की बूदे टपकने लगी थीं। उसने गाय की सौगन्ध नही खाई और बीस लाख से ऊपर की सम्पत्ति छोड़ दी थी और तुम ऐसे बरखुरदार निकले हो कि अपने ताया जी की कमाई के दस-बारह लाख रुपये चुपचाप हज़म कर गए हो।"

"भापा जी, वह तो बेईमानी की कमाई थी!"

"उस बेईमानी के पच्चीस प्रतिशत के तुम भागीदार बन गए हो।"

"होगा। मैंने उस सम्पत्ति को बम्बई मे बेच, साढे नौ लाख वसूल कर, वहां ही एक बहुत बडी सम्पत्ति खरीद ली है और उसकी साठ हजार वार्षिक से ऊपर आय होने लगी है। ऐसी बेईमानी, जिसका पचीस प्रतिशत भी इतना लाभ दे रहा है, बहुत अच्छी है।"

"नौका भरकर डूबती है, बेटा !"

"भापा जी ! आप हमारी चिन्ता न करे। आप इस नौका में मत बैठिए। इससे आपको डूबने का भय नही रहेगा। वैसे तो आज कलयुग है। इसमे सत्य तो झूठ हो रहा है और ईमानदारी का नाम बेईमानी हो गया है।"

राम हस पड़ा। भूषण इस जीवन-मीमासा का स्वय उपासक रहा था। उसने कह दिया, "प्रबोध की बात एक दृष्टिकोण से ठीक ही है। सदा, धर्म वह रहा है जो राजा नियत करे। अत· राज के नियम के अनुसार रहकर जो कुछ भी पैदा किया जाए, वह धर्म की कमाई है।

"आज के राजा इतने अल्पबुद्धि है कि वे जो भी कानून बनाते है, उसमें छिद्र रह जाते है और व्यापारी उन छिद्रों मे से निकल जाते है।"

"तो भापा ! मैं, मा और बहिने इस कोठी मे रह सकती है न ?" प्रबोध ने पुनः बात बदल दी।

"हा, जब तक तुम चाहो।"

"मामा जी !" भूषण ने कह दिया, "क्या इस कोठी में मुझको भी एक कमरा मिल सकेगा ? जब तक सुन्दरी का पता नहीं चलता, मैं मकान भाड़े पर ले नहीं सकूंगा। मैं राजकुमार के घर जाकर रहना नही चाहता।"

"क्यों ?"

"वहां मेरी उन्नति मे बाधाएं ही है। मैं उनसे पृथक् रहकर ही अपना मार्ग बनाना चाहता हूं।"

"कहो तो तुमको पृथक् मकान दिलवा सकता हू।"

"मामा ! यह तो तुम्हारी अत्यन्त कृपा है, परन्तु मकान के अतिरिक्त भोजन की भी तो समस्या है। मेरे पास तो फूटी कौड़ी भी नही है। सब कुछ सुन्दरी के पास ही था। उसके मिलने तक की बात कहता हू। मैं समझता हू कि यह दो-तीन दिन की ही बात है। कदाचित् रूप उसके विषय में जानता हो।"

इसपर प्रबोध ने बता दिया, "ताया जी ! मैंने उसे एक दिन कनाट प्लेस में

भोलाराम एण्ड सन्ज की दुकान से कुछ खरीदते हुए देखा था।"

"उसको मद्य-सेवन की आदत है और वही खरीदने गई होगी वहां।"

"मुझको यही समझ आया था। आजकल अंग्रेज़ी शराब बहुत महंगी हो गई है। मै विस्मय करता था कि वह इतना धन व्यय करने की सामर्थ्य रखती है क्या ?"

"उसके पास पर्याप्त धन था, परन्तु मेरी अनुपस्थिति मे उसको मितव्ययिता से रहना चाहिए था।"

इसपर प्रबोध ने पूछ लिया, "आप तो राजकुमार के घर जा रहे हैं न ?"

"हा, वहा मेरा सूटकेस रखा है। इस समय मेरे पास केवल दो 'सूट' हैं। यदि शीघ्र ही सुन्दरी न मिली तो यह भी कठिनाई उपस्थित हो जाएगी।"

"मैं भी आपके साथ चल रहा हूं।"

"क्यों ?"

"सुना है, पिता जी वहां आ रहे है और मुझको उन्होने मिलने के लिए बुलाया है।"

"ठीक है।" राम ने कह दिया, "मैं भी चल रहा हू। तुम मोटर निकलवा लो और हम सब इकट्ठे ही चल देगे।"

ये मध्याह्नोत्तर तीन बजे वहां पहुचे। राजकुमार अपने काम पर गया हुआ था। राजेश्वरी अपने पोते को खेला रही थी और उसकी बहू सन्तोष घर की सफाई कर रही थी।

राम ने बहू को बैठक झाडते हुए देखा था। इससे उसने सन्तोष को कह दिया, "बहू, कोई नौकरानी नही रखी हुई ?"

"भापा ! मै जो नौकरानी हू। कही दो नौकरानिया घर मे हो गईं तो नित्य का झगड़ा हो जाएगा।"

"ऐसा क्यों होगा ? क्या तुम नौकरो से काम लेना नही जानतीं ?"

इनकी आवाज सुन राजेश्वरी बैठक घर में आ गई थी। राम की बात का उत्तर उसने दे दिया, "भापा ! हम तुम्हारी भांति धनवान नही है। आज दिल्ली जैसे नगर मे नौकर रखना सुगम नही।"

राजेश्वरी की गोद में राज का लडका था। बहू ने उसको गोद में ले लिया और वह दूसरे कमरे में चली गई। राजेश्वरी ने सबको बैठाते हुए पूछ लिया,

"आज यह दलबल-सहित इस घर पर चढाई क्यों कर दी है ?"

"राजेश्वरी ! यह भूषण यहा ठहरा हुआ है और इसका ज्ञान रूप को हो गया है। वह बहुत प्रातःकाल से काम पर गया हुआ है। काम पर से उसने चिट्ठी लिखी है कि वह भूषण से मिलने यहां आ रहा है। मै और प्रबोध भी उससे शीघ्रातिशीघ्र मिलना चाहते थे। इस कारण यहां चले आए है।"

"रूप को राज मिला होगा। उसीने बताया होगा कि ये यहा ठहरे है।"

"हां ! कुछ यही प्रतीत होता है।"

राजेश्वरी ने बात बदल दी, "भापा ! सुभद्रा को भी ले आते। कितने ही काल से उसके दर्शन नही हुए।"

"परन्तु तुम भी तो उसको कभी मिलने नहीं आई। राजकुमार तो कभी-कभी आता रहता है।"

"मै उसको आग्रह करती रहती हू कि वह अपने सम्बन्धियों से मेल-मुलाकात रखे। राज कहता है कि सुभद्रा चाची तो उससे कभी बात भी नही करती। उसका साधारण पहिराव देखकर नाक चढा लिया करती है। इसलिए मुझको तो डर रहता है कि वह मुझसे कही उल्टा व्यवहार न कर दे, परन्तु यदि वह आ जाती तो मेरे मन का सशय और भय मिट जाता।"

"क्यों प्रबोध ! यह ठीक है क्या ?"

"बात यह है भापा ! मां रिश्तेदारी के कुछ अर्थ नहीं समझती। उसकी दृष्टि में अर्थ है पोज़ीशन का। वह अपनी जैसी अवस्था वालो से ही सम्बन्ध रखना चाहती है।"

राम हंस पड़ा। हंसकर उसने पूछ लिया, "कितनी बड़ी पोजीशन है तुम्हारी और तुम्हारी मां की ?"

"भापा ! मैं अपनी बात नही कहता। परन्तु मा समझती है कि वे लाखोंपति की लड़की, लाखोंपति की पत्नी और लाखों के मालिक की मा है।"

"तब तो सत्य ही वह बहुत बड़ी औरत है। यही कारण है कि उसने आज तक तुम्हारी दादी को नौकरानी समझ रखा था। अच्छा बेटा ! अब हम भी राजेश्वरी बिटिया की भाति उससे भय किया करेंगे।"

रूपकृष्ण सुन्दरी के साथ वहां आ पहुंचा। सुन्दरी को उसके साथ देख, सबके मन में संशय हुआ। रूप ने अपने पत्र में लिखा था कि उसने अपना नया घर

बना लिया है। इससे राम, भूषण और प्रबोध को यह सूझ गया कि रूप का नया घर बनाने वाली सुन्दरी ही हो सकती है। इसपर भी भूषण ने मन के सशय को दबाते हुए पूछ लिया, "पर सुन्दरी ! मैं तो तुमको ढूढता हुआ ही यहां आया था ? तुम कहा हो ?"

"बैठिए बताती हूं।"

सब बैठ गए। राजेश्वरी ने सबके लिए चाय बनाने के लिए राज की बहू को कह दिया। और वह बच्चे को अपनी सास की गोदी मे दे रसोईघर मे चली गई।

रूप ने बात कह दी, "दस बजे के लगभग मै सेक्रेटेरिएट मे से निकल रहा था कि राजकुमार मिल गया। उसने ही भूषण दादा के छूट जाने की बात बताई। मैने वहा से ही एक पत्र लिखा और अपने ड्राइवर के हाथ भापा जी को भेज दिया। जो कुछ उस पत्र के अन्दर लिखा था, वह भूषण दादा के आने पर ही लिखने का निर्णय था।

" भापा ! वह पत्र सबको सुना देते तो ठीक रहता।"

"मैंने वह भूषण को सुना दिया है। प्रबोध और उसकी मा को भी उस पत्र का ज्ञान है।"

"मै दादा के राजेश्वरी भाभी के घर आने से बहुत प्रसन्न हू और मै हृदय से चाहता हू कि अब तो इनको अपने घर में रहना चाहिए।"

भूषण ने हसते हुए कह दिया, "जैसे तुम रहना चाहते हो ?"

"देखो दादा ! राजेश्वरी भाभी और प्रबोध की मा मे कोई तुलना नहीं। न ही प्रबोध और राजकुमार मे किसी प्रकार की समानता है। राजेश्वरी, प्रबोध की मा से सैकडों गुणा श्रेष्ठ और सुन्दर हैं। मैंने तो अब अपना घर सुन्दरी के साथ बना लिया है।"

"ओह !" भूषण के मुख से अनायास ही निकल गया, "पर सुन्दरी ! तुमने यह बताया नही। अभी पद्रह दिन हुए तुम जेल मे मुलाकात करने आई थी, और बताया था कि तुम राजेश्वरी के साथ रहती हो।"

"मै आपको जेल में दुःखी करना नही चाहती थी। वैसे तो हमने इस नये घर की बात उसी सायंकाल निश्चय कर ली थी, जिस दिन आपको दंड हुआ था।"

"सत्य !"

"जी ! मैं भी आपसे यह ही कहूंगी कि आप राजेश्वरी बहिन से सुलह कर

ले। आखिर इसमे क्या खराबी है ?"

"और तुमने मुझमें क्या खराबी देखी है ?"

"खराबी की बात तो मैं मानती नही। हां, यह कह सकती हू कि आपके विचारो का अनुकरण ही कर रही हूं। आप बताया करते थे कि यह प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है कि अपनी अवस्था को सुधारने का यत्न करे। राजनियम के अन्तर्गत रहते हुए मैने भी अपनी अवस्था को सुधारने का यत्न किया है।"

"क्या सुधार किया है तुमने अपना !"

"प्रबोध के पिता, राजकुमार के पिता से आयु मे कम है। वे सौन्दर्य में, धन-सम्पदा मे और सतुलित मन रखने मे श्रेष्ठ समझ आए है।"

"तो ?"

"बस यही कि मैं उनके साथ रहना पसन्द करती हू।"

"और मेरी सम्पदा ?"

"वह दोनो ने मिलकर पैदा की थी। आप अपने भाग से बहुत अधिक व्यय कर चुके है। अब शेष मे आपका कुछ भी भाग नही है।"

इसपर रूप ने कह दिया, "दादा ! तुम तो समाजवादी हो न ? धन-दौलत तो किसी व्यक्ति की मल्कियत नही होनी चाहिए। तो फिर तुम्हारी सम्पदा का प्रश्न कहां से आ गया ? सब सम्पदा समाज अर्थात् राज्य की है। अतः यह सुन्दरी और राज्य के बीच की बात है कि कितनी किसके पास रहे। जहा तक तुम्हारा सम्बन्ध है, तुम मेहनत करो और भोजन-वस्त्र मिल जाएगा।"

भूषण इस नई परिस्थिति के विषय मे कुछ भी समझ नहीं सका। उसे चुप देख, रूप ने कह दिया, "मैंने भापा को अपने पत्र मे लिखा है कि भूषण जी को भविष्य के विषय में कुछ सुझाव उपस्थित करूगा। सो दादा ! मेरा सुझाव है कि यदि तुम राजेश्वरी भाभी के साथ रहना पसन्द करो तो मै तुमको दो सौ रुपया महीना पैंशन के रूप मे दे सकूगा।"

इस समय चाय आ गई थी। सतोष ने तिपाही सबके बीच मे रख, वर्तन लगा दिए और सबके लिए चाय बनाने लगी। राजेश्वरी ने मिठाई खाने के लिए रखते हुए रूप की बात का प्रतिकार कर दिया, "रुप भैया ! तुम्हारी अपने प्रति सहानुभूति देख मैं आभारी हू परन्तु मै कहूगी कि अपने भाई की सहायता मे मुझको बलि मत चढ़ाओ। मेरे इनसे सम्बन्ध की बात दो सौ रुपये से अधिक मूल्य की और

जटिल है। मैंने अभी इनको यहां रखने का निर्णय किया नही। कदाचित् मैं कर सकती भी नही। इसका सम्बन्ध राजकुमार और संतोष से भी है।"

"राजेश्वरी! तुमको इस विषय मे कहने की आवश्यकता भी नहीं। मैं स्वयं ही यहा रहना पसन्द नही करूगा।

"क्यो भापा! मैंने तुम्हारी कोठी मे एक कमरा मागा है? अब तो मेरे लिए वह ही एक आश्रय रह गया है।"

"यह घर चलकर विचार करेंगे। क्यों रूप? कहां रहोगे अब?"

"मैंने अपना पक्का मकान नही बनाया। अभी सुन्दरी एक अस्थायी स्थान पर रहती है। यदि सुभद्रा श्रीराम रोड वाली कोठी मे रहेगी तो मैं सुन्दरी के लिए एक पक्के रूप में मकान का प्रबन्ध कर दूगा। यदि वह उस कोठी को छोड़ कही अन्यत्र चली गई तो मैं कोठी में लौट आने के विषय मे विचार कर लूगा।"

"पिता जी!" प्रबोध ने कह दिया, "हम अभी तो उस कोठी में ही रहने की इच्छा रखते है।"

"तो मैं सुन्दरी के लिए प्रबन्ध करूंगा।"

"देखो रूप। न तो मै अपनी कोठी में सुन्दरी और भूषण को इकट्ठा रहने दूगा और न ही सुन्दरी और सुभद्रा को। औरतो की प्रकृति को मैं जानता हू। न तो दो तलवार एक म्यान मे रह सकती है और न ही एक तलवार दो म्यानों मे।"

"और दादा भूषण, अब तुम क्या करने का विचार करते हो?"

"मै कल से अपने लिए कोई काम ढूंढने का यत्न करूगा। जब इस लायक काम मिल गया कि मै अकेली जान के लिए पैदा कर सकू तो मकान भी ढूढ़ लूगा।"

"जैसा मन आए करो। मैंने अपना प्रस्ताव बता दिया है। एक बार हमारे ताया शिव जी ने तुम्हारी मां की सहायता की थी। दो सौ रुपया मासिक का काम देकर। मै परिवार के प्रति अपना ऋण उतारने के लिए आपको भी एक काम बता कर दो सौ रुपये का प्रस्ताव कर रहा हूं।"

"और काम यह है कि मै राजेश्वरी जी का पति बनू, बिना उनकी इच्छा के।"

"मेरा मतलब यह है कि आप यत्न करे कि आप में सुलह हो जाए।"

"मै समझता हूं कि यह हो नहीं सकेगी।"

रूप ने कन्धों का झटका देकर असतोष प्रकट किया और उठ खडा हुआ। सुन्दरी भीउठ खडी हुई। भूषण को समझ आया कि सुन्दरी पहलेसे भी सुन्दर होती जा रही है। वास्तव में वह हीरक-जड़ित कर्णफूल पहने थी और उनकी चमक ने सुन्दरी के सौन्दर्य को द्विगुण कर रखा था।

राम इस अप्रत्याशित परिस्थिति मे समझ नही रहा था कि क्या करे और क्या कहे। वह रूप और सुन्दरी को जाते देखता रह गया।

रूप ने जाने से पूर्व प्रबोध को सम्बोधन कर कह दियाँ, "देखो प्रबोध, तुम्हारी कम्पनी की आय तुम्हारी है। उसमे तुम अपनी मा का तथा बहिनों का भाग भी समझ लेना। इस कोठी मे तुम तब तक रह सकते हो, जब तक भापा जी को किसी प्रकार का कष्ट नही दोगे।

"आज से तुम अपना 'किचन' और नौकर पृथक् कर लो। भापा!" उसने अपने पिता को सम्बोधन कर कहा, "आपसे कोठी के प्रबन्ध और खाने-पीने के सम्बन्ध के लिए मैं रात को कोठी मे मिलूगा।"

इतना कह वह चला गया। भूषण राजकुमार के कमरे मे गया और अपना सूटकेस उठा लाया। राम ने राजेश्वरी को भूषण के मुख पर ही कह दिया, "राजेश्वरी! मैं तुम्हारे व्यवहार से अति प्रसन्न हू। तुम अब परिवार के निर्माण मे लग जाओ। भूषण इस योग्य नही कि तुम उसके लिए मन मे विचार भी करो।"

राजकुमार के आने तक राम, प्रबोध इत्यादि वहा बैठे रहे। राजकुमार ने भी जब यह सुना कि रूपकृष्ण और सुन्दरी इकट्ठे रहते है तो हंस पड़ा। हंसते हुए कह दिया, "चाचा जी से मुझको यह आशा नही थी। इसपर भी मैं समझता हू कि अच्छा हुआ है। पिता जी की जान छूटी।"

राम भी इससे हंसने लगा। भूषण जान छूटी की बात समझ नहीं सका। वह तो यह समझ रहा था कि सुन्दरी के सब धन लेकर उसको छोड़ जाने से उसकी जान मुसीबत मे पड़ गई है। वह जेल मे इसी धन के बलबूते पर बड़ी-बड़ी योजनाए बनाता रहा था। वे सब योजनाएं बालू की भीत के समान ढह गई थी।

राजकुमार ने राम और प्रबोध को कहा, "प्रबोध भैया! अब क्या कार्यक्रम है?"

"कुछ नहीं। कुछ भी चिन्ता की बात नही। मै तो पहले ही अपने पिता से

पृथक् हो चुका था। अब इस नई परिस्थिति मे तो उनके साथ रहना असभव हो गया है।"

७

रामकुमार भूषण को कोठी मे रखने के पक्ष मे नही था। उसने इस बात का संकेत भूषण को दे भी दिया था। भूषण को कोठी मे आकर टिके हुए तीन दिन हो चुके थे। वह भोजन प्रबोध तथा सुभद्रा के साथ करता था और उनके कक्ष मे ही एक कमरे मे रहता था। पिछले दिन तो वह प्रबोध के साथ उसके काम पर भी गया था। अतः रामकुमार ने उसके विचार जानने के लिए भूषण को बुलाकर कह दिया, "भूषण ! मै समझता हूं, कि तुमको अपनी जीविका के विषय मे कुछ तो विचार करना चाहिए।"

"कर रहा हूं भापा।"

"किसके साथ विचार कर रहे हो और क्या विचार कर रहे हो?"

"विचार तो अपने मन से कर रहा हूं। प्रबोध मुझको अपनी कम्पनी का जनरल मैनेजर नियुक्त करना चाहता है। मैंने अभी अपनी अनुमति नहीं दी।"

"क्या वेतन देगा प्रबोध, तुमको ?"

"वेतन मैं पसन्द नही करता। मैं तो उनकी कम्पनी मे कुछ हिस्से के रूप में अपना पारिश्रमिक चाहता हूं।"

"कब तक विचार कर लोगे ?"

"आज रात सुभद्रा से बातचीत करनी है। मैं समझता हूं कि बात बन जाएगी।"

"ठीक है। मेरी सम्मति यह है कि तुमको प्रबोध से कुछ पेशगी ले लेनी चाहिए और कोई मकान भाड़े पर ले लेना चाहिए।"

"मेरे यहां रहने से आपको कुछ कष्ट है ?"

"मुझको क्या कष्ट होना है। इसपर भी मैं यही उचित समझता हूं।"

"रात रूप आपसे मिलने आया था। कुछ वह कह गया है क्या ?"

"नही। वह तुममें रुचि नहीं रखता। उससे तुम्हारे विषय में कुछ बात नहीं हुई।"

"मैं चाहता हूं, भापा ! कि तुम मुझको एक-दो मास तक यहां रहने दो। तब तक मैं किसी अच्छे मकान को लेने की अपने में सामर्थ्य उत्पन्न कर लूगा।"

"तुमको शीघ्रातिशीघ्र प्रबन्ध कर लेना चाहिए।"

उस दिन मध्याह्नोत्तर चाय के समय प्रबोध अपने बाबा से आकर पूछने लगा, "भापा ! आपने भूषण ताया को कोठी छोड़ने के लिए कह दिया है ?"

"मैने यह कहा कि उसे शीघ्रातिशीघ्र कहीं अन्यत्र रहने का प्रबन्ध कर लेना चाहिए।"

"यहां उनसे किसीको कष्ट है क्या ?"

"हां ! तुम्हारी बहिनो को कष्ट प्रतीत होता है।"

"क्या कष्ट हो सकता है उनको ?"

"यह मै क्या बताऊं ? दिति कुछ कह रही थी तुम्हारी दादी से।"

"भापा ! दादी व्यर्थ मे सदेह किया करती है। इसी कारण मां और दादी में बनती नही।"

"देख लो। परन्तु तुमको क्या रुचि है भूषण को यहां रखने में ?"

"मैं उनको अपनी कम्पनी का जनरल मैनेजर बनाना चाहता हूं। यदि वे बन गए तो उनको हमारे समीप ही रहना भारी सुभीते की बात होगी।"

"इतनी आवश्यक पदवी पर मां से पूछकर उसको नियुक्त कर रहे हो ?"

"वे ही तो मुझको कह रही है कि में उसको रख लू।"

"उनकी क्या रुचि है इसमें ? किसी अन्य को रखने के लिए क्यों नहीं कहतीं ?"

"यह तो वे ही बता सकती हैं। वैसे मेरे काम में वे सहायक तब ही हो सकते हैं, जब यहा रहे।"

"मुझको दोनों बातों मे किसी प्रकार का भी सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता।"

बात पुनः रात को चली। सुभद्रा ने अपने स्वसुर के पास आकर कह दिया, "भूषण जी यहां रहेगे। यदि आपको कोई आपत्ति हो तो बताइए।"

"यह तुम्हारा निश्चित मत है ?"

"जी ! प्रबोध के पिता के चले जाने से प्रबोध के कारोबार मे जो अवकाश उत्पन्न हो गया है, में उसकी पूर्ति के लिए यत्न कर रही हूं।"

"यदि रूप ने इसमें आपत्ति की तो बहुत कठिनाई उत्पन्न हो जाएगी।"

"तो मैं भी इस कोठी को छोड़ जाऊंगी।"

"ठीक है। मै बात को इतनी दूर तक ले जाने की इच्छा नही रखता। फिर भी यदि तुम जाती हो तो मै क्या कर सकता हू।"

सुभद्रा अपने शयनागार में चली गई। रूप से राम ने इस परिस्थिति का वर्णन किया तो उसने कह दिया, "भापा! मुझको इस धनिकों की लड़की के भले-बुरे में किसी प्रकार की रुचि नहीं।"

"देखो रूप, मै तुम्हारी पत्नी के विषय मे चिन्ता नही कर रहा हूं, मैं तो तुम्हारी लड़कियों की बात कह रहा हूं। तीन दिन हुए तुम्हारी छोटी लड़की तुम्हारी मां को बता रही थी कि भूषण भोजनोपरान्त मद्य का सेवन करता है और उस दिन वह सोमा को कह रहा था, 'ज़रा चखकर तो देखो।'"

"भापा! वे आक के पेड़ ही है जो ऊसर भूमि में उत्पन्न होते हैं। मैंने अपना सम्बन्ध विच्छेद इनसे कर लिया है।"

"परन्तु यहां दुराचार फैलने लगा तो मुझसे सहन नहीं हो सकेगा।"

"उस अवस्था मे पुलिस मंगवाकर खेत को निराह देना चाहिए। यह अधिकार मै आपको देता हूं।"

दिति के मन में सोमा को मद्य पिलाने का यत्न अखरा था और उसने अपनी दादी को इसे बताया था, केवल बताने के लिए। उसके पश्चात् पुनः रोहिणी के पास किसी प्रकार की बुरी सूचना नही आई। रूप ने पाच सौ रुपया मासिक अपने पिता को कोठी को साफ-सुथरा, बगीचे को हरा-भरा और नौकर-चाकर से युक्त रखने के लिए देना आरम्भ कर दिया था और स्वय उसने कोठी में आना छोड़ दिया था।

इस प्रकार छः मास शान्ति से व्यतीत हो गए। रुपये-पैसे की कमी नही थी। और किसी प्रकार की जीवन मे कठिनाई उपस्थित नहीं हो रही थी। कोठी में दो स्थान पर भोजन बनता था और दो स्थान पर बैठकर खाया जाता था। आधी कोठी रामकुमार के अधीन थी और आधी प्रबोध और उसकी मां के अधीन। दोनो कक्षों मे रहने वाले प्राणी परस्पर मिलते नही थे।

दोनों कक्षों में सम्बन्ध बनाने वाला एक सूत्र था। वह थी लड़की दिति। वह अपनी दादी से विशेष स्नेह रखती थी और प्रायः नित्य उसके पास आकर बैठा करती थी।

दिति की मां ने एक दिन उससे पूछा भी था, "दिति, उस बुढ़िया के पास क्या लेने जाती हो ?"

"कौन बुढिया ? मां !"

"वही तुम्हारी दादी।"

"ओह ! वे मुझको कुछ देतीं नही। केवल पुराने ज़माने की बातें बताया करती है।"

"मत जाया करो उसके पास।"

"क्यो ?"

"तुम भी उसकी भांति मूर्ख हो जाओगी।"

"पर मा ! वे मूर्ख है क्या ?"

"हां।"

"मां, वे कहानी तो बहुत बढिया कहती है।"

"यही तो मूर्खता के लक्षण हैं।"

दिति को मूर्खता के इन लक्षणों पर विश्वास नहीं आया और वह मां के मना करने पर भी जाती थी।

एक दिन वह स्कूल से लौटी, तो सीधे दादी के कमरे में चली गई। रोहिणी अपने पति के साथ मध्याह्नोत्तर की चाय ले रही थी। रोहिणी ने दिति को चाय लेने के लिए कहा तो उसने कह दिया, "मां ! मै कल रात की एक बात बताने आई हूं।"

"क्या ?"

"भैया ने मां को बहुत पीटा था।"

"क्यों ?"

"पता नही।"

"तुमने देखा था पीटते हुए ?"

"हां ! मुझको मां के कमरे में खटाखट वस्तुओं के गिरने का शब्द सुनाई दिया तो मैं भागी हुई गई। भैया मां को घूंसों और मुक्कों से पीट रहे थे। मैंने भैया को मना किया तो उसने मां को छोड़ दिया और यह कह वहां से चला गया, 'मां ! तुम्हारी हत्या कर दूगा और स्वय फांसी चढ़ जाऊगा।'

"जब वह चला गया तो मैंने मां से पूछा, 'क्या बात थी मां ?'

" इसपर मा ने कह दिया, 'जाओ ! जाकर सो रहो। तुम्हारे भैया ने मद्य पी ली है और उसके नशे मे मुझको पीट रहा था।'

" परन्तु बडी मा ! मुझको मां के मुख से मद्य की गन्ध आ रही थी। "

"अच्छा दिति ! तुमको डर लगे तो तुम मेरे पास आकर सो रहा करो। कल उस समय सोमा कहां थी ?"

"वह आजकल विश्वम्भर दादा के घर जाती है और प्रायः भोजन उनके घर खाकर आती है।"

"यह विश्वम्भर हमसे मिलने नही आता ?"

'मैने एक दिन पूछा था तो कहने लगा कि आप सो जाते हैं, इस कारण आपकी नीद खराब करना नही चाहता।"

दिति ने चाय नहीं पी और अपनी मां के पास चली गई। उसी रात राम ने प्रबोध को नौकर भेज बुला लिया। प्रबोध आया तो उसने कुशल-समाचार पूछा, व्यापार का हाल-चाल पूछ लिया।

"भापा ! काम चल रहा है। आय दिन-प्रतिदिन बढ रही है, परन्तु खर्चा उससे भी अधिक बढ़ रहा है।"

"क्यों बढ रहा है ?"

" एक सहस्र रुपये प्रतिमास की तो शराब ही आ जाती है। पाच सौ रुपया भूषण अपने खर्चे के लिए निकाल लेता है और एक मोटर उसने अपने काम और आराम के लिए रख ली है।

" मैं मा को इस बढ़ रहे खर्चे के विषय में बताने गया था परन्तु मां शराब पी गुट्ट हो रही थी।

" मैने शराब का खर्चा बताया तो कहने लगी, 'और तुम्हारा दिवाला निकल रहा है इससे ?'

" मैंने बताया कि दिवाला तो नही, इसपर भी खर्चा बहुत बढ रहा है। पांच-चार हजार प्रति मास उड़ जाता है।

" 'तो क्या किया जाए। हमारी इतनी आय है, तभी तो इतना खर्चा हो रहा है। नही होगी तो खर्चा स्वयमेव कम हो जाएगा।'

" मैंने बताया कि भूषण ताया अकेला पांच-छः सौ रुपये की मद्य पी जाता है।

" इसपर वह बोली, 'भूषण जी के विषय मे मत बातचीत करो। वे इस घर में विशेष व्यक्ति है।'

" 'क्या विशेषता है उनमें ?'

" 'प्रबोध ! इस विषय मे तुमको कुछ कहने का अधिकार नही।'

" 'क्यो ? क्या मै इस धन के उपार्जन मे परिश्रम नहीं करता ?'

" 'एक मूर्ख के परिश्रम का मूल्य ही क्या है। तुम दसवी श्रेणी तो पास नहीं कर सके और समझते हो कि लाखों की आय तुम कर रहे हो ?'

" 'मै नही कर रहा तो यह भूषण ताया कर रहा है ?'

" 'यह मै कर रही हू। तुम्हारे पिता भी, जब मै विवाह कर इस घर मे आई थी तो, चार-पांच सौ रुपया महीना से अधिक पैदा नही कर सकते थे। यह मेरी युक्ति और प्रतिभा का परिणाम था कि वे लाखो पैदा करने लगे। तुम भी जब अपने पिता से पृथक् काम करने लगे थे तो दसवी श्रेणी में तीन बार अनुत्तीर्ण हो चुके थे। तुम्हारे पिता ने तो कह दिया था कि प्रबोध को घर के किसा कुत्ते, बिल्ली की भाति रोटी खिला दिया करो। वास्तव में यह मै हू, जो कार्य कर रही हूं।

" 'अब तुम्हारे ताया जी मेरी राय से कार्य करते हैं तो इस कार्य की उन्नति में सहायक हो रहे है।'

" भापा ! इसपर मैंने पूछ लिया, 'तो फिर उनमें विशेषता क्या है ?'

" 'वे इस समय तुम्हारे पिता के स्थानापन्न है।'

" पहले तो मै समझा नहीं परन्तु पीछे मुझको कुछ सन्देह हुआ तो मैने पूछ लिया, 'तो तुम भूषण ताया की पत्नी बन गई हो ?'

" 'यह मेरी निज की बात है। इसमे तुमको पूछने का अधिकार नहीं।'

" भापा जी ! मुझको क्रोध आ गया और मैंने मा की खूब मरम्मत की। खाने के पश्चात् वह आधी बोतल शराब पी जाया करती है। और उस शराब का नशा उतारने मे खूब पीटना पड़ा। उसी समय दिति मा के कमरे मे आ गई। वह शोर मचाने ही वाली थी कि मैं वहां से चला आया।

" आज भूषण जी ने मुझको मां के पीटने पर डांटना आरम्भ कर दिया। यह मध्याह्न के भोजन के समय की बात है। मैंने उनको कहा कि यदि उन्होंने अपने को सीमा के भीतर नही रखा तो उनको धक्के दे-देकर घर से निकाल दूगा।

"इसपर भूषण जी ने मुझको बताया है कि मैं तो कम्पनी मे दस प्र. हिस्से का मालिक हू। शेष तो सुभद्रा जी के और उसके ही हिस्से हैं।

"मैंने पूछा, 'और मामा जी के ?'

"'वे सब मैंने खरीद लिए है। इसलिए मां के अधीन होकर रहो, नही तो घर से तुम निकाले जाओगे, मै नही।'

"भापा ! मै आज मामा जी के पास गया था। उन्होंने बताया है कि उनके पन्द्रह प्रतिशत हिस्से थे परन्तु बहिन के कहने पर वे उन्होंने भूषण के नाम कर दिए थे। मैंने उनको मा के विषय मे वस्तुस्थिति बताई तो वे कहने लगे कि मैं विवाह कर मां से पृथक् हो जाऊ। इन विषयों मे किसीकी बातो मे दूसरो को झांकने की न तो आवश्यकता है न ही उचित।

"अब आप बताइए कि मैं क्या करू ?"

राम कितनी देरी तक विचार करता रहा और वह भी उसी परिणाम पर पहुंचा, जिसपर राम का मामा पहुचा था। उसने कह दिया, "अपने लिए और अपनी बहिनों के लिए ठीक बात यही है कि तुम विवाह कर लो और अपनी बहिनों को लेकर पृथक् जा रहो।"

"तो भापा ! बडी मां से कहकर मेरे विवाह का प्रबन्ध कर दो।"

"मैं आज उससे बात करूंगा। बिरादरी में थोड़ा घूमना पड़ेगा। मेरी राय मानो, तुम अपने पिता से मिलो और उनसे भी राय कर लो।"

८

भूषण और सुभद्रा के सम्बन्धों की बात प्रबोध पर प्रकट हो जाने के पश्चात् तो थोडा-सा पर्दा जो वह उससे रखे हुए थे वह भी उतर गया और अब भूषण सुभद्रा के शयनागार में सोने लगा। यह बात सोमा और दिति से भी छुपी नही रह सकी। रूप का सबसे छोटा लड़का कमल इस समय ग्यारह वर्ष का था। वह घर की बदल रही अवस्था से अपरिचित था। प्रबोध तो बहिनों से बात करता नहीं था। न ही बहिनें प्रबोध से अपने मन की बातें करती थीं।

कुछ दिनों से सोमा और विश्वम्भर, काहन के लड़के, में मेल-जोल बढ़ रहा था और वह स्कूल से सीधी काहन के घर चली जाती थी। विश्वम्भर कालिज से

"कुछ पूछना है।"

"सुबह आना। मुझको नीद आ रही है।"

दिति विचार करने लगी कि बाहर से ही बहिन के विवाह की बात बता दे अथवा न। वह अभी विचार ही कर थी कि भीतर से दो के बाते करने की आवाज़ आ गई। एक ने कहा, "चली गई है ?"

"कह नही सकती।" यह उसकी मां ने धीरे से कहा था।

"तो चुप रहो, चली जाएगी।"

दिति को कुछ-कुछ समझ आने लगा था, दूसरी आवाज किसी पुरुष की थी।

दिति के मन में भय समा गया। वह भागी हुई अपने कमरे में आई तो उसकी बहिन कपड़े बदल सोने की तैयारी कर रही थी। दिति आई तो उसने पूछ लिया, "पूछा है ?'

"नही।"

"क्यो ?"

वह अपने मन की बात बता न सकी। सोमा दिति से अधिक समझती थी। उसने पूछ लिया, "दरवाजा बन्द था ?"

दिति ने सिर हिलाकर 'हा' में उत्तर दिया। इसपर बड़ी बहिन ने कह दिया, "तो सो जाओ। कल प्रातःकाल बात करेगे।"

दिति सो नहीं सकी। वह मन में विचार कर रही थी कि बड़ी मा के पास सोने चली जाए क्या ?

अगले दिन सोमा उठी और उसने छोटी बहिन को जागते हुए देख पूछ लिया, "उठोगी नही ?"

"सोई ही नहीं तो उठूंगी क्या ?"

"सोई क्यो नही ?"

इसपर उसने बड़ी बहिन को मा के कमरे के भीतर की बात बता दी।

"तो फिर क्या हुआ ?"

अब इस 'क्या हुआ ?' की बात तो दिति समझ नहीं सकी। वह चुप रही।

प्रातः के अल्पाहार के समय दिति ने वही बात, जो वह रात के समय मां को बताने गई थी, बता दी। उसने कहा, "मां ! सोमा बहिन कहती है कि उसने स्कूल छोड़ दिया है।"

"क्यों ?"

उस समय सोमा, प्रबोध और भूषण भी वहां बैठे थे। दिति ने अपनी बहिन की ओर देखा। वह चाहती थी कि सोमा अपनी बात कहे। सोमा चुप रही। इस-पर प्रबोध ने डांट के भाव में पूछ लिया, "बताओ सोमा !"

"क्या बताऊं भैया ? तुमने भी तो बिना पास किए पढाई छोड़ दी थी। मुझसे भी पढाई नही होती, मै भी छोड़ बैठी हूं।"

अब मां ने पूछ लिया, "छोड़ बैठी हो ? कब से ?"

"आज से दो महीने हो गए। मुझसे पढ़ाई नही होती।"

"तो फिर क्या करोगी ?" प्रबोध का प्रश्न था।

"जो लड़कियां करती है। विवाह कर ससुराल चली जाऊंगी।"

इसपर भूषण ने कह दिया, "ससुराल ढूढने में तो समय लगेगा। तब तक तो स्कूल जाती रहा करो।"

"मैने ढूढ़ ली है !"

"क्या ढूढ ली है ?" प्रबोध के माथे पर त्योरी पड़ गई थी।

"जिसके ढूढने मे समय लगने की बात कर रहे है।"

"कहा ढूढ ली है ?"

"विश्वम्भर जी से विवाह होगा मेरा।"

"यह कैसे हो सकता है ! वह तो तुम्हारा भाई लगता है !"

"मां-जाया तो है नही।"

"तो विश्वम्भर से पूछ लिया है ?" भूषण ने पूछ लिया।

"हा। वह भी कहता है कि आप लोग पुराने विचार के है। मानेंगे नहीं। इसलिए हमको स्वयमेव विवाह कर लेना चाहिए और हमने निश्चय कर लिया है।"

इस घोषणा से तो सब टुकुर-टुकुर मुख देखते रह गए। सबसे पहले सुभद्रा को मार्ग सूझा तो उसने कहा, "अच्छा, विश्वम्भर को आज सायं चाय पर यहा ले आना। यदि वह स्वीकार करेगा तो तुमको पृथक् घर बना देगे।"

"मैने पूछा था। वह कहता था कि हम पृथक् मकान बनाकर रहेगे।"

"कितना वेतन है उसका ?"

"पौने तीन सौ रुपये मिलते हैं। भैया राजकुमार उसको कुछ काम घर पर

करने के लिए बता देते है और उससे सौ रुपये के लगभग अतिरिक्त आय हो जाती है।"

"यह आय पर्याप्त नही। उसकी आय-वृद्धि के लिए विचार कर लेंगे।"

सोमारानी इससे संतोष अनुभव करती थी। प्रबोध को यह सम्बन्ध पसन्द नही था। इस सब अव्यवस्था को देख, उसको अपने बाबा की बात पसन्द आई कि उसको अपने पिता से मिलकर बात करनी चाहिए।

अल्पाहार के पश्चात् उसने मोटर निकलवाई और अपने काम पर चला गया। इमारतो के निर्माण का कार्य बहुत वेग से चल रहा था और प्रबोध की कम्पनी ने पांच काम लिए हुए थे। पांचो पर पाच जमादार, जो ओवरसीयर की योग्यता रखते थे, नियुक्त थे। इन जमादारो का काम जहां कारीगर और मज़दूर एकत्रित कर काम चलाना था, वहा काम को नक्शे के अनुसार तैयार करवाना था। पाचों कामों पर एक इंजीनियर की योग्यता का आदमी रखा हुआ था। वह केवल काम की श्रेष्ठता का ध्यान रखता था। भूषण हिसाब-किताब रखता था। प्रबोध पांचों कामों पर सबको काम में सलग्न देखता रहता था।

प्रबोध मोटर लेकर दो-तीन घण्टों मे सब कामो पर घूम और अपने पिता को ढूढ़ने चल पड़ा। उसको रूपकृष्ण अपने घर में मिल गया।

रूप कनाट प्लेस मे एक फ्लैट पर सुन्दरी के साथ रहता था। मध्याह्न भोजन का समय था और दोनों खाने पर बैठे हुए थे।

प्रबोध को आया देख दोनों प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगे। प्रबोध ने स्वयमेव कुर्सी पर बैठते हुए कह दिया, "पिता जी! आपसे एक अत्यावश्यक विषय पर परामर्श करने आया हूं।"

"विवाह कर रहे हो अपना?"

"वह तो आपने करना है। मै कैसे कर लूगा?"

"तो और कौन-सी अत्यावश्यक बात है, जिसके लिए यहां भागे हुए चले आए हो?"

"आप भोजन कर लें तो बताता हूं।"

"क्यों? अभी क्यों नही? मैं कानों से तो खा नहीं रहा।"

"परन्तु सुन्दरी के सामने ही बता दूं?"

"बताओ सुन्दरी! तुम प्रबोध की अत्यावश्यक बात सुनना चाहती हो अथवा

नहीं ?"

"वह सुनाएगा तो सुन लूगी।"

"तो बेटा, कह डालो। इसको भी सुन लेने दो।"

"पिता जी, वह मा के विषय में है।"

"क्या हुआ तुम्हारी मां को ?"

"वह···।"

"हां ! हां !! कहो न रुक क्यों गए ? वह घर से भाग गई है क्या ?"

"घर से नहीं भागी परन्तु उसने भूषण ताया जी से विवाह कर लिया है।"

"कैसे विवाह कर लिया है ?"

"जैसे आपने सुन्दरी से कर लिया है।" इसपर रूप और सुन्दरी हंसने लगे।

"मैं समझता हू।" रूप ने कुछ विचार कर कहा, "तुम भी विवाह कर लो।"

"किससे कर लूं ?"

"यहां बहुत घूमती-फिरती हैं। कोई पकड़ लाओ।"

"मेरा साहस नही होता।"

"तो अपनी दादी से कहो। वह कोई ढूढ देगी। देखो। प्रातःकाल उनके चरण-स्पर्श किया करो। उनको तुमने और तुम्हारी मां ने बहुत कष्ट दिया था। उसके लिए क्षमा मांगा करो। जब वे प्रसन्न हो जाएंगी तब तुम्हारे लिए कोई लड़की ढूढकर बाजे-गाजे के साथ विवाह कर देंगी।"

"पर पिता जी। सोमा कहती है कि उसने विश्वम्भर से विवाह करने का निर्णय कर लिया है।"

"बहुत बदमाश है वह ?"

"जी, जी।"

"तो तुम्हारी मां क्या कहती है ?"

"उसने विश्वम्भर को बुलाया है।"

"ठीक है। यदि काहन स्वीकार करे तो विवाह कर दो।"

"काहन स्वीकार नही करेगा।"

"कैसे कहते हो ?"

"वह आपका भाई है न ?"

" हां । वह भाई था जब हम पुराने काल के विचार रखते थे । तब भाई-भाई मे बहुत स्नेह होता था । परिवार की बहुत महिमा थी । एक के लिए परिवार के सब लोग रक्त बहा देते थे । धनवान भाई निर्धन की सहायता करता था । और निर्धन परिवार की मान-प्रतिष्ठा के लिए अपना जीवन तक दे देता था ।

" परन्तु अब ज़माना बदल रहा है । बेटा, हम सभ्य हो रहे है । कल मेरे पास काहन की सगी बहिन का लडका दाताराम आया था । उसने किसी प्रकार का व्यापार किया था और उसमे घाटा पडने से उसका दिवाला पिट गया है । लेनदारों ने उसपर धोखा करने का मुकदमा दायर कर दिया है । उसके वारट निकाले गए और उसको बीस हजार का कोई जामिन चाहिए था । वह पुलिस से छुपा हुआ अपना जामिन ढूढ रहा था । परिवार के सब सदस्यों पर हो आया था और कोई उसकी जमानत देने को तैयार नही हुआ ।

" मुझको ख्याल आ गया कि चाचा की लड़की तो बहिन ही हुई । उसका लड़का जमानत के लिए परेशान हो, लज्जा की बात है । अतः मैं न्यायालय में गया और बीस हजार की जमानत दे आया । न्यायालय से लौट रहा था कि शिव ताया जी का लड़का निरंजन मिल गया । जब मैने उसको बताया कि मै दाताराम की जमानत दे आया हूं तो वह कहने लगा, 'मेरे पास भी वह आया था । मैने तो इन्कार कर दिया था । वह महा बेईमान है । उसने सब रुपया घर पर रखकर दिवाला निकाल दिया है ।'

" 'तो अब वह भाग जाएगा ?'

" 'निःसन्देह ।'

" मैं चुप हूं । इसपर भी मुझको अपना रुपया खतरे में डालकर भी चिन्ता नहीं । परन्तु प्रबोध ! दाताराम अपने मामा काहन के पास भी गया था । उसने भी जमानत देने से इन्कार कर दिया था ।

" इससे मैं समझ रहा हूं कि उसके और मेरे विचारो में अन्तर आ गया है । मुझसे अधिक सम्बन्ध था उसका दाताराम से । "

प्रबोध इससे विस्मय में मुख देखता रह गया । वह मन में विचार करताथा कि यदि दाताराम उसके पास आता तो क्या वह उसका ज़ामिन बन जाता ? क्या मां उसकी ज़मानत देती ? उसको यह समझ आया कि उसका ज़ामिन बनना सत्य

ही रुपये को खतरे मे डालना है। यही कारण था कि उसको अपने पिता की यह बात अव्यावहारिक प्रतीत हुई थी।

प्रबोध को चुप देख रूप ने पूछ लिया।

"क्यो बेटा जी, क्या विचार कर रहे हो ?"

"मैं भी कुछ ऐसा विचार कर रहा हू कि आपका बीस हज़ार गया।"

"यह हो सकता है, परन्तु प्रबोध, इससे लाभ किसको होगा ?"

"दाताराम को ?"

"वह अपना ही है। यदि मेरे बीस हज़ार से उसको कुछ लाभ हो जाएगा तो लाभ घर में ही रह जाएगा। क्या कहते हो ?"

"मैं उसको घर के भीतर नहीं समझता।"

"और काहन के लड़के को घर के भीतर समझते हो ? क्या हानि है सोमा के उससे विवाह कर लेने में ?"

"यह धर्म के विरुद्ध है, पिता जी।"

"तुम्हारी मा का भूषण से विवाह धर्मानुसार है न ?"

"पर आपने भी तो किया है ?"

"एक अधर्म के कार्य से दूसरा अधर्म का कार्य क्षम्य नहीं हो जाता।"

"पिता जी, इसका अर्थ तो यह है कि सब कुछ गलत हो रहा है।"

"इसीलिए तो कह रहा हू कि विश्वम्भर माने तो उसका विवाह कर दो। यह युग-धर्म है।"

"तो आप उस विवाह मे आएगे ?"

" नही। मै समझता हूं कि मै गलत नही कर रहा। हमारे ज़माने में पुरुष को अधिकार था कि वह एक से अधिक विवाह कर ले। साथ ही हमारे जमाने मे भाई का भाई सहायक होता था। बाप बेटे की सहायता करता था और बेटा बाप की।

"तुम और तुम्हारी मां नये ज़माने के जीव हैं। तुम्हारे लिए परिवार, बहिन, भाई, सास, स्वसुर कुछ अर्थ नही रखते। तुम्हारी मां पुरुष की भांति स्त्री के भी अधिकार मानती है। मै यह गलत समझता हूं। इसलिए मैं इस विवाह मे नहीं आऊगा।

" अब तुम जाओ और जैसा मैंने कहा है, करोगे तो तुम्हारी समस्या सुलझ

जाएगी।"

रूप भोजन कर चुका था। वह उठ खड़ा हुआ। प्रबोध भी जाने के लिए उठ खडा हो गया। इस समय राम वहा आ पहुचा।

९

"ओह! पिता जी! कैसे आना हुआ है आज?"

प्रबोध सुन्दरी को उठ बावा के चरण स्पर्श करते देख, विस्मय में मुख देखता रह गया। वह सुन्दरी को सर्वथा आवारा औरत समझता था। प्रबोध के मुख पर आश्चर्य देख, रूप खिलखिलाकर हस पड़ा। सब पुनः बैठ गए। राम ने पूछा, "पिता जी! क्या लेगे? खाना, कुछ ठडा पीने को अथवा चाय?"

"खाना खाकर घर से चला हू। यह प्रबोध अपने विवाह के लिए कहने आया है क्या?"

"जी। और···।"

"और सोमा के विवाह के विषय मे?"

"हा। वह भी बता रहा है।"

"अच्छा सुनो। कल यह अपनी दादी से अपनी मां के विषय में बता रहा था और उसने कहा था कि यह भी विवाह कर ले। इसपर उसने दादी से कहा कि वह कोई लड़की ढूंढ़ ले। इसकी दादी ने ही इसको आपके पास भेजा है।

"आज प्रातःकाल के अल्पाहार के पश्चात् दिति अपनी दादी के पास आ गई थी और बता रही थी कि काहन के लडके विश्वम्भर से सोमा ने सम्बन्ध बनाने का निश्चय किया है। तुम्हारी मां तो यह कहती है कि मैं जाकर काहन को कहकर समझा-बुझा, विश्वम्भर के कहीं अन्यत्र विवाह का प्रबन्ध करा दू। इधर वह आज सायंकाल सोमा को समझाकर उसका विवाह करने का यत्न करेगी।

"परन्तु मैंने काहन के पास जाने के स्थान पर तुम्हारे पास आना ठीक समझा है।"

"भापा," रूप ने कह दिया, "मैं सुभद्रा के परिवार में रुचि नहीं रखता। काहन के विषय में, मै अपनी सम्मति प्रबोध को बता चुका हूं। वह सदा परिवार

से तटस्थ रहता रहा है। इसलिए उसके लिए न तो कोई भाई है न बहिन। कदाचित् वह मान जाएगा कि यह बहिन-भाई का विवाह हो जाए ! "

"परन्तु रूप, कानून इसके विपरीत है।"

"ऐसे ही विपरीत है जैसे मेरे और सुन्दरी के विवाह के विपरीत है अथवा भूषण और सुभद्रा के विवाह के विपरीत है।"

"परन्तु रूप ! यह विवाह नही है। यह तो अनियमित सम्बन्ध है। इसका न तो कानून विरोध कर सकता है न ही ऐसे विवाहो की रक्षा करता है।"

"तो क्या कानून नियमित विवाहित स्त्री-पुरुष की रक्षा कर सकता है ?"

"हा ! करता तो है। देखो, निरजन की एक बहिन थी राधा ! उसका देहान्त हो चुका है। राधा की पोती है सुधा। सुधा की लडकी वीणा को उसके घर वाले ने सात वर्ष विवाह के पश्चात् मार-पीटकर घर से निकाल दिया था। पिछले वर्ष उसने विवाह-विच्छेद के लिए प्रार्थना की थी। उसकी प्रार्थना स्वीकार हो गई है।"

"भापा ! मैं यह सब कथा सुन चुका हू। मैं तो यह जानना चाहता हू कि अब वीणा क्या करना चाहती है। उसके दो बच्चे है। बड़ा लडका है और छोटी लडकी तीन वर्ष की है। अदालत ने यह निर्णय दिया है कि लड़का पिता के पास रहे और लड़की मां के पास !"

राम ने कह दिया, "हां ! और लड़की के पालन-पोषण के लिए बीस रुपये महीना उसका पति उसको दे।"

"बहुत दया की है कोर्ट ने ! परन्तु वीणा अब क्या करेगी ? क्या वह नया विवाह कराएगी ?"

"नहीं। उसने एक स्कूल में नौकरी कर ली है। सवा सौ रुपया महीना वेतन पाती है और निर्वाह कर रही है।"

"क्या मजेदार है कानून की सुरक्षा ! वह विवाह-विच्छेद के बिना ही घर चली आती, बच्चों को बाप के घर छोड आती और यही नौकरी कर लेती तो क्या हानि होती ? मैं समझता हू कि उस अवस्था मे अधिक मज़े मे रहती।"

"तो यह सैकड़ों विवाह-विच्छेद के मुकदमे जो दिल्ली में चल रहे हैं, व्यर्थ हैं ?"

"भापा ! विवाह-विच्छेद तो होते हैं। इस कानून से पहले भी होते थे

और पीछे भी होते रहेगे। अन्तर यह हो गया है कि अब वह पक्के हो जाते है और पहले अस्थायी होते थे। उनमे से अधिकाश की अवस्था में सुलह हो जाती थी। अब उसके लिए स्थान नही रहा।"

"रूप, तुम वकील क्यों नही बन गए ?"

"क्या होता उससे ? वकील किसी भी कानून को गलत अथवा ठीक कह नहीं सकता। वह तो जैसा ही कानून बनता है उसका समर्थन करता है।"

"तो फिर यह सब जो तुम कहते हो, कैसे होगा ?"

"वर्तमान अवस्था मे कुछ नही हो सकता।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि आज संसद का निर्माण हुआ है, देश के उन नेताओं के द्वारा, जिनको जनता उनके राजनीतिक विचारो के कारण जानती है। उसका निर्वाचन के समय विचार था कि इन लोगो ने राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त की है और यह देश की राजनीतिक अवस्था सुधारेगे। किसीने भी इनको न कभी धर्म-कर्म का ज्ञाता समझा है और न कभी समाज-सुधारक माना है। परन्तु ये संसद के सदस्य बनकर जनता की सामाजिक और धार्मिक भावनाओं को बदलने लग पडे हैं।

"प्रत्येक चुनाव पर ये कोई न कोई राजनीतिक ढोग खडा कर देते है और जब चुनकर संसद मे बैठ जाते है तो फिर जनता की भावनाओ से मनमानी करने लगते हैं।"

"परन्तु सब पढ़े-लिखे इनका समर्थन करते हैं !"

"क्या पढे-लिखे और कौन पढे-लिखे ?"

"जो स्कूलों, कालिजों में पढ़े है।"

"भापा ! वे पढ़े-लिखे नही कहे जा सकते। मुझको स्मरण है कि मैं एम० ए० पास करने के पश्चात् भी गौरी बूआ के सामने धर्म-कर्म के विषय में बता नहीं सकता था और वह घर पर हिन्दी ही पढी थी। ये पढे-लिखे सामाजिक विषयो में कुछ नहीं जानते। और फिर देश में इनकी संख्या कितनी है ? कालिजों की शिक्षा प्राप्त तो जनसंख्या का एक हज़ारवा भाग भी नही। हां। ये हल्ला बहुत करते है और मुझको विश्वास है कि जो इस कानून का समर्थन करते रहे है वे विवाह-बन्धन से मुक्त हो गुलछर्रे उड़ाने की नीयत रखते थे। स्त्रियां भी जो इस विवाह-विच्छेद के हक में थी, वे पतियों के बन्धन से मुक्त विचरना चाहती थीं। कोई

इनमें भूला-भटका वस्तुस्थिति से अनभिज्ञ और यूरोप की चकाचौंध से प्रभावित मूर्ख इस कानून के पक्ष मे सत्य हृदय से भी हो सकता है। वास्तव मे इसका लाभ किसीको भी नही हुआ। कुछ वकीलो की बन आई है और कुछ गुंडे शोच्चों की।"

"खैर छोड़ो इस बात को। यह बताओ कि हमको क्या व्यवहार करना चाहिए। एक बात मेरे मन मे है, कहो तो बताऊ।"

"हां भापा ! बताओ।"

"सायकाल से पूर्व सुभद्रा और सोमा दोनो को कोठी से निकाल दूं, जिससे जो कुछ बच गया है उसे बचा लू। मेरा अभिप्राय दिति और कमल से है। परन्तु कोठी तुम्हारी है, वह स्त्री और लड़की तुम्हारी है। इस कारण पूछने चला आया हू।"

"नहीं भापा ! अभी नही। मै समझता हूं कि सबसे पहले सोमा की समस्या सुलझानी चाहिए। आप काहन से बात करिए। यदि वह और उसका लड़का विश्वम्भर पसन्द करे तो दोनो को पृथक् रहने के लिए एक मकान दे दिया जाए और उनको आशीर्वाद दे दिया जाए। तत्पश्चात् सुभद्रा का विचार करेगे।"

"यदि विश्वम्भर मान गया और काहन न माना तो क्या करेंगे ?"

"विश्वम्भर अब बाईस वर्ष का है। उसको विवाह स्वेच्छा से करने का अधिकार है। काहन को हम मना लेगे।"

"और प्रबोध के विषय मे क्या कहते हो ?"

" मैने तो इसको राय दी है कि यह किसी लड़की से विवाह के लिए स्वयं निश्चय कर ले। यह कहता है कि इसमें इस प्रकार के कार्य के लिए साहस नही। ऐसी स्थिति मे मैने इसको राय दी है कि यह नित्य प्रात.काल उठकर अपनी दादी के चरणस्पर्श किया करे। जब वह प्रसन्न हो जाएगी तो कही इसके विवाह का प्रबन्ध कर देगी।

" परन्तु एक बात और है, जो इसे करनी होगी। वह है भूषण के हाथ से अपने व्यापार को मुक्त करना। वह इसको धोखा भी दे सकता है। तब तक इसको अपनी मा और अपने बाप से मुस्करा कर बातचीत करनी चाहिए और उसके हाथ से अपना कारोबार निकाल लेना चाहिए। "

राम काहन की कोठी में जा पहुचा। काहन ने पैन्शन ले ली थी। वह अपनी एक कोठी बनाकर रह रहा था। इन दिनों उसका मुख्य कार्य शेयर मार्केट मे ले-

दे करना था। इस व्यापार में उसने पर्याप्त धनोपार्जन कर लिया था। वह शक्ति-नगर मे रहता था। घर पर टेलीफोन लगवा लिया था और घर बैठा हिस्से बेचता और खरीदता रहता था।

राम कई वर्ष के पश्चात् काहन से मिलने गया था, इस कारण काहन को विस्मय हुआ था। उसने राम को देख पूछ लिया, "चाचा जी! आज कैसे आना हुआ है?"

"मैं यही विचार करता था कि तुम कोई शुभ कार्य करोगे और फिर निमत्रण दोगे तब मै और तुम्हारी चाची अथवा साली दोनों आएगे। जब तुम्हारा किसी प्रकार का निमत्रण-पत्र नही मिला तो पूछने चला आया हूं कि विश्वम्भर का विवाह नही करोगे क्या?"

"चाचा जी! जमाना बदल गया है। स्वराज्य होने के पश्चात् और शिक्षा के प्रसार से अनेकों माता-पिता बच्चों के विवाह के बोझ से मुक्त हो गए है। मैं समझता हू कि लडके-लडकियां भी अब सुख का सास लेने लगे है। उनको अनजाने लडके-लड़की से विवाह कर बाध दिए जाने का भय नही रहा।"

"तो विश्वम्भर कही स्वय विवाह करने वाला है?"

"मुझको ज्ञात नही। मै इस विषय में जानने की रुचि भी नही रखता उसने स्वयमेव अपना काम ढूढा है। उस काम में स्वयमेव योग्यता प्राप्त की है और फिर स्वय ही वह उन्नति कर रहा है।

"मेरी चिन्ता विश्वम्भर नहीं, अपितु उसके छोटे भाई-बहिन हैं। वह चिन्ता भी उनके विवाह करने की नहीं। वह उनको शिक्षा देने की है। सब के सब अति योग्य और प्रतिभाशाली है।"

"तब तो मुझको विश्वम्भर के आने की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।"

"तो चाचा जी, किसी लडकी का रिश्ता लेकर आए है?"

"लेकर तो नही आया, परन्तु उसकी सम्मति एक लड़की के विषय में जानने आया हू। मुझको बताया गया है कि तुम्हारे साहबज़ादे ने उस लड़की को विवाह का वचन दिया है।"

"और कौन है वह?"

"काहन। जब तुमको रुचि ही नही तो फिर तुमको बताने की आवश्यकता ही नहीं।"

"ठीक है। चाय मंगवाऊं चाची जी!"

"और दुर्गा कहां है ?"

"वह लड़कियो के साथ बाज़ार गई है ।"

"तो लड़किया पढने नही जाती ?"

"जाती हैं । आज उनकी स्कूल से छुट्टी थी ।"

"विश्वम्भर किस समय दफ्तर से आ जाया करता है ?"

"वह प्रायः साढ़े पाच तक यहां पहुच जाया करता है ।"

राम ने घडी में समय देखा और कह दिया, "चार बज चुके हैं । मुझको उसकी प्रतीक्षा करनी ही चाहिए ।"

दुर्गा, काहन की पत्नी, लड़कियों के साथ बाजार से पहले लौटी । काहन की सबसे बड़ी लडकी चौदह वर्ष की थी । नाम था कीर्ति । सोमा, रूप की लड़की, इसकी सहेली थी और इसकी श्रेणी मे पढती थी । सोमा सत्रह वर्ष की थी । वह नौवीं श्रेणी में तीन बार अनुत्तीर्ण हो चुकी थी ।

जब दुर्गा बाजार से लौटी तो सोमा उसके साथ थी । सोमा अपने बाबा को वहां बैठा देख विस्मय मे मुख देखती रह गई । वह आज विश्वम्भर को अपनी मां के पास ले जाने का विचार रखती थी । उसको सन्देह हो गया था कि उसका बाबा भी उसीके विषय मे बातचीत करने आया है । उसने अपने मन को सुदृढ़ कर लिया और पूछने लगी, "भापा ! आज इधर कैसे आ गए हैं ?"

राम ने उसकी बात का उत्तर देने के स्थान पर उससे पूछ लिया, "तुम यहां क्या कर रही हो ?"

"मैं कीर्ति की श्रेणी में पढ़ती हूं । आज स्कूल में छुट्टी हो गई थी, इस कारण मैं उसके साथ यहा आ गई हूं ।"

राम ने बात बदल दी । उसने अपनी साली को सम्बोधन कर पूछ लिया, "बताओ दुर्गा, कैसी हो ?"

"बहुत मज़े में हू, जीजा जी ! आज आपके दर्शन हुए हैं । खैर तो है ?"

"मन मे आया, बहिन दुर्गा के परिवार के दर्शन करने चाहिए । बस टैक्सी ली और चल पड़ा ।"

"तो ठहरिए । लड़कियां तो आ गई हैं, लड़के भी आने वाले हैं । भगवान की कृपा है, छः मेरे है और एक पहले का है ।"

"सुना है वह तो नौकर हो गया है ।"

"हा। तीन सौ से ऊपर वेतन पाता है।"

"और तुम्हारे साथ कैसे व्यवहार रखता है?"

"सदा लडके के समान ही रहा है। सदा आज्ञा का पालन करता है।"

इस समय दो लड़के आ गए। मोहन और सुरेन्द्र। काहन ने उनका परिचय करा दिया, "यह है मोहन, इस समय हायर सैकण्डरी मे पढ़ता है और अपनी श्रेणी में प्राय: प्रथम रहता है। और यह है सुरेन्द्र। स्कूल की क्रिकेट टीम का खिलाडी है।"

"काहन! बहुत भाग्यशाली हो तुम!"

"भैया, यह सौभाग्य तुमने ही तो बटोरकर दिया था। स्मरण है, दुर्गा को इस घर में लाने मे तुम ही तो कारण थे।"

"अपने-अपने भाग्य के अधीन ही सब आते और जाते है। मनुष्य तो निस्सहाय नदी मे बहते तिनके के समान है।"

चाय तैयार हो गई और सब, राम, काहन, दुर्गा, काहन के छः बच्चे और सोमा चाय पीने लगे। सब विश्वम्भर की प्रतीक्षा कर रहे थे, परन्तु वह अभी नही आया। काहन ने कुछ चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, "बहुत कम ऐसे दिन हुए हैं, जब वह देरी से आया है।"

चाय समाप्त हुई। विश्वम्भर नही आया। लड़कियां और दुर्गा कोठी के भीतर चली गईं।

मोहन और सुरेन्द्र बाईसिकलों पर सवार हो खेलने के मैदान को चले गए। ड्राइंग रूप मे काहन और राम बैठे रह गए। पुराने काल की बाते होने लगी तो समय व्यतीत होते पता नही चला। दीप जल गए। एकाएक राम को विचार आया कि उसको चलना चाहिए। वह उठा और कहने लगा, "कल रविवार है। विश्वम्भर को उधर भेज देना। मै समझता हू कि उसका विवाह हो जाना चाहिए।"

"अच्छी बात है। कह दूगा, वैसे इस विषय मे केवल उसको सम्मति ही दे सकता हूं।"

"ठीक है काहन भैया! मै भी तो आज्ञा देने की स्थिति में नहीं हूं।"

१०

राम चलने लगा तो उसे सोमा की याद आ गई। उसने सोमा को आवाज़ लगा

दी। वह आई तो कहा, "चलो। मै टैक्सी में जा रहा हूं। तुम भी चलो।"

सोमा इन्कार नही कर सकी। वह भी आज निराश थी। विश्वम्भर को आने में इतनी देरी पहले कभी नही हुई थी। उसको इस घर मे नियमित रूप में आते हुए एक वर्ष के लगभग होने जा रहा था और इस काल में एक यह पहला दिन था, जब वह इस समय तक भी लौटा नही था।

काहन ने टैक्सी स्टैण्ड पर टेलीफोन किया। टैक्सी आई और बाबा-पोती उसमे बैठ श्रीराम रोड को चल पडे। सोमा ने मार्ग मे ही पूछना आरम्भ कर दिया, "भापा! इधर कुछ काम था क्या ?"

राम ने ध्यान से लड़की के मुख पर कह दिया, "हा। तुम्हारे विषय में बात-चीत करनी थी।"

"मेरे ?" सोमा ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया, "मेरे विषय मे क्या बातचीत करनी थी ?"

"यही कि तुम यहां आकर क्या करती रहती हो।"

"तो फिर क्या बताया है मौसा जी ने ?"

"कहते थे कि वे कुछ नही जानते। विश्वम्भर ही बता सकेगा, क्योकि तुम और वह ही अधिकतर घूमते-फिरते हो।"

इसमें कुछ उत्तर देने को नही था। इस कारण सोमा चुप रही। परन्तु राम ने बात का सूत्र नही छोड़ा, उसने कह दिया, "तुम भी तो विश्वम्भर को अपनी मां से मिलाने के लिए ले जाने वाली थी।"

"हां। परन्तु वे आए नहीं। पहले कभी ऐसा नही हुआ।" सोमा समझ गई कि उसका बाबा सत्य स्थिति जानता है।

"तो तुमको भी चिन्ता लग गई है ?"

सोमा ने कुछ उत्तर नही दिया। राम ने पुनः पूछा, "अब मां को क्या उत्तर दोगी ?"

"यही कि वह बहुत देरी तक कार्यालय से नही लौटा था।"

"तो कल फिर उसको लेने के लिए आओगी ?"

सोमा ने इसका उत्तर नहीं दिया।

"मैंने उसको कल अपनी कोठी में आने का निमंत्रण दिया है। यह प्रातःकाल टेलीफोन में दुहरा भी दूगा।"

उठाया और कलम रख सोमा की ओर देख, पूछने लगा, "सोमा रानी कहां टेली-फोन कर रही है ?"

"जहा के विषय मे आपको जानने की आवश्यकता नही है।"

"वाह ! मेरी आवश्यकता मैं जान सकता हूं तुम क्या जानो ?"

"तो ठीक है। आप जानिए। मैंने आपको मना नहीं किया।"

"अच्छी बात। करो टेलीफोन ! मै जान लूगा।"

भूषण उठकर टेलीफोन के समीप आ खड़ा हुआ। इससे क्रोध में सोमा कार्यालय से निकल अपने कमरे में चली गई।

वह वहां गई तो उसकी बहिन दिति वहां नही थी। दिति का बिस्तर और पुस्तकें भी वहां नही थी। वह उसका पलंग और मेज खाली देख, विस्मय कर रही थी। वह इसका अर्थ नही समझी। फिर मन की निराशावस्था के कारण अपने पलग पर लेट विचार करने लगी कि क्या करे ? वह भोजन के समय की प्रतीक्षा करने लगी। वह इस समय कार्यालय मे जाकर टेलीफोन करने का निश्चय कर चुकी थी। वह समझ रही थी कि उस समय भूषण डाईनिंग हाल में होगा और वह बिना उसके जाने टेलीफोन कर सकेगी।

परन्तु उसके विस्मय का ठिकाना नही रहा जब कार्यालय को ताला लगा देखा। यह पहले से भिन्न बात थी। उसको अब विश्वास होने लगा कि भूषण जान गया था कि कहां टेलीफोन करने जा रही थी और वह नहीं चाहता कि विश्वम्भर से उसका सम्पर्क रहे। इसपर भी वह चुप थी और खाने के कमरे में आकर बैठ गई। वह मन मे डर रही थी कि विश्वम्भर उससे नाराज हो रहा होगा।

भोजन करते हुए भूषण ने सोमा की ओर नहीं देखा, न ही उसकी मां ने सोमा से पूछा कि विश्वम्भर को लेने गई थी अथवा नही। हा, एक बात विचित्र हुई। दिति और कमल भोजन पर नही थे। सोमा ने पूछ लिया, "मा ! दिति और कमल कहां हैं ?"

उत्तर प्रबोध ने दिया, "वे अपने बाबा के कक्ष मे रहने चले गए हैं और कह गए है कि भोजन भी उनके साथ ही करेंगे।"

"क्यों ?"

"मै भी कल से पृथक् रहने जा रहा हूं।"

'किससे पृथक् ?"

"मां से और तुमसे ।"

"किसलिए ?"

"भापा ने कहा है कि मैं जब उनके कक्ष में रहने लगूगा तो मेरा विवाह हो जाएगा।"

सोमा को स्मरण आ गया कि भापा उसके विवाह मे भी यत्न कर रहा था। अतः उसने मा से पूछ लिया, "मा, तुम भैया का विवाह क्यो नही कर देती ?"

"तुम्हारे पिता के घर छोड़ जाने से हम सब बदनाम हो गए हैं और जब भी मैं किसी स्थान पर बात करने जाती हू तो लोग तुम्हारे पिता के विषय मे पूछते हैं।"

"तो फिर हम क्या करे ?"

"सब अपना-अपना मार्ग ढूढो । सब अपने-अपने लिए यत्न करो।"

"तो मां ! कार्यालय की चाबी दे दो।"

"क्या काम है ?"

"मैं अपना मार्ग ढूढना चाहती हू ।"

"क्या मतलब ?"

"मै भी विश्वम्भर जी को टेलीफोन करना चाहती हू ।"

"हां ! तो तुम्हे आज उसको यहां लेकर आना था ।"

"मैं लेने गई थी, परन्तु साय साढ़े पांच बजे तक वह दफ्तर से लौटा ही नहीं था। भापा वहा गए हुए थे और वे मुझको साथ लेकर आ गए है।"

"भापा ! वहां किस मतलब से गए थे ?"

"कहते थे कि मेरे विषय में बात करनी थी।"

"तो वे तुम्हारा वहां विवाह पसन्द करते है ?"

"नही। पसन्द तो नही करते । परन्तु कहते थे कि यह काम हमारा है। वे बीच मे बाधा खड़ी नही करेंगे और वे यही बात विश्वम्भर जी के पिता को कहने गए थे।"

"मुझको तो कुछ यह मालूम हुआ है कि तुम्हारे पिता ने मुझसे विद्रोह किया है और अब तुम्हारे बाबा भी वही करने जा रहे हैं। वह मेरे बच्चो को भी मुझसे विद्रोह करने में प्रोत्साहन दे रहे हैं।"

"मेरी उनसे बातचीत हुई है और मुझको कोई ऐसी बात प्रतीत नही हुई।"

"अच्छा, ऐसा करो, विश्वम्भर को टेलीफोन कर कल यहां आने का निमत्रण दे दो ।"

"पर मां । कार्यालय को ताला लगा है ।"

"वह भूषण जी ने लगाया है । उनको सन्देह हो गया है कि कोई वहा से कुछ चोरी करना चाहता है ।"

"कोई कौन ? भापा जी ?"

"हो सकता है ।"

"पर क्यो और क्या चोरी करना चाहते हैं ?"

"कुछ कागजात चोरी हुए है । अभी तक पता नही चला कि उनको कौन और क्यों ले गया है ।"

सोमा टुकर-टुकर मुख देखती रह गई । फिर पूछने लगी, "तो फिर टेलीफोन कैसे करू ?"

"भूषण जी भोजनोपरान्त टेलीफोन करा आते हैं ।"

सोमा नही चाहती थी कि भूषण के सामने टेलीफोन करे परन्तु विवश थी और मन में यह निश्चय कर कि वह सावधानी से बात करेगी, वह भूषण के साथ कार्यालय को चली गई ।

जब वे दोनों चले गए तो सुभद्रा ने प्रबोध से पूछा, "तुम भापा जी के साथ रहने क्यो जा रहे हो ?"

"मां । भूषण मुझसे झगडा करता है ।"

"तुमने बैंक की पासबुक और चैकबुक किसलिए चुरा ली है ?"

"चैकबुक ? इसको उठाने की आवश्यकता क्या थी ? रुपया तो तुम्हारे और मेरे हस्ताक्षरों के बिना निकल भी नही सकता । फिर उसको कोई उठाकर क्या करेगा ?"

"इसीसे तो कहती हूं कि तुम सब लोग विद्रोह कर रहे हो ।"

"नही मां । यह बात नही । यह भूषण कुछ गड़बड़ कर रहा है । यह तुमको हमारे विरुद्ध कर रहा है ।"

"क्या उद्देश्य हो सकता है, इसमें ?"

"उसने स्वय दोनों को गायब कर दिया है ।"

"किसलिए ?"

"जिससे हिसाब चैक न किया जा सके।"

"क्या आवश्यकता है चैक करने की ?"

"पिछले कुछ दिनो मे बडी-बडी रकमों के कई चैक काटे गए है और उनका किताबों मे दर्ज नही किया गया।"

सुभद्रा इसका अर्थ समझने लगी। फिर कुछ विचार कर बोली, "अच्छा, कल रविवार है। कल मैं तुम दोनों के सामने बात करूगी।"

इस समय सोमा लौट आई। मा ने उससे पूछ लिया, "तो दे आई हो निमत्रण ?"

"वह अभी तक घर पर नही लौटा।"

"कहा गया होगा ?"

"उसके पिता का विचार है कि यदि सिनेमा देखने गया है तो आधे घण्टे में लौट आ जाएगा। आएगा तो उसको टेलीफोन करने के लिए कह देगे।"

"तो टेलीफोन कौन सुनेगा ?"

"ताया जी अभी वहा काम कर रहे है।"

"अच्छी बात है। यदि उसका टेलीफोन आया तो मुझको भी बुला लेना। मैं स्वय उसको यहा आने का निमत्रण दे दूगी।"

विश्वम्भर का टेलीफोन नहीं आया और सोमा रात-भर सो नही सकी। बहुत प्रातःकाल अभी भूषण तथा सुभद्रा सो रहे थे कि सोमा उठी और कोठी के उस कक्ष में चली गई जिधर कार्यालय था। वह टेलीफोन करना चाहती थी। भूषण ने पिछली रात कहा था कि सब कागज़ात ताले में रखकर वहां चपरासी को सोने के लिए कह आया है। इससे वह विचार करती थी कि कार्यालय खुला होगा और वह टेलीफोन कर सकेगी।

उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने चपरासी के स्थान प्रबोध को कार्यालय में भीतर से कुंडा चढ़ाए बैठे देखा। सोमा ने द्वार खोलना चाहा तो उसको भीतर से बन्द देखा। उसने खटखटाया तो प्रबोध ने द्वार खोल दिया। प्रबोध भूषण के बाहर खड़े होने की आशा करता था और सोमा भीतर चपरासी की। दोनों विस्मय में एक-दूसरे का मुख देखते रह गए। प्रबोध को पहले ही समझ आ गया कि वह टेलीफोन करने आई है और उसने उसे कार्यालय के भीतर कर पुनः द्वार भीतर से बन्द कर लिया।

प्रबोध ने द्वार बन्द कर बिजली जलाई तो सोमा ने देखा कि वह रजिस्टरों

की जाच-पडताल कर रहा है।"

"क्या हो रहा है, भैया ?"

"मुझको हिसाब मे कुछ गड़बड़ समझ आई थी और वह देख रहा हूं।"

"तो ताया जी के कागज तुमने चुराए है ?"

"नही, कुछ नही चुराया। कुछ चोरी भी नही गया। इसपर भी कई लाख की गडबड प्रतीत होती है।"

"पर भैया। वे क्यो ऐसा कर रहे है ?"

"तुम टेलीफोन कर यहा से भाग जाओ। मुझको अपना काम करने दो।"

सोमा ने काहन की कोठी पर टेलीफोन किया। वहा से काहन ने उत्तर दिया, "विश्वम्भर रात-भर घर नही आया। मैं आज उसके कार्यालय मे जाकर पता करूगा।"

सोमा आश्चर्यचकित रह गई। प्रबोध ने पूछा, "क्यो, क्या हुआ है ?"

"विश्वम्भर घर नही आया।"

"कहा गया होगा ?"

"मै कैसे बता सकती हूं ? मौसा जी कह रहे है कि वे उसके कार्यालय में जाकर पता करेंगे, परन्तु आज रविवार है। क्या पता करेंगे ?"

प्रबोध ने कहा, "अच्छा, अब तुम जाओ। मां जाग ले तो बात कर लेना।"

सोमा भीगी बिल्ली की भाति वहां से निकल गई। प्रबोध पुनः रजिस्टर देखने लगा। वह अभी भी कार्यालय मे हिसाब-किताब देख ही रहा था कि भूषण वहा आ पहुचा। उसके पीछे-पीछे सुभद्रा भी वहा पहुंच गई। प्रबोध कुर्सी पर से उठा नही और मां तथा भूषण का मुख देखने लगा। वह चाहता था कि वे ही बात आरम्भ करे।

सुभद्रा ने पूछ लिया, "यहां क्या कर रहे हो प्रबोध ?"

"मा, कम्पनी के हिसाब की जाच-पड़ताल कर रहा हूं।"

"क्यो ?"

"इसमें कुछ गडबड़ प्रतीत हुई थी।"

"तो फिर क्या देखा है ?"

"मेरा सन्देह ठीक प्रतीत होता है। सारी ही चैकबुक और बैंक की पास-बुक ताया जी ने छुपा रखी हैं।

"क्यों भूषण जी !" सुभद्रा को प्रबोध की रात वाली बात स्मरण थी और वह समझती थी कि इस वक्त सब बात शान्ति से हो सकेगी।

भूषण ने कहा, "वाह ! करे कोको और बताए लोको। मुझे पासबुक को छुपाकर क्या करना है ?"

"देखो जी ! पासबुक से अधिक आवश्यक चैकबुक है। पिछले सप्ताह मैंने तीन बडे-बडे चैको पर हस्ताक्षर किए है। सब के सब सेल्फ और बेयरर के लिए थे। मैंने देखा है कि उनको रजिस्टरों में दर्ज नही किया गया। वे चैक आपको दिए गए थे। आपने इनकी रकम वसूल कर ली होगी। वह किधर गई ?"

"मजदूरो के वेतन मे निकल गए होगे। मै रात हिसाब लिखने लगा था कि चैकबुक नही मिली। चपरासी ने बताया था कि तुम मेरी अनुपस्थिति मे दफ्तर में देख-भाल करते रहे हो। इससे कहता हू कि वह तुम्हारे पास हो सकती है।"

"नही है। मैंने कुछ और भी गड़बड़ देखी है। वह मै भापा जी को दिखाकर निश्चय करूगा।"

"देखो प्रबोध। भापा जी को बीच में डालने की आवश्यकता नही। मै तुम दोनो मे यहां ही सुलह करा देती हू।"

"सुलह। मां, हमारी लड़ाई नही है। यह हिसाब समझा देंगे, बस, सुलह ही सुलह है।"

"देखो प्रबोध ! कल बैंक चलेगे और नई पासबुक मंगवा लेंगे।"

"उसको तो एक महीना भी लग सकता है। तब तक काम कैसे चलेगा ?"

"मैं मैनेजर को कहकर कम से कम पिछले महीने का चिट्ठा नकल करवा दूगा।"

"ताया जी ! आप वही चैकबुक और पासबुक क्यों नहीं निकाल देते ?"

"वह मेरे पास नही है प्रबोध।"

"अच्छा ठहरो।" सुभद्रा ने चपरासी के क्वार्टर की ओर जाते हुए कहा। चपरासी रात-भर वहा सोया था। वैसे दिन-भर भी वह वहा रहा था। इससे वह बता सकता था कि पिछले दिन प्रबोध के अतिरिक्त कोई वहां आया है अथवा नही। भूषण और प्रबोध दोनों समझ रहे थे कि वह किधर गई है। उसके चले जाने पर भूषण ने कहा, "प्रबोध ! क्यों व्यर्थ मे झगड़ा कर रहे हो ! तुम सीधे ही बता दो, क्या चाहते हो ?"

"मै मां से पृथक् होना चाहता हूं।"

"तो इस झगड़े के विना भी हो सकते हो।"

"कैसे ?"

"बताओ। कितना कुछ चाहते हो ?"

"हमारी कम्पनी मे जितना कुछ है, उसके छः हिस्से च.हता हू। चार हम-बहिन भाई है और दो तुम। मेरा मतलब है, मां और तुम। इस प्रकार सबको अपना-अपना भाग मिल जाए।"

"इससे तो काम चल नही सकेगा। प्रति सप्ताह दस हजार 'लेबर' के लिए चाहिए।"

"काम भी बट जाएगे।"

"लडकियां कैसे काम करेगी ?"

"उनके भाग की रकम नकद देनी होगी। मेरी और कमल की साझेदारी रहेगी। आपकी और मा की साझेदारी रह सकती है।"

"नकद सब लडकियो को चला गया तो काम के लिए रुपया नही रहेगा और काम ठप्प हो जाएगे।"

"हो जाए। परन्तु मै अब तुम जैसे बेईमान...।" इस समय सुभद्रा चपरासी को लेकर आ गई।

"यह कहता है।" सुभद्रा ने बताया, "कल यहा भूषण जी और प्रबोध जी के अतिरिक्त अन्य कोई नही आया।"

"तो चोर हम दोनों मे से कोई एक है।" प्रबोध ने कहा।

"तो दोनों की तलाशी हो जाए।" भूषण का सुझाव था।

"हां। मगर क्या चोरी का माल कोठी से बाहर नही चला गया होगा ?" प्रबोध ने कह दिया।

"यह तो तुम ही बता सकते हो।"

"मैंने तो चोरी की नहीं।"

"और कोई कर ही नहीं सकता।"

"तुम भी नही ?"

भूषण हंस पड़ा और यह कहते हुए कार्यालय से चला गया, "यह तो जल मथने के समान है।"

चौथा परिच्छेद

जिसकी पत्नी नेक है, उसका परिवार श्रेष्ठ हो जाता है। यह बात काहन के घर मे पूर्ण रूप से सिद्ध हो रही थी। काहन की पहली पत्नी सुधा सन्तान से घबराती थी। उसके घबराने में काहन की अकिंचनता एक कारण थी। वह उस समय अस्सी रुपये वेतन पाता था और उसको रहने के लिए डी क्लास का सरकारी क्वार्टर मिला हुआ था। पन्द्रह रुपये क्वार्टर का किराया और बिजली का खर्चा बैठ जाता था। रोटी, कपड़ा, दफ्तर मे खाना-पीना, खेल-तमाशा और फिर स्त्री के लिए शृगार-सामग्री ! बहुत कठिनाई से निर्वाह होता था। इससे पति-पत्नी में नित्य झगडा होता था और काहन शोक और चिन्ता मे ग्रस्त रहता था।

विश्वम्भर अभी तीन महीने का ही था कि सुधा के नवीन गर्भ ठहर गया और वह गर्भपात के लिए झगडा करने लगी। इच्छा न रहते हुए भी वह एक हकीम से दवाई ले आया। दवाई दी तो रक्तस्राव आरम्भ हो गया। परन्तु गर्भपात नहीं हुआ। विवश वह उसे करौलबाग के एक हस्पताल मे ले गया। वहां ऑपरेशन की राय हो गई। उसके लिए रुपया मागा गया। काहन अभी रुपया एकत्रित करने के लिए भाग-दौड़ ही कर रहा था कि सुधा 'ऑपरेशन टेबल' पर ही प्राण छोड़ बैठी।

काहन को इसका भारी शोक था। एक तो उसकी पत्नी झगड़ालू होते हुए भी मनुष्य थी और उसको यह समझ आया था कि उसने उसकी हत्या कर दी है। दूसरे अपनी आर्थिक अवस्था देख, उसको अपना पुनः विवाह हो जाने की आशा नहीं थी। इसके अतिरिक्त वह विचार करता था कि कहीं विवाह हो भी गया तो फिर निर्वाह न हो सकने मे पुनः झगड़ा, पुन गर्भस्थापना और पुनः गर्भपात इत्यादि चक्की पीसने की भाति जीवन-संचालन। इससे वह बहुत ही परेशान था।

सुधा के जीवन-काल मे धनाभाव के कारण वह अपने माता-पिता से लड़ पड़ा था। और इससे वह उसका अब दूसरा विवाह करने इच्छा नहीं रखते थे।

पत्नी के संस्कार के समय और इसके पीछे भी उसके माता-पिता उससे शोक प्रकट करने आते रहे, परन्तु उन्होंने विवाह के विषय में किसी प्रकार की बात नहीं की थी।

इस विषय मे सबसे पहले काहन की दादी कर्मदेवी ने ही बात चलाई थी। उसने राम की पत्नी रोहिणी को कह दिया, "तुम्हारी बहिन विवाह के योग्य है। वहां बात क्यों नहीं करती ?"

"मां जी !" रोहिणी ने कह दिया, "मेरी मां ने बात तो की है परन्तु मेरा बीच में आने से चित्त डरता है। काहन हत्यारा है और कौन अपनी बहिन को अपने ही हाथो से सूली पर चढाएगा ?"

"तो फिर काहन रडवा ही रहेगा ? जब घर के प्राणी यत्न नहीं करेंगे तो बात कैसे बनेगी ?"

"मां जी, आप बीच में बैठे तो मैं बात चला सकती हूं।"

"मैं क्या करूंगी ?"

"काहन के घर की देख-भाल और समय-कुसमय सहायता का वरद हाथ।"

"हो जाएगा। तुम अपनी मां से कहो।"

बात चल पड़ी और तेहरवें के दिन तक बात लगभग निश्चय हो गई। एक महीने मे विवाह हो गया। दुर्गा काहन के घर आई तो कर्मदेवी ने समझा दिया, " देखो बेटी दुर्गा ! लोग कहते है कि काहन ने अपनी पहली बीवी की हत्या की है। पर मैं जानती हूं कि उस मूर्ख लड़की ने आत्महत्या की है। औरत घर की रानी होती है और वह घर और पति पर शासन करती है। जब रानी ही घर को गलत मार्ग पर चलाए तो पति भी गलत बातें करने लगता है। इसलिए मेरा कहना है कि 'धैर्य, सतोष, मितव्ययिता और सयम से रहोगी तो परमात्मा प्रसन्न होगा और सुख-सम्पदा तुम्हारे चरण चूमने लगेगी।

" हा। जब कोई बात समझ न आए तो अपनी बडी बहिन रोहिणी अथवा मेरे पास चली आना। हम यथाशक्ति तुम्हारी समस्या को सुलझा देंगे।"

दुर्गा सुधा से अधिक योग्य सिद्ध हुई और उसकी योग्यता में ख्याति देने वाली रोहिणी थी। उसने अपने पति की निर्धनता के काल में बहुत ही चतुराई से अपने घर का काम चलाया था और अपनी थोड़ी-सी आय मे से अपने छोटे बहिन-भाइयों की भी सहायता की थी।

पहले ही मास में वेतन आने पर दुर्गा ने अपनी बहिन से राय कर बजट बनाया। मकान तथा बिजली का किराया तो कार्यालय में ही कट गया था। शेष पैंसठ रुपये लेकर काहन घर पहुचा। दिल्ली अभी एक सस्ता नगर था। बीस रुपये रोटी, बीस रुपये कपडा। पाच पाकेट-खर्चा और शेष बीस रुपये सुख-दुःख के समय व्यय करने के लिए। इस प्रकार वेतन को तीन मुख्य आवश्यकताओं मे विभक्त किया तो काहन ने पूछ लिया, "और खेल-तमाशें के लिए तथा तुम्हारे क्रीम-पाउडर के लिए ?"

"देखिए जी ! जब आपका वेतन बढ़ेगा तो उस वृद्धि को खर्च मे सम्मिलित करने पर विचार कर लेगे। भोजन, वस्त्र, मकान तो अनिवार्य है।"

"और तेल, कघी, पाउडर, क्रीम ?"

"यह सब हो जाएगा। इसको मुझपर छोडिए।"

दो वर्ष तक क्रीम के स्थान आटे का बटना, बालो को लगाने के लिए नारियल का तेल। शृगार में केवल माथे पर बिन्दी और माग में सिन्दूर के लिए दरीबे से दो पैसे प्रतिमास की रोली से काम चलता रहा। साबुन मे 'सनलाइट सोप' और कपड़े की धुलाई घर पर ही होती थी।

घर मे काहन को, पत्नी का प्रसन्नवदन और घर की सफाई और सजावट मे उसका लगा रहना देख, सुख और शान्ति मिलती थी। परिणाम यह होने लगा कि काहन ने दफ्तर की परीक्षाओं की तैयारी की और प्रथम परीक्षा पहली पत्नी के मरने के दो वर्ष पश्चात् पास कर ली। उसको एकदम पचास रुपये उन्नति मिल गई। अब घर के बजट मे परिवर्तन हुआ। दुर्गा ने देखा कि उसका पति दफ्तर के खर्चे देकर घर एक सौ बीस रुपये लाया। उसने भोजन पर पैंतीस रुपये कर दिए। कपड़ो पर पच्चीस रुपये, जमा तीस रुपये। पांच रुपये महीने में दान-दक्षिणा। पाच रुपये मनोरंजन, पांच रुपये चौका-बासन वाली के लिए और पांच रुपये धोबी के लिए। यह बजट बन गया।

दो वर्ष और निकल गए और काहन ने इस समय मे टाइप तथा शार्टहैंड सीख लिया। इसकी परीक्षा दी और उसका वेतन अढाई सौ रुपया हो गया। अब बजट में और उन्नति हुई। क्वार्टर बड़ा मिल गया। उसका तीस रुपया भाड़ा था और बिजली-पानी का दस रुपये व्यय होता था। शेष का बजट बन गया। भोजन साठ रुपये, वस्त्रादिक चालीस रुपये, सुरक्षा कोष साठ, जेबखर्च दस रुपये, दान-

दक्षिणा दस रुपये, धोबी पांच, चौका-बासन पांच और मनोरजन दस रुपये।

इस समय दुर्गा की प्रथम सन्तान हो गई। घर में उत्सव मनाया और अपने सुरक्षित धन मे से घर के एक सौ से ऊपर सदस्यो को बुलाकर खाना-पीना कराया गया।

नियमित कार्य की ओर दुर्गा के धैर्य और सन्तोष का ही यह परिणाम था कि काहन को अपने परिवार मे मान का स्थान मिला। इस समय युद्ध आरम्भ हो गया था और भारत के लोग अपनी सेवाएं युद्ध-कार्य के लिए देने लगे। काहन ने दुर्गा से पूछा। उसने स्वीकार किया और काहन अपनी सेवाए युद्ध-कार्य के लिए दे आया। काहन को डैपुटेशन पर सेना-विभाग में भेज दिया गया और उसका वेतन पांच सौ रुपया हो गया। उसे विदेश भेजा गया और रुपया घर मे जमा होने लगा। इस समय काहन के दूसरी सन्तान हो चुकी थी।

जब काहन १९४५ में युद्ध से लौटा तो इसको खाद्य विभाग के सदस्य का पर्सनल असिस्टेंट का काम मिल गया। बस, फिर क्या था! घर पर रुपया बरसने लगा। स्वराज्य होने तक काहन एक धनीमानी व्यक्ति बन गया था। इसने नई दिल्ली में दो मकान खरीद लिए थे।

पाकिस्तान बनने से और राष्ट्रीय सरकार की उद्योग-विस्तार की नीति से नगर बड़े-बड़े बनने लगे और काहन ने हिस्से खरीदने और बेचने का काम आरम्भ कर दिया। जायदाद खरीदने मे वह अपनी आय लगाने लगा। सन पचपन में वह अपने पहले स्थान से पैंशन लेकर पुनः सरकारी काम में ही नौकर हो गया और सन् अट्ठावन मे उस काम को भी छोड़कर वह अपनी सम्पत्ति की आय और हिस्सों की बिक्री की आय से सुख और शान्ति का जीवन व्यतीत करने लगा।

काहन के सुधा से लड़के विश्वम्भर के मन मे यह बात स्पष्ट थी कि उसकी मां सौतेली है। इससे बचपन से ही वह स्वतन्त्र रहने की प्रवृत्ति बना बैठा था। उसने सन् १९५४ मे बी० ए० पास किया परन्तु विद्यार्थी-जीवन में ही उसने शार्ट-हैंड-टाईपिंग को आरम्भ कर लिया था और पास करते ही वह विदेश विभाग में अढाई सौ मासिक पर नौकर हो गया। सन् सत्तावन में वह सवा तीन सौ रुपये वेतन पाता था, जब उसका सम्पर्क रूपकृष्ण की लडकी सोमारानी से बना। वह नौवी श्रेणी मे दूसरी बार अनुत्तीर्ण हुई थी और अपनी सहेली कीर्ति के घर बैठी रो रही थी।

औरत रोती हुई सदा से अधिक सुन्दर हो उठती है। यह सौन्दर्य था अथवा उसके अनुत्तीर्ण होने से सहानुभूति थी, विश्वम्भर इसकी ओर आकर्षित हो उठा। उसी दिन वह उसको और कीर्ति को बाजार ले गया और जहा कीर्ति को पास होने पर सैर कराता रहा, सिनेमा दिखाता रहा, वहा सोमारानी को उसके अनुत्तीर्ण होने पर सात्वना देने के लिए सिनेमा दिखाता रहा।

इसके पश्चात् दोनो में मेल-जोल बढता गया और तब वे अकेले भी घूमने जाने लगे। इन्ही दिनों में सोमारानी ने उससे विवाह की इच्छा प्रकट की और इस विवाह मे कठिनाइयों पर बातचीत होने लगी।

सोमा का कहना था, "आप बडो की बात छोड़िए। इनसे हम पीछे निपट लेगे। पहले आप बताइए।"

विश्वम्भर के मुख से अनायास निकल गया, "सोमा! मैं तो तुमको बहुत पसन्द करता हू परन्तु यह बात असम्भव मानता हू।"

"क्या असम्भव है इसमें ?"

"हमारा सम्बन्ध इतना समीप का है कि घर मे कोई भी पसन्द नही करेगा।"

"हम विवाह कर लेगे और पीछे सबको स्वीकार करना पड़ेगा।"

एक बार मानकर कि वह उसको पसन्द करता है, विश्वम्भर पीछे नहीं हो सका। इस कारण योजनाएं बनने लगी। प्रत्येक योजना को विश्वम्भर कठिन और कार्य में लाने के अयोग्य बता, टाल देता था। इसपर भी सोमा धीरे-धीरे उसपर अपना प्रभाव बढ़ाती जाती थी। कभी विश्वम्भर घर पर अकेला होता और सोमा वहां पहुच जाती तो वह उससे प्रेम किए जाने की मांग करने लगती। ऐसे अवसरों पर विश्वम्भर भारी मुसीबत में फस जाता। बहुत कठिनाई से ही वह उसको टाल सकता। एक दिन तो सोमा उसपर विजय पाने के समीप ही थी कि कीर्ति की छोटी बहिन शुचि घर में आ गई। सोमा और विश्वम्भर आलिंगन में थे। जल्दी-जल्दी मे वे पृथक् हुए परन्तु शुचि ने उनको देख ही लिया। उसने पूछ लिया, "भैया! यह क्या कर रहे थे ?"

"यह मुझसे मेरी कलम छीन रही थी।" विश्वम्भर ने तुरन्त बात बनाते हुए कहा, "और मै दे नहीं रहा था। इससे छीना-झपटी होने लगी।"

'तो भैया दे दो न ? यह हमारी बहिन ही तो है।"

"ओह हा ! यह तो मुझको स्मरण ही नही रहा था। अच्छा सोमा, यह लो।" उसने जेब से कलम निकाल उसे देते हुए कहा, "पर याद रखो। यदि तुम इस वर्ष भी पास नही हुई तो कलम वापस ले लूगा।"

इस घटना ने विश्वम्भर को सोए हुए से जगा दिया। वह समझ गया कि शुचि जैसी बच्ची भी समझती है कि यह बहिन है तो इससे विवाह असम्भव है। अतः वह अपने सम्बन्धो से वापस होने का विचार करने लगा, परन्तु सोमा अपनी योजनाओं को पूर्ण करने का यत्न करने लगी।

शुचि ने भैया विश्वम्भर और सोमा बहिन मे कलम पर हुई कुश्ती की सूचना अपनी बहिनों और मा को बता दी। दुर्गा को इससे चिन्ता लगने लगी। उसने इस सम्बन्ध की भयकर सीमा तक पहुचने से पहले ही एक अपनी योजना चला दी। उसके मायके मे एक अति सुन्दर लडकी थी। उसने उसको अपने घर बुलाना आरम्भ कर दिया। लड़की थी दुर्गा के मामा की पोती। बहुत सुन्दर, और इस समय बी० ए० मे पढती थी। नाम था करुणा। करुणा की मा विधवा थी और यह मां की एक ही लड़की थी। विश्वम्भर ने इस लडकी को देखा तो उसपर मोहित हो गया। दोनों में बातचीत हुई। यह निश्चय हो गया कि वे दोनो विवाह करेंगे। करुणा का विचार था कि बी० ए० पास करने के पश्चात् विवाह की बात करेंगे। परन्तु विश्वम्भर सोमा के दबाव के कारण शीघ्रातिशीघ्र विवाह कर लेना चाहता था। आखिर एक दिन उसने करुणा को पूर्ण बात बता दी।

करुणा को कालिज से दो बजे छुट्टी होती थी। विश्वम्भर को पता चला तो वह कालेज के द्वार पर जा पहुचा। करुणा ने पूछा, "क्या बात है ?"

"एक आवश्यक काम है। चलो, कही बैठकर बात करेंगे।" दोनों टैक्सी में सवार हो नई दिल्ली मे वेंगर पर जा पहुचे। वहां बैठ विश्वम्भर ने सोमा के पूर्ण प्रयत्न की कथा सुना दी। इसके साथ ही कह दिया, "यदि तुम्हारा और मेरा विवाह न हुआ तो वह कोई झगडा खडा कर देगी। मुझको किसी भी प्रकार बदनाम कर सकती है।"

करुणा इस प्रस्ताव को सुन गम्भीर हो गई और बहुत देर तक चुप बैठी विचार करती रही, दोनों चुपचाप बैठे चाय पीते रहे। एकाएक करुणा ने कहा, "मैं समझती हूं कि आप मेरी मां के पास चलिए। उनकी राय के बिना बात नहीं करूगी।"

"तो चलो।"

दोनो चाय लेने के पश्चात् करुणा की मां के घर पहुच गए। विश्वम्भर ने जब अपनी कठिनाई का वर्णन किया तो करुणा की मा ने कह दिया, "तुम्हारी मां ने मुझको बताया है कि उसको तुम दोनों के विवाह से बहुत प्रसन्नता होगी।"

"यह तो मुझको भी समझ आ रहा है। परन्तु मै तो आज ही विवाह करने की बात कर रहा हू।"

"आज तो बहुत कठिन है। तीन दिन मे प्रबन्ध हो जाएगा। पांच साथियों के और घर के पुरोहित के सामने विधिवत् विवाह होगा। उन पाच साथियों मे तुम्हारी मा भी होगी।"

"माता जी! ठीक है परन्तु शर्त यह है कि चुपचाप हो। मै सोमा को पता होने देना नही चाहता।"

"ऐसा भी हो सकता है।"

"परन्तु मेरी मा को पता चला तो पिता जी को भी पता चल जाएगा। बहिनों को पता चलेगा और फिर हल्ला हो जाएगा। वह झगडा करेगी और कई प्रकार की बाधाएं पड जाएंगी।"

करुणा की मां को इसपर कुछ सन्देह हुआ। इस कारण उसने पूछ लिया, "बेटा, सत्य बताना, तुम्हारा उससे कैसा और कितना सम्बन्ध बन चुका है?"

"मां जी! अपनी सौगन्ध खाकर कहता हूं कि मौखिक कथन से अधिक कोई सम्बन्ध नही है। परन्तु किसी समय भी अवसर मिला तो वह मुझको परास्त कर देगी। मैं उससे बचना चाहता हू।"

"परन्तु विवाह के पीछे क्या होगा?"

"मैं करुणा के पीछे अपने को सुरक्षित अनुभव करूंगा।"

करुणा की मा को बात समझ नही आई। परन्तु जब करुणा ने कहा, "मां! विवाह में क्या हानि है?"

"देख लो करुणा! मैं बहुत पढी-लिखी नहीं हूं। तुम अपना भला-बुरा विचार कर लो।"

"मां, ठीक है। विवाह कर दो।"

इसके पश्चात् विश्वम्भर ने योजना बना दी, "माता जी! परसों सायं छः बजे से नौ बजे तक विवाह होगा। पीछे भोजन, तदुपरान्त मैं और करुणा पन्द्रह

दिन के लिए बम्बई भ्रमण के लिए चले जाएगे। तब तक सोमा का झगडा शान्त हो जाएगा और हम दिल्ली लौट आएगे। पीछे आप मेरी माता जी को बता दीजिए। मै लौटकर सबको एक आलीशान दावत देकर शान्त कर दूगा।"

करुणा की मा न मानती, परन्तु करुणा कदाचित् अपनी अन्तरात्मा मे विश्वम्भर से विवाह के लिए और भी अधिक उत्सुक थी। उसने मा को सांत्वना देते हुए कह दिया, "मा! चिन्ता न करो। सब ठीक हो जाएगा।"

२

इसी दिन विश्वम्भर घर लौटा तो सोमा उसके कमरे मे बैठी, उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसे आया देख, वह लपककर उससे लिपट जाने वाली थी कि विश्वम्भर ने उसे सकेत कर बताया, "बाहर पिता जी खड़े हैं। वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

सोमा रुकी और कहने लगी, "मुझसे यह प्रतीक्षा अब सहन नही हो सकती।"

"अच्छा ठहरो। मै पिता जी से बात कर आता हू और तुमसे एक योजना बना लेता हूं। यह अंतिम होगी।"

विश्वम्भर ने दफ्तर के कपड़े उतारे। बाज़ार जाने के कपड़े पहने और बाहर चला गया। वहा पर कुछ काम तो था नही। वैसे ही पांच मिनट बैठ, उसने पिता जी को बताया, "मै सिनेमा देखने जा रहा हूं। तीन बजे के शो के लिए टिकट खरीदे हुए हैं।"

"कितने है?"

"दो है।"

"कौन-कौन जा रहा है?"

"मैं और सोमा।"

"यह सोमा से तुम्हारे सम्बन्ध बढते जाते हैं!"

"नही पिता जी! अब घट रहे हैं।"

काहन हंस पड़ा, "भला कैसे?"

"मुझको करुणा की मां ने कहा है कि मेरा उससे विवाह तब होगा, जब इस लड़की से मेल-जोल छोड़ दूं—इसलिए मैं उसको छोड़ रहा हूं। परन्तु

पिता जी ! ये टिकट तो पाच दिन पहले के लिए हुए है। वह जाने के लिए आई भी हुई है।"

"ठीक। कहीं रूप को पता चला कि तुम उसपर कुदृष्टि रखते हो तो वह तो हत्या कर देगा।"

"पर पिता जी ! मै तो उसको बहिन समझता हूं। साथ ही करुणा की उपेक्षा कर कौन उसे पसन्द करेगा !"

इस प्रकार अपने पिता को शांत कर, वह अपने कमरे में चला गया। अपना पर्स ले, वह सोमा को ले, घर से निकल गया। सिनेमा जाने के स्थान, वह उसको लेकर नई दिल्ली रेल के आफिस में जा पहुचा और पता करने लगा कि तीसरे दिन बम्बई जाने के लिए किस गाडी में जगह मिल सकती है। देहरादून मे दो नीचे के बर्थ फर्स्ट क्लास मे मिल गए। उसने फार्म भर दिया—'विश्वम्भरनाथ विद फैमिली।'

टिकट खरीदे गए और बर्थ सुरक्षित कर वे लौटे तो सोमा ने पूछ लिया, "इसका क्या मतलब है ?"

"मतलब यह है कि विश्वम्भर अपनी पत्नी के साथ हनीमून के लिए बम्बई जा रहा है। उसने दफ्तर से पन्द्रह दिन की छुट्टी ले ली है।"

"पर विवाह ?"

"वह बम्बई में चलकर ग्रीन होटल में होगा। मै कल टेलीफोन से वहां एक कमरा सुरक्षित कर रहा हूं।"

"तो मै तैयारी करू ?"

"बिलकुल नहीं। किसीको बताना नहीं। मुझको विदित हुआ है कि मेरे माता-पिता भी इस विवाह को पसन्द नहीं करेंगे।"

"तो कैसे होगा यह ?"

"तुम अपनी कोठी मे रहना। मैं तुमको रात के नौ बजे लेकर सिनेमा देखने जाऊंगा और हम बम्बई पहुच जाएगे।"

"तो कपडे ?"

"एक सूटकेस तैयार रखना। वे हम चोरी-चोरी निकालकर ले जाएंगे।"

सोमा बहुत प्रसन्न थी।

निश्चित रात सोमा करवटें लेती रही थी। अगले दिन तक भी विश्वम्भर

घर नही लौटा था और इसके घर का कोई प्राणी नही जानता था कि वह रात कहां रहा है।

इसपर तो सोमा को बहुत ही चिन्ता लगी। वह टेलीफोन कर अपने कमरे में पहुंची और कपडे पहन मां के कमरे मे चली गई। मा के कमरे का दरवाज़ा खटखटाया तो वह बाहर निकल आई। भूषण भी वही था। सोमा ने विश्वम्भर के विषय में बताया तो मां ने पूछ लिया, "तो तुमने टेलीफोन किया है ?"

"हा।"

"कार्यालय खुला था ?"

"हां मां ! प्रबोध वहा बैठा है।"

प्रबोध के वहा होने की बात सुनकर भूषण भी कमरे से निकल आया और कार्यालय को चल पड़ा। सुभद्रा भी उसके पीछे जाना चाहती थी। इससे उसने लड़की से पूछ लिया, "अब क्या करोगी ?"

"एक दस रुपये का नोट दे दो। मै टैक्सी कर उसकी मां से पता पूछने जाना चाहती हू।"

"मेरे पलग पर तकिए के नीचे रुपये रखे हैं। उसमे से ले लो।"

यह कह सुभद्रा तो भूषण के पीछे-पीछे कार्यालय की ओर चल दी और सोमा मां के कमरे मे गई। उसके तकिये के नीचे कई हजार रुपया रखा था। उसमे से बिना गिने उसने एक बण्डल उठा लिया। उसे अपने पर्स मे रखा और कोठी से निकल गई। मेडन होटल के समीप से टैक्सी कर वह विश्वम्भर की मा के घर जा पहुची। उनकी कोठी मे करुणा की मां आई हुई थी। उसने पिछली रात करुणा और विश्वम्भर के विवाह की बात बता इनके बम्बई चले जाने की सूचना दे दी थी। काहन और दुर्गा अभी इस सूचना पर विस्मय ही कर रहे थे कि सोमा वहां जा पहुंची।

ये लोग कोठी के ड्राइगं रूम में बैठे हुए थे कि सोमा दुर्गा को वहां बैठे देख वहां जा पहुंची। उसने आते ही पूछ लिया, "मौसी जी ! पता चला ?"

"हां, बैठो। विश्वम्भर ने करुणा से विवाह कर लिया है और उसको साथ लेकर हनीमून मनाने बम्बई चला गया है"

"बहुत बेईमान है।"

"कौन ?" काहन ने पूछ लिया।

"आपका लडका !"

"क्या बेईमानी की है उसने ? "

"उसने तो मुझको बम्बई ले जाने का वचन दिया था।"

"किसलिए ?"

"हनीमून मनाने के लिए।"

"पर तुम्हारा उससे विवाह हो चुका है क्या ?"

"हुआ तो नही, पर हम अपना विवाह बम्बई जाकर करने वाले थे।"

"तो अब नही हो सका न ?"

सोमा चुप रही परन्तु उसकी आखे तरल होने लगी थी। इसपर करुणा की मां ने पूछ लिया, "तुम अपने माता-पिता से पूछकर जा रही थीं ?"

सोमा चुप थी। इसपर करुणा की मां ने बताया, "करुणा का विवाह कल रात दस-बारह घर के आदमियो के बीच बैठकर पुरोहित द्वारा हुआ है।"

"सब बदमाशी है।" आखिर सोमा ने कहा और वह उठ खडी हुई।

परन्तु दुर्गा ने उसकी बाह पकड़कर अपने पास बैठा लिया, "देखो सोमा ! विश्वम्भर का तो विवाह हो गया। अब तुम अपनी मां को कहो कि तुम्हारा भी विवाह कर दे।"

"मै पहले विश्वम्भर से एक बात कर लू फिर विवाह कर लूगी।"

"एक क्या बीस बातें करती रहना, परन्तु विश्वम्भर के पिता कह रहे हैं कि विवाह तुरन्त हो जाना चाहिए।"

"कैसे करेंगे ?"

"अभी तुम्हारी मां को टेलीफोन पर बुला रही हूं। तुम यहीं बैठो। बात तुम्हारे सामने ही निश्चय हो जाए तो ठीक है।"

करुणा की मा ने रात विवाह के अवसर पर मिठाई बांटी थी। उसमें से वह एक थाल मे सजाकर लाई थी। वह मोटर में ही रखी थी। वह बाहर गई और ड्राइवर से उठवाकर उसे भीतर ले आई।

इस समय तक टेलीफोन पर सुभद्रा आ चुकी थी और काहन उसको बता रहा था, "देखो सुभद्रा ! तुमको एक समाचार बता रहा हूं। कदाचित् तुमको इसके जानने में रुचि होगी। मेरे लड़के विश्वम्भर ने रात बिना हमको बताए एक लड़की से विवाह कर लिया है। विवाह विधिवत् हुआ है और लड़की की मा अभी

विश्वम्भर और लड़की के हस्ताक्षरो की एक चिट्ठी लेकर आई है। उस चिट्ठी मे उन्होंने लिखा है:

" 'परम पूजनीय पिता जी! हम दोनो ने रात कई साथियों के सामने पडित जी से विवाह करवा लिया है। विवाह के पश्चात् ही हम बम्बई हनीमून मनाने जा रहे हैं। हमको पूर्ण विश्वास है कि आपको इस बात से प्रसन्नता होगी।

" 'आपको इसकी सूचना नही दी गई। इसमें कारण यह था कि हमको विवाह तुरन्त करना था और आपको सूचना देने से आप हल्ला कर देते और विवाह मे विघ्न पड सकता था। दादा राजकुमार विवाह पर उपस्थित था।

" 'हम पन्द्रह दिन के पश्चात् उपस्थित होगे और आपके चरण-स्पर्श कर आपसे आशीर्वाद प्राप्त करेगे।'

" यह पत्र है और लड़की की मां मिठाई लिए यहा बैठी है। "

"तो फिर मैं क्या करू ?" सुभद्रा ने पूछ लिया।

"आज रविवार है और तुम सब बच्चों तथा राम तथा बहिन रोहिणी को लेकर यहां आ जाओ। मै रूपकृष्ण को भी बुला रहा हू। मै एक आदमी राजकुमार और उसकी मा को भी बुलाने भेज रहा हू। तुम सब लोग मध्याह्न का भोजन यहा करना और तब हम विचार करेगे कि विश्वम्भर के आने पर कैसा और कितना बड़ा जशन करें।"

"मैं तो नही आ रही। प्रबोध के बाबा को यहा बुला देती हू। आप उनको अपना निमत्रण दे दीजिएगा।"

"पर तुम क्यों नही आ रही।"

"बस, नहीं आ रही।"

"सोमा यहां बैठी है। उसके विषय में भी विचार करना है।"

"क्या विचार करना है ?"

"एक लड़का हमने तजवीज़ किया है। उसको तुम्हें दिखाऊगा।"

"ठहरिए। प्रबोध के बाबा आ रहे हैं।"

"काहन चोगे के मुख पर हाथ रखकर अपनी पत्नी से कहने लगा, 'राम जी टेलीफोन पर आ रहे हैं।'

"परन्तु !" सोमा ने रोष में कह दिया, "आपने मेरे विषय में क्यों कहा

है ?"

"तुम्हारे विवाह के विषय मे बात करने के लिए ।"

"बात करने से पहले लडका मुझको दिखाना होगा ।"

"दिखा देगे । तुम उसको पसन्द कर लोगी ।"

इस समय राम आ गया। काहन ने चोगे के मुख से हाथ उठाकर कहा, "हेलो ! चाचा जी ! हा। बात यह है कि कल रात विश्वम्भर ने विवाह कर लिया है । उसके विषय मे कुछ विचार करना है । आप यहां मध्याह्न का भोजन लेने आ जाइए ।"

"कहा है विश्वम्भर ?"

"बम्बई चला गया है ।"

"बहुत चतुर निकला !"

"जी ! मैंने कहा था न कि उसने स्वयं ही पढ़ाई की है । नौकरी ढूंढी है और तरक्की कर रहा है। अब उसने विवाह भी हमको बताए बिना कर लिया है ।"

"अच्छा भाई, मेरी बधाई स्वीकार करो ।"

"आप आ जाइए । कुछ बेटी सोमा के लिए भी विचार करना है ।"

"कहा है वह ?"

"यहा बैठी है । उसकी मां को भी लेते आइए ।"

"यह सामने बैठी है । क्यों सुभद्रा, चलोगी काहन के घर ?"

"काहन जी सोमा के विवाह के विषय मे कह रहे हैं । इससे चलना ही होगा ।"

"तो ठीक है । हम आएंगे । प्रबोध भी आएगा ।"

"आने दो । रूप को तथा राजकुमार को भी बुला रहा हूं । हमारे घर वालों में से वह ही विवाह पर उपस्थित था ।"

विश्वम्भर के छोटे भाई को मोटर से रूप और राजेश्वरी के घर भेज दिया। रूप आया तो साथ सुन्दरी भी आ गई । इस प्रकार एक विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों का समारोह हो गया ।

भूषण को किसीने बुलाया नहीं और अपने-आप वह आया नहीं। परिवार के अन्य सदस्यों निरञ्जनदेव इत्यादि को भी नही बुलाया गया ।

काहन के छहों बच्चों, रूप, सुन्दरी, राम और रोहिणी, सुभद्रा, सोमा, दिति तथा प्रबोध, राजकुमार, राजेश्वरी और राजकुमार की पत्नी सन्तोष सब

उपस्थित थे। भोजन हुआ और फिर सब बड़े बैठ गए। बच्चों को छुट्टी दे दी गई। वे भीतर के कमरों मे जा खेलने लगे।

बात काहन ने आरम्भ की। उसने करुणा का परिचय दिया और बताया कि उसकी मां प्रातः विश्वम्भर और करुणा का पत्र लेकर आई थी। उसने वह पत्र पढ़कर सुना दिया। इसके साथ उसने बताया, "सोमारानी ने जब यह पत्र सुना तो बोली कि विश्वम्भर बहुत बडा बेईमान है। उसने तो इसके साथ भाग जाने का वचन दिया हुआ था। साथ ही यह रो रही थी। मैंने इसको कहा है कि यदि यह पसन्द करे तो इसका विवाह कर दिया जाए। यह तैयार है यदि लडका इसको पसन्द हो तो ?"

सुभद्रा ने सोमा से पूछ लिया, "क्यों सोमा, क्या चाहती हो ?"

"विवाह तो मैं करूगी ही। मेरे आंसू इस कारण निकल पड़े थे कि मैंने विश्वम्भर को विवाह के लिए बहुत यत्न से राजी किया था, परन्तु वह बेईमान निकला। बाते मुझसे करता रहा और विवाह का प्रबन्ध करुणा की मां से करता रहा।"

"पर सोमा !" राजकुमार ने पूछ लिया, "तुम तो विश्वम्भर की वहिन लगती हो। इस घर मे बच्चे भी जानते हैं कि तुम उसकी बहिन हो। फिर तुमने विवाह के लिए यत्न ही क्यों किया ?"

"आज संसार में कोई भी व्यक्ति नही जो इस प्रकार की व्यर्थ की बातों को माने। एक मां के पेट से पैदा हुए ही भाई-बहिन लगते हैं।"

"देखो सोमा !" राजकुमार ने कह दिया, "विवाह की रस्म किसलिए मनाई जाती है, जानती हो ?"

"यह भी व्यर्थ है। यह उन औरतों की रक्षा के लिए बनाई गई है जो स्वयं कुछ भी कमाई नहीं कर सकतीं।"

"और तुम बहुत बड़ा वेतन पाने की क्षमता रखती हो ?"

"मुझको नौकरी की आवश्यकता नहीं। यह निर्धन माता-पिता की लड़कियों को करनी पडती है। मुझको समाज के कानून के संरक्षण की आवश्यकता नहीं। मेरा संरक्षण मेरा धन करेगा।"

"क्यों चाची !" राजकुमार ने सुभद्रा से पूछ लिया, "कितना कुछ सोमा को देने वाली हो ?"

"प्रबोध पूर्ण सम्पत्ति के बटवारे के लिए कह रहा है। मोटे तौर पर छः से दस लाख इसके हिस्से का बनेगा।"

"तब ठीक है।" काहन ने कह दिया, "मेरी मौसी का लड़का है। नाम सन्तराम है। वह इससे विवाह कर लेगा। क्यो सोमारानी! बुलाऊ उसको?"

"सन्तराम पर तो मै थूकूगी भी नही।"

"ओह! क्या खराबी देखी है तुमने उसमें?" काहन का प्रश्न था।

"वह दुकानदार है। पढा-लिखा नही। सूरत-शक्ल भी मामूली है।"

"और तुम कितनी पढी हो?"

"मेरे पास रुपया है, उसके पास क्या है?"

बात राम ने समाप्त कर दी। उसने कहा, "काहन भैया! इस लडकी से बात करनी व्यर्थ है। इसके सिर पर रुपया सवार है। उसके बल पर यह भी देवी भवानी बन किसीके सिर पर चढेगी।"

सोमा नाराज हो, उठकर जाने लगी तो सुभद्रा ने उसकी बांह पकड ली। उसने कहा, "बैठो।"

सोमा बैठी तो सुभद्रा ने कहा, "पर्स मे से रुपया निकालो, जो मेरे तकिये के नीचे से उठा लाई हो।"

"पर मा तुमने स्वयं ही तो कहा था। ले लो।"

"दस रुपये लेने को कहा था, न कि पांच सौ रुपये।"

प्रबोध हंस पडा। हंसकर बोला, "मौसा जी! यदि मा की सम्पत्ति में से इसे कुछ न मिला तो फिर यह सन्तराम को भी स्वीकार कर लेगी।"

सब हसने लगे।

अब रूप बोला, "आज तो प्रबोध ने भारी अकल की बात की है। प्रबोध! कहां से सीखकर आए हो?"

"बड़ी मा ने बताया है कि मेरी मा का दिमाग भी रुपये ने खराब कर रखा है।"

सुभद्रा ने क्रोध से पूछ लिया, "और तुम्हारे धन ने तुम्हारे मस्तिष्क को खराब क्यों नही किया?"

३

प्रबोध ने हठ किया और राम ने मध्यस्थ बन सुभद्रा की सम्पत्ति का बटवारा कर दिया। उसने सात भाग किए। उनमे दो भाग सुभद्रा के, दो भाग प्रबोध के, एक-एक भाग अन्य तीन बच्चो का।

"प्रबोध के दो भाग क्यों किए हैं?"

"वह काम करता था। इस कारण।"

"और लड़कियों का एक-एक भाग क्यों?"

"वे घर मे काम नही करती।"

"मेरे दो भाग किसलिए है?"

"तुम भी काम करती हो। तुम्हारे भूषण जी भी काम करते हैं।"

"और भूषण जी का भाग क्यों नही?"

"इसलिए कि वह घर का प्राणी नही है।"

"हमको यह फैसला मान्य नही।"

"तो न मानो।" इतना कह राम जाने लगा तो सुभद्रा ने कहा, "भापा! ठहरो! मै यह कह रही हू कि कमल इत्यादि, जिनको तुमने एक-एक भाग दिया है, वे मानेंगे नही।"

"वे मान गए है।"

"सोमा भी?"

"हां।"

विवश सुभद्रा को मानना पड़ा। जो ठेके के काम चल रहे थे वे दो भागों में बांट दिए गए। शेष सम्पत्ति, स्थान और नगदी तीन भागों में बांट दी गई। सोमा इत्यादि को साढ़े सात-सात लाख मिल गया।

नकद कम्पनियो के हिस्सों में और दिल्ली मे मकानों के रूप में साढ़े सात लाख रुपया सोमा को मिला तो वह स्कूल जाने का बहाना भी छोड़ बैठी। इस समय सुभद्रा और भूषण कोठी छोड़, एक पृथक् बगला ले उसमें रहने लगे थे। प्रबोध, सोमारानी और दिति अभी भी अपने बाबा रामकुमार के पास रहते थे। रोहिणी सोमा के लिए पति की खोज कर रही थी। कई लड़के मिल रहे थे, परन्तु अभी निर्वाचन नही किया गया था कि एक दिन सोमा एक युवक को साथ लिए

हुए अपने बाबा के पास पहुंची और कहने लगी, "भापा ! ये है रुद्रमणी। ये वाराणसी के रहने वाले है और मुझको विवाह के लिए कह रहे है।"

राम भौचक्का हो मुख देखता रह गया। इसपर उस युवक ने पूछ लिया, "बाबा, क्या देख रहे है मेरे मुख पर ?"

"यह देख रहा हू कि तुम किसके पुत्र हो।"

"और यह मेरे मुख पर लिखा है ?"

"उसका नाम-धाम तो नही, परन्तु उसका व्यवसाय और स्वभाव तो लिखा ही हुआ है।"

"सत्य ?"

"हां।"

"तो बताओ, क्या लिखा हुआ पढा है आपने ?"

"कुछ उल्लेखनीय नही है। मैने तुमको देख लिया है। अब तुम जा सकते हो। कल यहां आकर तुम इसी लड़की से पूछ जाना कि तुम्हारा इससे विवाह होगा अथवा नही।"

"बाबा, विवाह तो होगा। अपनी इच्छा से कर दो अथवा मैं इसका अपहरण करूंगा।"

"तो फिर यहा किसलिए आए हो ? जो इच्छा है कर लो।"

"चलो सोमा !" रुद्रमणी ने कहा, "चलो, चलो।"

"मैं अपने वस्त्र तो ले लू।"

"क्या करोगी लेकर। बनारस मे बहुत सस्ते मिल जाएगे।"

"अच्छा भापा ! नमस्कार।" इतना कह सोमा कमरे से और फिर कोठी से निकल गई। राम नही समझ सका कि क्या करे। उसको विचार आया कि रूपकृष्ण को सूचना तो दे दो। उसने टेलीफोन कर दिया। रूप को जब राम ने पूर्ण बात बताई तो रूप ने कह दिया, "पिता जी ! चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। रुपये के लोभ मे ऐसे ही व्यक्ति विवाह के लिए आएगे। भापा ! चिन्ता न करो। इस लड़की से यही कुछ आशा की जा सकती है।"

"हा, वह बालिग है। इस कारण मैं उसको रोक नहीं सका।"

"ठीक है भापा। यह तो आरम्भ ही है। अभी और आगे-आगे देखेंगे।"

राजकुमार की विश्वम्भरदयाल से मित्रता थी। दोनों सरकार के विदेश

मत्रालय में काम करते थे और दोनों के स्वभाव भी बहुत सीमा तक मिलते थे। राजकुमार ने विश्वम्भर की, नौकरी पाने मे, बहुत सहायता भी की थी।

जब विश्वम्भर सोमा के साथ फिर-घूम रहा था तो उसने अपने मन की अवस्था राजकुमार से वर्णन की थी। उसको सुन राजकुमार ने उसको कहा था कि वह उससे सम्बन्ध त्याग दे।

"भैया। मैं यह समझता हू कि इस लडकी से विवाह शुभ नही होगा, परन्तु जब वह सामने आती है तो मै उसको मना नही कर सकता अत· मै मन मे यह धारणा बनाता रहा हू कि वह मेरी बहिन है और बहिन-भाई मे विवाह धर्मानुकूल नही।

"मै कभी उसको भी कहता हू, परन्तु वह तो धर्म का नाम सुन मेरी हंसी उड़ाने लगती है। वह पूछती है, 'वह क्या होता है ?'

"मैं उसको समझाने का यत्न करता हू कि समाज ने यह व्यवस्था दे रखी है कि हम बहिन-भाई मे विवाह नही हो सकता।

"'समाज तो मूर्खों का है। इसी कारण तो अब यह काम राजनियम के अधीन चला गया है।' सोमा कहती रहती है।

"मैं बहुत समझाता हूँ परन्तु वह मानती नही।"

"तुम उसको दुत्कार क्यों नहीं देते ?"

"बताया तो है। कुछ ऐसी बात होती है कि मैं उसकी युक्तियों का उत्तर नहीं दे सकता।"

राजकुमार तो यह समझ बैठा था कि विश्वम्भर और सोमारानी में विवाह होगा। कदाचित् उनका सम्बन्ध बन चुका है। इससे वह अपने-आप उससे इस विषय में कभी बात नही करता था। उसके मन मे यह बात बैठ गई थी कि वह परास्त हो जाता है और उसके मन का नियंत्रण उसकी इन्द्रियो पर नही रहता।

परन्तु राजकुमार के विस्मय का ठिकाना न रहा, जब एक दिन मध्याह्नोत्तर चार बजे वह उसके पास आया और कहने लगा, "राज भैया! मेरे विवाह पर चलोगे ?"

"सोमा के साथ ? नही। मै नही जाऊंगा।'

"नहीं भापा ! एक अन्य लडकी है।"

"कोई सोमा की बहिन है ?"

"नही । एक तो वह सोमा से बहुत अधिक सुन्दर है । दूसरे बी० ए० में पढ़ती है । तीसरे माता जी द्वारा निर्वाचित हुई है ।"

"और पिता जी ?"

"वे मेरे कामों में कभी रुचि नहीं लेते ।"

"कब कर रहे हो ?"

"आज रात के सात बजे ।"

"बिना तैयारी के ?"

"चोरी-चोरी कर रहा हूं । लड़की की मां के घर में और उसके दो-चार सम्बन्धियों के सम्मुख । अपनी ओर से केवल तुमको ही ले चलना चाहता हू ।"

"पर यह क्यो ?"

"सोमा और सुभद्रा चाची से डरता हू कि किसी प्रकार का विघ्न डाल देगे । विवाह के तुरन्त पीछे हम, पति-पत्नी, हनीमून के लिए बम्बई चले जाएंगे और अपने माता-पिता को एक पत्र लिख देंगे ।"

"मुझको इस चोरी-चोरी मे कुछ तथ्य प्रतीत नही हुआ ।"

"भैया ! तुम सोमा को नही जानते । वह एक भयकर जीव है । वैसे तो अपनी मा से कहता तो वे भी यही पसन्द करती, परन्तु वे बिना पिता जी को बताए नही रह सकती । पिता जी दूसरे बहिन-भाइयों को बताते । साथ उनकी राम भापा से गहरी छनती है । वे उनको बताए बिना नहीं रहते । बस, हल्ला हो जाता । सोमा विवाह-वेदी पर जा बैठती और सत्याग्रह आरम्भ कर देती । मेरा मन डरता है कि भारी विघ्न पड जाता ।"

राजकुमार मान गया । विश्वम्भर उसको करुणा की मां के घर ले गया । विवाह हुआ और राजकुमार उनको विदा करने रेल के स्टेशन पर गया । वह रात को साढ़े दस बजे अपने घर पहुचा और उसने अपनी मां और पत्नी को विवाह की बात बताई तो वे भी विस्मय करने लगीं ।

राजकुमार का कहना था, "मां, इस सबमें विस्मय का कोई कारण नही । यह आज का युग-धर्म है ।"

"क्या युग-धर्म है राज ?"

"युग-धर्म यह है कि मानव पशुओं का सा व्यवहार करने लगा है । मां ! विश्वम्भर अभी तो पशुपन के मार्ग पर ही है । वह पूर्ण रूप में उस सीमा

तक नही पहुचा ; परन्तु इस नगर में और है जो बिलकुल पशु का सा ही व्यवहार रखते है और उसको सर्वथा स्वाभाविक बात मानते है।"

"नगर की बात क्या कहते हो। घर मे भी ऐसे है। सुभद्रा है। रूप है। निरजन है। और किस-किसका नाम बताऊ।"

"हा! कभी इनका व्यवहार देख तो अपनी मीमांसा पर सन्देह होने लगता है। मैं कभी ऐसा अनुभव करता हू कि मैं एक विशाल सागर में अकेला जीवन-मरण के संघर्ष मे लीन, तैर रहा हूं और मुझको किनारा दिखाई नहीं देता।"

मा हंस पडी। हसते हुए बोली, "तुम अकेले हो सकते हो परन्तु किनारा तो पा चुके हो। तुम्हारी पत्नी है। बच्चा है; फिर मैं भी हूं।"

"तो मां, तुम किनारा हो क्या? तुम औरतों की इस अकेली तरणी मैं ही तो हूं। 'मैं अकेला हूं' ये मेरा अभिप्राय अपने इस छोटे-से घर से ही था।"

"बेटा! परिवार ही किनारा है। यह ही इस भवसागर मे निर्बल मानव का आश्रय है। जो इसपर लग गया, वह अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने के मार्ग पर चल सकता है। यह ठीक है कि यह हमारी यात्रा का अन्त नही, परन्तु यह भी ठीक है कि यह दृढ भूमि है, जिसपर हम मार्ग पर निर्भय होकर चल सकते है।"

राजकुमार मां के इस कथन में बहुत सच्चाई पाता था। राजेश्वरी कुछ काल तक अपने पति की मौसी गौरी की सगत में रही थी। ये वे दिन थे, जब उसका पति भूषण घर छोड सुमित्रा के साथ भाग गया था और वह निराश हो रही थी। गौरी ने उसको मार्ग दिखाया था, और वह उस मार्ग का अनुकरण करती हुई एक ऐसे मार्ग पर चल पड़ी थी, जो दिल्ली के संसार से विलक्षण था। गौरी ने उसको बताया, "भूषण तो उस मिथ्या शिक्षा का शिकार हो रहा है, जो स्कूलों एवं कालेजों में दी जा रही है।"

"तो सब के सब पढ़े-लिखे लोग नास्तिक, अनाचारी और क्रूर हो जाते है?"

"नही, यह बात नहीं। शिक्षा एक शक्ति है जो मनुष्य को एक दिशा में ले जाने वाली है। वर्तमान शिक्षा-पद्धति जड़वाद के आश्रय चलती है। यह इसके ग्रहण करने वालों को जड बनाती रहती है, परन्तु कुछ विद्यार्थी ऐसे भी होते हैं, जो घर पर अथवा मित्रों की संगत में इस शिक्षा के विपरीत दिशा में धकेले जा रहे होते

है। वे शिक्षा के उलटे प्रभाव से कुछ सीमा तक बचते रहते है। दुर्भाग्य से भूषण को घर पर अथवा मित्रो में कोई ऐसा व्यक्ति नही मिला जो उसपर हो रहे कुशिक्षा के प्रभाव को कम कर सकता।"

इस वार्ता के परिणामस्वरूप ही राजेश्वरी ने राजकुमार को स्कूल से उठाकर संस्कृत पढने पर लगा दिया था। एक समय तो राम, रोहिणी इत्यादि भी उसके ऐसा करने को मूर्खता मानते थे, परन्तु जब वह स्वतन्त्र रूप से कार्य करता हुआ तीन सौ रुपया मासिक घर लाने लगा तो सबका सशय निवारण हो गया और उसके साथ परिवार के सदस्य प्रायः सहृदयता का भाव रखने लगे थे। भूषण को छोड़कर प्रायः लोग इसको सुलझे हुए मस्तिष्क का स्वामी मानते थे।

यही कारण था कि विश्वम्भर को पूर्ण परिवार मे वही एक व्यक्ति मिला, जिसको वह अपना विश्वासपात्र समझे।

विश्वम्भर के विवाह के अगले दिन मा ने पूछ लिया, "राज, विश्वम्भर की मां को तो बताना चाहिए कि वह कहा है?"

"करुणा की मां ने वचन दिया कि वह बहुत प्रात.काल काहन भापा के घर जाकर बता आएगी। मै समझता हूं कि अब तक उनको सूचना मिल चुकी होगी।"

राजकुमार का अनुमान ठीक निकला। विश्वम्भर का भाई मोहन अपने पिता की मोटर मे आया और राजकुमार को पिता का निमन्त्रण दे गया। राजेश्वरी ने उससे पूछ लिया, "क्या बात है, मोहन?"

"सुना है, भैया का विवाह हो गया है। उसके सम्बन्ध मे ही पिता जी ने राज दादा को और रूप भापा को बुलाया है?"

"और किसको बुलाया है?"

"भापा राम और मौसी जी को।"

"और हमको नही बुलाया?"

"मा कहती थी कि भैया बम्बई से लौट आए तो आप सबको बुलाएगे।"

राजकुमार काहन के घर से लौटा तो उसने अपनी पत्नी और मां को बताया कि विश्वम्भर के लौटने पर दो बड़े भोज दिए जाएंगे। एक पारिवारिक भोज होगा। वह तो कोठी में होगा। दूसरे में काहन के अपने साथी, विश्वम्भर के मित्र और कार्यालय के लोग आमन्त्रित होगे। यह भोज बेंगर में दिया जाएगा। मुझको

इन भोजो का (खाने मे देने वाली वस्तुओं) का निश्चय करने का प्रबन्ध दिया गया है।"

विश्वम्भर लौटा तो ये दोनो दावते हुईं। राम के कहने पर परिवार के सब सदस्य बुलाए गए। शिवकुमार के लडके निरंजन का परिवार था, बाल-बच्चों को मिलाकर तीस प्राणी थे। शिवकुमार की लडकिया राधा और अनुराधा का परिवार था। वे भी तीस प्राणी के लगभग थे। इसी प्रकार रामकुमार के दूसरे भाई-बहिनों का परिवार था। सब मिल-मिलाकर दो सौ से ऊपर प्राणी इस भोज में सम्मिलित थे।

खूब खाना-पीना हुआ। इस भोज मे सुभद्रा, भूषण और सोमारानी उपस्थित नही थे। राम से सोमा के विषय मे काहन ने पूछा, "भापा, तुम्हारी पोती सोमा-रानी नही आई?"

"उसने आना स्वीकार नही किया। कहती थी कि वह आएगी तो करुणादेवी का जूडा मरोड़े बिना नही रहेगी।"

"तो उसका रोष अभी ठण्डा नही हुआ?"

"वह कुछ बढा ही है।"

"तो ठीक है, वह नही आई और सुभद्रा और भूषण?"

"मैने उनको निमत्रण-पत्र भेजा था। उन्होंने कोई उत्तर नही भेजा। काहन, वे नही आए तो कुछ हानि नही हुई। इस भरे-पूरे परिवार मे तुम समझ लो कि वे अब हमारे संसार में नही है।"

निरजन समीप बैठा था। उसने राम को परिवार पर गर्व करते देख, पूछ लिया, "भापा! रूप की जमानत का, जो उसने दाताराम के लिए दी थी, क्या हुआ है?"

"होना क्या था? दाताराम समय पर कचहरी में उपस्थित नही हो सका और उसकी बीस हज़ार की ज़मानत जब्त हो गई है।"

"है न परिवार की हिमायत करने का मज़ा?"

"इस मज़े की बात तो तुम रूप भापा से पूछ लो। मै तुमको एक बात तुम्हारे पिता शिव दादा की बताता हू। बड़े लाला की सम्पत्ति साठ लाख के लगभग थी और शिव के मन मे पूर्ण सम्पत्ति को हज़म करने का विचार उत्पन्न हो गया। उसने पाच हज़ार खर्च कर लाला जी का झूठा इच्छापत्र तैयार कराया। हमारे

बहनोई गोवर्धनलाल ने घर के मुख्य व्यक्तियों को सामने बैठाकर कह दिया, 'भैया ! गौ की सौगन्ध खाकर कह दो कि यह इच्छापत्र ठीक है और सब मान जाएंगे।'

" जानते हो, तुम्हारे पिता ने क्या किया था ? उसने मां के चरण-स्पर्श कर कह दिया था, 'मै गाय की कसम तो नही खा सकता। दूसरा इच्छापत्र ठीक है।' इस प्रकार धर्म की बात में आकर साठ लाख रुपया दे डाला था। यह तो बीस हजार ही है।"

"भापा ! मुझको सब स्मरण है। मै उस समय सज्ञान था। मा ने पिता को बहुत डांटा था और वे मा की बात का उत्तर नहीं दे सके थे।"

"और बरखुरदार, तुम तो मा के कहे अनुसार व्यापार करते हो न ?"

निरजन इस प्रश्न का अर्थ नही समझ सका। राम ने अपने प्रश्न की व्याख्या स्वय ही कर दी। उसने कहा, "जहां इस दुकान पर धन की अनायास वर्षा होती थी, वहां अब तुम बैठकर मक्खिया उडाया करते हो।"

"भापा ! यह पिता जी की करनी का ही फल है।"

"और तुम्हारी करनी का फल है कि तुम सत्यनारायण के मन्दिर को भी बेचकर खा गए हो।"

"वह तो भापा, पजाब से आए शरणार्थियों ने तोड़-फोड दिया है। उनपर दया कर उनको रहने की जगह दी थी और वे मन्दिर का सब कुछ लूट-पाटकर चल दिए।"

राम हंस पड़ा। इस समय रूप उसको हंसते देख, चला आया।

राम ने निरजन के सामने ही रूप से पूछ लिया, "वह दाताराम का क्या हुआ ?"

रूप ने बताया, "वह भूमिगत है।"

"क्या मतलब ?"

"वह कानून की पहुच से छुपा हुआ है। उसने कहा है कि वह अपने दिवाले का कारण जान गया है और उसने चोर को पकड़ने के लिए कुछ दिन के लिए आंखों से ओझल हो जाने का विचार किया है। उसने एक पत्र सबजज को लिखा है। वह पत्र मुकदमे की 'फाइल' पर है परन्तु उसने मेरे बीस हजार जमानत की रकम को जब्त कर लिया है और दिवाला मंजूर कर लिया है।"

इसपर निरंजन ने पूछ लिया, "भैया ! तुमको विश्वास है कि वह तुम्हारा

बीस हजार वापस करेगा ?"

"मैं कुछ नही कह सकता। वैसे वह लापता होने से पहले मुझको मिला था और मुझको बताकर छुपा है।"

निरजन हंस पड़ा, "मालूम नही तुम लोग लाखो का व्यापार कैसे करते हो ? तुम चोर और साधु में पहचान नही रखते।"

रूप ने कहा, "भैया निरजन ! रुपया हाथ का मैल है और यह तो फिर आ जाएगा, परन्तु एक सम्बन्धी सौगन्ध खाकर विश्वास दिलाए तो मैं उसको झूठा नही कह सकता।"

बात राम ने समाप्त कर दी। उसने कहा, "रूप ! मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं। परमात्मा तुम्हारी कमाई मे बरकत डालेगा।"

४

एक दिन विश्वम्भर के बम्बई से लौटने के पश्चात् सोमारानी विश्वम्भर और करुणा से मिली। दोनो वोल्गा रेस्टरां में चाय ले रहे थे। सोमारानी एक युवक के साथ वहां पहुची और विश्वम्भर को अपनी पत्नी के साथ बैठा देख, वहां जा पहुची।

"क्यों जी !" उसने पूछ लिया, "क्या मैं आपके साथ चाय लेने का सौभाग्य प्राप्त कर सकती हूं ?"

"हां ! क्यों नही ?" विश्वम्भर ने उसे देखा, पहचाना और बैठने को कह दिया। सोमारानी ने अपने साथी को भी वहीं बैठने को कह दिया और उसका परिचय करा दिया, "विश्वम्भर जी ! ये है रुद्रमणी। वाराणसी के रहने वाले हैं। ये मुझसे विवाह का प्रस्ताव कर रहे है। मैं आज इनको भापा जी के पास ले जाने वाली हूं।"

"ओह !" विश्वम्भर ने हाथ जोड़कर नमस्कार कर दिया। पश्चात् पूछने लगा, "वहां आप क्या काम करते हैं ?"

"पिता जी की बहुत सम्पत्ति है। उस सम्पत्ति का प्रबन्ध करता हूं।"

"पिता जी का क्या नाम है ?"

"गोपालशंकर। पहले जरई माल के बनवाने की कोठियां थी। अब तो उनका

देहात हो गया है। चार हजार प्रतिमास की आय है और मै उनका एक ही लड़का हू।"

बैरा चाय लगा रहा था कि राजकुमार और उसकी पत्नी आ गए। विश्वम्भर ने रुद्रमणी का उससे परिचय करा दिया और बता दिया, "सोमा बहिन से इनकी सगाई होने वाली है।"

"कब ?"

उत्तर सोमा ने दिया, "मैं आज ही भापा जी से इनका परिचय कराने जा रही हू।"

"परन्तु बडी मा तो हमारी माता जी के साथ तुम्हारे लिए एक लडका देखने गई थी। बड़ी मा कह रही थी कि लड़का पसन्द कर आई है। दो-चार दिन मे सगाई हो जाएगी।"

"भापा जी से बात कर लूगी। बडी मां पूछती तो है नही और अपने-आप ही घूमती-फिरती है।"

चाय समाप्त हुई तो सोमारानी और रुद्रमणी उठ, नमस्कार कर, चल दिए। राजकुमार और विश्वम्भर अपनी पत्नियों के साथ बैठे रहे। विश्वम्भर ने कह दिया, "मुझको तो यह कोई बनारसी ठग प्रतीत होता है।"

"भापा इस सम्बन्ध को कभी नही मानेगे।"

"बात यह है कि इसको परिवार की सम्पत्ति में साढ़े सात लाख मिला है। यदि यह उस रुपये को सावधानी से रखेगी तो यह ठग भी उसके अधीन हो जाएगा।"

"वह ठग ही क्या हुआ जो दूसरे की जेब से बिना उंगली डाले रुपया न निकाल ले।"

"देखे अब क्या तमाशा होता है।"

उसी सायकाल राजकुमार रूप के पास बैठा था, जब भापा रामकुमार का टेलीफोन आया। टेलीफोन सुनने के पश्चात् रूपकृष्ण ने राजकुमार को बताया, "सोमा किसी बनारस के युवक के साथ भाग गई है।"

"ओह ! मैंने उसको देखा है। वोल्गा मे सोमा बहिन उसी युवक के साथ चाय लेने आई थी। विश्वम्भर ने उसे अपनी मेज़ पर ही बैठा लिया। सोमा ने अपने साथी का परिचय कराया। हम दोनों का विचार था कि वह कोई ठग है।"

"मैंने सुभद्रा के परिवार मे रुचि लेनी छोड दी है।"

"परन्तु चाचा जी ! है तो वे अपने ही ?"

" हां। इसमे सन्देह नही, परन्तु इस धनी बाप की बेटी ने अभिमान मे सब कुछ चौपट कर दिया है।

" देखो राज ! मैंने तुमको एक बात बताने के लिए बुलाया है। मैं विश्वम्भर के विवाह के उपलक्ष्य मे दी गई दावत मे उपस्थित था। वहा निरंजन ने दाताराम की ज़मानत देने पर मेरी हसी उडाई थी। उसका उत्तर तो मैंने दे दिया परन्तु भापा ने एक बात मुझको कही थी। बडे लाला जी की सुख-समृद्धि उनके धर्म-कर्म के कारण थी। शिव दादा भी फलता-फूलता रहा, जब तक उसके मन मे कमाई धमार्थ व्यय करने की रुचि रही। उसके विपरीत निरजन की हालत बहुत पतली है। यह इस कारण है कि वह बेईमान है और सहानुभूति-शून्य है।

" मैं घर आकर अपनी सम्पति की बात पर विचार कर रहा हू। मैं जीवन के आरम्भ में जुआरी था। फिर व्यापारी बन गया और अन्त में ठेकेदार बन गया। बहुत रुपया कमाया है, परन्तु धर्म के लिए व्यय करने की रुचि नही रही। मैं देख रहा हू कि मेरी आधी कमाई तो सुभद्रा और उसके बच्चों ने खराब कर दी है। आधी पर भी भारी आय हो रही है। इससे मेरे मन मे विचार आया है कि इसमे से कुछ धर्म-कर्म करना चाहिए।

" जब मै जुआ खेलता था तो एक बूआ गौरी थी। वह परिवार-भर में धर्म-कर्म पर व्यवस्था दिया करती थी। अब तुम सस्कृत और शास्त्र पढे हो। इस कारण तुमको बुलाया है कि मुझको राय दो कि मै क्या करू जिससे मेरी कमाई भले काम मे लग सके ?"

"परन्तु चाचा जी ! सुन्दरी से पूछ लिया है ?"

रूप हंस पडा। हसकर पूछने लगा, "तुमने मुझको औरतो की राय से काम करते कब देखा है ?"

"जब आप गौरी मौसी के कहने से जुआ खेलना छोड ैठे थे।"

"वह तो ऐसे ढग से बात करती थी कि बड़े-बड़े पढ़े-लिखों के भी कान कतर लेती थी।"

"परन्तु चाचा जी ! बीस वर्ष से ऊपर तक तो सुभद्रा चाची आपपर राज्य करती रही है।"

"हा ! वह मेरे जीवन मे एक काले बादल की भाति छाई रही है। परन्तु राज! वह अवस्था निकल गई है। यह सुन्दरी ने ही सुझाव दिया है कि मै तुमसे राय करू। वह इसमें पूर्णरूप से सहमत है। वह तो यह भी कहती है कि मैं अब काम-धन्धा छोड, कही पहाड पर जाकर रहना आरम्भ कर दू। अपने निर्वाह के लिए थोडी-सी आय रख लू और शेष छोडकर चल दू।"

"और चाची है कहां ?"

"कुछ खरीदने बाजार गई है।"

"कितना रुपया है आपके पास ?"

रूप ने अपनी अलमारी से एक 'फाइल' निकाल ली और उसको राजकुमार के सामने रख, खोल बताने लगा, "इस समय केवल एक ठेके का काम चल रहा है। वह भी समाप्त होने वाला है। उसमे अभी लगभग दस हजार और खर्च होगा और उसका बकाया 'बिल' सवा लाख सरकार से लेना बनता है। उसपर टैक्स इत्यादि देने है। सब कुछ दे-दिलवाकर प्रथम जनवरी को पचपन लाख की सम्पत्ति है। इसमे से पांच लाख मै भापा जी और अपने निर्वाह के लिए रखकर शेष सब दान-दक्षिणा मे देना चाहता हू।"

"देखो चाचा जी ! विद्या-दान से श्रेष्ठ कोई दान नही, परन्तु ये स्कूल, कालिज जो सरकारी और नीम-सरकारी संस्थाएं खुल रही हैं, यह विद्या नही, अविद्या का दान कर रही है।

"मै तो यह समझता हूं कि यदि कोई ऐसी शिक्षण-संस्था हो, जो सरकारी पाठ-विधि के अतिरिक्त शिक्षा दे तो उसमे कोई पढ़ने वाला नहीं आएगा। इससे मैं एक विद्यादान का दूसरा ढग चलाने के लिए कहता हूं।

"नई दिल्ली में कोई बड़ा पुस्तकालय नहीं है। मैं समझता हूं कि यदि आप अपने धन से कोई पुस्तकालय और विद्याकेन्द्र, जिसमे व्याख्यान इत्यादि हो सके, खोल सको तो बहुत कल्याण का कार्य होगा।"

"तो तुम एक योजना बनाओ और स्वयं इसमें कार्य करो तो मै सब धन बटोरकर तुमको दे सकता हूं।"

"तो चाचा जी ! एक ट्रस्ट (न्यास) बना दो।"

"लिखत-पढत व्यर्थ है। तुम सोल ट्रस्टी बन जाओ और अपने पीछे ट्रस्टी नियुक्त करने की प्रथा बना जाओ। बस मैं यही चाहता हू।"

"इसपर भी चाचा जी, कुछ तो लिखत-पढ़त हो जानी चाहिए।"

"वह हो जाएगी।"

"तो मैं योजना बनाता हू। परन्तु स्थान ?"

"देखो। यह मकान मेरा है। साथ वाला मकान भी मेरा है। इन दोनों को मिलाकर कुछ बना लो।"

"कितनी जगह है यह ?"

"दोनों मकान मिलाकर ग्यारह सौ गज़ स्थान है।"

"बहुत कम है।"

"दो मकान और मोल लिए जा सकते है।"

"तब कुछ काम बन सकता है।"

"यत्न करूगा।"

अभी बात समाप्त नही हुई थी कि सुन्दरी आ गई। उसको रूप ने बता दिया, "राज ने एक योजना बनाई है और उसने उसका प्रबन्ध करने का भी वचन दिया है।"

"मुझको इससे यही आशा थी।"

"एक अन्य भी समाचार है।"

"क्या ?"

"सोमा किसीके साथ भाग गई है।"

"यह भी आशा के अनुसार ही है, परन्तु वह सुखी वहां भी नहीं रहेगी।"

रूप हंसता रहा। राजकुमार ने अगले दिन अपनी योजना लिखकर लाने का वचन दिया और चला गया।

"राजकुमार के चले जाने पर सुन्दरी ने कहा, "हमको भापा जी से मिलना चाहिए।"

"किसलिए ?"

"इससे उनकी चिन्ता निवारण कर सकेंगे।"

"तो चलो।"

वे दोनों मोटर मे सवार हो श्रीराम रोड पर जा पहुचे। राम रात का खाना खा रहा था। प्रबोध, दिति और कमल भी मेज़ पर बैठे थे। रोहिणी रसोईघर में थी और नौकर से खाना ठीक करवा रही थी।

राम ने रूप को देखा तो रोहिणी को आवाज दे दी। वह आई तो सुन्दरी ने पांव लागू की और उसके पास बैठ गई। रसोइया खाना परसने लगा था। रूप और सुन्दरी के लिए भी खाना लग गया।

राम ने पूछ लिया, "कैसे आए हो ?"

"यही सोमा के विषय मे जानने और विचार करने के लिए कि दूसरो का क्या किया जाए।"

"प्रबोध के विवाह का प्रबन्ध तो होगया है।" रोहिणी ने कह दिया, "सगाई की रस्म अगले सप्ताह हो जाएगी और फिर शीघ्र विवाह हो जाएगा। सोमा के लिए एक लडका आज राजेश्वरी के साथ देखने गई थी। अब वही दिति के लिए निश्चय कर लेंगे।"

"मेरा विचार है भापा ! यह सब जल्दी कर दिया जाए। मैं अपनी पूर्ण सम्पत्ति का एक ट्रस्ट बनाने वाला हू और आपके तथा अपने खर्च के लिए रखकर शेष उस ट्रस्ट को दान कर देने वाला हू।"

"किस काम के लिए ट्रस्ट बनाओगे ?"

"राजकुमार को योजना बनाने के लिए कहा है।"

"यह ठीक है।"

रूप ने बात बदल दी। उसने प्रबोध से पूछ लिया, "तुमने अपनी पत्नी देखी है ?"

"नही जी ! देखी तो नही परन्तु बडी मा कहती है कि वह सुन्दर है, सुघर है।"

"तो तुमने स्वीकार कर ली है ?"

"और कर ही क्या सकता हू ? मैं सोमा के साथ आने वाले शोच्चे की भांति साहसी तो हू नही।"

रूप हस पडा। हसते हुए कहने लगा, "अच्छा भापा ! जल्दी विवाह हो जाना चाहिए। मै यह कोठी ट्रस्ट को दे रहा हूं।"

"तब तो ठीक है। हम भी गोवर्धनलाल के साथ उसके आश्रम में जा रहेगे। क्यों रोहिणी ? क्या कहती हो ?"

"मैं बहुत प्रसन्न हूं इससे।"

इसके दो सप्ताह के भीतर ही प्रबोध और दिति का विवाह हो गया और

दोनों को पृथक्-पृथक् रहने के लिए मकान मिल गया। कमल प्रबोध के साथ रहने लगा। इसी काल में रूपकृष्ण ने कनाट प्लेस मे चार मकान ले लिए और इनके स्थान पर एक भवन बनवाने का मानचित्र बनवा लिया। नीचे की मजिल पर पढने का कमरा था। ऊपर की मजिल पर एक हाल, जिसमें एक सहस्र से ऊपर कुर्सिया लगी थी, और पुस्तकालय के कमरे तीसरी मजिल और चौथी मजिल पर बनाने की योजना थी। सब मिलाकर एक बडा हाल, रीडिंग रूम और छोटी-मोटी सभाओ के लिए कमरे तथा पुस्तकालय के लिए बीस कमरे। यह था इमारत का नक्शा। चार मकान गिरा दिए गए और इनके स्थान पर इमारत का काम आरम्भ हो गया। रूप का यह स्वभाव था, जब कोई बात उसके मस्तिष्क मे बैठ जाती, तब वह उसको पूरा किए बिना दम नही लेता था।

एक वर्ष मे सब कुछ तैयार हो गया। लिखत-पढत हो गई। राजकुमार इस पुस्तकालय का अकेला ट्रस्टी बना दिया गया। उसके जीवन-काल के लिए उसको पांच सौ रुपया प्रतिमास कार्य के लिए भत्ते के रूप मे दे दिया गया। लिखत मे यह भी अधिकार राजकुमार को दिया गया कि वह अपने पीछे एक अथवा एक से अधिक अपने स्थानापन्न नियुक्त कर सके।

५

राजकुमार विचार करता था कि क्या कारण है जो समान परिस्थितियो में उत्पन्न और समान रूप में कार्य करते हुए भी व्यक्ति समान घटनाओं में भिन्न-भिन्न प्रतिक्रिया देते है। भूषण पर मुकदमा हुआ और वह जेलमुक्त हो गया। सुन्दरी जेल जाती-जाती बच गई। दोनो समान कर्म कर रहे थे। इसपर भी भूषण तो पतनोन्मुख हो गया और सुन्दरी न केवल स्वय वैसे कार्य से बाहर हो गई, अपितु वह अपने साथी में भी विरक्तता उत्पन्न कर सकी। वह राम, रोहिणी, प्रबोध और सुभद्रा इत्यादि से मिलता रहता था।

भूषण को आश्रय मिला सुभद्रा के घर और सुन्दरी को रूप के घर। दोनों अवस्थाओं मे यौन-सम्बन्ध बना, परन्तु एक से सम्बन्ध वैमनस्य का कारण हुआ। मां-पुत्र मे, भाई-बहिन में और स्वसुर-पतोहू में झगड़ा हुआ। और सब पृथक्-पृथक होकर रहने लगे। दूसरी अवस्था में सुन्दरी ने रूप को अपने माता-पिता तथा अन्य

सम्बन्धियों से मेल-मुलाकात की प्रेरणा दी।

'यह क्यो?' उसके विस्मय का ठिकाना न रहा, जब उसने एक दिन सुभद्रा और भूषण मे भी जूत-पजार होती देखी। यह रूप तथा राम इत्यादि के हरिद्वार चले जाने के पीछे की बात है। एक दिन राजकुमार सुभद्रा की कोठी के बाहर से गुजर रहा था कि वहा एक ट्रक खडा था और उसमें सामान लादा जा रहा था। राजकुमार को समझ आया कि ये लोग मकान बदल रहे है। उसने ट्रक वाले से पूछा, "यह सामान कहा जा रहा है?"

ड्राइवर ने उत्तर दिया, "मथुरा रोड पर ओखले के पास।"

"तो ये लोग वहा जा रहे है?"

"हां! साहब जा रहा है।"

"और उनकी पत्नी नही?"

"जी! वे यहां ही रहेगी।"

राजकुमार इसका अर्थ समझने के लिए कोठी में चला गया। भूषण बरामदे में खड़ा था और सामान निकाला जा रहा था। भूषण ने राजकुमार को देखा तो प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा। राजकुमार ने उसके इस प्रकार देखने का आशय समझ पूछ लिया, "चाची जी कहा है?"

"कुछ काम है उनसे?"

"कुछ काम है, जो चाचा जी से नहीं है।"

भूषण हस पड़ा। उसकी हंसी में स्वाभाविक ध्वनि नहीं थी। इससे राजकुमार को विस्मय हुआ। भूषण को अपनी हंसी भी विलक्षण लगी तो वह एकदम गम्भीर हो कहने लगा, "बाज़ार गई हुई है।"

"और चाचा जी कहां जा रहे है?"

"मैंने अपना निवास उनसे पृथक् कर लिया है। वे यहां रहेंगी और मै नये मकान मे रहूगा।"

"तो झगड़ा हो गया है?"

"यह मनुष्य का स्वभाव है। सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, ये मन के धर्म है।"

राजकुमार ने बात बदल दी, "चाची कब आने वाली है?"

"मै क्या जानू! मुझको बताकर नही गई।"

"कोठी के नौकर-चाकर किधर है?"

"तुम पूछने वाले कौन हो ?"

"चाचा जी महाराज ! नाराज़ होने की बात नही । मुझको चाची जी से काम है और मैं उनकी प्रतीक्षा करना चाहता हूं ।"

"तो करो । मै तो जा रहा हू ।"

सबसे अन्त मे 'टेलीविजन सैट' नौकर लाया । उसको लेकर भूषण अपनी मोटर मे बैठ गया और ट्रक वालों को आने के लिए कह मोटर चलाकर ले गया ।

राजकुमार अभी भी बरामदे मे खड़ा था । कोठी में कोई नहीं था । एक चौकीदार और एक चपरासी तो वहां सदा ही रहा करते थे । वे भी नहीं थे । राजकुमार विस्मय करता हुआ सुभद्रा के आने की प्रतीक्षा कर रहा था । उसको आश्चर्य था कि भूषण कोठी को खुली और बिना किसीकी देख-रेख में छोड गया था । उसको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि वह वहां से कुछ चोरी कर भागा है । उसके मन मे आया कि पुलिस मे सूचना भेज दे । बरामदे में रखे टेलीफोन का चोगा उठा, वह पुलिस का नम्बर घुमाने ही लगा था कि उसके मन में विचार आया कि ज़रा भीतर नज़र डालकर देख ले । उसने चोगा फिर रख दिया और कोठी में चला गया । सब कमरे खुले थे । केवल एक कमरा, जो प्रायः शयनागार के रूप में प्रयोग होता था, बन्द था ।

उसने धक्का देकर किवाड खोलना चाहा तो वह खुल गया । कमरे में अंधेरा था । उसने बिजली जलाई । पलग पर सुभद्रा हाथ-पाव बाधे हुए और मुख में कपड़ा ठूंसे हुए पड़ी थी ।

राजकुमार ने देखा—सुभद्रा के कई स्थान पर चोटे आई हुई थीं । वह राजकुमार की ओर दया-याचना के भाव से देख रही थी । राजकुमार ने उसके मुख से कपड़ा निकाला और उसके हाथ-पाव खोल दिए । सुभद्रा रोने लगी थी ।

"क्या हुआ है चाची ?"

"भूषण गया ?"

"हां ।"

"सब कुछ लूटकर ले गया है ।"

"चाची ! ईश्वर का धन्यवाद करो कि तुम्हारी हत्या नहीं कर गया और फिर मैं समय पर आ गया हूं । यदि मैं न आता तो तुम अभी भी यहां पडी रहतीं ।"

"राज ! एक गिलास जल ले आओ ।" सुभद्रा इस समय उठकर पलग पर

बैठ गई।

राजकुमार गया और रसोईघर में से गिलास ले भर लाया। सुभद्रा ने जल पिया और बोली, "तुम ठीक कहते हो, मुझको तुम्हारा धन्यवाद करना चाहिए। कदाचित् रात-भर इसी प्रकार पडी रहती तो मर जाती।"

"परन्तु मेरा यहां आना तो अनायास ही हो गया है न ?"

"कुछ भी हो। तुमने जान बचा ली है।"

"कोठी के नौकर कहा है ?"

"वह उनको भी साथ ले गया है। उनको पहले ही मोटर में भेज दिया था। जब वे चले गए तो उसने मुझको पीटना आरम्भ कर दिया। मैंने बचने का यत्न किया तो मेरे मुख मे रूमाल ठूस मेरी आवाज बन्द कर, मेरे हाथ-पाव बांध दिए। पीछे मुख पर कपड़ा बाध कमरे का द्वार बन्द कर चला गया। फिर उसने साथ के कमरे में, जो हमारा स्टोर रूम था, जाकर चाबिया लगा सेफ खोला और जो कुछ भी वहा था, ले गया है। कुछ फर्नीचर भी यहां से ले गया मालूम होता है। सामान जाने का शब्द सुनती रही हू।"

"चाची ! पुलिस मे रिपोर्ट लिखवाओगी ?"

वह गम्भीर हो गई। फिर राजकुमार का मुख देखती रह गई। राज ने पुनः कहा, "पुलिस को टेलीफोन कर दूं ?"

"नही।" उसने कहा।

राजकुमार विस्मय मे उसका मुख देखने लगा, तो उसने कह दिया, "मै जांच-पड़ताल में बयान नही देना चाहती। बहुत बदनामी होगी। प्रबोध को टेलीफोन कर दो।"

राजकुमार उठा और बाहर टेलीफोन के पास जाकर प्रबोध का नम्बर घुमाने लगा। सुभद्रा उठ रसोईघर में चली गई और चाय के लिए इलैक्ट्रिक जग मे पानी गरम करने के लिए स्विच खोल आई।

प्रबोध बोल रहा था। राजकुमार ने वहां की अवस्था का वर्णन किया और बताया कि वह कैसे यहां आया है और यहा क्या देखा है। अन्त मे कहा, "चाची चाहती हैं कि तुम ज़रा यहां आ जाओ।"

"क्या करूगा आकर ?"

"मा अकेली है। भयभीत है। घायल भी है और मरती-मरती बची है।"

"उसको कह दो कि पुलिस में रिपोर्ट कर दे और हस्पताल में चली जाए।"

राजकुमार ने सुभद्रा को प्रबोध का उत्तर सुनाया तो वह डबडबाई आंखों से कहने लगी, "राज! मुझको आज रात तो अपने घर ले चलो।"

"और यह कोठी?"

"ऐसा करो, टैक्सी मंगवा लो। मैं तब तक सब कमरो को ताले लगा तैयार हो जाती हू।"

राजकुमार टैक्सी-स्टैंड पर टेलीफोन करने लगा तो सुभद्रा चाय बनाने चली गई। जब तक टैक्सी आई, वह चाय बनाकर ले आई। दोनो ने चाय पी और ताले लगा वह राजकुमार के घर जा पहुची।

अगले दिन कोठी के नौकर वापस कोठी मे आए वहां बैठ प्रतीक्षा करने लगे। ग्यारह बजे के लगभग सुभद्रा वहां पहुची तो उनको बैठे देख पूछने लगी, "कहां गए थे तुम सब?"

"साहब ने कहा था कि आप ओखला वाली कोठी मे जाने वाली हैं। हम मोटर में सवार हो, वहा चले गए। पीछे साहब आए तो कहने लगे कि आप नहीं आई। प्रातःकाल उन्होंने हमको वापस भेज दिया है। कहा है कि हम आपके साथ ही जा सकते है।"

सुभद्रा अब अकेली उस कोठी में रहने लगी थी। अब उस सैकड़ों सदस्यों के परिवार मे केवल राजकुमार और राजेश्वरी ही उससे बोलते थे। वे कभी उसका सुख-समाचार लेने आ जाते थे। शेष कोई भी उससे सम्बन्ध नहीं रखता था।

एक दिन पुस्तकालय में प्रबोध राजकुमार से मिलने आया। राज उसको अपने कमरे मे लेकर चला गया। वहां बैठा राजकुमार ने पूछ लिया, "कैसे आए हो?"

"मै भूषण ताया से मिलने गया था।"

"किसलिए?"

"यह जानने के लिए कि उसने मां को क्यों छोड़ दिया है।"

"तो क्या कहता था?"

"कहता था कि वह बदकार औरत है।"

"तो फिर?"

"मैं तुमसे पूछने आया था, क्या विचार हैं तुम्हारा?"

"भला मुझसे क्यों ?"

"तुम वहा जाते रहते हो, इसलिए ?"

"मैने उसमे ऐसी कोई खराबी नही देखी जो भूषण में नही है।"

"मै उसका भूषण से मुकाबिला नही करना चाहता। मै तो साधारण रूप में जानना चाहता हू।"

"जानते हो, तुम्हारा बाप कौन है ?"

"जानता हूं।"

"वह भूषण नही है न ?"

"नही।"

"तो फिर मुझसे क्या पूछते हो ?"

प्रबोध उठकर चला गया। उसने जाते हुए नमस्कार भी नहीं किया। राजकुमार के मन मे आया, 'यह कैसा मूर्ख है !' फिर मन में सोचता रहा, 'जैसी मां है, वैसा ही पुत्र है।'

इस घटना के एक सप्ताह के अन्दर ही कोठी में रात को सोए हुए सुभद्रा की हत्या हो गई। राजकुमार को सन्देह था कि हत्या प्रबोध ने की है अथवा कराई है। परन्तु पुलिस जाच कर रही थी और किसी परिणाम पर नही पहुच रही थी। इससे वह चुप था।

सुभद्रा के सस्कार के समय केवल राजेश्वरी और राजकुमार ही वहा थे। अन्य कोई नही आया था।

भूषण से वेंगर पर एक दिन भेट हो गई। राजकुमार के पास वह स्वयं ही आकर बैठ गया। राजकुमार ने उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा तो वह पूछने लगा, "सुभद्रा की हत्या की जांच मे क्या हुआ है ?"

"मुझको विदित नही।"

"तो तुम इसमें रुचि नही ले रहे ?"

"नही ?"

"क्यों ?"

"दिल्ली में रोज़ तीन-चार हत्याए हो जाती है। मेरे लिए यह हत्या उनसे किसी प्रकार भी विलक्षण नही है।"

"वह तुम्हारी चाची थी।"

"हां ! परन्तु मै उसका न तो उत्तराधिकारी हू न ही उसका सरक्षक था।"

"मैं जानता हू कि हत्या किसने की है।"

' सन्देह तो मुझको भी है।"

"भला किसपर सन्देह है ?"

"भूषण ताया पर।"

"बहुत बदतमीज़ हो।"

"मन में तो आया था कि पुलिस मे रिपोर्ट लिखा दूं, परन्तु यह विचार कर चुप हू कि घर की गन्दगी सबके सामने खोलने मे क्या लाभ ?"

"परन्तु मैंने तो अपनी बात पुलिस मे लिख भेजी थी, मगर ऐसा प्रतीत होता है कि प्रबोध ने कुछ ले-देकर बात ठण्डी कर दी है।"

"तो आपका सन्देह प्रबोध पर है ?"

"हां।"

राजकुमार चुप रहा। भूषण ने कहा, "मै विचार कर रहा हू कि चीफ कमिश्नर को लिखू और उसको धमकी दू कि यदि वह जाच नही कराएगा तो मै पडित नेहरू जी को लिखूगा।"

राजकुमार चुप रहा। इसपर भूषण ने बैरा को चाय लाने के लिए कह दिया। राजकुमार पी चुका था। बैरा उसका 'बिल' लाया तो उसने दाम दे दिया और जाने के लिए उठने लगा तो भूषण ने कहा, "मै समझता हू कि इससे तुम्हारे मन का संशय दूर हो गया होगा।"

"इससे तो सन्देह विश्वास में बदल गया है।"

"मालूम होता है कि तुम भी प्रबोध के साथ इस अपराध के भागीदार हो।"

राजकुमार मुस्कराया और चला गया। बात यहां ही समाप्त नही हुई। सुभद्रा की हत्या को एक मास भी नही हुआ था कि भूषण की कोठी मे डाका पड़ा और डाकू सब कुछ लूटकर ले गए और साथ ही भूषण की हत्या कर गए।

राजकुमार विचार करता था कि क्या यह भी प्रबोध का काम है ?

६

सुभद्रा और भूषण की हत्या का समाचार हरिद्वार राम इत्यादि को भी मिला।

वहां से राम ने राजकुमार को लिखा, "बेटा राज ! दिल्ली के एक परिचित ने कल परिवार मे हुई दो हत्याओ का समाचार सुनाया है। सुनकर भारी शोक हुआ है। रूप का यह अनुमान है कि सुभद्रा की हत्या भूषण ने की है और भूषण की हत्या प्रबोध ने।

"ऐसा प्रतीत होता है कि अपनी चतुराई के कारण अथवा अपने धन के प्रभाव से प्रबोध पर आच नही आई। कुछ भी हो तुम प्रबोध से मिलना और कहना कि उसकी मां के मर जाने का मुझको और रोहिणी को भारी शोक है।

"सुभद्रा रोहिणी से अकारण सदा द्वेष करती रही थी। इसपर भी उसकी इस छोटी अवस्था में हत्या की बात सुन उसको भारी शोक हुआ है। उसने उसकी इस दुर्दशा पर दो आसू भी बहाए है।

"रूप के विषय में प्रबोध को मत बताना। रूप सुभद्रा इत्यादि सबको भूल जाने का यत्न कर रहा है। उसने कह रखा है कि हम उसके सामने सुभद्रा अथवा उसकी सन्तान का कभी नाम न ले।

"तुम अपने कार्य की प्रगति लिखो। क्या संख्या हो गई है पुस्तको की ? कितनी पत्र-पत्रिकाएं वाचनालय मे आती है ? कितने लोग वाचनालय और पुस्तकालय का प्रयोग करने आते हैं ? रूप और सुन्दरी को इस विषय मे जानने की रुचि बनी रहती है।"

पत्र मिलने के कुछ दिन पीछे राजकुमार ने भापा को उत्तर लिख दिया। उसने लिखा :

"भापा जी के चरण-कमलों में राजकुमार, राजेश्वरी और संतोष की श्रद्धायुक्त चरण वन्दना हो। चाचा तथा चाची सुन्दरी को भी। हमारा सबका प्रणाम मिले।

"जहां तक पुस्तकालय का सम्बन्ध है, इस समय वाचनालय मे दो सौ पत्र-पत्रिकाएं सदा पढने के लिए पड़ी रहती है। तीन चपरासी और चौकीदार उनकी देखभाल और रक्षा के लिए दिन मे आठ घण्टे वहा खड़े रहते हैं। दिल्ली, विशेष रूप मे नई दिल्ली, में पत्रिकाओं एव तस्वीरो वाली पत्रिकाओ की चोरी करने वाले बहुत घूमते हैं। पढ़े-लिखे और तीन-तीन, चार-चार सौ का सूट पहनने वाले ऐसी चोरी अधिक करते हैं।

"इस समय पुस्तकालय में चालीस हज़ार से ऊपर पुस्तके हैं। नियम से मैं दो सहस्र प्रति मास की पुस्तकें मंगवा रहा हूं। मुझको कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि

पुस्तकालय को किसी दूसरी इमारत में खोलना पड़ेगा।"

"वाचनालय में सब आने वालों के हस्ताक्षर लिए जाते हैं। दिन में पांच सौ से ऊपर लोग वहां आते हैं स्थानीय तथा देशीय दैनिक पत्रों की चार-चार प्रतियां आती हैं और लोग पढते हैं।

"पुस्तकालय मे नियम से आने वालों के लिए हमने मेज़-कुर्सी पृथक् में देने का प्रबन्ध किया हुआ है। उसके लिए उनको पुस्तकालय-अध्यक्ष से पहले से प्रबन्ध करना होता है। दस रुपये प्रतिमास मेज़-कुर्सी का भाडा देना पडता है। ऐसे पढने वालों की संख्या आठ-नौ बनी रहती है। नियम यह है कि भाड़ा अग्रिम देना पड़ता है। और महीने मे कम से कम पद्रह दिन उसका प्रयोग करना पडता है। नही तो भाड़ा देकर भी मेज़-कुर्सी नही दी जाती।

"पुस्तकें हम घर के लिए नही देते। वहा बैठकर पढ़ने वालों के लिए ही हैं। ऐसे पढने वालों की सख्या नित्य की डेढ-दो सौ तक बनी रहती है।

"पुस्तकालय का भवन कदाचित् ही, कोई दिन हो, जब खाली रहता हो। कभी-कभी तो दो-दो सभाए तथा गोष्ठियां नित्य होती हैं। हमने दिल्ली के विचार से भाडा बहुत कम रखा हुआ है। बड़े हाल का बीस रुपया प्रति घण्टा के हिसाब से और छोटी सभाओं के लिए प्रति कमरे का पांच रुपये प्रति घण्टा के हिसाब से। नई दिल्ली मे कुछ अन्य भवन भी हैं जो भाड़े पर मिलते हैं। उनके भाड़े बहुत अधिक हैं और लोग हमारे हाल को पसन्द करते हैं।"

"प्रबोध को मैं आपका शोक प्रकट करने गया था। आपके अनुमान का प्रमाण मैं वहां देख आया हूं। एक टेलीविजन सैट जो भूषण सुभद्रा के घर से जाते समय उठाकर ले गया था, वह उस दिन प्रबोध के घर में लगा देख आया हूं। मैंने प्रबोध से पूछ लिया, 'यह सैट नया खरीदा है?' तो कहने लगा, 'नही। यह मां के फरनीचर मे से मिला है?'

"मै चुप रहा। परन्तु मुझको विश्वास है कि भूषण के घर की लूट में से प्रबोध को मिला है। खैर, मेरा इससे कोई सम्बन्ध नही था।

"प्रबोध ने यहा घटी पूर्ण दुर्घटना का दोष आप पर लगाया है। उसने कहा है कि आपने दया कर, भूषण ताया को कोठी मे रहने का स्थान दिया था और उसीसे यह सब दुर्भाग्य एक शृखला मे घटा है।

"परन्तु भापा! ये विकृत मन के उद्गार हैं और इसका परिणाम भी अच्छा

होने वाला नही ।"

राजकुमार के घर एक लडका और हुआ । बडे का नाम मणिन्द्र और छोटे का नाम देवेन्द्र रखा था । राजेश्वरी इस प्रकार अपने परिवार की वृद्धि पर बहुत प्रसन्न थी। राजकुमार की छोटी बहिन प्रज्ञा ने विवाह नही किया । और वह अपना पूर्ण समय साहित्य-अध्ययन और कला के अभ्यास मे लगा रही थी । उसके लिए तो रूप का पुस्तकालय एक सौभाग्य की बात हुई थी । वह आठ घण्टे वहा बैठ, अपना पढने और लिखने का काम करती थी ।

दो वर्ष मे उसने एक पुस्तक लिखी 'राम आर्य सस्कृति के प्रतीक' । वह पुस्तक राजकुमार ने सशोधन कर छपवा दी थी । और उसके बेचने का भी प्रबन्ध कर दिया था । प्रज्ञा सस्कृत और हिन्दी की एक पडिता थी और उसकी इस पुस्तक ने उसको साहित्यकारों की श्रेणी मे बैठा दिया था ।

राजकुमार स्वय भी लेखन-कार्य करने लगा था । वह नित्य चार घण्टे अपने पठन-पाठन पर व्यय करने लगा था । उसने कई वर्ष के प्रयत्न से 'युद्ध और शान्ति' एक पुस्तक लिखी थी । इस पुस्तक में अनेक युद्धों की विवेचनात्मक व्याख्या लिखी और पुस्तक के अन्त मे उसका निष्कर्ष था कि युद्ध होते है आसुरी प्रवृत्ति वाले मनुष्यों के करने से । युद्धों से उपराम होते है, देवता लोग और शान्ति की इच्छा मे वे अपने को दुर्बल कर लेते है । इस दुर्बलता को देख आसुरी प्रवृत्ति के लोग साहस पकड़ लेते हैं और पुनः युद्ध आरम्भ कर देते है ।

इस स्वराज्य-काल मे भारत अपने को शान्ति का दूत प्रकट कर रहा था । इस काल में भारत की जीवन-मीमांसा थी—युद्ध से युद्ध उत्पन्न होते है अत. युद्ध शान्ति को ला नही सकता । शान्ति से ही युद्धों को शान्त किया जा सकता है । इस जीवन-मीमांसा पर भारत आचरण कर रहा था ।

अतः राजकुमार की 'युद्ध और शान्ति' पुस्तक पर सरकारी वर्ग ने नाक ही चढ़ाई थी।

इस प्रकार रूपकृष्ण द्वारा स्थापित पुस्तकालय धीरे-धीरे देश-व्यापी ख्याति प्राप्त कर रहा था । एक पुस्तकालय था, वाचनालय था । यह अन्वेषण-केन्द्र बन रहा था । यह साहित्य और कला का केन्द्र हो रहा था और प्रकाशन-सस्था के रूप में पढ़ी-लिखी जनता के समक्ष आ रहा था ।

एक दिन राजकुमार और प्रज्ञा सायकाल पुस्तकालय बंद होने पर पुस्तकालय

की इमारत के बाहर फुटपाथ पर खड़े थे और टैक्सी स्टैंड की ओर जा रहे थे कि उनके देखते-देखते एक दुर्घटना हो गई। एक भीख मगाने वाली स्त्री दो मोटर गाडियो की लपेट मे आ गई और बुरी भांति कुचली गई। एक मोटर ड्राइवर, जो कदाचित् अधिक दोषी था, भाग गया और दूसरे गाड़ी वाले ने गाडी खड़ी की और उस अचेत औरत को मोटर में ले जाने लगा तो राजकुमार देखने के लिए आगे बढ़ा कि वह कौन औरत है।

उसने देखा कि वह औरत सोमारानी है। साधारण वस्त्रो मे वह पैदल खड़ी वहां क्या कर रही थी ? राजकुमार समझ नही सका। उसके साथ कोई आदमी नही था। इस कारण राजकुमार ने स्वय साथ जाना ठीक समझा, प्रज्ञा को कहा, "तुम घर चलो। मै इसको हस्पताल ले जा रहा हू।" वह भी उसी मोटर मे बैठ गया और इरविन हस्पताल के 'कैजुअल्टी' वार्ड मे ले गया। वहा पुलिस वाले आ गए और रिपोर्ट लिख ली गई।

सोमारानी की चिकित्सा आरम्भ हो गई। रात के बारह बजे उसकी चेतना लौटी। तब उसको हस्पताल मे प्रवेश दिलवा राजकुमार घर लौटा।

राजेश्वरी विस्मय कर रही थी कि वह दिल्ली में आई और किसीसे मिली भी नही। उसको सन्देह था कि उसके घर वाले ने उसको घर से निकाल दिया है और वह दिल्ली में एक धनी-मानी स्त्री की भाति सुख-चैन का जीवन व्यतीत कर रही है।

"परन्तु मां !" राजकुमार का कहना था, "उसके कपड़े बहुत ही साधारण थे। साधारण सूती धोती और चोली तथा बहुत ही घिसे हुए जूते पहने थी। शृगार इत्यादि भी किया हुआ नही था।"

अगले दिन राजकुमार हस्पताल में पता करने गया तो सोमा सचेत और सतर्क वहां बैठी-बैठी प्रातः की चाय ले रही थी। चाय उसने नर्स से कहकर दो आने की सड़क पर से मंगवा ली थी।

राजकुमार को देख, सोमारानी ने पूछ लिया, "भापा ! रात तुम ही यहां थे ?"

"हा !"

"मै उस समय अर्धचेतनावस्था मे थी। मेरा विचार था कि तुम ही थे। अभी-अभी पुलिस वाले आए थे। वे मेरा पता पूछ गए हैं। मैंने अपने पिता का नाम

और पता बताया था। भैया प्रबोध का नाम भी बताया है, परन्तु पता नही जानती थी। अब पिता जी के मकान पर तो एक बहुत बड़ा मकान बना है और वहां पुस्तकालय खुला है।

"हा। वह तुम्हारे पिता ने दान-दक्षिणा में दिए धन से बनाया है।"

"सत्य ? और वे आप कहां है ?"

"आजकल हरिद्वार में रहते है।"

सोमा खिल-खिलाकर हस पडी।

"किसलिए हसी हो सोमरानी ?"

"वे भी नित्य गगा-स्नान किया करते थे। ठाकुर जी को भोग लगाते थे और आधा घण्टा भर शिव-स्तोत्र पढा करते थे।"

"तो क्या अब······?"

"अब भी करते होगे। मै जानती नही।"

"तुम दिल्ली में क्या कर रही थी ?"

"अकिंचन हो, पिता जी के आश्रय में रहने आई थी। उनके कनाट प्लेट में निवास-स्थान पर पहुची और यहा पर नया मकान और उसमें चहल-पहल देख, विस्मय कर रही थी कि दो मोटरों के बीच मे आ गई। अभी कुछ अन्न-अनाज और गन्दा करना है, जो बच गई हू।"

"अब तो तुमको यहा से छुट्टी मिल जानी चाहिए।"

"अभी डाक्टर आने वाला है। उसके आने पर छुट्टी मिल जाएगी।"

७

सोमारानी विश्वम्भरनाथ से अस्वीकार होने पर जीवन से निराश सुख में अपने-आपको भूल जाना चाहती थी। जब प्रबोध के कहने पर सम्पत्ति का बटवारा हुआ तो उसको साढे सात लाख रुपया मिल गया और लगभग पैंतीस सौ रुपया मासिक की आय होने लगी और वह सिनेमा, नाटकों, रेस्टरा इत्यादि में सुख की उपलब्धि मे घूमने लगी। रुद्रमणी ने उसको कब और कहां देखा था, उसे पता नहीं चला। उसने बताया भी नहीं; परन्तु उसका इससे प्रथम परिचय प्लाजा सिनेमा में हुआ। दोनो साथ-साथ बैठे थे। और दोनो मे ही बातचीत होने लगी, "यह

ब्लैक बर्ड का अभिनय बहुत सुन्दर बन रहा है।" रुद्रमणी का कहना था।

"मुझको तो फ्लोरा का अभिनय अधिक प्राकृतिक और श्रेष्ठ प्रतीत हुआ है।" सोमा का उत्तर था।

इसपर दोनों अभी अपने-अपने कथन की विवेचना ही कर रहे थे कि चित्र चलने लगा, अतः शेष विवेचना खेल के पश्चात् आरम्भ हुई। दोनों हाल से बाहर निकल रहे थे। रुद्रमणी ने साथ चलते हुए कहा, "आपकी फ्लोरा के अभिनय पर विवेचना अभी समाप्त नही हुई। हां, तो क्या कह रही थी आप ?"

"यहां चलते-चलते मे बात नही हो सकती। आइए, कही चाय भी लेगे और बात भी कर लेगे।"

"परन्तु···" रुद्रमणी जेब पर हाथ रख चुप कर गया।

"जेब मे दाम नही है ? यही न ?"

"हां, आज तो कुछ ऐसी ही बात है।"

"निमत्रण तो मैं आपको दे रही हू। आइए।"

दोनों वैंगर पर जा पहुचे। चाय पीते हुए बहुत बातें हुईं। परिचय हो गया। रुद्रमणी ने बातो ही बातों मे बता दिया, "मैं श्री गोपालशकर पांडे का लड़का हूं। पिता जी का देहान्त हो गया है और मैं गम गलत करने के लिए भ्रमण कर रहा हूं। एकाएक आज मेरा पर्स चोरी हो गया है। जेब मे पांच रुपये थे। इससे मां को रुपये के लिए टेलीग्राम दे दिया है और अढ़ाई रुपये का सिनेमा देख लिया था। बस से वापस जाने का भाड़ा अभी जेब में है।"

"कहा ठहरे है ?"

"मेडन होटल में।"

इस होटल के नाम-भर से दिमाग पर सुखद प्रभाव हुआ था। चाय के पश्चात् वह उसको टैक्सी में चढा होटल में छोड़ने गई तो वह उसके कमरे तक पहुच गई। वहां बैठ, बाते होती रही। रुद्रमणी ने सोमारानी को भोजन का निमन्त्रण दे दिया। वह मान गई और खाने का बिल देने लगी तो रुद्रमणी ने न कर दी। कह दिया, "कल तक रुपया अवश्य आ जाएगा। मैं सब बिल चुका दूगा।"

"फिर भी आप कुछ तो जेब मे रख सकते है। रुपया आने पर चुका दीजिएगा।" इतना कह सोमा ने एक सौ रुपये का नोट उसके सामने मेज़ पर रख दिया।

अगले दिन सम्बन्ध घनिष्ठ होने लगे और विवाह की बाते होने लगी। इस वार्तालाप में रुद्रमणी ने अपने को क्वारा प्रकट किया और सोमारानी से विवाह का प्रस्ताव कर दिया। सोमा उसको भापा के पास ले गई और सोमा भापा से रूठ कोठी के बाहर निकल आई। कोठी के बाहर आ रुद्रमणी ने पूछा, "अब किधर जाओगी ?"

"आपके साथ।"

"मैं होटल में तो तुमको ले जा नही सकता और मां के रुपये अभी तक आए नही।"

सोमा ने कहा, "आपके होटल मे एक पृथक् कमरा मिल जाए तो रात वहां काट लूगी। कल प्रातः होटल का बिल देकर बनारस चल देगे। वहा विवाह कर रहेगे।"

"ठीक है। मगर मुझको तुमसे रुपया लेते हुए लज्जा आती है।"

"जब हमारा विवाह होना है तो फिर मेरा और तेरा का भेदभाव क्यों ?"

बस बात बन गई। मेडन होटल मे कमरा मिल गया। सोमा वहा रही। अगले दिन उसने अपने बैंक में से दस सहस्र रुपया निकलवाया और होटल का दोनों का बिल चुकता कर बनारस चले गए।

बनारस में एक होटल में सोमारानी को ठहरा, रुद्रमणी अपनी मां से मिलने चला गया और दो घण्टे में एक प्रौढावस्था के व्यक्ति और एक स्त्री के साथ वहां आ गया। उसने स्त्री को मां कहकर परिचय दिया और पुरुष को चाचा कहकर।

उसी सायंकाल एक मन्दिर मे विवाह हुआ। विवाह में बीस स्त्री-पुरुष उपस्थित थे और एक बहुत बड़े मकान मे दम्पति चले गए। मकान नया था। चार-पाच नौकर थे और एक कमरे में रुद्रमणी की मा थी।

कई दिन के पश्चात् उस स्त्री ने बताया कि वह रुद्रमणी की रिश्ते में मौसी है। उसने उसका पालन-पोषण किया है, इससे वह उसको मां मानता है। वैसे इसके माता-पिता का देहान्त, जब यह अभी शिशु ही था, हो गया था। वे एक गाव के रहने वाले थे।

रुद्रमणी का काम जुआ खेलना था। अत. जब जीत जाता था तो सैर-सपाटे लगाता था और जब हार जाता था तो धाबे से चार आने की रोटी खाकर पेट भर लेता था।

जब से सोमारानी आई थी, खर्चा इसके रुपये से चलता था। सोमारानी को सब विदित हुआ तो उसको भारी शोक हुआ, परन्तु अब भी वह अपने को किसी बुरी हालत मे नही पाती थी। उसकी अपनी आय बहुत थी। अतः उसने अपने पति की सब अवस्था जानकर कह दिया, "देखिए, आपने झूठ बोलकर मुझसे विवाह कर लिया है।"

"परन्तु रानी ! मै तुमपर मोहित हो गया था। युद्ध और प्रेम मे सब कुछ क्षम्य है। अतः मै क्षमा के योग्य हू।"

"क्षमा तो कर सकती हू परन्तु एक शर्त पर।"

"आज्ञा करो रानी !"

"जुआ खेलना बन्द।"

"कर दूगा परन्तु दिन-भर करूगा क्या ?"

"घर में रहिए। ज़रा भारत की सैर करेंगे और फिर जब घूमते-घूमते थक जाएगे तो कोई कारोबार कर लीजिएगा। रुपया आपको मिल जाएगा।"

"मजूर है।"

"सत्य कहिए।"

"मै गगा मैया की सौगन्ध खाकर कहता हू कि जैसा मेरी रानी कहेगी, वैसा ही करूगा।"

"ठाकुर जी के सामने वचन दो कि मुझको प्यार करोगे और भले लोगों की तरह रहोगे।"

वचन हो गया। सब खुला रुपया बनारस मगवा लिया गया और कुछ सोमा के अपने नाम और कुछ रुद्रमणी के नाम जमा हो गया। वे तीर्थयात्रा पर चल पड़े और तीस हजार रुपया चैकबुक पर लेकर निकल पड़े। छः महीने भ्रमण कर लौटे। तीस हजार तो मार्ग मे ही समाप्त हो गया था। वहा से बैंक के द्वारा चैंक भेज और रुपया मगवाया गया।

बनारस लौट रुद्रमणी ने बनारसी साड़ियों का कारोबार करना आरम्भ कर दिया। इसके लिए दिल्ली की सम्पत्ति बेच डाली गई। जरीदार कपड़ो के बनवाने का एक बडा कारखाना खोल दिया गया।

पाच वर्ष मज़े में निकल गए। छठे वर्ष कारखाना बन्द होने लगा। उस समय तक सोमारानी का प्रायः सब रुपया कारखाने में लग चुका था। सोमा

हिसाब देखना चाहती थी। रुद्रमणी टाल-मटोल कर रहा था। एक दिन झगड़ा हुआ और रुद्रमणी सब कुछ बेचकर रुपया नकद ले लापता हो गया।

सोमा को कई मास की प्रतीक्षा के बाद समझ आई कि वह लूट ली गई है। अब तो आसपास के पडोसी बताने लगे कि रुद्रमणी की अति सुन्दर रखेल थी और उसके साथ ही वह भाग गया है।

सोमा ने सब शेष बचा धन एकत्रित किया तो पता चला कि साढे सात लाख में से सात लाख से ऊपर जा चुका है। उसके अपने खाते मे कुछ 'हिन्दुस्तान मोटर्ज' के हिस्से ही बचे रह गए थे। वे पैंतालीस हजार के थे। इसको भी गनीमत समझ, सोमा पहले से बहुत समझदार हो गई थी। सब कुछ दे-दिलाकर हिस्सों के सर्टिफिकेट ले दिल्ली आ पहुची। वह नगर मे 'एयर लाइन्ज होटल' मे ठहरी थी और पहले ही दिन अपने पिता से सुलह करने के विचार से कनाट प्लेस मे पहुच, मोटर के नीचे आ मरती-मरती बच गई।

हस्पताल से छुट्टी लेकर वह राजकुमार के साथ होटल मे जा पहुंची। राजकुमार ने उसकी आर्थिक अवस्था पूछी तो उसने बता दिया, "पैंतालीस हजार के 'हिन्दुस्तान मोटर्ज' के शेयर है। जेब मे दो हज़ार नकद है। हिस्सों का डिविडैण्ड डिक्लेयर हो चुका है और उससे चार हज़ार मिलने वाला है। और बस।"

"सोमा बहिन, यदि समझदारी से काम लो तो यह भी पर्याप्त है। परन्तु इस होटल में नहीं रह सकतीं।"

"मैं तो पिता जी के पास रहना चाहूगी।"

"तो चिट्ठी लिख देता हूं।"

"प्रबोध कहां है ?"

"वहां जाकर रहना चाहोगी ?"

"पूछ लो उससे।"

दोनों होटल के टेलीफोन पर जा पहुचे। राजकुमार ने प्रबोध को सोमा की पूर्ण कथा बताकर कहा, "उसको आकर ले जाओ।"

"तो वह मरी नहीं ?" प्रबोध ने पूछा लिया।

"नही। बच गई है ?"

"आज पुलिस का टेलीफोन आया था। मुझसे पूछा गया था कि कोई सोमारानी मेरी बहिन है। मैंने कह दिया है कि मैं किसी ऐसी औरत को नहीं जानता।"

"तो अब ?"

"राज ! मै एक बात पूछता हूं। परिवार के सब लगड़े, लुजे, चोर, बदमाश तुम्हारे पास ही क्यो आते है ?"

" मेरे पास नही आते प्रबोध ? मै उनको निस्सहाय देख उनके पास जाता हूं। कल जब एक औरत पुस्तकालय के बाहर मोटर के नीचे दब गई थी तो मै ही वहा गया था। उस समय मुझको विदित नही था कि वह तुम्हारी बहिन ही है। जब उसको अचेत मोटर मे पडे देखा तो पहचान गया और सहायता के लिए चल पड़ा।

" अब वह मुझको होटल मे, जहा वह ठहरी हुई है, ले आई है। मैने उसको राय दी है कि उसको दिल्ली मे अपने भाई के पास रहना चाहिए।"

" मै उसका भाई नही हू। मेरी एक बहिन सोमा नाम की लडकी थी, परन्तु वह मर चुकी है।"

"प्रबोध ! विचार कर लो।"

"कर लिया है। उसको मेरे घर में नही आना चाहिए। आई तो कोठी में एक टैरी नाम का कुत्ता है। उससे उसको फड़वा डालूगा।"

राजकुमार ने टेलीफोन बन्द कर दिया और सोमा को सब बात बता दी। सोमा ने कहा, "भैया ! कोई सस्ता मकान ले दो। मैं अपना शेष जीवन इसीसे निकाल सकूंगी।"

"ऐसा करो ! तुम चलो मेरे घर। मेरी मा के पास रहो। मकान देखने में कुछ दिन लगेंगे और इतने दिन पचास रुपया नित्य का होटल का खर्चा करना ठीक नहीं।"

सोमा को वह अपने घर हैमिल्टन रोड पर ले गया। वहां पर भाग्य राम और रोहिणी आए हुए थे। वे पहले भी कभी दूसरे, तीसरे वर्ष दिल्ली आ जाया करते थे और अपने भाई-बन्धो से मिल जाया करते थे।

वे स्नानादि कर, अल्पाहार ले रहे थे कि राजकुमार के साथ सोमा को आया देख, प्रसन्नता से पूछने लगे, "सोमा ! तो तुम अब ठीक हो गई हो ?" राम राजेश्वरी से दुर्घटना की बात सुन चुका था।

"जी ! बच गई हूं। भाग्य ने तो 'हरि ॐ तत्सत्' कर दिया था। किसने बचा लिया है, नही जानती।"

"सब ईश्वर की लीला है। सुनाओ कैसे आई थीं दिल्ली में और वह बनारसी ठग कहां है?"

सोमा ने संक्षेप में अपनी छः वर्ष की कहानी सुना दी। राम ने ठण्डी सांस ली और कहा, " इस ज़माने में दो वस्तुओं का अभाव हो गया है। एक तो ईश्वर में विश्वास का। इस विश्वास के अभाव में मनुष्य अधीर हो गया है और समय से पूर्व त्याग-तपस्या किए बिना फल की इच्छा करने लगा है।

"दूसरे, परिवार के सदस्यों मे मेल-जोल, सहानुभूति और सहिष्णुता का अभाव हो गया है। वे भूल गए है कि जल से रक्त गाढा होता है। जन्म के सम्बन्धियों को छोड़, हम मित्रों, सहेलियों और पत्नियों से अधिक समीप होने का यत्न करते है। इससे सदा धोखा खाते है।

" सब कुछ बिगड गया है। व्यक्तिगत जीवन में भी और समष्टिगत जीवन में भी।"

"भापा!" सोमा ने बात बदल दी, "मैं तो अपनी पूर्ण करनी पर पश्चात्ताप करती हुई, पिता जी के आश्रय में रहने आई हूं।"

"पिता जी भी तो प्रबोध के पिता हैं। हां! बेचारी सुन्दरी में एक मानव-हृदय है। चलकर यत्न कर लो। यदि सुन्दरी को राजी कर लोगी तो रूप मान जाएगा। वह भी आजकल का जीव है।"

"पर भापा! आप तो पारिवारिक सम्बन्ध की महिमा जानते हैं।"

"हां, मेरे पास रहना चाहो तो रह सकती हो। क्यों रोहिणी! तुम क्या कहती हो?"

"मैं तो इस संसार में आपका समर्थन करने के लिए ही उत्पन्न हुई हूं। पचहत्तर वर्ष की हो गई हूं। मां, बाप, भाई, बन्धु सबको छोड़ आपके पीछे-पीछे ही तो चल रही हूं। ग्यारह वर्ष की आयु से यही करती चली आ रही हूं। भला अब, जीवन के इस अन्तकाल में आपसे विमुख होकर क्या करूंगी?"

"सोम! मंजूरी मिल गई है। हरिद्वार चली चलो। दिल्ली में रहना ठीक नहीं। प्रबोध ने मां की हत्या करवा दी। भूषण की भी हत्या उसने ही करवाई है और वह तुमको भी नही छोड़ेगा